

क ल क चा नि धा सी  
साधुचरित-श्रेष्ठिर्व्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्थितिनिमित्त  
प्रतिष्ठापित पद्य प्रकाशित

## सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ जैन आध्यात्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, व्याख्यान-इत्यादि विविधविषयगुणित  
प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूढ़, -राजस्थानी आदि भाषा व्याख्यानबद्ध सार्वजनिक श्रुत  
वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थमाला ]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद्-डालचन्दजी-सिंघीसत्युष

स्व० दानशील - साहित्यरसिक - संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी



प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिन विजय मुनि

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररी डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

\*

ऑनररी फाउंडर - डायरेक्टर

राजस्थान ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, जोधपुर ( राजस्थान )

ऑनररी मेंबर जर्मन ओरिएण्टल सोसायटी, बर्मेनी, मण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना  
( दक्षिण ), गुजरात साहित्यसभा, बहमदाबाद ( गुजरात ), विवेकानन्द वैदिक  
शोध प्रतिष्ठान, होशियारपुर ( पञ्जाब ) इत्यादि ।

\*

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

व्यवस्थापक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षा पीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

प्रकाशक - ज. ए. दवे, ऑनररी डायरेक्टर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, नं. ७

मुद्रक - गुणचन्द केकरन्द, महोदय प्रिंटींग प्रेस, भावनगर.

महामाल्य - वस्तुपाल - कीर्तिकीर्तनस्वरूप  
उदयप्रभाचार्यादि - अनेक - कविविरचित  
सु कृ त की र्ति क ल्लो लि न्या दि  
वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह

ॐ

संपादनकर्ता

अनेकग्रन्थभाण्डागारोद्धारक - विविधदुर्लभग्रन्थसंशोधक

जिनागमप्रकाशकारि - प्रतिष्ठानप्रवर्तक

आगमप्रभाकर - मुनिप्रवर - श्रीपुण्यविजय सूरि ।



प्रकाशनकर्ता

अधिष्ठाता, सिं घी जै न शा स्त्र शि क्षा पी ठ  
भारतीय विद्याभवन, बम्बई

ॐ

विद्यमान २०१६]

प्रथमावृत्ति

[ विद्यमान १९६१

ग्रन्थांक ५.]

सर्वाधिकार सुरक्षित

[ मूल्य रु० ६/६०

# SINGHI JAIN SERIES

ॐ अद्यावधि मुद्रितग्रन्थ नामावलि ३३

- १ मेरुज्ञाचार्यरचित प्रबन्धचिन्तामणि  
मूल संस्कृत ग्रन्थ.
- २ पुरातनप्रबन्धसंग्रह बहुरिप ऐतिह्यतत्त्वपरिपूर्ण  
अनेक प्राचीन तिलग्न्य सचय.
- ३ राजशेखरसूरिरचित प्रबन्धकोश.
- ४ जिनप्रमसूरिजन विविधतीर्थकरण.
- ५ मेघविजयोपाध्यायकृत देवावन्दमहाकाव्य.
- ६ यशोविजयोपाध्यायकृत जैवतर्कभाषा.
- ७ हेमचन्द्राचार्यकृत प्रमाणमीमांसा.
- ८ मङ्गलकण्ठदेवकृत अष्टाष्टकप्रबन्धरत्नी.
- ९ प्रबन्धचिन्तामणि - हिन्दी भाषांतर.
- १० प्रमाणचन्द्रसूरिरचित प्रभावकचरित.
- ११ सिद्धिचन्द्रोपाध्यायरचित भावचन्द्रगणितचरित.
- १२ यशोविजयोपाध्यायरचित भावचिन्तुप्रकरण.
- १३ हरिपेणाचार्यकृत बृहत्कृपाकोश.
- १४ जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह, प्रथम भाग.
- १५ हरिमयूरदेविरचित पूर्वाख्यान. (प्राकृत)
- १६ दुर्गादेवकृत त्रिष्टसमुच्चय. (प्राकृत)
- १७ मेघविजयोपाध्यायकृत मिथिवचमदाकाव्य.
- १८ कवि बन्धुल रहमानकृत सन्देशरासक. (अपभ्रंश)
- १९ मरुहिरकृत शतकप्रयागि सुभाषितसंग्रह.
- २० शाल्मयाचार्यकृत न्यायावधारणार्थिक-कृति.
- २१ कवि धाहिररचित पदमसिरीचरित. (अप०)
- २२ महेश्वरसूरिकृत भागवतगीता. (प्रा०)

- २३ श्रीमद्बाहुभाचार्यकृत मद्बाहुसंहिता.
- २४ जिनेश्वरसूरिकृत कथाकोषप्रकरण. (प्रा०)
- २५ उदयप्रमसूरिकृत धर्माभ्युदयप्रमदाकाव्य.
- २६ जयसिंहसूरिकृत धर्मोपदेशमाहा. (प्रा०)
- २७ चोम्बलसूरिरचित उर्लाबद्ध कथा. (प्रा०)
- २८ जिनदत्ताध्यायकृत. (प्रा०)
- २९, ३०, ३१ स्वर्णसूरिरचित पदमचरित.  
भाग १, २, ३ (अप०)
- ३२ सिद्धिचन्द्रकृत काव्यप्रकाशतण्डन.
- ३३ दामोदरपरिणत कृत उक्तिरूपविप्रकरण.
- ३४ मिश्रमिश्र सूरिकृत कुमारपालकविधर्मसंग्रह.
- ३५ जिनपालोपाध्यायरचित सारतण्डन बृहद्पूर्वाचलि
- ३६ उदयानन्दसूरिकृत कुबलयमाला कथा. (प्रा०)
- ३७ गुणशाल्मनिरचित अंबुवारीय. (प्रा०)
- ३८ पूर्वाचार्यविरचित जयपाय-निमिषघाट. (प्रा०)
- ३९ भोजनूपतिरचित व्युत्क्रामहरी. (संस्कृत कथा)
- ४० धनसारगणीकृत-मरुहिरकृतशतपदीका.
- ४१ शैलस्यकृत जयसाक-सटीक. (कविप्रयमंता)
- ४२ सिद्धसिलेखसंग्रह विशतिमहालेख-विशतिविशेषी  
आदि अनेक विशतिखंड समुच्चय.
- ४३ महेन्द्रपरिकृत नर्मसामुन्दरीकथा. (प्रा०)
- ४४ हेमचन्द्राचार्यकृत-छन्दोऽनुशासन.
- ४५ वस्तुपालसुखवर्णनात्मक काव्यसंग्रह  
कीर्तिकौमुदी तथा सुकृतसंकीर्तन
- ४६ सुकृतकीर्तिकौमुदी आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह.

## Shri Bahadur Singh Singhi Memoirs Dr. G. H. Bühler's Life of Hemachandrāchārya. Translated from German by Dr. Manilal Patil, Ph. D.

- 1 स. बा. श्रीमद्बाहुसिंहजी सिंघी स्मृतिग्रन्थ [ भारतीयविद्या भाग ३ ] सन १९४५.
- 2 Late Babu Shri Bahadur Singhji Singhi Memorial Volume  
BHARATIYA VIDYA [Volume V] A. D. 1945.
- 3 Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and its Contribution  
to Sanskrit Literature. By Dr. Bhogilal J. Sandesara,  
M. A., Ph. D. (S.J.S.33.)
- 4-5 Studies in Indian Literary History. Two Volumes.  
By Prof. P. K. Gode, M. A. (S. J. S. No. 37-38.)

ॐ संप्रति मुद्र्यमाणग्रन्थनामावलि ३३

- १ विविधगण्ठीय पद्यावलि-संग्रह.
- २ जैनपुस्तकप्रशस्तिसंग्रह, भाग २.
- ३ जयसोमदेविरचित मंत्रीकर्माचन्द्रवंशप्रबन्ध.
- ४ द्रुपदप्रभाषांश विनयसूय. (बौद्धग्रन्थ)

- ५ राजचन्द्रकविरचित-महत्कामचन्द्रनादिनाटकसंक्षेप
- ६ तण्डनाभाचार्यकृत पराशर्यकथाकाव्योपबृंहि
- ७ प्रसुङ्गसूरिकृत मूलमुद्रियकरण-सटीक.
- ८ कुबलयमाला कथा, भाग २
- ९ सिद्धसिलेखसूरिरचित मद्बाहुप्रशस्तिसंग्रह.

# विपयानुक्रम

## किञ्चित् प्रास्ताविक

१ वस्तुपालधर्मगुरु नागेन्द्रगच्छीय श्रीउदयप्रभद्वरि विरचित		
मुकृतकीर्ति कल्लोलिनी, पद्य सं. १७९	पृ.	१-१६
२ उदयप्रभद्वरिकृत वस्तुपालस्तुति, पद्य संख्या ३३	"	१७-२०
३ मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रद्वरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. २६	"	२१-२३
४ मलधारगच्छीय श्रीनरेन्द्रप्रभद्वरिकृत वस्तुपालप्रशस्ति, पद्य सं. १०४	"	२४-२९
५ नरेन्द्रप्रभद्वरिरचित द्वितीय प्रशस्ति, पद्य सं. ३७	"	३०-३३
६ श्रीजयसिंहद्वरिविरचित वस्तुपाल-तेजःपाल प्रशस्ति, पद्य सं. ७७	"	३४-३९
७ वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १३	"	४०
८ नरनारायणानन्दकाव्यप्रान्तलिखित वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य सं. १८	"	४१-४३
९ उपदेशतरङ्गिणीग्रन्थगत वस्तुपालस्तुतिकाव्य, पद्य १	"	४३
१० गिरनारतीर्थस्य वस्तुपालप्रतिष्ठित नेमिनाथप्रासादप्रशस्ति क्रमांक १	"	४४-४६
११ " " क्रमांक २	"	४६-४८
१२ " " " ३	"	४८-५०
" " " ४	"	५०-५३
१३ " " " ५	"	५३-५५
१४ " " " ६	"	५५-५८
१५ गिरनारतीर्थस्थित अन्य प्रकीर्ण लेख ४	"	५८
१६ अर्धुदाचलतीर्थस्य छणवसहिकागत लेखसंग्रह	"	५९-७५
१७ तारणदुर्गस्य लेख	"	७५
१८ शृङ्गजपपात्रस्थित लेख	"	७५-७६
१९ अणहिलपुरस्थित शिलालेख	"	७६
२० अर्धुदाचलस्थित अन्यलेख	"	७६-१
२१ स्तंभतीर्थस्य शिलालेख	"	७६-२
२२ गणेशरग्रामगत शिलालेख	"	७६-३
२३ नगरग्रामगत शिलालेख	"	७६-४
२४ वस्तुपालतीर्थपात्रा लेख	"	७७
२५ उदयप्रभाचार्यकृत उपदेशमालाकार्यिका धृतिगत वस्तुपालवर्णन	"	७८-८०
२६ सोमेश्वरकविकृत सुरयोत्सवकाव्यगत वस्तुपालवंशवर्णन	"	८१-८७
२७ वस्तुपालविरचित नरनारायणानन्द काव्यगत प्रशस्त्यात्मकवर्णन	"	८८-९०
२८ वस्तुपालविरचित आदिनाथ स्तोत्र	"	९१-९२
२९ " नेमिजिनस्तत्र	"	९३
३० " अम्बिकादेवीस्तोत्र	"	९४

३१ महामात्य वस्तुपालकृत आराधना	पृ.
३२ वस्तुपाल संबन्धित ग्रन्थान्तपुष्पिकालेख	" ९.
३३ विजयसेनद्वरि रचित रेवंतगिरि रास	" ९९.
३४ पाल्हरणपुत्रकृत आबूसस	" १००.

### परिशिष्ट

१ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि प्रशस्ति पद्यानुक्रमणिका	" ११५.
२ सुकृतकीर्तिकछोलिनी आदि रचनागत विशेषनामानुक्रमणिका	" १२८.

## किंचित् प्रास्ताविक

#

प्राचीन महाराजराजके महामात्य वस्तुपाल तेजपाल (दोनों बन्धु) के नाम बहुविश्रुत है। इनके जीवन वृत्तान्तके विषयमें इंग्रजी, जर्मन, गुजराती एवं हिन्दीमें बहुत कुछ लिखा गया है। इन सर्वमें विशेष रूपसे उल्लेखयोग्य इंग्रजी ग्रन्थ डॉ. भोगीलाल सडेसरा, एम्. ए., पीएच्. डी. (डायरेक्टर ओरिएण्टल रीसर्च इन्स्टीट्यूट, बडौदा युनिवर्सिटी) का लिखा हुआ 'लिटरेरि सर्कल ऑव महामात्य वस्तुपाल एण्ड इट्स कोन्ट्रीब्यूशन टु संस्कृत लिटरेचर' (Literary circle of Mahāmātya Vastupāla and Its contribution to Sanskrit Literature) है, जिसमें इस विषय पर बहुत ही प्रमाणभूत एवं गंभीर अव्ययपूर्ण विवेचन किया गया है। सिंधी जैन ग्रन्थमालाके ३३ वें ग्रन्थके रूपमें, कोई ९-१० वर्ष पहले हमने इसे प्रकाशित किया। इसके पूर्व ही, सन् १९४९ में, हमने इसी ग्रन्थमालाके चतुर्थ ग्रन्थके रूपमें, वस्तुपालके मुख्य धर्मगुरु आचार्य उदयप्रभ सूरिका बनाया हुआ संस्कृत काव्यात्मक बड़ा ग्रन्थ 'धर्मान्युदय महाकाव्य' प्रकाशित किया, जिसका संपादन विद्द्वर्ष्य मुनिराज श्री पुण्यविजयजी महाराज और इनके दिवंगत गुरुवर्य श्री चतुरविजयजी मुनिमहाराजने किया है।

इस 'धर्मान्युदय महाकाव्य' के प्रास्ताविक वक्तव्यमें, हमने वस्तुपाल मंत्रीके जीवनवृत्त और तत्कालीन इतिहास पर विशिष्ट प्रकाश डालनेवाली, तथा उस मंत्रीके समयमें विद्यमान एवम् उससे संबन्धित जिन विद्वानोंने काव्य, प्रबन्ध, प्रशस्ति, रास आदि जो रचनाएँ की हैं, उनका संक्षिप्त परिचयात्मक निर्देश किया था और साथमें यह भी सूचित किया था कि—हम भविष्यमें वस्तुपाल विषयक यह सब फुटकल ऐतिहासिक साहित्य, संकलित कर, एक या दो भागोंमें, प्रकट करना चाहते हैं। हमारे इस विचारको मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजने भी बहुत पसन्द किया और इन्होंने स्वयं इसका संपादन कार्यभी सहर्ष स्वीकार किया। प्रस्तुत संग्रह उसी विचारके फल स्वरूप तैयार हुआ है।

इस संग्रहमें वस्तुपाल विषयक जितने भी प्रशस्त्यात्मक प्रबन्ध, शिलालेख, ग्रन्थपुष्पिकाएँ एवम् रास आदि कृतियाँ मिल सकीं, उन सबका एकत्र समावेश कर दिया गया है। आशा है कि ऐतिहासिक तथ्योंकी खोज करने वाले अम्यासिधोंके लिये यह बहुत उपयुक्त संकलन सिद्ध होगा।

इस संग्रहका संपादन कार्य तो प्रायः सन् १९५० में पूरा हो गया था। इसका मुद्रण कार्य भायनगरके एक प्रेसमें कराया गया था; पर बादमें इसके सब छपे फर्में बर्हिमें भारतीय विद्या भवनमें 'मगवा लिये गये थे। स्थान बगैरही की ठीक सुविधा न होनेसे अनेक वर्षों तक ये फर्में इधर उधर घूमते-फिरते रहे और फिर हमारा भी स्थानान्तरण होता रहा। इससे, उक्त धर्मान्युदय महाकाव्यके प्रास्ताविकमें उल्लिखित कथनानुसार हम इसे शीघ्र प्रकाशित करनेमें असमर्थ रहे। पर हर्षका विषय है कि इतने वर्षोंके बाद भी, अब यह संग्रह समुचित रूपसे प्रकाशमें आ रहा है। पूर्व पुरुषोंके गुणकीर्तनात्मक पुष्प कमी बासी नहीं होते। जब भी वे गुणग्राहकोंके हाथोंमें उपस्थित होते हैं तब शिरोधार्य ही होते हैं।

इसके संपादन कार्यके विषयमें मुनिमहोदय श्री पुण्यविजयजी महाराजके प्रति, उक्त धर्मान्युदय काव्यके प्रास्ताविक वक्तव्यके अन्तमें, जो अपना हार्दिक कृतज्ञ भाव हमने प्रकट किया है—वही यहाँ पुनरुल्लिखित करना चाहते हैं कि—“इस संग्रहका संपादन करके इस ग्रन्थमाला के प्रति अपना जो विशिष्ट ममत्व भाव प्रदर्शित किया है और उसके द्वारा सौहार्दपूर्ण सहकार प्रदान कर मुझको जो उपकृत किया है, उससे सौजन्यमूर्ति परमब्रह्मास्पद मुनिवर श्री पुण्यविजयजी महाराजका मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।”

इस संग्रह के साथ ही इसका समानविषयक एक अन्य संग्रह प्रकट हो रहा है जिसमें सोमेश्वर विरचित कीर्ति कौमुदी तथा अरिसिंह कविकृत सुकृत संकीर्तन काव्य संकलित है। संपादन कार्य भी इन्हीं मुनिवरने किया है। पहले ये दोनों संग्रह एक ही ग्रन्थके रूपमें प्रकाशित जानेकी कल्पना रही थी, पर पीछेसे इसके साथ डॉ. ब्यूहलर आदिके लिखित उन ग्रन्थोंके संबन्धके निबन्ध भी उसमें सम्मिलित करनेकी कल्पनासे उसको अब पृथक् ग्रन्थके रूपमें प्रकट किया जा रहा है।

अनेकान्तविहार, अहमदाबाद,  
काल्पनी पब्लिशिंग, सं. २०१७  
भा. २, मार्च, १९६१.

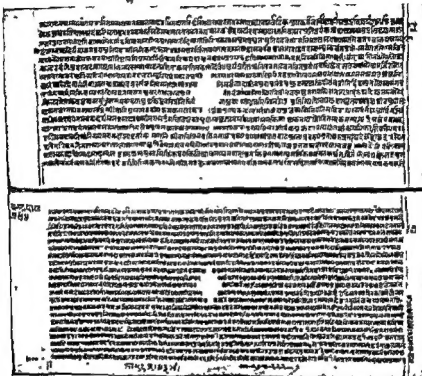
}

— मुनि जि न वि ज य

१

### — आभार प्रदर्शन —

प्रस्तुत वस्तुपाल प्रशस्त्यात्मक संग्रह ग्रन्थके प्रकाशन व्ययमें भारत सरकारकी ओरसे आवाहिस्ता सहायताके रूपमें मिला है, तदर्थ हम भारत सरकारके प्रति अपना साभार कृतज्ञभाव प्रदर्शित करना चाहते हैं।



अष्टमसंस्कृत-देवनागरी-संस्कृत-वस्तुपालप्रशस्तिग्रन्थ की  
प्रति के आग्रन पत्र



# प्रथमं परिशिष्टम् ।

नागेन्द्रगच्छभूपामणिभिः श्रीमद्भुदयप्रभाचार्यैर्विरचिता

—चस्तुपालान्वयप्रशस्तिरूपा—

## सुकृतकीर्तिकलोलिनी ।



### पञ्चजिनस्तुतिरूपं मङ्गलम्

चिन्तातीतफलप्रदः स दिगंतु श्रेयो युगादिप्रभुर्भोजुर्जन्मनि यस्य कल्पतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।

नेत्रं चेत् कथमन्यथा वसुनतीमस्मिन्नलङ्कर्वति, त्रैलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जग्मुर्वगच्चभुषाम् ॥ १ ॥

पापं पङ्कजयन् मुदं कुमुदयन् मोहं तमःस्तोमयन्, बुद्धि तोयंययन् नतिप्रणयिनां चन्द्राश्मयन् लोचनम् ।

पीयूषप्रतिमल्लनिर्मलगयीप्रक्षालितक्ष्मातलस्तापन्यापदपास्तयेऽन्तु जगतः श्रीमान् मृगाङ्को जिनः ॥ २ ॥

श्रीनेमिर्नवनीलनीरजरुचिः श्रेयांसि निःश्रेयसश्रीविश्रान्ततनुस्तनोतु कृतिनां सौभाग्यमङ्गीगुरुः ।

सज्जः कज्जलकालिमा त्रिजगतीलीलावतीनेत्रयोर्देहेऽप्युतिपानचिह्नवदसावद्यापि विघोतते ॥ ३ ॥

परमपदपुराणद्वारमृतो विमूलै, स भवतु भवभाजां पार्श्वनाथो जिनेन्दुः ।

यदुपरि परिणामं तोरणसमदलानां, कलयति महद्देवतुर्भोगिनेतुः फणाली ॥ ४ ॥

छात्रोत्तेकितनोरभीरभिनमोगर्भं सर्गभीकृतच्छायस्य च्छविभिः सुरस्य शिरसि स्वर्णधुतिः सैशवे ।

वीक्ष्यैव क्षणतः प्रदक्षिणविधिप्रहेषु वैमानिकप्राग्गारेषु सुपर्वपर्वततुलां वीरः श्रयन् वः श्रिये ॥ ५ ॥

### सरस्वत्याः स्तवनम्

पुण्यैकहेतुं रसिनीरजन्मप्रभापट् रूपचितप्रभावैः ।

श्रीवर्द्धमानस्य जिनेधरस्य, वाचः क्रमौ वक्त्रमपि स्मरामि ॥ ६ ॥

लीलासञ्चरणं च नूपुररणत्कारश्रियं च स्वयं, शोढुं साधु निषेव्यते खगकुलोचंसेन हंसेन या ।

किञ्चिद्व्यसन्नप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सैतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥ ७ ॥

### कविस्तुतिः

जीयासुः कवयो नवोत्तमगुणग्रामामिरामश्रियः, सर्वे शास्त्रतरङ्गिणीपरिवृद्धोलासैकचन्द्रोदयाः ।

येषां कीर्तिरुदारवैभवमवत्सौढमवन्धावलीकलौला भुवनेषु पञ्चमपयोराशिभ्रमं गाहते ॥ ८ ॥

१ मदं मुदिते ॥ २ 'यदयन्' मुदिते ॥ ३ 'हेतुं' र' मुदिते ॥ ४ सदा म' मुदिते ॥

### चापोत्कटवंशीयराजवर्णनम्

राजा श्रीवनराज इत्यभिषया चापोत्कटः कोऽप्यभूत्, गोत्रेण क्रियया च कश्चन वनाद् वीरः समभ्युत्थितः ।  
सूर्येणापि जितेन यस्य महसा बाल्येऽपि दोलातरुच्छाया नाम न नाभिता दिशि दिशि क्रोधारुणं धावता ॥९॥  
सूर्या-चन्द्रमसौ कदाऽप्युदयतश्चेत् पश्चिमायां ततो, राज्यं स्यादिह सन्वयेति सुतया देशं समुद्राह्वयम् ।  
येनास्यां दिशि वर्धमानमहसा राज्ञा च क्षुरेण च, प्राप्तिनाभ्युदयं महोदयपतिः पूर्णप्रतिज्ञः कृतः ॥ १० ॥

भूया सुवोऽणहिलपाटकनामधेया, येन व्यधायि किल गूर्जरराजधानी ।

यन्नोदयववनवाद्भुतमोगभाभ्यश्रीणां नृणां बहुतृणं त्रिदशौकसोऽपि ॥ ११ ॥

एकाऽपि प्रमदा मदालसवपुर्वत्र प्रपापालिका, चित्राणां करकैरवेण करकं पूर्णं जलैरुज्ज्वलैः ।

रत्नस्तम्भमवलज्जप्रतिकृतिप्रान्ते कृतपाजलीन्, यूनो वीक्ष्य मृदुस्मितेन तनुते लज्जाविलस्रस्थितीन् ॥ १२ ॥

अस्मिन्नुन्नतवेदममौलिषु भवान् भावी सखेदः सखे !, चक्रप्रस्वरणाकुलीकृतयस्तस्मादितो गम्यताम् ।

भित्तान्तस्तमसः सुवर्णकलशाधैत्यालिचूलाजुपः, संज्ञां चक्रुर्धीरकेतनकरैर्यत्रेति मित्रं प्रति ॥ १३ ॥

स्फूर्जद्गूर्जरमण्डलावनिवधूवकोपमेऽस्मिन् पुरे, चैत्यं किञ्च विशेषकं व्यरचयत् पञ्चासराहं नृपः ।

यस्योच्चैः कलशश्चकास्ति रुचिभिः किञ्चिद्विभित्ताम्बरदयामत्वन्यपदेशकेशपदवीसीमन्तसीमामणिः ॥ १४ ॥

धात्रीधुरीणभुजनिर्जितभोगिराजः, श्रीयोगराज इति भूरमणस्ततोऽभूत् ।

यस्य प्रतापतरिणस्तरवारिमेवमूर्त्यन्तरेण नवकीर्तिजलं वर्षत् ॥ १५ ॥

आसीदीदृशो दोष्मदादित्थरत्नादित्यो रत्नादित्थ इत्थस्य षट् ।

तीर्थं तेजोवह्निमहाय यस्यावर्षत् खड्गः शत्रुसंवर्तकाब्दः ॥ १६ ॥

जातः करीन्द्रोत्तुरवैरिसिंहः, श्रीवैरिसिंहस्तदिलविलासी ।

यत्कीर्तिकुर्या स्तुतिकैतवेन, चिकीड लोकाननकाननेषु ॥ १७ ॥

श्रीक्षेमराज इति तद् विरराज राजा, येनोद्भूतेऽपि सुवने कृश एव शेषः ।

विस्तृत्य नृत्यदुरगीभरगीयमानतत्कीर्तिपानरसिको रसनं मुधायाः ॥ १८ ॥

राजा चाभुण्डराजस्तद्, भूमण्डलममण्डयत् । सत्सर्पं विधे यस्याऽऽज्ञा, नरेन्द्रैर्यलङ्घिता ॥ १९ ॥

### चौलुक्यवंशीयनरपतिवर्णनम्

आहटस्तदजनि क्षितिनेता, यस्य बाहुरिह नूतनराहुः ।

एककालगिलितौ रिपुतेजः-कीर्तिमूर्ध-शशिनी न मुमोच ॥ २० ॥

नम्रारिन्दुमुखीसुखेन्दुविजयस्मेरकम्पाग्रहः, श्रीयूगिर्मुवैनैकमूषणममूर्त्तं तद्गर्विभुर्भूभटः ।

यत्कीर्तिर्गतेऽपि पुण्यनिकरः स्वर्गेऽपि दुग्धोदधिः, क्ष्मावण्डेऽपि हरस्मितं विलसति श्वरेऽपि चन्द्रप्रभारः ।

पीनश्रीर्भुजपलमोऽजनि यशोधारिर्जगृभे मुहुः, कम्पं खड्गलता ततान परितो जज्वाल त्रेजोऽनलः ।

यस्य क्षुण्णविपक्षवर्गवनितानिःश्वसवातोर्मिभिर्जेतुः केतुचलाऽप्यमृद्विचला चित्रं जयश्रीरसी ॥ २२ ॥

स्वसीयः अयति स्म तस्य पदवीं चौलुक्यलक्ष्मीशिरोमाणिक्यं हिमवद्विजिष्णुमहिमा श्रीमूलराजो नृपः ।

रेजे यस्य तमोरिपुस्त्रिपुरुषप्रासादकेतुच्छलादाकाशेऽपि निकाशिकाशविशदा कीर्तिलिमागां नदी ॥ २३ ॥

१ छुनया कं० ० २ च शरे इति ॥ ३ जेत्ये मुदिते ॥ ४ 'व' पद्विभु' कं० ॥

स्वैकान्तसिन्धुपतिलक्षसमुद्भूतश्रीकोटिर्यदीयतरवारिवारितौजाः । ।

कीर्त्याऽहसद् दिवि हरिं सुरदैत्य-शेषक्षुब्धैकसिन्धुकलितैकमसिधियं तम् ॥ २४ ॥

तेजःस्कृजितदीपदीपिनि मुधाशोभैर्यशोभिः शुभे,

विश्वच्छन्ननिवाससन्ननि वशी भूमिं मुनक्ति स्म यः ।

शत्रुस्त्रीनयनोदबिन्दुजतृणस्तोमेन रोमाश्रितां,

सेनाभिः परिकम्पिनीं परिवृढो योद्धा नवोदामिव ॥ २५ ॥

पाण्डवः पाखण्डिवेषं वहति नवहतित्रातसम्पातभीरुः,

कीरः कर्णाटपीरस्त्यजति रणमुवं व्याकुलो मालवेन्द्रः ।

वाच्यं किञ्चिन्न कान्तीश्वरचरितमसावाधुरः कस्तुरङ्कः,

क्षमाचक्रान्तिभीमे प्रसरति सततं यत्प्रतापप्रभावे ॥ २६ ॥

मेजे तेजोगगनगहने यस्य पिङ्गस्फुलिङ्गभ्रान्ति बालारुणमणिरुचं प्राप कीर्त्यङ्गनायाम् ।

ईशो भासामपि दिवि दिवा किञ्च सद्योतपोतच्छायामायात् प्रतिनृपवट्यादुर्यशोदुर्दिनेषु ॥ २७ ॥

युद्धोद्दामरमण्डलमदलितोद्गण्डारिमुण्डोर्द्धेतिक्वीडाखण्डितकाण्डमण्डपमुप्रत्यक्षदोर्ध्वरः ।

चण्डांशुधुतिचण्डिमा सदभवच्छामुण्डराजः क्षमाजनिर्यस्य विमात्यखण्डविभुतापाखण्डमाखण्डलः ॥ २८ ॥

रोदःक्षीरोदनीरैरसिलदिगवलनव्यनिर्धूतचिरै-

दिग्भागस्फारहारैरमरपतिपुरकोटपुष्पोपहारैः ।

क्षोणीचन्द्रास्मशालैरपि भुजगजगच्चन्द्रिकाचक्रवालैः,

फुल्लकाञ्चप्रकाशैस्त्रिभुवनमभितो भाति यत्कीर्तिहासैः ॥ २९ ॥

मेरुध्वत् परिकम्पते जलपतेर्मुञ्चन्ति चेद् वीचयो, मर्यादां धुतिमर्यमा त्यजति चेदुर्वी दिवं याति चेत् ।

तद् भज्येत परैरसाविति सतां सन्ध्या मुधा यो व्यधात्, सङ्खक्षोभविधूर्णितावनिरजःकृतेऽपि तच्चादौ ३०

खेलस्तङ्गपङ्कङ्गिबेल्लितमुजावलिर्भुवो वल्लभः, श्रीमान् बल्लभराज इत्यजनि तद् यवेजसा ताडितम् ।

शीतं स्फीतममृतं तमश्च जगतः प्रत्यर्थिसार्धं गतं, नेदं चेदिह कम्प-कालिमयुणौ कस्मादकस्मादिनौ ॥ ३१ ॥

धम्रं सिन्धुरभुमया वसुधया भूमिं भटौषैर्दिवं, ससिस्त्रिजोभरेण विदधे सोऽयं जगज्जम्पतः ।

यः श्रीमालवभूपमालफलकप्रस्वेदबिन्दुच्छलप्रत्यग्रप्रचितप्रशस्तिविकसहोर्विकमोपकय ॥ ३२ ॥

तस्मात्त्रेमुधाजनं सभजनि श्रीदुर्लभो मल्लिकाफुल्लोत्फुल्लयशा विशामधिपतिर्जामृतपूतोन्नतिः ।

येनोच्चैस्तरवारिवारितपरक्षामुग्रतापाम्निना, विश्वाश्वासकरेण सूरमहसामन्तर्दधे मण्डलम् ॥ ३३ ॥

कैराग्नोजं मेजे सततविततं यस्य कमला, प्रियारागादागादनु दनुजमेचा स्वयमसिः ।

यशःसूनुर्नूनं तदजनि तयोर्मज्जकयासदर्पः कन्दर्पद्विपमपि रुपाऽधो व्यधित यः ॥ ३४ ॥

तस्माद् भस्मीकृतरिपुनृपः क्षमापतिः शौर्यसीमा, भीमः श्रीमानजनि यजनैर्यस्य नश्यत्तमोभिः ।

प्रासस्तृप्तिं दिवि दिविपदो नेन्दुमास्वादयन्ते, लोकः स्रष्टामिति समतनोत् कीर्तिभिर्विप्रलब्धः ॥ ३५ ॥

१ 'स्वकीर्तसि' क० ॥ २ 'मुदत' मुदिते ॥ ३ 'काञ्चीभ्य' मुदिते ॥ ४ 'हतिः' मुदिते ॥

५ पपमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतौ दसमपयतयाऽपि दश्यते ॥

यत्रारिसत्रगोत्रक्षयकरणरणाद्वैतवैतण्डिकेऽपि,

इमापालः क्रुद्धकाद्यादिव निरगुरसेर्यससादेन वेगात् ।

तावन्ही नम्रदेहाः कपरिमलनैर्मानयन्तो नयन्तो,

भूर्ध्वोऽप्यूर्ध्वं लघीयसिदशगृहगुहागर्भमुखाः प्रसुप्ताः ॥ ३६ ॥

सेवालन्ति पयःसमुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनमः, सारङ्गन्ति शशाङ्कति घुमुवने दागन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति पदपदन्त्यगुलताखण्डं सुधाकुण्डति, श्रान्तर्मुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यर्धेदुष्कीर्तयः ॥ ३७ ॥

तत्कामधीरजनि जगतीकामुकः कर्णदेवः, किं वर्ण्यन्ते सुकृतमुकृता यस्य गुहान्तवध्वः ।

अस्वप्नीभिर्मनुजमुदशो बहुमन्यन्त धन्यमन्या घ्यातव्यसनजनिर्तस्वप्नयद्भोगभाजः ॥ ३८ ॥

कान्तं ये धीक्ष्य यान्तं प्रणयमयरुपा स्वप्नलब्धं प्रबुद्धा-

स्तद्बुद्ध्या न्यस्तदस्ता लिखितरतिपतेरञ्चले चञ्चलाक्ष्यः ।

मूर्च्छालाक्षित्रशालामुवि भवति विमुर्तायमित्यसिद्धस्त-

स्तथा रन्ति स्म पूर्वः स्वपरिमवभवन्मानभूमिर्मनोभूः ॥ ३९ ॥

कान्ते कृष्णेऽभिभूते जगदवनपुषा बाहुना विग्रहेण, क्षिप्ते सूतावनग्रे पितरि जलपत्नी निजिते सैन्यपूरैः ।

यन्धो दोषाकरे तु प्रथममपि मुखालोकमग्रप्रभाये, लक्ष्म्यास्तेनेह तेने हरणमुखवशोदौत्पदचस्रहायाः ॥ ४० ॥

मौक्तिकपुतिजलोज्ज्वलमन्तर्मुक्षि कुम्भयुगलं कलयद्भिः ।

योऽजरोधविधैर्मलिनाङ्गैरिमिः करिकुलैश्च सिषेवे ॥ ४१ ॥

अर्थव्यर्धितदुस्सहदुर्विधिलिपिर्हिदुःकुम्भिकुम्भच्छिदासिहः श्रीजयसिंहदेवनृपतिः श्रीवेश्म तस्मादभूत् ।

सङ्ग्रासक्षमहतावनीधवनवस्वर्वासिसन्नुष्टये, चक्रे यः कतुचक्रवालमवनीशक्रो न शक्यये ॥ ४२ ॥

पद्मा पद्ममपास्य पद्मजमितं यत्सारिकेतावलीरोलम्भप्रविरोलदमुल्लिङ्गं भजे कराम्भोरुहम् ।

शेषं बासुवर्धं विसृज्य सचलं दोर्गामगादासिः, कृष्णोऽपि मियमेल्कामिधमभूत् तत्तीर्थमेतद्भुजः ॥ ४३ ॥

न्यस्यावश्यं शिरसि विरसि क्रन्दतां पादमेधां, राज्यं ग्राह्यं हुतमिति रणे यः प्रतिज्ञां प्रतिने ।

पुतरपादोपरि तु परितः स्वं परित्यस्य मौलि, प्रीतिरन्तः प्रतितृपतिभिः प्रत्युत प्रापि लक्ष्मीः ॥ ४४ ॥

भाजमजिन्नमजिराजिचरणमुष्णक्षमामण्डलमोक्षलोदकदम्बदम्बरपरिच्छिन्नाम्बरे सन्नरे ।

यत्कीर्णयकदण्डमण्डितरिपुःशमापालमालावृत्तिव्यासकृता न परं पुरन्दरसुरीनार्यः स्वकार्यक्षमाः ॥ ४५ ॥

शेषः सैष जवाद् यशोऽनिलनिधौ शान्तिः प्रतापानले, शत्रूणां शिरसि च्युतेऽपि हसितं नृचं कवच्येव्यपि ।

सत्यं सन्नरसन्नरस्य महिमा सोत्साहमन्त्रम्बितेयस्योर्ध्वः करवाल एव यः कथं सिद्धो न सिद्धाधिपः ॥ ४६ ॥

विद्वौजमि गते भयादनिविद्वौजसि स्वर्गिर्हि, तदीयदिशि यः स्फुरजिह्व महे-यशःक्षमारहो ।

अरोपयदहो ! पयःपतिनटोऽधुनाऽप्यन्वहं, ततोऽप्युदयतो नवौ रवि-निशाचयो पल्लवौ ॥ ४७ ॥

रक्ष्यां रसिष्ठमशमे दितमपि श्यामे सदुज्ये यमे, यद्भृत्यैरमिमूतदक्षिणककुब्जमौर्द्ध्वो माविधीः ।

मास्म द्राक्षन्दि दुःखैरिति नताः पाराय वारानिधेर्भुजः सेतुमुचं ततः कविमयाच्युतोम रक्षोमरः ॥ ४८ ॥

१ पपमिर् २ दस्यमीयवस्तुपान्मुनी जटमपयतेनापि कर्ता ॥ २ धुपिपिने उदयप्रमीयवस्तुपान्मुनी ॥  
३ "नितं दय" धो ॥ ४ "त्यस्तदहस्तां" मुदिने ॥ ५ "भुर्भिमिलिताङ्गैः, मुदिने ॥ ६ अधिम्य" मुदिने ॥  
७ विभिः मुदिने ॥

विलुप्तशः पार्श्वं निजतनुविनाशाय वरुणः, शुचा गेजे विमलपरहरितो यत्र विमुताम् ।  
 किमन्यच्चन्द्रार्काविह दिशि गतौ यस्य च यत्रः-प्रतापाम्यामम्भःपतिपयसि डीनौ निपततः ॥ ४९ ॥  
 यस्मिन्नुत्तरदिगते बलचलच्चूर्णावलीभिः स्थलीभूवं मेति नदीपतिर्दुतमयं मेरोः परेणागमत् ।  
 तेने किञ्च निकेतनं धनपतिः कैलाशशैले सुसम्प्राप्तमन्यमना मनापि न चासुखत् तटं शूलिनः ॥ ५० ॥  
 तेजोवह्निहुताष्टदिगन्तुपसमिद्यज्जानयूपोपमैर्नदक् कोऽपि पतिः क्षितेरिति दिशामूर्च्छाङ्गुलीसन्निभैः ।  
 भालानप्रतिमैर्दिगीशकरिणां दिग्मण्डपोचम्भनस्तम्भस्तोमनिभैश्च यस्य विजयस्तम्भैर्दिगन्ता यमुः ॥ ५१ ॥

क्षेप्तुं शार्ङ्गधरस्य शेखरमणिं शूलयुधस्य द्विपं,

यस्मात्स्थ रदं परश्वधमृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भेटो विधैकधामा यशो,

नामा[SS]यस्य हहा ! जहार तु कुतो युयं जरद्भक्षणः ? ॥ ५२ ॥

अस्य त्रिक्रमविक्रमस्य न मुदे श्लाघा जगज्जाह्निकी,

लक्षयानामपि कष्टमष्टककुमां जेताऽयमेतावती ।

क्षोणीकम्पिनि धूतधूलिनि बले यस्याहि विश्वेश्वरः,

शेषो नाम ननाम धाम युयुचे गानुर्नभोमूषणम् ॥ ५३ ॥

क्रान्तशक्रबलो भग्नभोगिलोकः क्षितिं जयन् । येन बर्षरदैत्येन्द्रः, पुरीपरिसरे हतः ॥ ५४ ॥

दृष्टोऽभून्मुशलध्वजः स्वकुञ्जलघ्यानेन जिप्पुः समयम्राजिप्पुर्मुदितः समुद्रशयनो रुद्रोऽपि मुद्रामुदा ।

उरिक्षसे किल बर्षरस्य शिरसि क्रूरस्य विश्वत्रयीजेतुर्येन तदा विधुन्वुदधिया भीतस्तु शीतघृतिः ॥ ५५ ॥

संज्ञे नृपतिशतैः कृतांस्त्रिसेवः, क्षमापालस्तदनु कुमारपालदेवः ।

निर्वीराविभवमुचाऽपि येन मुष्टा, निर्वीरा रिपुवमुचा नितान्तपुष्टा ॥ ५६ ॥

सैन्यप्रकम्पितधराविधुरात्मकेषु, पोतैरलङ्घ्यसलिलेषु धुनीष्वेषु ।

धीजैनचैत्यरचनेन शिलोच्चयेषु, यस्याजनिष्ट चरणः शरणं रिपूणाम् ॥ ५७ ॥

यस्य सधनि सदा हयरोतोः, खाद्यमुद्रबल्यं दल्यद्विः ।

सिच्यते सुचिरसञ्चितशोर्कैर्वैरिभिर्नवनवारिभिरेव ॥ ५८ ॥

दासवर्तिन इवाऽऽस्यसमुत्थश्चासनाशिततृणामु विपक्षाः ।

प्रातरश्रुसलिलेन यदीयद्वारभूमिषु रजः स्रगयन्ति ॥ ५९ ॥

अग्रे हम्मीरवीरश्चिरमजिरमहीपादपः पादपद्म-

क्रीडाभृङ्गः कलिङ्गः सदनवदनगो मेदपाटः कपाटः ।

अन्ध्रः कर्णाट-लाटौ कुरु-मरु-मुरला वङ्ग-गौडा-ऽङ्ग-चौडाः,

क्रोडस्तम्भाः समायामिति नृपतिकुलैराकुलैरावृतौ यः ॥ ६० ॥

कप्यन्ते न महीमृतः कति महीयांसो महीरोखराः, माहात्यं स्तुमहे तु हेतुनिगमादेतस्य चेतोहरम् ।

मर्यादामतिलहयन् रसलसद्यद्वाहिनीवाहितोऽर्णोराजः स जगाम जाङ्गलमहीमार्गेषु भग्नोत्ततिः ॥ ६१ ॥

१. पद्यमिदं उदयप्रभोदयस्तुपालस्तुतौ सप्तमप्यत्वेनापि वर्तते ॥ २ 'टो निस्तीमधामा उदयप्रभोद-  
 यस्तुपालस्तुतौ ॥ ३ कीतश' वा० ॥

दर्शं दर्शमसद्यदर्शनकचं कल्पान्तश्चिन्त्यान्तकप्रक्रीटद्रवनासनागमिभितो यत्नश्चलेतां युधि ।  
वित्रस्तस्य चमूचैः सह तथा प्राग्विधत्क्षमा मुजः, प्रस्वेदान्मु जगाल जाङ्गलमुबोऽभूवक्षन्ना यथा ॥६२॥

क्षीणत्वं दाक्षिणात्या व्यरचयदमुचन्मालवी बालवीसा-

दुःसादशूणि हूणी शुचमधित दधौ जाङ्गली नाङ्गलीलाय ।

कुञ्जाऽऽसीत् कन्यकुञ्जा शिरसि सुतमरात् कौङ्कणी कङ्कणानां,

वृन्दं सेदाद् विभेदावनिमृति चलिते यात्रया यत्र जैत्रे ॥ ६३ ॥

कोदण्डं स्वकरे कुरुर्न कुरुते सज्जं गलङ्गलसस्तो वेत्ति नितम्बतो न वसनं कीरो न वीरोचितः ।

युद्धक्षीणेषु दक्षिणः क्षितिपतिर्न क्षोदवक्षोदयद्वाहुर्धृत्यसहस्रचक्षुषि मुहुर्धृस्मिन् धनुर्विभवति ॥ ६४ ॥

जगद्धन्यन्मन्यः प्रबलजलदुर्गाऽर्जुनमढी, यदीयैरुद्यद्भिर्बलपरिवृष्टैः पौरुषदृष्टैः ।

हयोत्सातक्षीणीवितरजसा सिन्धुपरिसां, स्थलीकुल्य कीडासमिति दमितः कौङ्कणपतिः ॥ ६५ ॥

पदं विजयसम्पद्रामजयपालदेवोऽखिलद्विषन्पतिमृत्युमृष्य बभूव भूबल्लभः ।

रराज सुरराजवज्रगति यस्तनुदिम्बितप्रियाचयविलोचनाम्बुजसहस्रनेत्राश्रितः ॥ ६६ ॥

यस्मिन् पश्यति वेदमनोऽङ्गणमुषि आन्तेऽपि मघद्विषे, नेशुर्नाऽऽशु नृपा व्योपायरुचयः सेवामयव्रीहया ।

शोकश्यामतमानिमानपि पुनः प्रेक्ष्य द्विषो नापिषद्, दग्धक्षमारुहसण्डसण्डनविधौ कुर्वन्वज्रामिव ६७

आजन्मत्रासहेतुयमसमदहृद्ः कण्टकाः कण्टकदु-

द्रोणीचीरुक्त्वचोऽपि स्तत्पदुपलशिलागोगमुग्गाद्भयोऽपि ।

अक्षुष्टं नर्तयित्वा मृतपदमभवन् यस्य सेनामयानां,

निःस्थानप्यानजैत्रलसुरगमृतां पश्यतामप्यदृश्याः ॥ ६८ ॥

समहृतमहं बद्धा वष्या समं न समानये, यदि तदवनीनेता नेति प्रणीतरणो रिपुः ।

किमपि न पुनः कर्तुं मर्तुः स यस्य दृष्टाक तन्नियतममुचत् प्राज्यं राज्यं सतामवलं वचः ॥ ६९ ॥

### धीरधवलबंशवर्णनम्

मूलं कीर्तितेसातर्तः समजान् श्रीमूलराजो नृपस्तत्पदं करकेलिकन्दुकफलक्ष्मीगोलको बालकः ।

यस्मै दण्डमस्तण्डहर्षकृतये हम्भीरभूमीरुहप्रस्वेदप्रभवं समर्पितवती मातेव कौतुहलात् ॥ ७० ॥

सन्तापं यत्प्रतापस्य, तुरुष्करसहिष्णुभिः । आपादमस्तकं चक्रे, ध्रुवं बासोऽवगुण्ठनम् ॥ ७१ ॥

रिपुर्ननेत्राग्नोपयरयनदीमातृकयथा, विद्यामिधो भीमः समभवदुदात्तदनुजः ।

अलन्धारिस्तोमः पुरनृप विमत्कारिषु फलप्रदेषु प्रदेषं विरचयति दानैकरसिकः ॥ ७२ ॥

संलीनानामनुवटवनं तीरविशान्तनीरसीतुल्यानां यदरिमुदृष्ट्वा दिक्षु रेजुर्गुप्तानि ।

उत्कृष्टोतः सह बहुविधैरेव रत्नाकरोऽयं, रात्रौ रत्नान्यतनुत बहिः सोमनामानि मन्ये ॥ ७३ ॥

धामां धाम कुमारपालपरणीपालप्रसादास्पदं, चौलुक्थो घनलाङ्गमूर्धस्मतिः श्रीमीमपल्लीपतिः ।

अर्णोरात्रनृपे व्यपद्य नृपतिं मामेतदीयः पिता, मलैवं लवणप्रसादनृपतौ दमाभारमेष व्यधात् ॥७४॥

१ 'गर्जितमयैवदी' मुद्रिते ॥ २ 'व्ययाय' मुद्रिते ॥ ३ 'दमापाल' मुद्रिते ॥ ४ 'यो न्यय' मुद्रिते ॥

यत्तत्रदण्डयमुनाम्भसि मेदपाट-चन्द्रावतीपुरपती त्रिदिवाय मग्नौ ।  
 चक्राम चक्रमवनेरथ पूर्णमणोरञ्जस्य तस्य तनयो लवणप्रसादः ॥ ७५ ॥  
 पोरारण्यविलङ्घनैरतिधनै रीणाऽप्यरीणामहो !, राजिर्वाजिविजित्वरत्नरगतिर्वित्रस्य यस्याऽऽहवे ।  
 स्वामात्यक्रमकर्ममर्मरवानाकर्णयन्ती गता, प्राणत्राणवनावनावपि भिया मिश्रा न विश्राम्यति ॥ ७६ ॥  
 कोपानिज्वलितस्तदस्थवल्बुत्कारविस्फारिता, निर्भन्नाश्चरणेन काचकुतप्रपाया तिकाया द्विपाम् ।  
 बहुष्कीर्तिमिपद्रवज्वमपीचक्रेण चक्रेऽम्बरं, श्यामं यस्य यशःपयोभिरभितः प्रक्षालितं निर्मलैः ॥ ७७ ॥  
 किं वर्णो लवणप्रसादनृपतिः ? पाणौ कृपाणच्छलं, कालं बालमहो महोभरजितादादायै सूरदपि ।  
 यो मुष्टिग्रहलालितं प्रतिपदं कोपारुणः कम्पयन्, दिग्नेता रिपुमुण्डमोदकचयैरुच्चै र्वचं नीतवान् ॥ ७८ ॥  
 नताशेषद्वेषितपिहितपूजः प्रतिपदं, तनूजस्तस्याऽऽस्ते भुजगजगदीशद्युतियशाः ।  
 अधीशो धीराणां धवलकुलधौरेयधवलः, श्रियां सौधं धीमान् धवलचरितो वीरधवलः ॥ ७९ ॥

देशोऽरण्यप्रदेशो नगरमगरसा कन्दरा मन्दिराली,  
 तूली धूलीनिवेशस्तृणमृतकबरीधानमेयोपधानम् ।

कायच्छायाऽनुगह्नी प्रतिदिनमशनं कन्दमूलं दुकूलं,  
 वल्कं दारिद्र्यकल्कं सचिव इति शुचिर्यद्विषां राज्यलक्ष्मीः ॥ ८० ॥

न किं स हरितुल्यतास्तुतिपु रज्जते ? यजितैररातिनिवर्हेर्महागिरिगुहागृहेकस्पृहेः ।  
 विजित्य मृगवैरिणो निजपुरे नियुक्ताः स्वयं, गृहोपवनमूलां विरचयन्ति रक्षां किल ॥ ८१ ॥  
 दूरं दुर्लभितेन यस्य महसा शङ्केऽम्बरं त्याजिता, कीर्तिर्वीरमहीमृतां तव भवद्वैलक्ष्यकृष्णच्छविः ।  
 गूढक्ष्माधरकुञ्जपुञ्जसदनोत्सङ्गे तमश्छदना, चक्रे नाशविनाशमेव रुदतीवाप्योपमैर्निर्भरैः ॥ ८२ ॥

अन्तर्व्योम श्रयन्ती मधुरमधु विषुच्छन्नशुभ्रच्छदं वि-  
 षपन्नं नक्षत्रलक्षच्छलजलकणिकं भानुमद्भापरागम् ।

आन्तर्धान्तद्विरेफमजमजरगिरिव्याजकिञ्जल्कमेत-  
 ह्रीलां नीलाम्बुजस्य श्रयति वियदहो ! यद्यस्तोयराशौ ॥ ८३ ॥

अप्राप्ततादृशगुणां युवति नितम्बस्तम्ब-स्तनस्तवकभारमृतोऽहसन् याः ।  
 माधामु यस्य पृथनासु पुरे रिपूणां, साक्षासकालरुसिता हसितास्तयाऽपि ॥ ८४ ॥

प्रतिदिनमपि रौद्रैर्यस्य तप्तः प्रतापैरिति समिति समेतः संभविष्टोऽसिदण्डे ।  
 जिगमिपुरिरवर्गः स्वर्गमग्रे तडागं, हिममयमिव मेने भानुमानन्दमग्नः ॥ ८५ ॥

यस्य न्यक्षितचापचापरचलनाराचवीचीचयव्यस्तत्रस्तसमस्तसैनिकजनव्यालोरुशोकाकुलाः ।  
 खेदस्वेदमयं पयःकणगणं माले दधुर्गौरु, व्यक्तं मौक्तिकपट्टबन्धनमिव प्रत्यर्थिष्टृष्वीमुजः ॥ ८६ ॥

कुन्दे युद्धेऽपि गस्मिन् रिपुनृपनिकरः केशव-व्योमकेश-  
 ब्रह्मादीनां पदाब्जैरपि गतसि पृथै रक्षितो न हतैर्मयः ।

रक्षासायानमालकमकमलयुगप्राप्तवेगप्रसादा-  
 देताम्नो देवताम्नः कथमिव भुवने नापिकोऽगून् प्रभावैः ? ॥ ८७ ॥

यत्त्वञ्जतकुम्भिकुम्भविगलकीलालकलोलिनीपङ्क्तिर्व्यक्तयशोमहीरुहमहो । निर्मूल्यन्ती द्विषाम् ।  
 तेषामेव महोदवानलभरं शान्तिं नयन्ती ययौ, मुक्तामण्डलमण्डिताञ्जुधिमगात् तेनैव रत्नाकरः ॥८८॥  
 यद्दोर्मण्डलकुण्डलीकृतधनुःश्रीङ्गिकाण्डावलिन्यासत्रासपराः परं मियतमा नेशुर्द्विषां वक्षसः ।  
 तासांमप्युरतो रतोत्तरंलरादुःखातुराणामयं, कन्दर्पः करकोटिकुण्डनवराद् दूरेण तूर्णं ययौ ॥ ८९ ॥  
 प्रत्याकारच्छलगुरुदरीनिःसृतः श्यामकान्तिः, सर्पन् सर्पश्रियमकलयद् यस्य पाणौ कृपाणः ।  
 यं ज्वालोक्ष्य प्रस्रभयक्षोराक्षिनिर्मोकभाजं, द्वेषिक्षोणीपरिवृद्धमहोदीपकः प्राप शान्तिम् ॥ ९० ॥  
 युद्धपर्वणि कदापि न दृष्टं, यस्य पृष्ठमसुहृन्निगुरुष्वैः ।  
 सप्रतिज्ञमिव बीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरस्वभानि ॥ ९१ ॥  
 कुण्डलप्रतिमितस्वभुजाभ्यां, यश्चतुर्भुज इव प्रतिभाति ।  
 चारुचक्रमनुबन्धि दधानो, बाणयुद्धजितकामविपक्षः ॥ ९२ ॥  
 यस्पदान्मुजयुगं रणधूलीधूसरं चिकुरमार्जनिकाभिः ।  
 मार्जयन्ति विनता रिपुनार्यः, श्रीनिकेतमिय हस्तधृताभिः ॥ ९३ ॥

यद्दानप्रभवप्रभूतकनकप्राग्भासरसारस्फुरन्नेपथ्यप्रचयप्रकम्पितरुचः प्रेक्ष्य द्विजैर्नां प्रियाः ।  
 विन्ध्योल्लासमयाद् घटोद्भवमुनेयोम्योऽप्युपेतो न यल्लोपासुद्रिकया तिरस्कृतिगिरा तस्मादुपालम्भते ॥९४॥  
 यस्मिन् दाननिदानकाञ्चनचयस्फेरस्करं कर्णिकोचालस्तालदलं न बाञ्छति जनः प्राणमियाप्रीतये ।  
 तस्मान्मूलपद्मेऽखिले फलगलन्मैरयसिक्कोलसत्तृण्याभिस्तृणराज एष सममूत् तथ्याभिधानस्ततः ॥९५॥  
 श्रुभङ्गिमतिविन्धतोरणदलं प्रौढप्रतापच्छलप्रोचहीपमदभ्रशुभ्रयशसा लिप्तं सुधास्पर्द्धिर्ना ।  
 पयासस्य विभाति धीरधवलकोणीधलङ्गं पुरो, युद्धकुब्जचिरोपिरोधिपरित्वाविस्फारधाराजलम् ॥९६॥  
 उपार्जि विमुताऽद्भुता वसुमती च नीता वशं, क सम्प्रति महामतीं धृतभरे भवेयं सुखी ! ।  
 जनेन गदितैरिति स्फुटसभाजनैर्भाजनैः, श्रियामिति सभाजनैः शुचिविचारमूचे वचः ॥ ९७ ॥

### यस्तुपालवंशवर्णनम्

वंशोऽयं प्रथितोऽतिः प्रभवति प्राग्भाट इत्याह्वया, पुण्यः पुण्यसुधारसेन शुचिना सोद्रेकसेकक्रियः ।  
 दिव्यामन्मरुत्स्थिनीं सुचरितप्रासादमासादमन्, कीर्षि केतनकौतुकेन तनुते यः स्वर्धुनीरपङ्क्तिनीम् ॥९८॥  
 अचिद्भो यदि तत्कृतो गुरुगुणधेजिर्जलस्तत् कृतस्तेजस्वी यदि धीमतां हृदि गतधूडामणिश्चेत् कुतः ! ।  
 वंशेऽस्मिन्नजनिष्ट विष्टपञ्चमत्कारीति कीर्तिप्रभाशुभो मौक्तिकरत्नवत्तनववश्रीमण्डितश्चण्डपः ॥ ९९ ॥  
 चण्डप्रसाद इति तस्य सुतस्ततोऽमृद्, गत्कीर्तिर्गिर्षवलितेऽम्बरभित्तिभागे ।  
 लीलां लली लिपिरयस रत्नाञ्चरन्तोः, कीडारयः प्रकटमेकरयाञ्चशोभी ॥ १०० ॥  
 समजनि जिनसेवानित्यदेवाकृतृभिः, प्रगुणगुणगणश्रीस्तस्य कान्ता जयधीः ।  
 जगति घनतमोभिः कदमले मानसान्त, किल विलसति यस्याः शुद्धहंसो विवेकः ॥ १०१ ॥

१ पयसिर्द उदयप्रभायवस्तुपालस्तुती वक्ष्ययनयाऽपि विद्यते ॥ २ जातिप्रियाः प्रिये ॥ ३ मुनिर्घो  
 कां ॥ ४ तापोच्छलप्रो शुद्धि ॥ ५ तीर्थने भो यशं कां ॥



माधुर्यधुर्यमधुरोभगुणैकशोभनिष्कम्पसम्पदलिनीनलिनीवनश्रीः ।

॥ १५ ॥

सुरस्ततस्तनुभवोऽनुभवोपमुक्तमाग्यप्रभावविभवो नयमूर्ध्वमूव

॥ १०२ ॥

स श्रीमानुदयाचलोज्ज्वलरुचिर्मेघं दधानो जने, भूरः क्रूरतमःसमुच्चवभिद्राशूरः कथं वर्ण्यते ? ।

अन्योन्यव्यतिपन्नसङ्गतरुचि व्योमच्छले पल्लवे, तेजःकीर्तिमिषेण चक्रमियुनं सयोजयामास यः ॥ १०३ ॥

भ्राता वातायन इव धियां तस्य निःसीमकीर्तिस्तोमः सोमः समजनि जनालोकनीयः कनीयान् ।

देवो देधेय्यिव जिनपतिमानसे, मानसेकाद्, यस्यावश्यं नृपतिषु पतिः सिद्धराजो रराज ॥ १०४ ॥

विश्वानन्दकरः सदा गुरुरुचिर्जीमूतपूतोन्नतिः, सोमः कोऽपि पवित्रचित्रविकसदेवेशधर्मोन्नतिः ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिकुहरे यः स्वातिर्द्वैष्टिप्रज्ञैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनीमूषणम् ॥ १०५ ॥

एतस्य विकसद्भारामस्याजनि वल्लभा । सीताऽऽभूतनयाऽप्येषा, न कुशील्वसन्मतिः ॥ १०६ ॥

आशाराज इति व्यराजयदथ क्षमासण्डमासण्डल-

क्रीडासिन्धुरपश्यतोहरयशःस्तोमेन पुत्रस्तयोः ।

श्रीमान् सोमसमुद्भवो निजमवेऽम्भोषौ गिरीशान् गुरुन्,

सेतुकृत्य तिरोदधे स्वकुलजाहङ्कारमुष्णद्युतः

॥ १०७ ॥

यस्तीर्थानां प्रकरमकरोल्लोकनिर्माणकर्मालङ्कर्मणो विधिरधिगतः सोऽभुजन्माङ्गजन्मा ।

आम्यामुच्चैस्तदपि विजितं यो विनिन्येति चित्ते, भक्तिं धीमानकृत जननीपादयोरादरेण ॥ १०८ ॥

दणालोकेऽर्थिलोके सुरसुरभिरिव भ्राजते यस्य बाणी,

चेतोवृत्तिश्च चिन्तामणिरिव फलदः कल्पशासीव पाणिः ।

स्तुत्योऽस्तौ कस्य न स्यादमरगिरिसमः सुर-सोमप्रसर्प-

चेजःपुञ्जामितश्रीर्लसितसितयशोदम्भजगारिकुम्भी ?

॥ १०९ ॥

तस्य प्रिया मुदमधुच पिनाकपाणेर्देवी कुमारजननीव कुमारदेवी ।

इन्दुः सदा रिपुरजीयत पङ्कजश्रीसर्वस्वदानमुदितेन मुखेन यस्याः

॥ ११० ॥

किमस्मान्तस्तरोधरेऽवरला कल्पद्रुमकल्पाङ्गजश्रेणीभिन्दन्भूमिद्विभूतभास्तिशिशिरेष्वचन्द्रश्रुतिः ।

शश्वद्विधविनाशतत्परिनयापः कारभागीरथी, या मुक्ताफलनिर्मलद्युतिगुणामिव्यक्तिगुक्तिर्भवौ ॥ १११ ॥

चत्वारस्तनया मयाहूतिरसाः कैसारिदोर्विक्रमा, गोदावर्य इवोज्ज्वला दुहितरः सप्त प्रसूतास्तयोः ।

आमिद्वादशतां यदीयवदनैर्लेभे मुषादीधितिर्बद्धस्पन्दं इवाखिलाकर्णरतोच्छेदाज्जगन्मोदयन् ॥ ११२ ॥

लायण्याङ्ग इति द्युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवत्, अङ्गे शङ्करकोपविग्रममरादासीदनङ्गः स्मरः ।

१ उत्तरार्धमिदं उदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ सप्तविंशतितमपद्येऽपि दृश्यते ॥ २ 'वृष्टिं मुहुः, कृत्या मौक्तिकनिर्मलं निजयशो दिक्कामिनीमण्डनम् उदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ ॥ ३ 'चलन्म' शुद्धिरे ॥ ४ यः श्रीसोम' कं ॥

५ पयमिदमुदयप्रभमान्ना निर्दिष्टं पाठयेदेन प्राचीनलेखसंग्रह माय २ गत ४३ संख्यागिरिनारसत्तलशिलालेखे दृश्यते । तथाहि-

लायण्याङ्ग इति द्युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवत्,

भ्राता यस्य निशानिशान्तयिकसञ्चन्द्रप्रकाशाननः ।

शङ्गे शङ्करकोपसम्भ्रममरादासीदनङ्गः स्मरः,

साक्षादङ्गमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गाङ्गनामिलेषु ॥ ४ ॥

सर्वाङ्गं सुभगोऽयमित्यनिगिष्यल्लेख्येन बाल्ये हृतः, त्यक्त्वा गूढरूपं सुरेन्द्रसदसि कीडातति निर्ममे ॥११३॥

महद्देव इति देवतापिपश्रीरगूत् तदनुभविर्भूतिभूः ।

धर्मकर्मधिपणावशो यशोराशिदासितसितद्युतिद्युतिः ॥ ११४ ॥

रेक्तः सद्गतिभावभावि चरणे स्मेरास्पपक्षेरुहप्रकीडत्परमेष्ठिवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलभिर्मलमानसेन समयं कापि श्रयन् पङ्क्तिं, जिष्णे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः ॥११५॥

आस्ते तस्य सुधारहस्यकवितानिष्ठः कनिष्ठः कृती, वन्धुर्वन्धुरबुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिषः ।

ज्ञानाम्मोहकोटरे अमरतां सारङ्गसाम्यं यशःसोमे शीखितुलं व मस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ ॥११६॥

हैस्ताम्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुमैरः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यद्बुद्धिः कल्पितोरुद्धिपगहनपरक्षोणिभृद्बुद्धिसम्प-

होपायुत्राभिर्षा स्फुरति लसदिनस्फारसञ्चारहेतुः ॥ ११७ ॥

तदिमं मौलिषु मौलिं, कुरूपे पुरुषेश ! सकलसचिवानाम् ।

क्षितिधव ! तत्तव दोष्णोर्विष्णोरिव भवति विश्रामः ॥ ११८ ॥

श्रुत्वेति मुदितहृदयः, पुण्यप्रागल्भ्यलभ्यसम्भारिभू ।

अनयोरनयोऽजितयोर्धरणिभवं न्यषित धरणिधवः ॥ ११९ ॥

सौऽयं प्रख्यातकीर्तिः सुजनजनमनःपञ्चोषोष्पक्षमा,

श्रीतेजःपालनामा स्फुरति भविलतास्थानकैटपद्वृक्षः ।

पाठारम्भाय लक्ष्म्या दुहितुरिव दधत् पट्टिकां वप्यैवर्णां,

मुक्तादभ्रैर्न गम्भीरिमगरिमणुयैवः पयोराशिरासीत् ॥ १२० ॥

दिग्गयात्रोत्सववीरवीरधवलक्षोणीधवाप्यासितं,

मार्ज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।

भ्रात्रि भ्रातरि दक्षिणे तमणुणे श्रीवस्तुपारक्तः कर्म,

न श्याप्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं ॥ वामस्थितिः ॥ १२१ ॥

यत्कीर्तिप्रसरे, परस्परपरिस्पन्दोर्द्ध्वदिप्युभिर्दूरं दारितमेतदम्बरमिह अर्धं भुवो मण्डले ।

राशीभाववरिष्णुभीन-भकराघाकीर्णमर्पितव्याजादजन्ममञ्जुलच्छवि न कैः प्रत्यक्षमुपेक्ष्यते ॥१२२॥

नीसा वशं विषमवारिगुणेन बाहुस्तम्भे धृता कनकशृङ्खलिकाभियोगात् ।

श्रीर्धेन तिनुरवधूरिव गूरिवर्षादानप्रमोदितघनोदितमार्गणालिः ॥ १२३ ॥

१ श्रीडां ततो निं वा० ॥ २ पयमिदमुदयप्रमनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिना रमन्तिनालेखे दृश्यते । पुराणं च तत्र पाठ्येदेन वर्तते—रक्तः सद्गतिमाधमाजि चरणे श्रीमहद्देवोऽपरो, यद्वाता परमेष्ठि० ॥ ३ पयमिदमुदयप्रमनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४३ तमगिरिनासत्कशिलालेखे भट्टमपयनया वर्तते ॥ ४ 'धिपस्य स्फुर' गिरिनासिलालेखे ॥ ५ 'मोक्षगुण' मुदिते ॥ ६ 'कण्ठश्रवणा' ४० ॥ ७ पयमिदं उदयप्रमीनस्तुपास्तुती एकदशपयनया, प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ लेख ४३ मध्ये उदय प्रमनाम्ना कृतीपयनया च वर्तते ॥ ८ पुर्ये आ' उदयप्रमीनस्तुपास्तुती ॥ ९ 'श्रुल्लब्धाजयोगात्' वा० ॥

धाम्नि स्वर्धामशैलं प्रियवचसि सुधामानने यामिनीशं,  
कण्ठे वैकुण्ठशङ्खं भुजशिरस्युगे जम्भभित्कुम्भिकुम्भौ ।

पुण्योत्पन्नस्य यस्य स्वयमसमचमत्कारिरूपस्य पाणौ,  
प्रत्यक्षं कल्पवृक्षं जगति जनयतश्चातुरी भातु घातुः ॥ १२४ ॥

लावण्यद्रवकूपरूपसुभगे निःशेषनेतस्विना-

मन्तर्वासिनि चाग्वशंवदमधौ राजप्रसादोज्ज्वले ।

एतस्मिन् सुमनोमनोरमशुणैर्विश्वं च विश्वत्रयं,

वश्यङ्कुर्वति सोऽपि सम्प्रति पदभ्रष्टो मनोभूरभूत् ॥ १२५ ॥

अम्भोदभ्रमभाजि दुर्जनजने श्यामायमानघुतौ,

तन्वाने भुवनेषु दुस्तमतमःस्तोमं कुकीर्तिच्छलात् ।

लब्धोच्चश्रमराममार्गणमुत्तल्यात्तश्रुतिद्वारत-

स्तूर्णं मानसमानशे सुमनसां हंसोज्ज्वलैर्यदुणेः ॥ १२६ ॥

मूलस्थूलहरितकरिस्थिरपदं शुभ्रप्रभं भूमिभृदम्भस्तम्भमरं नमःसुरसरिद्विधाज्वज्जगज्जिनम् ।

उत्तुङ्गं जगतीतलेऽतुल्यशःप्रासादमासाद्य यश्चिन्तातीतफलभ्रदोऽवनिजने देवोऽस्तु सेवोन्मुखे ॥ १२७ ॥

हैन्दुर्विन्दुरपां सुरेश्वरसरिङ्गिण्डीरपिण्डः पति-

भांसां विद्वमकन्दैलो विषु नमः श्रीवत्सलक्ष्मा किल ।

कैलास-त्रिदशेभ-शम्भु-हिमवत्प्रायास्तु मुक्ताफल-

स्तोमः कोमलबालकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी ॥ १२८ ॥

गैर्जलिर्जरकुजरे मुरजति मौढोर्मिभिर्नृत्यति, क्षीराब्धौ कलहंसिकाकलकलैर्गङ्गाजले गायति ।

श्यामाकामुकपारिषार्धकयुतो विश्वत्रयीसम्भदक्रीडानाटकसूत्रधारपदवी यत्कीर्तिपूरो ययौ ॥ १२९ ॥

जङ्घतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमघन्दस्य चिद्रूपता-

माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाब्धिग्रन्थात्मनः ? ।

दुःस्थानां प्रतिभूर्भूतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,

दृक्पतैर्वितथैवं येन कविता काऽपि श्रीलोकीकवेः ॥ १३० ॥

यत्कीर्तिः स्वैरभैरावणमदसमदभ्रान्तमृत्कालिगीर्त-

स्फूर्जद्गौर्गानिनादस्फुरदुस्सुरजोछासितायाः सितायाः ।

नित्यं नैचं सृजन्त्याः शिरसि मुरगिरेक्षारुचारीप्रचार-

स्पष्टप्रभ्रष्टहाराबलिगलितमणिभ्रान्तिभायान्ति ताराः ॥ १३१ ॥

१ 'भ्रमजित्कु' मुद्रिति ॥ २ पद्यमिदमुद्ययप्रमनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह मास्य २ मध्ये ४३ मंख-  
गिरिनारसत्यशिलालेखे सप्तमपद्यतयाऽपि कर्तते ॥ ३ 'न्दुलः किल विमुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः गिरिनार-  
शिलालेखे ॥ ४ इत आरम्य ग्रीष्म पथानि उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ स्वप्न १२-१३-१४ पद्यतया वर्तन्ते ॥  
५ 'चण्डस्य उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ६ 'मृतीव चिदधौ मा' मुद्रिति ॥ ७ 'य काचन लिपियेन  
त्रिवेदीकवेः उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ ८ 'गीतैः स्फु' मुद्रिति ॥ ९ 'जामुदरूपवनिभिरिय सप्तह्रासि'  
उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥ १० नृत्यं सृ' उदयप्रमीयवस्तुपालस्तुतौ ॥

अस्मद्वोत्रैकमित्रं त्वमसि निशि शशी कीडया पीडयेन्नः,

सद्वे पङ्कजैः श्रीरिति गदितुमिव प्रीतिमुक्ता निमुक्ता ।

तेवस्या यस्य ताम्रः कुपित इव करो दानशोभी यशोभि-

र्मुत्यैश्चक्रे तथेन्दुं त्रिजगति स यथा लक्ष्यते नेक्षितोऽपि ॥ १३२ ॥

जाता कृष्णपदात् प्रिया जलनिघेदुष्कर्मभिर्निगमा,

बह्वेवं परिमान्य यत् किल दधौ ह्रस्वां पुरा वै मये ।

तन्मन्येऽस्य कराप्रसम्भृतत्रनिर्मूला गुणश्रेयसी,

कीर्तिः ख्यातिमवाप्य काऽप्यभिनवा गङ्गेयमुज्जृम्भते ॥ १३३ ॥

भैरुर्वैषम्यं विधाय कितवः कोऽन्येति मामुन्मना-

स्तेनामुं विजये ! निवारय यतो मे नीलकण्ठः प्रियः ।

अल्पन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीकृते सर्वत-

क्षौलोन्वेऽपि पिनाकिना सक्षपथं प्रत्यायिता पार्वती ॥ १३४ ॥

क्षीराब्जिर्लठति क्षितौ फणिपतिः स्फारस्फुरत्स्फूत्कृतिर्गङ्गा निम्नमुखी करोत्यलिवभूलौकं रवं कैरवम् ।

अन्तः सन्ततमङ्गपङ्कमिपतश्चन्द्रोऽपि तद्रोपितम्लानिर्दानिवरस्य यस्य यशसा तूर्णं हृते वैमये ॥ १३५ ॥

प्रतीता नीतीवासुपरि परिपाकेन रमते, मतिर्देवे सेवा सकलकर्तृणैकान्तकरणम् ।

अहो ! मत्पावश्यं शठरिपुहृदमाणहरणं, रणं क्षीने दानं सपदि विपदेकक्षयक्यः ॥ १३६ ॥

कौपाटोपपरैः परैश्चलचयूरङ्गचतुर्ङ्गक्षतक्षोणिक्षोदधदादशोपि जलधिरेयं स्तम्भसीरेयं पुरे ।

स्वेदाम्भस्तटिनीषटाघटनाया श्रीवस्तुपालम्फुरतेजस्तिग्मगर्भस्तिगततनुमिस्त्वेव सम्पूरितः ॥ १३७ ॥

यः मत्पथिक्षितिपतिकरिच्छेदमेदस्यदाकिर्मुक्तागौरैरवनिवलम् कीर्तिपूरैरपूरि ।

तं वरगन्तं सुपि विधुरयामास संश्रामसिंहं, निर्विशो यत्करपरिचितः कृष्णसारोऽपि विभ्रम् ॥ १३८ ॥

एषातः सङ्ग्रामसिंहो वा, शङ्खो वा सिन्धुराजम् ।

संयुध्य गज्यमानोऽस्य, युद्धे सत्याभिधोऽभवत् ॥ १३९ ॥

भमः शङ्ख इति स्वैरिदं विपदामाश्लिष्य लक्ष्मीपुत्र,

लक्ष्मीशः किल शङ्खलक्षणि करे चिक्षेप चक्षुश्चलम् ।

पीत्वा लसमवीक्ष्य शङ्खममलं यस्य स्वयं विस्मयं,

यच्छन् कदमलसिन्धुराजतनुभूतीत्यां कृतार्थाकृतः ॥ १४० ॥

असौ कीर्तीः स्वका मन्त्री, कामं प्रीणि जगन्मन । वस्तुपालोऽरिसामन्तयशसायन्तकोऽक्षिपत् ॥ १४१ ॥

पैत्राभिरामहस्तेन, महस्तेन प्रतन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १४२ ॥

१ तत्प्रपद्या यस्य ताम्रः सुक्षिते ॥ २ गुणिश्रेयसी कां० ॥ ३ पवमिदं उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती नयमपयतनापि वर्तते ॥ ४ 'हृते निर्मदं, प्रेम्णे' उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती ॥ ५ पद्यमिदमुदयप्रभाचार्या निर्दिष्टं प्राचीनदेवमर्मद मल २ मध्ये ४३ मध्यमिदं निवारयत्तच्छिण्ठको द्वितीयपयतनाऽपि दृश्यते ॥ ६ 'मस्तिना प्रतनु' सुक्षिते ॥ ७ पद्यमिदं उदयप्रभाचार्यवस्तुपालस्तुती अष्टादशपयतना वर्तते ॥

संयोजितेन मणिमण्डितशतकुम्भकुम्भस्त्रिणा शुचिनखेन करद्वयेन ।

मौलिस्थितेन जिननाथसनाथमध्यप्रासादवद्दिनमुखे क्षणमीक्ष्यते यः ॥ १४३ ॥

मालिन्यं मुमुचे जगत्त्रयशुचेरर्केन्दुमन्दाकिनीसम्पर्कादिपि यत्र दुर्दभतमः सम्बन्धबन्धुकृतम् ।

आकाशेन तदप्यमुच्यत चिरं यत्तीर्थयात्रारजः, स्नात्रादृश्यतटात्वनिर्मलमिलत्कीर्तिद्युतिघोतिना ॥ १४४ ॥

मा मूम्मद्बुवनेऽपि दुस्तरतमस्तोमस्तथा मास्म गृजेत्रेऽपि युमदां सदाविकसिते सम्भीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गमिरजःसमुच्छ्रयभयाद् दम्भोलिपाणिर्महोदधौ मृद्विरसीपिचत् प्रीतिदिनं यत्तीर्थयात्रोधमे ॥ १४५ ॥

यदिकुम्भि-कुलादि-कोल-कमठ-त्र्यालेधरौः खेचराः,

कष्टादेव दधुस्तलं तदवनेर्विष्णुश्रुत्वभिर्भुजैः ।

तत् सङ्गाहभुजेन वीरधवलौ मुद्राङ्गुलीलील्या,

तेजःपालकरस्तदेव सवलः स्यात्तो बलिभ्योऽप्यसौ ॥ १४६ ॥

सहोऽधिरोहन्नि रैवताद्रौ, वस्त्रापयस्थानतपोधनानाम् ।

ददौ यदौचित्यधियाऽपि किञ्चित्, कालेन नीतं करवां तदेतैः ॥ १४७ ॥

यात्रापर्वणि रैवतक्षितिधरे प्रीतोऽत्र मन्त्रीधर-

स्तेजःपाल इदं निशम्य जनतोऽथाऽऽहूय तांस्तापसान् ।

सादं द्रुमसहस्रयुग्ममुचितं दत्त्वोत्तमर्णवजात्,

तद्ग्रामं परिमोचयन् करममु सन्त्याजयामासिवान् ॥ १४८ ॥ युग्मम् ॥

किञ्चेतेन गुणैः गद्याङ्गुलिभिः कृष्टः सुराष्ट्रपतिः,

पित्रोः पुण्यकृते जिनेश्वरकरं श्रीमीमहिहोऽमुचत् ।

तीर्थारक्षकहेतवे तु कृतिना देवादितो दापिता,

सेयं पञ्चशती सुराष्ट्रपतये तस्मै पुराऽभ्यर्चनम् ॥ १४९ ॥

बभूव गोत्रैकगुर्मायीयानेपामशेषागमपारद्वया ।

तागेन्द्रगच्छे स महेन्द्रस्वरिमहेन्द्र-नागेन्द्रयशा शुनीन्द्रः ॥ १५० ॥

कर्मसाक्षिभवतापपीडनं, क्रीडित शमरसौषपल्लवे ।

क्षालिताविलमद स्म दन्तिवद्, यं त्यजन्ति सल्ल कश्मलालयः ॥ १५१ ॥

पन्था ग्रन्थारवाणा मुनिरजनि ततः कोऽपि कल्याणवह्न्याः,

कन्दः कन्दर्पदर्पद्रुमवनदहनग्रान्तिसूः शान्तिसूरिः ।

प्रत्यग्रमुत्थदुर्गवर्णवनवलहरीकल्पजल्पेन यस्मिन्,

जल्पाके कोविदेशे गतिमकृत कृती को विदेशे न गन्तुम् ? ॥ १५२ ॥

आनन्दचन्द्रा-ऽमरचन्द्रसूरी, तत्पटलक्ष्मीमुचिम्पणानौ ।

अन्तःस्फुरदलसपलभूतगुरुकाम्गोजनम्बावभूताम् ॥ १५३ ॥

१ ययमिदं उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतो एतेन निशपयययाऽपि वर्तते ॥ २ त्रेषु युसदां सदाविकसिते-  
प्यामील उदयप्रभोयवस्तुपालस्तुतो ॥ ३ मुच्यते वा मुक्षिते च ॥ ४ प्रतिपदं य उदयप्रभोयवस्तुपाल-  
स्तुतो ॥ ५ रापेभरा. वा. ॥ ६ खडाङ्गेन भुजेन मुक्षिते ॥ ७ प्राशोऽत्र मुक्षिते ॥

दन्तौ धर्ममतज्ञस्य दुरितक्षोणीरुहच्छेदने,

गच्छन्व्योमतलस्य सोम-तरणी मोहान्धकारव्यये ।

सम्यक्त्वक्षितिपस्य दुर्देगरिपुत्रंशे मुञ्चौ शासना-

रम्यस्थौ प्रतिवादिकुम्भदलने यौ व्याघ्र-सिंहौ श्रुतौ ॥ १५४ ॥

श्रीमास्ततोऽजनि मुनिः स तदीयपट्टश्रीपट्टवन्धमुकुटो हरिभद्रधरिः ।

एकत्र सोम-शतपत्रगुणौ सुखाग्रे, शश्वद्विबोधमधुरौ समवासयद् यः ॥ १५५ ॥

नृणां यत्पदपद्मयोर्मुवि भवत्यौक्त्यहेतुर्नेतिर्भाल्म्यस्तरजोव्रजो वितनुते सर्वप्रकर्षोदयम् ।

आधत्ते च नखेन्दुदीपितिमरः पद्माकरोल्लासनं, स्तोमि श्रीहरिभद्रधरिसुगुरोस्तस्याद्भुतं वैभवम् ॥ १५६ ॥

जयति विजयसेनसुरिरीकृतसुकृतस्त्वदयं तदीयपट्टे ।

जितजगदपि भन्मथो न यस्य, व्यथित तनुप्रतिपन्थिनोऽपि तापम् ॥ १५७ ॥

ईन्दुः पद्मावलम्बं व्यथित कुबल्ये दुर्मदात्मा प्रपेदे.

गौर्जिः पर्जन्यदन्ती व्यतनुत जगति स्तम्भमावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं वारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे मशसि विष्टमरे ते ह्यु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १५८ ॥

यस्मादभ्युदयं भजेन्ननु जनो धर्मस्य तस्याप्यसौ,

दूराद् दूरतरं चरत्यनुदिनं संवर्धमानः श्रिया ।

दुर्वैवल्यमानवैभवभरस्तादृक्षलक्ष्मीकृते,

तस्मैवाभिमुखं हि धावति सुवाभानुर्यथा भास्वतः ॥ १५९ ॥

दोषोन्मुद्रणमुद्रितेऽपि दिवसारभास्मिन्तेऽपि स्थिते,

भाग्याग्न्योर्लहि निर्विशेषितमनःसन्तोषपोपस्थितिः ।

अन्तः सन्ततधर्मनिर्मलमधुस्वादैकतानाशयः,

साधुर्माधुकरौ बिभर्ति विरलो वृत्ति जनः कश्चन ॥ १६० ॥

आयुर्वयुहतोर्मिवत् तरुणिमा धूमिभ्रमत्कम्बुवत्,

कम्बुप्रसवदम्बुबुद्बुदकवलक्ष्मीलवोऽप्यन्वहम् ।

सद्यो मुहुदबिन्दुमेदकणवत् तोषोऽपि दोषादिक-

कूटमाहनिषौ कुकर्मजलधौ साक्षादिव मेक्ष्यते ॥ १६१ ॥

ईदृगरूपगुरुपदेशविशदस्वाभाविकस्वच्छधी-

स्तेजःपालनिजानुजानुचरितः श्रीवस्तुपालः कृती ।

शुभादभयशःप्रसूनसुमगश्रीवल्लिकन्दोपमां,

धर्मस्थानपरम्परां रचयितुं धत्तेतमासुधमम् ॥ १६२ ॥

१ पदमिदं उदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ तत्तदशयनयाऽपि निरीक्यते ॥ २ गर्जेन् ४० वा० धुरिते ॥ ३ प्रष्ट-  
मरे उदयप्रभायवस्तुपालस्तुतौ ॥

मेज्जन्तीमवनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधर-

भाग्मारं रचयाञ्चकार यमसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुभगः प्रेक्षामृदङ्गस्त्वनै-

र्गेर्जन् विश्वजैषी जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो मूले

॥ १६३ ॥

स्तम्भनपुर-रैवतगिरिदैवतचैत्ये प्रपञ्चिते येन ।

शत्रुञ्जयजिनपुरतस्तीर्थत्रयमतिफलं कुरुतः

॥ १६४ ॥

शत्रुञ्जये भवपयोधितरार्थतीर्थे, येनेन्द्रमण्डपमखण्डपदं व्यधायि ।

तस्मादुरःकरधृताद्भुतकुम्भशक्त्या, तीर्त्वा तमोजलमयन्ति जना जिनामे ॥ १६५ ॥

अस्मिन्नामिभूवः प्रभोस्तनुमवश्चकी स चक्रे पुरा,

चैत्यं श्रीभरतः परे तु सगरक्ष्मापालमुस्या व्यधुः ।

देवो दाशरथिः पृथासुतपतिः प्राग्वाटभूर्जावडिः,

॥ शैलादित्यनृपः स चागमटमहामन्त्री च तस्योद्धृतिम् ॥ १६६ ॥

व्यातन्वत्तमरेन्द्रमण्डपमयं श्रीरैवत-स्तम्भना-

लङ्कारममुनेमि-पार्श्वसहितं तीर्थेऽत्र शत्रुञ्जये ।

प्राग्यटान्वयवार्धिवर्धनविधुर्पात्रीशमन्त्रीशिता-

श्लाघ्यः सहस्रपतिः सतां विजयते श्रीवस्तुपालोऽधुना

॥ १६७ ॥

किं चित्रं यदि यत्सवत्सलतया स्वच्छादममूर्तिच्छला-

दन्नाऽऽखण्डलमण्डपे सुरपुरादभ्याययुः पूर्वजाः ।

एतस्य प्रतिपन्नसूनुपदवीभाजोऽपि येनाद्भुत-

मीत्या वासमिह व्याधाव् विधिपुरं त्यक्त्वाऽपि चाग्देवता

॥ १६८ ॥

शृष्टे काञ्चनपट्टिकं जिनपतेरायस्य भामण्डल-

श्रीतुल्यं पुरतोऽपि सत्यपुरभूवीरावतारं मुदा ।

कुम्भान् पद्य च पद्यपातकतमश्वाण्डघुतीन् मण्डपे,

भीयद्युञ्जयदन्तिदाननदवचके तढागं च यः

॥ १६९ ॥

पके च यो धवलके विमलाद्रितैत्यं, पञ्चासुरं च पुरि गूर्जरकर्णिकायाम् ।

तत्केतुकैतवकरद्वयनर्तनेन, शुभ्रप्रभां नमसि नर्तयति स्म कीर्तिम्

॥ १७० ॥

प्रतिष्ठाप्य च मन्त्रीशस्तीर्थेशं मुनिमुद्यतम् । योऽम्बावतारतीर्थस्य, मन्दिरं विदधे हृत्ती ॥ १७१ ॥

ग्रामे शासनदधे च, विदधे योऽर्क्षपालिते । तढागं सागराकारममात्यः प्रपया सह ॥ १७२ ॥

व्यानात् पीपधालानां, नासत्यरुचिचेष्टितः । यः पापीपधालानां, येषां श्रीमानकारयन् ॥ १७३ ॥

१ यस्मिन् उदयप्रभोपचयुरनल्पतुली एवनिधनमपयनवाऽपि दारणे ॥ २ यदसौ उदयप्रभोपचयुरनल्पतुली ॥  
३ यो विमाति भुयने श्रीपन्नंगमद्विपः उदयप्रभोपचयुरनल्पतुली ॥

येन स्तम्भनकाधिदैवतजिनप्रासादमुद्धृत्य तं,  
तत्तेने किमपि प्रपाद्वयमपि श्वेतांशुशुभ्रप्रभम् ।

यत् पश्यन्ति पुरो जिनेश्वरपदानुष्यानयात्राधना,  
धीमन्तो निजमूर्तिकीर्तिसुकृतं चन्द्रया(द्धजा)डम्बरम् ॥ १७४ ॥

श्रीमालवेन्द्रसुमटेन सुवर्णकुम्भानुचारितान् पुनरपि क्षितिपालमन्त्री ।  
श्रीवैद्यनाथसुरसन्ननि दर्भवत्यामेकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यधत् ॥ १७५ ॥

तत्रैव वीरधवलक्षितिवल्लभस्य, मूर्ति तदीयमुद्देशोऽपि च जैत्रदेव्याः ।  
स्वीयानुजस्य च निजस्य च मल्लदेवमन्त्रीश्वरस्य च चकार स भूपमन्त्री ॥ १७६ ॥

नृत्यन्त्या न्योमरङ्गे कमकटकज्ञस्कारतारं युगञ्जा-  
रञ्जकक्रान्नादं सचिवकुलपतेर्वस्तुपालस्य कीर्तः ।

खेदमत्स्वेदबिन्दुश्रियमियमयते पद्धतिस्त्वारकाणां,  
यावत् तावत् पताकाचलचलनविधिं चैत्यमाला विधत्ताम् ॥ १७७ ॥

इमामकृत सद्गुरोर्विजयसेनसुरिप्रभोः, क्रमांशुजरजोष्टजा विमलमानसोल्लासभृत् ।  
प्रशस्तिमुदयप्रभः प्रभवदद्भुतप्रातिभप्रभावभरभासुरः सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीम् ॥ १७८ ॥

यस्य च कपर्दिनः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ १७९ ॥

॥ समाप्ता सुकृतकीर्तिकल्लोलिनीसंज्ञकेयं प्रशस्तिः ॥

॥ कृतिरियं पण्डितपुण्डरीकश्रीमदुदयप्रभस्य ॥

॥ सङ्ख्या ग्रन्थान्नं ४०० ॥ शुभं भवतु ॥

॥ लेखकपाठकयोश्च कल्याणमस्तु ॥



१ श्रीवैद्यनाथपरपेदमनि दर्भयन्वां, यान् दुर्मेदी सुमटवर्मनृपो जहार ।  
तान् पिशति श्रुतिमतस्त्वनृपकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥

नरेन्द्रप्रगीयवस्तुपालप्रसादी ॥



## द्वितीयं परिशिष्टम्

नागेन्द्रगच्छमण्डनश्रीउदयप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालस्तुतिः ।

पौष्पादपि पेशलाः शशधरज्योत्स्नाकलापादपि, स्वच्छा नूतनचूतमञ्जरिभरादप्युल्लसत्सौरभाः ।  
वाग्देवीमुखसामसूक्तविशदोद्गारादपि प्राञ्जलाः, केषां न प्रथयन्ति चेतसि मुदं श्रीवस्तुपालोक्तयः ॥ १ ॥  
चेतःकेतकगर्भपत्रविशदं वाचः सुधाबन्धवः, कीर्तिः कार्तिकमासमासलक्षशिज्योत्स्नावदातद्युतिः ।  
आश्चर्यं क्षितिरक्षणक्षणविधौ श्रीवस्तुपालस्य यत्, कृष्णत्वं चरितैरपास्तदुरितैर्लोकेषु मेजे भुजः ॥ २ ॥  
श्रीवस्तुपालमन्त्रीन्दोर्भूमः किं गुणगौरवम् ? । यस्य निष्पत्तिमानस्य, तुलनायाः कथा वृथा ॥ ३ ॥

सूरो रणे चरणप्रणतेषु सोमो, वक्रोऽस्तिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।

॥ १ ॥ नीतौ गुरुः कृत्तिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च प्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ ४ ॥

मसृणमुसृणपङ्कैर्नालपट्टेषु लब्धा, विधिविहितकुवर्णश्रेणिकी याचकानाम् ।

विरचयति सुवर्णश्रेणिमूषाममीमां, भुवमिति नवषेधा वस्तुपालः सुमेधाः ॥ ५ ॥

युद्धपर्वणि कदाऽपि न दृष्टं, यस्य पृष्ठममुद्भित्कुरन्वै ।

॥ २ ॥ सप्रतिश्रुमिव धीक्षितुमुत्कैस्तैश्चिरादनुचरत्वमभाजि ॥ ६ ॥

शङ्खं शार्ङ्गधरस्य शैलरमणिं शलाघुघस्य द्विप,

। वज्रास्य रद परश्वधभृतः स्वर्लोकलीलाजये ।

उत्कर्षार्थितया विलम्पतु भटो नि सीमधामा यशो,

नामाऽऽयस्य हहा ! जहार तु कुतो गुम्य जरद्भक्षणः ! ॥ ७ ॥

सेवालन्ति पय समुद्रति दिशामन्तेषु मध्येनम,

सारङ्गान्ति शशाङ्कति द्युविपिने दानन्ति दन्तीन्द्रति ।

पुष्पस्तोमति मृदपदन्त्यनुलताखण्डं सुधाकुण्डति,

॥ ३ ॥ श्रमन्तर्भुजगन्ति यस्य यशसि प्रत्यार्थदुष्कीर्तयः ॥ ८ ॥

भर्तुर्वेपगय विधाय कितवः कोऽप्येति मामुन्मना—

स्तेनासुं विजये ! निवारय यतो मे नीलकण्ठ प्रिय ।

१ पयमिदं धर्माभ्युदयदशमसर्गग्रन्थे, प्रबन्धकोषवस्तुपालप्रबन्धे पृष्ठद्वितीयं च “एव स्तुत केनापि कविना” इत्युल्लेखेन निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पयमिदं प्रबन्धकोषे वस्तुपालप्रबन्धे अष्टापञ्चाशत्तमं “कथित” इत्युल्लेखेनोद्धृतं वर्तते ॥ ३ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ९१ तमम् ॥ ४ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ५२ तमम् ॥ ५ टो टिम्यैकधामा सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ६ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ३७ तमम् ॥ ७ सुभुवने सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या ८ पयमिदं सुकृतकीर्तिकलोत्पिन्या १३४ तमम् ॥

जल्पन्तीति सती यदीययशसा शुभ्रीकृते निर्भरं,  
त्रैलोक्येऽपि पिनाकिना सशपथं प्रत्यायिता पार्वती

॥ ९ ॥

कैराग्नोजं मेजे सततविततं यस्य कमला,  
प्रियारागादागादनु दनुजमेत्ता स्वयमसिः ।

यशःसूनुर्नूनं तदजनि तयोरप्रजकथा-

सदर्पः कन्दर्पद्विपमपि रूपाऽद्यो व्यधित यः  
दिर्यात्रोत्सववीरवीरधवलशोणीधवाध्यासितं,

॥ १० ॥

प्राज्यं राज्यरथस्य भारमभितः स्कन्धे दधल्लीलया ।  
धुर्ये आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न श्लाघ्यः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ?  
गजैर्जिजैरकुञ्जरे सुरजति प्रौढोर्मिभिर्नृत्यति,

॥ ११ ॥

शीपण्यौ कलहंसिकाकलकलेर्गङ्गाजले गायति ।

श्यामाकासुकपारिपार्थक्युतो विध्वज्यीसम्मद-

क्रीडानाटकसूत्रधारपदवीं यत्कीर्तिपूरो ययौ

॥ १२ ॥

उद्धूतप्रतिभाद्भुतस्य मतिमर्चण्डस्य चिद्रूपता-

माहात्म्यं स्तुमहे किमस्य निखिलग्रन्थाब्धिमन्यात्मनः ? ।

दुःस्थाना प्रतिभूतां च विदधे भालस्थलस्थापिता,

हवपातैर्वितथैव काचन लिपियेन त्रिवेदीकवेः

॥ १३ ॥

यत्कीर्तेः स्वैरमैरावणमदसमदभ्रान्तमृङ्गालिणीत-

स्फूर्जद्गर्जामृदद्भ्रमभिभिरिव समुल्लासितायाः सितायाः ।

नित्यं नृत्यं सृजन्याः शिरसि सुरगिरेश्चारुचारीप्रचार-

स्पष्टप्रमृष्टहारावलिगलितमणिभ्रान्तिमायान्ति ताराः

॥ १४ ॥

शैर्नद्धाऽतिचलाऽप्यलाऽपि कमला गम्भीरियाधैर्गुणै-

स्तैरेषाऽपि न नखते किमु हृदैः कीर्तिर्जगज्जाद्विकी ? ।

सच्चिन्वेति यया यथा गमयति प्रौढि परा यो गुणा-

नुदामैव तथा तथाऽभिऽरति स्वैर दिगन्तानसौ

॥ १५ ॥

श्रीवामाभ्युजमानं परिणतं पञ्चाङ्गुलिच्छन्नतो,

जम्बुदक्षिणपञ्चानामयता पञ्चापि देवद्रुमाः ।

१ "कृते स्वयंतस्त्रैलो" गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या ॥ २ पद्यमिदं गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या ३४ तमम् ॥ ३ पद्यमिदं गुरुतकी-  
र्तिर्गोत्तिन्या १११ तमम्, तथा उदयप्रभानामैव निर्दिष्टं प्राचीनलेखग्रन्थ आग २ लेख ४३ मध्ये कृतियम् ॥ ४ भाति भ्रा-  
गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या प्राचीनलेखग्रन्थ आग २ व ॥ ५ इत आरभ्य प्रीणि पद्यानि गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या क्रमशः १२९-  
१३०-१३१ तमानि ॥ ६ "धन्द्रस्य गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या ॥ ७ "य येन कविता काऽपि त्रिलोकी कवेः गुरुतकी-  
र्तिर्गोत्तिन्या ॥ ८ "आनिनादस्फुरदुस्फुरजोद्भासि" गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या ॥ ९ नृत्यं स्त्रु" गुरुतकीर्तिर्गोत्तिन्या ॥  
१० पद्यमिदं पद्माम्बुदयप्रभामयन्ते प्रवचकोद्यवत्सुपालप्रबन्धे षष्ठितमं च "इतरस्तु" इत्युपेक्षेनोक्तिरिति वक्तव्यं ॥

वाञ्छापूर्णाकारणं प्रणयिनां जिह्वैव चिन्तामणिः ।

॥ जता यस्य किमस्य अस्म्यपरं श्रीवस्तुपालस्य यत् ? ॥ १६ ॥

इन्दुः पत्रावलम्बं व्यधित कुवलये दुर्मदात्मा प्रपेदे,

गजं पर्जन्यदन्ती व्यवनुत जगति स्तम्भभावं फणीन्द्रः ।

चिक्षेप क्षीरसिन्धुर्दिशि विदिशि तृणैः संयुतं बारिजातं,

यस्योद्दामप्रमाणे यत्रसि प्रैसुमरे ते तु सन्तोऽप्यसन्तः ॥ १७ ॥

पद्माभिरामहस्तेन, महस्तेन वितन्वता । रविणेव तमःस्तोमः, समस्तो महता हतः ॥ १८ ॥

सौ भून्मद्भुवनेऽपि दुस्तमतमःस्तोमस्तथा मास्म मूत्रेर्धुं बुसदां सदाविकसितेऽगामीलनं मर्त्यवत् ।

इत्युद्गानिरजःसमुच्छ्रयमयाद् दम्भोलिपाणिर्महीमम्भोमृद्भिरसीपिचत् प्रतिपदं यतीर्थयात्रोत्तमे ॥ १९ ॥

धन्तः कज्जलमञ्जुलधि यदिदं शीतयुतेर्वोतते, तन्मूढाः कवयन्ति लक्ष्म न वयं सूक्ष्मेक्षिकाकाङ्क्षिणः ।

यथात्रोत्सवमद्भुतं रचयता श्रीवस्तुपाल ! त्वया, शीतांशौ लिसितं स्वनाम तदिदं प्रत्यक्षमुद्गीक्ष्यते ॥ २० ॥

मैज्जन्तीमघनीमवेक्ष्य दुरिताम्भोधौ नवं भूधरप्राग्वारं रचयाच्चकार यंदसौ तीर्थेशचैत्यच्छलात् ।

तत्रैनःप्रतिदन्तिनाशसुमगः प्रेक्षामृदङ्गस्वैर्नर्गजन् विश्वजैयौ विगाति भुवने श्रीधर्मगन्धद्विपः ॥ २१ ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद्दानसौरमवता भवता वितेने, नानेकपेन मदमेदुरिता सुखश्रीः ॥ २२ ॥

ईश्वरः कस्यापि नायं प्रथयति न परप्रार्थनादैव्यमन्य-

स्तुच्छमिच्छां विधत्ते तनुद्वयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

इत्थं फल्यद्भुमेऽस्मिन् व्यसनपरबशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः करुणदृक्षः ॥ २३ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।

येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्येव शक्रहृदि शैलशिलाविशाले ॥ २४ ॥

शङ्के शारदपर्वगर्वितयशज्योत्स्नासपलं तव,

त्रैलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्भुतम् ।

यत्तादृग्दृढपाशवैशसकृतातद्भाभिः शङ्काः स्फुटं,

नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलस्पदम् ॥ २५ ॥

आशाम्भो नयपुष्पेशल्यशःतौरम्यसम्भावनासंहृतैः सततं पतद्भिरमितो रागार्थभिः सेवितः ।

रक्तपत्रपवित्रया घनलसत्पुष्पाभूतैः सिक्तया, छिष्टः धीलतया महीरूढ इव श्रीवस्तुपालः यमौ ॥ २६ ॥

१ तत् पद्माभिरामहस्ताभ्याम् ॥ २ यत्रमिदं मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्या १५८ तमम् ॥ ३ चिह्नं मुकुतकीर्ति-  
कण्डोलिन्त्याम् ॥ ४ यत्रमिदं मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्या १४२ तमम् ॥ ५ यत्रमिदं मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्या १४५ तमम् ॥  
६ 'येऽपि बुसदां सदाविकसिते सम्मील' मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्याम् ॥ ७ प्रतिदिनं यं मुकुतकीर्ति-  
कण्डोलिन्त्याम् ॥ ८ यत्रमिदं धर्मोद्भुदयाष्टमसर्गान्ते वर्तते ॥ ९ यत्रमिदं मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्यां १५२ तमम् ॥ १०  
यमसौ मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्याम् ॥ ११ 'यौ जयत्यनुदिनं धर्मद्विपो भूतले मुकुतकीर्तिकण्डोलिन्त्याम् ॥ १२  
यत्रमिदं धर्मोद्भुदयमहाकाव्यैकादशसर्गान्ते विद्यते ॥ १३ यत्रमिदं धर्मोद्भुदयमहाकाव्यपञ्चमसर्गान्ते वर्तते ॥

नेत्राणाममृताञ्जनं कथमिव धीवस्तुपालः॥कृती,

सोऽयं नास्तु धनोदयः परिलसद्भारिधर्मस्थितिः ।

चैके मार्गणपाणिशुक्तिकुहरे यः स्वातिवृष्टिं सुहृः,

कृत्वा मौक्तिकनिर्मलं निजयज्ञो दिक्कामिनीमण्डनम्

॥ २७ ॥

धीवस्तुपाल । क्षितिपालमुद्रां, भूमण्डलान्तः कति नैव दधुः ।

दोषस्य दुष्टप्रभवस्य मन्त्रिन्, प्रभुर्भवानेव तु निग्रहाय

॥ २८ ॥

या प्रार्थना याचकवक्त्रवासादासादयद् दुर्भगतामतीव ।

दानाय सैवार्येषु वस्तुपाल !, स्थिता तवाऽऽस्ये सुमगीवमूव

॥ २९ ॥

अत्यद्भुता सचिवपुङ्गव वस्तुपाल !, कौतस्कुन्ती स्फुरति धर्मकला तवेयम् ।

यत् कर्हिचिद् विमुलतामुपनीय पृष्टा, पीठसि (नि ?) पश्यसि न मार्गणमण्डलस्य

॥ ३० ॥

त्रिजगति यशसस्ते तस्य विस्तारभाजः, कथमिव महिमानं ब्रूमहे वस्तुपाल ।।

सपदि यदनुभावस्फारितस्फीतमूर्तिर्विधुरगिलदरार्तिं राहुमाहुस्तमङ्गम्

॥ ३१ ॥

बाणे गीर्वाणगोष्ठी मज्जति भेगवति ब्रह्ममयं प्रपञ्चे,

न्यासे विद्यानिवासे कलयति च कला कैशकीं कालिदासे ।

माघे मोघां मघोनः सफलयति दैशं वोऽय वाग्देवतायाः,

सोऽयं धात्रा धरिण्यां निवसनसदनं प्रस्तुतो वस्तुपालः

॥ ३२ ॥

वैर्वायान् परिलुप्तदर्शनपथः प्राप्त. परं तानवं,

रोहन्मोहतया तथा हृतपरिस्पन्दोऽतिमन्दोद्यमः ।

श्रीमन्नीधर वस्तुपाल ! भवतो हस्तावलम्ब चिराद्,

धर्मः प्राप्य महीं विहर्तुमधुना धत्ते पुनः पाटवम्

॥ ३३ ॥

॥ इति जागेन्द्रगच्छीपश्रीउदयप्रभासूरिकृता वस्तुपालस्तुतिः ॥



१ पयसास्तोत्रारंभमिदं सुहृत्कीर्तिरुज्ज्वलिन्यां १०५ तमश्लोके ॥ २ 'वृष्टिप्रजैर्मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं  
शुचि यज्ञो दिक्कामिनीभूषणम् सुहृत्कीर्तिरुज्ज्वलिन्याम् ॥ ३ यजमिदं यमाम्बुदयचतुर्थस्यप्रान्ते वर्तते ॥  
४ यजमिदं पुरातनप्रबन्धस्यप्रहृतवस्तुपालप्रबन्धे २४८ तमं श्लोकेश्वरदेवोक्तिप्रयोगितं वर्तते ॥ ५ मघयति  
पुरातनप्रबन्धस्यप्रहरे ॥ ६ 'शायी का' पुरातनप्रबन्धस्यप्रहरे ॥ ७ दशं व्याघ्र पुरातनप्रबन्धस्यप्रहरे ॥ ८ पय-  
मिदं यमाम्बुदयचतुर्थस्यप्रहृतवस्तुपालप्रबन्धस्यप्रहरे वर्तते ॥

## तृतीयं परिशिष्टम्

मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरिसूत्रिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

स वः श्रेयः द्रुमुञ्जपशिखरजीर्वैकुण्ठः, प्रदोषान्तध्वान्तव्यतिकरनिकाराम्बरमणिः ।  
 मयन्नान्तिश्रान्तिव्यपनयनदीप्तामृतसर सनाभिः श्रीनाभिप्रमवजिननाथः प्रथयतु ॥ १ ॥  
 श्रीप्राग्वाटकुलेऽत्र चण्डयमुताच्चण्डप्रसादादभूत्,  
 पुत्रः मोम इति प्रसिद्धमहिमा तस्याश्चराजोऽन्नजः ।  
 तस्मात्सूणिग-मल्लदेवसचिवौ श्रीवस्तुपालस्तथा,  
 तेजःपाल इति श्रुतास्तनुमुवश्रत्वार एतेऽभवन् ॥ २ ॥  
 चेतः किं कलिकाल ! सालसमहो ! किं मोह ! नो हस्यते,  
 तृण्ये ! कृष्णमुखाऽसि किं ? कथय किं विष्णौष ! मोषो भवान् ? !  
 नृमः किं नु सखे ! न खेलति किमप्यस्माकमुज्जृम्भितं,  
 सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य संवर्धितम् ॥ ३ ॥  
 दुर्गः स्वर्गगिरिः ॥ कल्पतरुभिर्भजे न चक्षुष्पथे,  
 तत्स्थौ कामगयी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।  
 कालेऽस्मिन्नवलोक्यै याचकचर्मं तिष्ठेत् कोऽन्यस्ततः,  
 स्तुत्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुक्ती दानैकवीरः कथम् ? ॥ ४ ॥  
 स श्रीजिनाधिपतिपर्मधराधुरीणः, श्लाघ्यास्पदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः ? ।  
 श्री-द्वारदा-मुकृतकीर्तिमयत्रिवेण्याः, पुण्यः परिस्फुरति जङ्गमसङ्गो यः ॥ ५ ॥  
 स्वच्छन्दं हरिशङ्करः स भगवान् यत्कीर्तिविस्फूर्तिभि-  
 र्विभ्रद् मस्मकृताङ्गरागमिव तद् भूतेशभूतं वपुः ।  
 सर्वाङ्गं घटितां गिरीश्वरमुता हुग्धाव्विपुत्रीं जवाद्,  
 व्यावृत्तां च सहस्ततालहसितैर्वैलक्ष्यमध्यापयत् ॥ ६ ॥  
 दायादा कुमुदावलिर्विचकिलश्रेणी सहाध्यायिनी,  
 सध्रीची सुरसिन्धुवीचिवितति.....की चन्द्रिका ।

१ पद्यमिदं नरचन्द्रसूरिनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ३९ संख्यगिरिभारशिलालेखे प्रथम-  
 पद्यतया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४२ संख्यगिरितारसखशिलालेखे  
 प्रथमपद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ 'कथय' यस्य कथनं तिष्ठेत् कोऽन्यः स्वतः पुण्यः सोऽस्तु गिरिभारशिलालेखे ॥

शीतज्योतिःप्रकाशं तदनु समुदितं तद्यशो येन तेने,  
शब्दद्विस्तारिराकारजनिमहमहो । विश्वतो विश्वमेतत् ॥ २१ ॥

चण्डांशोरपि चण्डतामगमयद् यस्य प्रतापोदयः,  
शीतांशोरपि शीतमानममजद् यस्य प्रसादोत्सवः ।

ब्रह्मास्वादनतोऽपि तोषमपुपद् यस्यावदातं यज्ञ—  
स्तप्तोकोत्तरमस्य कस्य वचसां पात्रं चरित्राद्भुतम् ? ॥ २२ ॥

यस्मिन् धर्मं पुरस्कृत्य, विपद्ग्रहो रक्षति क्षितिम् । जने जन्यमजन्यं च, द्वयमप्राप्यतां गतम् ॥ २३ ॥  
तस्मिन् काञ्चनकोटिभिः प्रणयिनां दारिद्र्यमुद्राद्बुद्धि,

व्यक्तं काञ्चनशैलखण्डनविधावासण्डलः शक्तिः ।

आम्यत्येव निदेशतोऽस्य तदयं राज्ञा ससुरः सदा,  
नक्षत्रैः परिवारितश्च परितोऽप्यद्याप्यमु रक्षति ॥ २४ ॥

नमस्ये निर्दृष्टाः शरदि नहि यर्यन्ति जलदाः, फलघातैराचैर्न खलु फलवृक्षाश्च फलिनः ।  
प्रदुग्धा वा गावः पुनरपि न दुग्धानि ददते, कदाऽप्येतस्योच्चैर्न तु वितरणे श्राम्यति मतिः ॥ २५ ॥

दीर्घः स्फूर्जति सज्जकज्जलमलः खेहं मुहुः सहरन्निन्दुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।  
सुरः क्रूरकरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विनस्तत् केन प्रतिमं श्रुवीमहि महः श्रीवस्तुपालाभिषम् ॥ २६ ॥

॥ ॥ इति मलधारित्रीनरचन्द्रसूरिकृता श्रीवस्तुपालप्रशस्तिः ॥



१ पद्यमिदं नरचन्द्रनाम्ना निर्दिष्टं आचीनलेखनग्रन्थं नाम २ मध्ये ३९ सखगिरिनारायणसत्तशिलालेखे चतुर्थं पद्यतया, पुरातनप्रबन्धसंग्रहगतवस्तुपालप्रबन्धे २१९ तमं लोमेश्वरदेवोक्तितयोक्तिस्तु च वर्तते ॥ २ 'क्रूरतर गिरिनारायणलेखे पुरातनप्रबन्धसंग्रहे च ॥ ३ यवीमि सच्चिवं श्री' गिरिनारायणलेखे ॥

## चतुर्थं परिशिष्टम्

‘मलघारिथीनरेन्द्रमस्तुरिनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।



स मङ्गलं वो वृषमध्वजः क्रियाज्जटावलीसंवलितसमण्डलः ।	
यदीयमङ्गं किल सर्वमङ्गलाशितं प्रमोदाय न कस्य जायते ?	॥ १ ॥
समूलमुन्मूलयितुं सुरदुहः, सन्ध्यासमापौ चुनुकीकृतेऽम्भसि ।	
स्वयम्भुवा यः समजे मटाग्रणीः, समग्रशक्तिः स चुलुक्प [होत्यभूत्	॥ २ ॥
तदन्ययाम्भोचिविबुधैर्बुधैर्विरोधिमूलोऽजनि मूलराजः ।	
न कापि दोषोक्तिरमूल्यस्य, यज्ञःप्रकाशैर्विशदेऽपि विश्वे	॥ ३ ॥
य(त)स्यात्मभूः समभवद् भुजदण्डचण्डश्चासुष्ठुराज इति राजकमौलिरस्य ।	
शूबलमस्तदनु बल्लमराजदेवस्तन्नन्दनो सुदनुदक्षितवान् प्रजानाम्	॥ ४ ॥
तस्यानुजन्मा समभूत् परसीसुदुर्लभो दुर्लभमराजदेवः ।	
बभूव भीमो रणन्मिभीमस्ततोऽपि सीमा जगतीपतीनाम्	॥ ५ ॥
तदात्मजः संयति लब्धवर्णः, कर्णोऽभवत् कर्णसमप्रतापः ।	
श्रीसङ्ग्रमान् वीरसोऽपि यस्य, वभार शृङ्गारमयत्वमेव	॥ ६ ॥
सुसुस्तदीयोऽजनि वैरिवीरद्विपेन्द्रसिंहो जयसिंहदेवः ।	
नवेन्दुकुन्दघुतिभिर्भरित्री, यः कीर्तियुक्ताभिरलङ्घकार	॥ ७ ॥
अयं हि राकासुविलासकौतुकी, रिपुस्तदस्यास्तु विपर्ययोऽधुना ।	
इतीव यो भालवमेदिनीश्वरं, चकार काराविनिवेशदुःस्थितम्	॥ ८ ॥
ततोऽभवत् कीर्णलतालवालः, कुमारपालः क्षितिपालभास्वान् ।	
यस्य प्रतापः क्षिशिरेऽप्यरीणां, स्वेदोद्विन्दूनभिक्रान्धकार	॥ ९ ॥
उदग्रतेजःसुकृतैकमन्दिरं, धराधरेन्द्रः स गिरामगोचरः ।	
व्यपद्य यः शत्रुकलत्रमण्डली, महीमदोषो च विहारभूषणाम्	॥ १० ॥
तस्मादभूदजयपाल इति क्षितीशः, प्रत्यर्धिपार्थिवकुलप्रलयाश्रयाशः ।	
श्रीमूलराज इति वैरिसमासराजजिज्याजविक्रमनयस्तनयस्तदीयः	॥ ११ ॥
बन्धुः कनीयान् विजयी तदीयः, श्रीमीमदेवोऽस्ति महीमहेन्द्रः ।	
प्रवासदायिन्पि वैरिवर्गो, बभूव यस्मिन् वनाभिलाषी	॥ १२ ॥

श्रियं चौलुक्यानां प्रकृतिमतिभेदेन विवक्षां, वशीकृत्याऽमुष्मिन्नसमविनिवेशा[म]कृत यः ।

स नेताऽर्णोराजः समभवद्विह्वान्वयवरे, वरेष्यश्रीशाखां.....गिरद्वैतमुभटः

॥ १३ ॥

भूयांस एव प्रथितप्रतापा, यशस्विनस्तस्य सुता बभूवुः ।

प्रदीप्यते तेषु जयी विनिद्रहृदप्रसादो लवणप्रसादः

॥ १४ ॥

अपास्य शौण्डीर्यमदं परेषां, यद्विक्रमो मानसमध्युवास ।

तदङ्गनानां च दशो विकृष्य, बलान् विलासान् विदधेऽश्रुवारि

॥ १५ ॥

तन्नन्दनः कुमुदकुन्दनिर्भैर्यशोभिर्विधानि धीरधवलौ धवलीकरोति ।

यद्विक्रमः कमनिरस्तसमस्तशत्रुर्मन्येऽथ ताम्यतितमामहितामपश्यम्

॥ १६ ॥

चित्रं विवल्गन्नपि यत्प्रतापः, प्रचण्डमार्तण्डमहोमहीयान् ।

विरोचिवर्गस्य निसर्गसिद्धं, मुजामहोष्माणमपाकरोति

॥ १७ ॥

इत्यथ—

प्राग्वाटवंशध्वजकरूपकीर्तिः, श्रीचण्डपः खण्डितचण्डिमाऽभूत् ।

उवास यस्मिन् गुणवारिराशौ, चिराय लक्ष्मीप्रभुरेव धर्मः

॥ १८ ॥

गुणौषहंसालिसरोजपण्डश्चण्डप्रसादोऽस्य सुतो बभूव ।

यत्कीर्तिसौरभ्यतरङ्गितानि, जगन्मुदेऽद्यापि दिगन्तराणि

॥ १९ ॥

पत्युर्नदीनामिव विधनन्दनो, बभूव सोमोऽस्य सुतः कलानिधिः ।

एकाऽपि.....

॥ २० ॥

आशाराजः क्षस्मषीस्तस्य सृजुर्जज्ञे विज्ञश्रेणिसीमन्तरत्नम् ।

येनाऽऽत्तेने [न] क्वचिद् बालसङ्गश्चित्रं चक्रे नाप्यलीकप्रसक्तिं

॥ २१ ॥

तस्याऽभवन्निर्मलकर्मकारिणी, कुमारदेवीति सधर्मचारिणी ।

असूत सा नीतिरिवातिनान्धितप्रदानुपायांश्चतुरस्तनूहहान्

॥ २२ ॥

शृणिगः प्रथमस्तेषु, मल्लदेवस्ततोऽपरः । वस्तुपालः सुधीरस्मात्, तेजःपालोऽथ धीनिधिः ॥ २३ ॥

वंशधीनौलिप्रभिमहं, मल्लदेवं कथं स्तुवे ? । यस्य धर्मधुरीणस्य, विवेकः सारधीयते ॥ २४ ॥

सरस्वतीकेलिकलामरालः, स धस्तुपालः किमु नामिनन्वः ? ।

जिताः पदन्यासमनन्यतुल्यं, वितन्वता के क्वयो न येन ?

॥ २५ ॥

दानं दुर्गतवर्गसर्गललितव्यत्यासवैहासिकं, शौण्डीर्यं भुजदण्डचण्डिमक्यासर्वद्वेषं त्रिद्विषाम् ? ॥

सुद्विर्यस्य दिगन्तभूतलभुवागाहटिविधा श्रियां, कस्यासौ न जगत्प्रमात्यतिलकः श्रीवस्तुपालो मुदे ॥ २६ ॥

तेजःपालः सचिवतिलको नन्दताद् भाग्यभूमिर्यस्मिन्नासीद् गुणविटपिनामन्यपोहः [ प्ररोहः ] ।

यच्छायासु त्रिभुवनवनेप्रेक्षणीयु पगल्लमं, प्रक्रीडन्ति प्रसगरमुदः कीर्तयः श्रीसहायाः ॥ २७ ॥

धन्यः ॥ धीरधवलः क्षितिकैटमारिर्यस्येदमद्भुतमहो महिमप्ररोहम् ।

दीप्तोष्णदीधिति-सुधाकिरणप्रवीणं, मन्त्रिद्वयं किल विलोकनतामुपैति

॥ २८ ॥

मेक्ष्यास्येयं प्रसुप्ति-विगृति-वपुरा-ऽऽसुषाम् । वस्तुपालः स्थिरे धर्मकर्मण्येव धियं दधौ ॥ २९ ॥



अगण्यपुण्योदयसत्यकादयपीमधौघनिघातनकर्मकर्मठाम् ।

सहैव सङ्गेन नमस्यकर्मणा, यस्तीर्थयात्रामकरोन्महामतिः

॥ ३० ॥

अभ्यर्च्य देवान् पथि साधुमण्डलीमाराध्य शुद्धाशन-पानकादिभिः ।

उद्धृत्य दीनानुपकृत्य धार्मिकान्, यो यात्रया प्राप पवित्रतां पराम्

॥ ३१ ॥

उद्धृत्य पञ्चासरजैनवेङ्गम्, यस्तत्र संस्थाप्य च पार्श्वनाथम् ।

चकार चौलुक्यपुरे स्वकीर्तिसखीत्वमुत्थां वनराजकीर्तिम्

॥ ३२ ॥

श्रीयुगादिप्रभोर्वेदमन्यवुदाचलमूर्तिं यः । श्रेयसे मल्लदेवस्य, मल्लिदेवमतिष्ठिपत्

॥ ३३ ॥

विभ्राणं परितो जिनेन्द्रमयनान्युच्चैश्चतुर्विंशति, तापोत्तीर्णमुवर्णदण्डकलशालङ्कारतारश्रियम् ।

यः शत्रुहृत्पदेवसेवनमनाः शत्रुहृत्पदार्थं जिनप्रासादं धवलकन्यामनि पुरे निर्मापयामासिवान् ॥ ३४ ॥

गोमहप्रोज्झितासूनां, देवभूयमुपेयुषाम् । राणभट्टारकाणां यस्तत्रागारमकारयत् ॥ ३५ ॥

वार्य तस्य परः स्मरपद्मां पीयूषवान्धवीम् । प्रपां चापतिमां विश्वप्रीतिदां यो व्यधापयत् ॥ ३६ ॥

पौषधशालाद्वितयं, यस्याऽऽस्ते तत्र मुनिभट्टाकीर्णम् ।

कलिशत्रुभीतिमहुरधर्मधराधीशदुर्गनिमम्

॥ ३७ ॥

पुरोत्तमे स्तम्भनकाभिधाने, निवेशने पार्श्वजिनेश्वरस्य ।

योऽकारयत् काञ्चनकुम्भदण्डमस्रण्टधर्मां शिखरं गरीयः

॥ ३८ ॥

नामेयं नेमिनाथं च, तदीये गूढमण्डपे । सरस्वतीं जगत्यां च, स्थापयामास यः कृती ॥ ३९ ॥

अकारयन्नगाकारं, प्राकारं परितोऽत्र यः । निदाघदमनक्रीडाप्रवृत्तं च प्रपाद्वयम् ॥ ४० ॥

यश्चकार नवोद्धारधारि...श्रुतवैभवाम् । सुधासहचरीं तत्र, वार्पां व्याकोशपङ्कजाम् ॥ ४१ ॥

मृगुनगरमौलिमण्डनमृनिमुद्रततीर्थनाथमवने यः ।

देवकुलिकासु विरातिमितासु हेमानकारयद् दण्डान्

॥ ४२ ॥

तस्य गर्भगृहोत्तरे, यस्त्रैलोक्यदिवाकरी । पार्श्वनाथ-महावीरौ, क्षान्तिपीरो न्यवीविशत् ॥ ४३ ॥

नगराख्ये महास्थाने, चैत्यमाद्यजिनेश्वरितुः । येनोद्धृत्य समुद्रधे, कीर्तिर्भरतचक्रिणः ॥ ४४ ॥

व्याघ्ररोदय(पल्लव)भिधे ग्रामे, पूर्वजैः कारितं पुरा । येन तत्पुण्यवृद्धयर्थमुद्धृतं जिनमन्दिरम् ॥ ४५ ॥

निरीन्द्रग्रामे बोडाख्यशालीनाथस्य मन्दिरम् । विभ्रसङ्घातपाताय, प्रजानामुद्धार यः ॥ ४६ ॥

स्थापयन् सीङ्गुलग्राममण्डने जिनवेशनि । यः श्रीवीरजिनं विश्वप्रभोदमदजीवयत् ॥ ४७ ॥

श्रीवैद्यनाथवरयेदमनि दर्मचत्वां, यान् दुर्मदीं सुमटवर्मन्पुो जहार ।

तान् विंशतिं शुचिमतस्तपनीयकुम्भानारोपयत् प्रमुदितो हृदि वस्तुपालः ॥ ४८ ॥

श्रीवीरधवलमूर्तिर्जपतलदेव्याश्च मूर्तिरसमग्रीः । श्रीमल्लदेवमूर्तिः, स्वमूर्तिरनुजस्य मूर्तिश्च ॥ ४९ ॥

श्रीवैद्यनाथगर्भद्वारवहिर्भित्तिसम्भवे निज्ये ।

अन्तर्भक्तिनिमीलितकरकमलाः कारिता येन

॥ ५० ॥

युगम् ॥

१ श्रीमालयेन्द्रसुमटेन सुवर्णकुम्भानुत्तरितान् पुनरपि श्रितिपालमन्त्री ।

श्रीवैद्यनाथवरयेदमनि दर्मयथाभिकोनविंशतिमपि प्रसभं व्यचक्ष ॥ १७५ ॥

उदयनभीषायां शुद्धतपीतिचक्रोत्तिन्याम् ॥

स्वविरोधिनीं शुचिर्भुवम्भुमारशय्ये च बदस्कूपे च ।

यस्य प्रपां प्रपश्यन्, कलयत्यधिकाधिकं तापम् ॥ ५१ ॥

उद्यारानुजो यस्य, तीर्थे कासहृदामिधे । नामेयभवनं वृद्धं, स्वयमभ्यालयं पुनः ॥ ५२ ॥

स्तम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे, धाम्नि भीमेश्वरस्य यः । शातकुम्भमयं कुम्भं, केतने चाध्यरोपयत् ॥ ५३ ॥

तत्र लोलकृतिं दोलकालं धोतीं च मेखलाम् । यो वृषं च तुषारांशुकान्तिकल्पमकल्पयत् ॥ ५४ ॥

यः स्फुरन्नेदुरामोदे, तस्य गर्भघृहोदरे । मूर्ती न्यवेशयद् धीमानात्मनश्चानुजस्य च ॥ ५५ ॥

॥ ॥ तस्य जगत्यां प्रीत्यै, ललितादेव्याः स्ववहमाया यः ।

सूत्रयति स्म पवित्रां, वटसावित्रीसदनसहिताम् ॥ ५६ ॥

किं च कारयता तत्र, तत्रविक्रयवेदिकाम् ।

॥ स्वस्य प्रकटिता येन, कृत्या-ऽकृत्यविवेकिता ॥ ५७ ॥

उद्धृत्य वैद्यनाथस्य, वेश्म योज्यैव मण्डपे । मूर्तिं श्रीमल्लदेवस्य, शस्यकीर्तिरतिष्ठिपत् ॥ ५८ ॥

पुण्यं प्रतापसिंहस्य, यः स्वपौत्रस्य वर्धयन् । तत्रैव रचयामास, ध्वस्तग्रीष्मातपां प्रयाम् ॥ ५९ ॥

प्रभूतभूतराजस्य, यशोराजस्य मन्दिरम् । रम्यं निर्मापयामास, कीर्तिनां वासवेश्म यः ॥ ६० ॥

असौ भुवनपालस्य, शिवाय शिवमन्दिरम् । अस्थापयत् समं रम्यैर्दशभिर्देवतालैः ॥ ६१ ॥

तज्जगत्यां च यः काम्यं, क्षण्डिकायत्नं नयम् । वेश्म रत्नाकरस्यापि, निस्सपलमसूत्रयत् ॥ ६२ ॥

पक्ष पौपधशालाश्च, तत्र येन वितम्बता । पञ्चोत्तरविमानश्रीपात्रमात्मा व्यतन्यत ॥ ६३ ॥

पुण्यायाऽजयसिंहस्य, रोहडीजिनघान्नि यः । नामेयप्रतिमां तस्य, मूर्तिं च निरमापयत् ॥ ६४ ॥

इहैवाष्टपदोद्धारं, श्रीशालिगजिनालये । लक्ष्मीधर[स्य] पुण्यार्थमुपकारी चकार यः ॥ ६५ ॥

तत्रैकं राणकश्रीमदम्बहस्य तथाऽपरम् । पुण्यार्थं वैरिसिंहस्य, यस्तीर्थेशं न्यवीविशत् ॥ ६६ ॥

श्रीकुमारविहारेऽत्र, वृत्ररातिनतकमौ । पार्श्वनाथ-महावीरौ, प्रीत्या यः प्रत्यतिष्ठिपत् ॥ ६७ ॥

ग्रामेऽर्कपालितकनाम्नि जिनेश्वरस्य, वीरस्य मन्दिरमुदारमकारि येन ।

॥ १ ॥ भूतेशवेदम च मनोहरमध्वनीना, सजीविनी तपनतापरिपुः प्रपा च ॥ ६८ ॥

येनैव विद्यच्छुम्बिषीचिनाचलकूलम् । कासारः कारयाश्चक्रे, क्षीरनीरधिवान्धवः ॥ ६९ ॥

मन्येऽस्मिन्नमृताम्युदेन वयुषे पीयूषवर्षेर्महः, केनाप्येतदवश्यमम्बरसरस्तिष्केरुहैः पुरितम् ।

व्यक्तं ब्रह्मसुतामरालकुलजैः कीर्णं मरालैरिदं, तेनैतस्य न वस्तुपालसरसः स्तोत्रं गुणानीदमहं ॥७०॥

षलभ्यां पुण्यलभ्यश्रीः, प्रासादो वृषभप्रभोः । येनोद्भवे मुदा मल्लदेवस्य सुकृतश्रिये ॥ ७१ ॥

ललितादेव्याः पत्न्याः, सुकृताय जिनेन्द्रमवनभासि तटम् ।

तत्र नवकमलललितं, ललितसरः कारितं येन ॥ ७२ ॥

शत्रुञ्जयनगोत्तमे, श्रीपुगादिजिनेश्वरः । कार्तस्वरमयं रम्यं, पृष्ठपद्मतिष्ठिपत् ॥ ७३ ॥

तस्यैवाऽऽद्यविमोक्षैत्यप्रवेशे येन वामतः । सुव्रतस्वामिनं न्यस्य, मृगुकच्छविमूषणम् ॥ ७४ ॥

वीरं दक्षिणतः सत्यपुराधीशं निवेश्य च ।

तदन्ते भारती देवी, विश्वासाध्या न्यधीयत ॥ ७५ ॥ युगम् ॥

तत्रैवाकारयद् धाप्ति, काञ्चनान् गण्डपत्रये । पौत्रप्रतापसिंहस्य, श्रेयसे कल्हानसौ ॥ ७६ ॥

स्तोत्रं नामिनरेन्द्रनन्दनगुणान् गोत्रं च कीर्तिं समं, व्याहारं सचिवारविन्दतरणैरेतस्य दानाम्बुधेः ।  
यत्रोवास विकस्वरोमयमुसी प्रीत्यैव देवीन्दिरा, तद् येनास्य विमोरकार्यत पुरो हवपारणं तोरणम् ॥७७॥

अत्रैव शैले रचयाञ्चकार, मनोज्ञमाखण्डलमण्डपं यः ।

प्रयान्ति वैलक्ष्यमवेक्ष्य यस्य, लक्ष्मीं सहस्राक्षदशोऽप्यवदयम्

७८ ॥

तत्र रैवतकाधीशः, प्रमुश्च स्तम्भनेश्वरः । वस्तुपाले विष्टृत्यैव, प्रीतिमागत्य तस्थुतः

॥ ७९ ॥

श्रीवस्तुपालस्य कयाऽतिमक्त्या, नेमिः समाकृष्यत ? कौतुकं नः ।

इतीव तस्मिन्नवलोकना-ऽम्बा-प्रद्युम्न-शाम्बाः सममभ्युपेयुः

॥ ८० ॥

तत्राऽऽत्मस्वामिनो वीरघवलस्य धरापतेः । स्वर्दिपामद्विपारूढां, मूर्तिं स्थापयति सः यः

॥ ८१ ॥

अत्रैव शुभ्रज्जयशैलमौलौ, नन्दीश्वरद्वीपगतान् जिनेन्द्रान् ।

तस्यानुजः स्थापयति स्म तेजःपालमिषानो यशसां निधानम्

॥ ८२ ॥

धर्मस्थानमिदं विलोक्य जगतामानन्दकन्दोदयप्राष्टरूपमनरूपसम्भ्रममरानन्दीश्वराख्यं जनः ।

तेजःपालयशसि मांसलरसं गायन् मुहुर्गायते, मन्ये नूतनवस्तुसंस्त्रववशोद्भूतां प्रभूतां मुदम् ॥ ८३ ॥

अनुपमदेव्यास्तेन, स्वप्रेयस्याः प्रभूतसुकृताय ।

आदिजिनेश्वरपुरतो, विदधेऽनुपमासरश्च नवम् ।

॥ ८४ ॥

विशेषके रैवतकस्य मूर्तः, भीनेमिचैत्ये जिनवेदमसु त्रिषु ।

श्रीवस्तुपालः प्रथमं जिनेश्वरं, पार्श्वं च वीरं च मुदान्वयीविशत्

॥ ८५ ॥

तदन्तिके च निःशेषसुरा-ऽसुरनिषेविताम् । कारयामास यः काव्यकामधेनुं स्वरस्वतीम्

॥ ८६ ॥

येनाऽऽत्मनः स्वपत्न्याश्च, स्वस्य भ्रातुः कनीयसः । तद्धार्यायाश्च शैब्यचैत्येऽकार्यन्त मूर्तयः

॥ ८७ ॥

अम्बिकामवने येन, मूर्तिं स्वस्यानुजस्य च । जगन्नेत्रमुघाष्टुष्टिः, कारिता चारिमास्पदम्

॥ ८८ ॥

तदीये शिखरे नेमिं, चण्डपश्रेयसे च यः । मूर्तिं रम्यां तदीयां च, मल्लदेवस्य च व्यधात्

॥ ८९ ॥

चण्डप्रसादपुण्यं वर्द्धयितुं योऽवलोकनाशिखरे ।

स्थापितवान् नेमिजिनं, तन्मूर्तिं स्वस्य मूर्तिं च

॥ ९० ॥

प्रद्युम्नशिखरे सोमश्रेयसे नेमिनं जिनम् । सोममूर्तिं तथा तेजःपालमूर्तिं च योऽतनोत्

॥ ९१ ॥

यः शाम्बाशिखरे नेमिजिनेन्द्रं श्रेयसे पितुः

..... तन्मूर्तिं च, कारयामास भक्तिततः

॥ ९२ ॥

वस्त्रापधे जगत्यां, भवनाम्नः शूलिनो भवनमनुलम् ।

उद्धरति स्म विवेकी, तेजःपालस्तदनुजन्मा

॥ ९३ ॥

पुरतः कालमेघस्य, क्षेत्रपालस्य कारितः । अधिनोर्मण्डपस्तत्र, तेनैव मतिशालिना

॥ ९४ ॥

प्रीतो वस्त्रापधमुवि पुरा यद् ददौ तापसानां, सद्गः किञ्चित् तदिदमधुना प्रापितं तैः करत्त्वम् ।

प्रामोद्वारादन्विलमपि तन्मोचयामास तेभ्यस्तेजःपालः सुकृतकृतधीर्वस्तुपालानुजन्मा

॥ ९५ ॥

स्ववंदयमूर्तिभिः श्रीमद्येमिनाधेन चान्वितः । मुसोद्घाटनकस्तम्भे, वस्तुपालेन निर्ममे

॥ ९६ ॥

अश्वाराजस्य पितुः, पितामहस्यापि सोमराजस्य । मूर्तिं युगमत्र मन्त्री, व्यधापयत् तुरगघृष्टस्यम् ॥ ९७ ॥

द्वारे यत् किल दक्षिणामनुगतं यच्च प्रतीच्यां स्थितं,  
यत् कौबेरदिगाश्रितं च सदनं श्रीनेमिनाथप्रभोः ।  
कामं मण्डयति स्म तानि सचिवोत्तंसः स यैस्तोरणै—

ईष्टिस्तद्विभवं विभाव्य जगतो नान्यत्र विश्राम्यति ॥ ९८ ॥

गुरुः कुलेऽस्य नागेन्द्रगच्छव्योमार्यमाऽभवत् । श्रीमहेन्द्रप्रभः श्रीमान्, शान्तिस्त्रिस्ततः श्रुतः ॥ ९९ ॥

आनन्दा-ऽमरसूरी, तदीयगच्छाविकौस्तुभप्रतिमौ ।

तदनु हरिमद्रसरिः, शमरत्नमहोदधिः समभूत् ॥ १०० ॥

सत्यदे विजयसेनसरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

वस्तुपालजिनविम्बपद्धतिर्जृम्भते जगति यत्प्रतिष्ठिता ॥ १०१ ॥

अत्यद्भुतैः कृत्यशतैरजसं, योऽसाधयद्धर्ममतुल्यकर्म ।

श्रीवस्तुपालः सचिवावतंसः, प्रकल्पतां कल्पशतायुरेषः ॥ १०२ ॥

यो विद्वद्विरप्येवं स्तूयते—

स्वागाराधिनि राघवेऽप्येककर्णेन मूरभूत् ।

उदिते वस्तुपाले तु, द्विकर्णा वर्ण्यतेऽधुना ॥ १०३ ॥

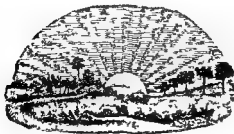
जज्ञे हर्षपुरीयगच्छतिलकः श्रीमन्मुनीन्दुप्रभु—

देवानन्दगुरुस्ततस्तदपरः सुरिश्च देवप्रभः ।

तच्छिष्यैर्नरचन्द्रसुरिगुरुभिर्दत्तप्रतिष्ठोदय—

स्तामेतामतनोत् प्रशस्तिमतुलं सुरिर्नरेन्द्रप्रभः ॥ १०४ ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरवस्तुपालप्रशस्तिः श्रीनरेन्द्रप्रभसुरिविरचिता ॥



## पञ्चमं परिशिष्टम् ।

मलधारित्रीनरेन्द्रप्रभसूरिविनिर्मिता

वस्तुपालप्रशस्तिः ।

त्वस्ति श्रीवह्निसालाग्र्य, वस्तुपालाग्र्य मन्त्रिणे । यद्यश्रःशशिनः शत्रुदुष्कीर्त्या शर्वरीयितम् ॥ १ ॥

द्यौण्डीरोऽपि विवेकवानपि जगन्नाताऽपि दाताऽपि ना,  
सर्वः कोऽपि पथीह मन्यरगतिः श्रीवस्तुपालाग्रिते ।

त्वज्योतिर्देहनाहुतीकृततमःस्तोमस्य तिग्मद्युतेः,

कः शीतांगपुरःसरोऽपि पद्मीमन्वेतुमुत्कन्धरः ?

॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य यशःप्रकाशे, विश्वं तिरोदयति भूर्जेटिहासमासि ।

मन्ये समीपगतमप्यविभाव्य हंसं, देवः स [प]द्मवससिश्चलितः समायेः

॥ ३ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविधान्तमधिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

शून्येषु द्विषतां पुरेषु विपुलज्वालाकमालेदयाः,

खेलन्ति स्म दवानलच्छलभृतो यस्य प्रतापाग्रयः ।

जृम्भन्ते स्म च पर्वगर्वितसितज्योतिःसमुत्सेकिते,

ज्योत्स्नाकन्दलकोमलाः शरवणव्याजेन यत्कीर्तयः

॥ ५ ॥

कुन्दं मन्दप्रतापं गिरिशगिरिरिपाहकृतिः साश्रुचिन्दुः,

पूर्णन्दुः सिद्ध.....विशुरिमा पाञ्चजन्यः समन्युः ।

शेषाहिर्निविशेषः कुमुदमपमदं कौमुदी निष्प्रमोदा,

क्षीरोदः सापनोदः क्षतमहिम हिमं यस्य कीर्तेः पुरस्तात्

॥ ६ ॥

यस्योर्वीतिलकस्य किशरगणोद्गीतैर्यथोर्मिर्मुहुः,

स्मेरद्विस्मयलोभमौलिविपलचन्द्रामृतोज्जीविनाम् ।

सृष्टिर्नामवदीदृशी मम न मेऽप्य.....वाप्येति गां,

मुण्डभ्रमरिणद्वापातुशिरसां शम्भुः परं पिप्रिये (?)

॥ ७ ॥

राकाताण्डवितेन्दुमण्डलमहःसन्दोहसंभादिभि-

र्यत्कीर्तिप्रकरैर्वगधयतिरत्कारैकदेवाकिभिः ।

अन्योन्यानवलोकनाकुलिनयोः दौलत्सज्जा-शूलिनोः,

क त्वं क त्वमिति प्रगल्भरमसं वाचो विवेरुर्मियः

॥ ८ ॥

बाढं प्रौढयति प्रतापशिविनं कामं यशःकौमुदी, सामोदां तनुते सतां विकचयत्यास्यारविन्दाकरान् ।  
 शत्रुस्त्रीकुचपत्रवह्निविपिनं निशेषतः, शोषयत्यन्यः कोऽप्युदितो रणाम्बरतले यस्यासिधाराधरः ॥९॥  
 तत्सत्यं कृतिभिर्यदेव भुवनोद्धारकधौरेयतां, विप्राणो मृगमच्युतस्थितिरिव प्रेमोचरं गीयते ।  
 यत्र प्रेम निरर्गलं कमलया सर्वाङ्गमालिङ्गिते, केषां नाम न जजिरे सुमनसामोर्जित्ववत्यो मुदः ॥१०॥

न यस्य लक्ष्मीपतिरप्युपैति, जनार्दनत्वात् समतां शुकुन्दः ।

वृषप्रियोऽप्युग्र इति प्रसिद्धिः, दधन्निनेत्रोऽपि न चास्य तुल्यः ॥ ११ ॥

स्वस्ति श्रीवलये, नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-

रस्पष्टेऽपि दिक्षां यशः कियदिदं बन्धास्तदेताः प्रजाः ।

दृष्टे सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्तिं काञ्चन या पुनः स्फुटमिव विधेऽपि नो मास्यति ॥ १२ ॥

यस्मिन् विश्वजनीनवैभयभरे विश्वम्भरां निर्भरश्रीसम्भारविभाज्यमानपरमप्रेमोचरां तन्वति ।

प्राणिमत्स्यकारि केवलमभूद्देहीति संकीर्तनं, लोकानां न कदापि दानविषयं नाप्रार्थनामोचरम् ॥ १३ ॥

दृश्यन्ते मणि-मौक्तिकस्तवकिन्ता यद्विद्वदेणीदृशो,

यजीवन्त्यनुजीविनोऽपि जगतश्चिन्ताश्मविस्मारिणः ।

यच्च ध्यानमुचः स्मरन्ति गुरवोऽप्यश्रान्तमाशीर्गिरः,

प्रादुप्यन्त्यमला यशःपरिमला श्रीवस्तुपालस्य ते ॥ १४ ॥

कौटोरीः कटक-ऽङ्गुलीय-तिलकैः केयूर-हाराविभिः, कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यस्यापि विश्राणितैः ।

विद्वांसो गृहमागताः प्रणयिनीरमत्यभिज्ञाभृतस्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमपि प्रत्यायमाश्चक्रिरे ॥ १५ ॥

सैस्तैर्येन जनाय काञ्चनचयैरश्रान्तविश्राणितैरानिन्ये भुवनं ददेतदभितोऽप्यैश्वर्यकाष्ठां तथा ।

दानैकव्यसनी स एव समभूदत्यन्तमन्तर्यथा, कामं दुर्धृतिषामयाचकचम् भूयोऽप्यसम्भावयन् ॥ १६ ॥

आगो यद्गुप्तावारिवारितजगद्धारिद्यदावानलश्चेतः कण्टककुट्टनैकरसिकं वर्णाश्रमेष्वन्वहम् ।

सङ्ग्रामश्च समग्रवैरिविषदामद्वैतयैतण्डिकस्तन्मध्ये वसति त्रिधाऽपि सचिबोचंसेऽत्र वीरो रसः ॥ १७ ॥

आश्चर्यं वसुवृष्टिभिः कृतमनःकौतुहलकृष्टिभिर्मिस्मिन् दानघनाघने तत इतो बर्षत्यपि प्रत्यहम् ।

दूरे दुर्दिनसंकयाऽपि सुदिनं तत्किञ्चिदासीत् पुनर्येनोर्वावलयेऽत्र कोऽपि कमलोत्थासः परं निर्मितः ॥ १८ ॥

साक्षाद् ब्रह्म परं धरागतमिव श्रेयोविवर्तैः सतां,

तेजःपाल इति प्रेतीतमहिमा तस्यानुजन्मा जयी ।

यो घटे न दशां कदापि कलितावयामविद्यामर्या,

यं चोपास्य परिस्पृष्टवन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्वृतिम् ॥ १९ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यागिरिनारसत्कशिलालेखे प्रथमपद्यतया वर्तते ॥ २ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यागिरिनारसत्कशिलालेखे द्वितीयपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रसूरिनाम्ना प्राचीनलेखसंग्रह भाग २ मध्ये ४१ संख्यागिरिनारसत्कशिलालेखे द्वादश-पद्यतयाऽपि वर्तते ॥ ४ प्रसिद्धम् गिरिनारशिलालेखे ॥

सङ्ग्रामः कतुमभिरत्र सततोद्दीपः प्रतापोऽनलः,

श्रूयन्ते स्म समन्ततः श्रुतिसुखोद्गारा वि[षी]नां गिरः ।

मन्त्रीशोऽयमशेषकर्मनिपुणः कर्मोपदेष्टा द्विपो,

होतव्याः फलवांस्तु वीरधवलो यज्वा यशोराशिभिः

॥ २० ॥

श्लाघ्यः स वीरधवलः क्षितिपावतंसः, कैर्नाम ! विक्रम-नयाविव भूर्तिमन्तौ ।

श्रीवस्तुपाल इति वीररत्नमतेजःपालश्च बुद्धिनिलयः सचिवौ यदीयौ

॥ २१ ॥

जनन्तप्रागल्भ्यः स जयति चली वीरधवलः, सशैल्यं साम्प्रोषि भुवमनिशमुदूर्ध्वमनसः ।

इमौ मन्त्रिप्रदौ कर्मठपति-फोलाधिपकलामदभ्रां बिभ्राणौ मुदमुदयिनीं यस्य तनुतः

॥ २२ ॥

मुहं वारिधिरेश वीरधवलः क्षमाशक्तदोर्विक्रमः,

पोतस्तत्र महान् यशःशतपटाटोपो न पीनघुतिः ।

सोऽयं सारमरुद्भिरञ्चतु परं पारं कथं न क्षणाद्,

यत्राश्रान्तमरिप्रतां कलयतः स्वावेव मन्त्रीधरौ

॥ २३ ॥

स्वैरं भ्राम्यतु नाम वीरधवलक्षोणीन्दुकीर्तिर्दिवं,

पाताले च महीतले च जलवेरन्तश्च नक्तन्दिवम् ।

धीसिद्धाङ्गननिर्गलं विजयते श्रीवस्तुपालाख्यया,

तेजःपालसमाह्वया च तदिदं यस्या ब्रह्मं नेत्रयोः

॥ २४ ॥

श्रीमन्त्रीधरवस्तुपालपञ्चसामुच्चावचैर्वीचिभिः,

सर्वस्मिन्नपि लम्बिते धवलता कल्लोलिनीमण्डले ।

गङ्गावेवमिति प्रतीतिविकलस्ताम्र्यन्ति कामं भुवि,

भ्राम्यन्तस्तनुसादयन्दिदमुदो मन्दाकिनीधार्मिकाः

॥ २५ ॥

हृदो रोहण ! रोहति त्वयि शुहुः किं पीनतेयं ? शृणु,

भ्रातः ! सम्प्रति वस्तुपालसचिवत्वागैर्जगत् प्रीयते ।

तन्नास्त्येव भगार्थिकुट्टनकया प्रीतिदरीकिञ्चरी-

गीतैस्तस्य यशोऽमृतैश्च तदियं मेदस्विता मेऽधिकम्

॥ २६ ॥

देवं स्वर्नाम् ! कष्टं, ननु क इव भवान् ? नन्दनोधानपालः,

खेदस्तत् कोऽयं ? केनाप्यहह ! हत इतः काननात् कल्पवृक्षः ।

हुं मा वादीस्तदेतत् किमपि करुणया मानवाना मयैव,

प्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमुर्व्यास्तिलकयति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ २७ ॥

१ पद्यमिदं नरेन्द्रधरिणाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेख्यसंग्रहे खाल २ पद्ये ४९ संख्यादिनारमस्तुशिलालेखे दृश्यं पद्यमाग्निं विद्यते ॥ २ 'नीयान्निकाः' गिरिनारसिलालेखे ॥ ३ पद्यमिदं नरेन्द्रधरिणाम्ना निर्दिष्टं प्राचीनलेख्यसंग्रहे भाग २ पद्ये ४१ संख्यादिनारमस्तुशिलालेखे नवमपद्यतया, पुरातनप्रबन्धसंग्रहपद्यवस्तुपालप्रबन्धे माणिक्यधरी-उच्छिन्न २५६ तमे च वर्तते ॥

कर्णायस्तु नमो नमोऽस्तु बलये त्यागैकहेवाकिनौ, यौ द्वावप्युपमानसम्पदमियत्कालं गतौ त्यागिनाम् ।  
भाम्याम्भोधिमतः परं पुनरयं श्रीवस्तुपालश्चिरं, मन्ये धास्यति दानकर्मणि, परामौपम्यधौरेयताम् ॥ २८ ॥

व्योमोत्सन्नरुधः सुधाधवलितः कक्षागवाक्षाङ्किताः,

स्तम्भश्रेणिविजृम्भमाणमणयो मुक्तावचूलोज्ज्वलाः

दिव्याः कल्पमृगीदृशश्च विदुषां यत्त्यागलीलायितं,

व्याकुर्वन्ति गृहाः स कस्य न मुदे श्रीवस्तुपालः कृती ? ॥ २९ ॥

यद् दूरीक्रियते स्म नीतिरतिना श्रीवस्तुपालेन तत्,

काञ्चित् संवननौपधीमिव वशीकाराय तस्येक्षितम् ।

कीर्तिः कौञ्जनिकुञ्जमञ्जनगिरिं प्राक्कलमस्ताचलं,

विन्ध्योर्वीधर-शर्वपर्वत-महामेरुनपि प्राप्यति ॥ ३० ॥

देवः पङ्कजभूर्विभाव्य भुवनं श्रीवस्तुपालोद्भवैः,

शुभ्रांशुघुतिभिर्भ्यशोभिरमितोज्ज्वल्यैर्बलक्षीकृतम् ।

कल्पान्तोद्भुतदुग्धनीरधिषयः सन्तापशङ्काकुलः,

शङ्के वत्सर-मास-वासरगणैः सख्याति सर्गस्थितेः ॥ ३१ ॥

चित्रं चित्रं समुद्रात् किमपि [नि]रगमद् वस्तुपालस्य पाणे—

यौ दानामुपवाहः स खलु समभवत् कीर्तिसिद्धखवन्ती ।

साऽपि स्वच्छन्दमारोहति गगनतलं खेलति क्षमाधराणां,

शृङ्गोत्सङ्गेषु रज्ज्वमरमुवि मुहुर्गाहते खेचरोर्वीम् ॥ ३२ ॥

पुण्यारामः सकलमुमनःसंस्तुतो वस्तुपालः, तत्र स्मेरा गुणगणमयी केतकीगुल्मपङ्क्तिः ।

तस्यामासीत् किमपि तदिदं सौरभं कीर्तिदम्भाद्, येन प्रौढप्रसरस्रुद्धा वासि[ता] दिग्विभागाः ॥ ३३ ॥

सेचं सेचं स खलु विपुलैर्वासनावारिपूरैः, स्फीतां स्फातिं [वि]तरणतर्कवस्तुपालेन नीतः ।

तच्छायायां भुवनमसिलं हन्त ! विभ्रान्तमेतद्, दोलाकेलिं श्रयति परितः कीर्तिकन्या च तस्मिन् ॥ ३४ ॥

श्रीवस्तुपालयशसा विशदेन दूरादन्योन्यदर्शनदरिद्रदृशि त्रिलोक्याम् ।

नामौ स्वयम्भुवि विशत्वपि निर्विशङ्कं, शङ्के स चुम्बति हरिः कमलमुत्तेन्दुम् ॥ ३५ ॥

॥ एष निःशेषविपक्षकलः, श्रीवस्तुपालः पदमद्भुतानाम् ।

यः शङ्करोऽपि प्रणयित्रजस्य, विभाति लक्ष्मीपरिरम्भयोम्यः ॥ ३६ ॥

चीत्कारैः शकटवजस्य विकटैरधीयहेयारवैरावै रवणोत्तरस्य नहलैर्वन्दीन्द्रकोलाहलैः ।

नारीणामय चक्षरीभिरशुभमेतस्य विव्रत्स्ये, मन्त्रोच्चारमिवाचचार चतुरो यस्तीर्थया[त्रा]महम् ॥ ३७ ॥

॥ इति मलघाटिधीनरेन्द्रप्रमखरिलता वस्तुपालप्रशस्तिः ॥



## पष्ठं परिशिष्टम्

श्रीजयसिंहसूरिविरचिता

वस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ।

श्रेयः श्रीमृनिमुवतः स तनुतां यो मन्दरागस्तले, सन्वानः कमठाधिनाथममृतोद्धारकैधौरेयकः ।  
निर्मर्यैनमधर्मकर्मलहरीपूरैरपारं भवाकूपारं पुरुषोत्तमाय न तमां दत्ते स्म कस्मै श्रियम् ॥ १ ॥

यस्मै रश्मिभरो गभीरिमगुणकान्तेन कल्लोलिनी-  
कान्तेनाञ्जनपुञ्जमञ्जिमजयी शङ्के स्वकीयोऽर्पितः ।

यस्यैव क्रमसेवनाय च मुदा मुक्तोऽङ्गम् कच्छपो,

लेभे लान्छनतां स यच्छतु सतां श्रीमुवतो निर्वृतिम्

॥ २ ॥

आनन्दाय सुदर्शनाऽस्तु जगतां यस्या मुखेनामृतो, नम्राया मृनिमुवतकमनसादर्शप्रतिच्छन्दिना ।  
आत्मद्वादशतां बह्वह्रहरहर्देवो हिमांशुर्महाकरूपानस्पपतङ्गपाटवतिरस्कारे चकारोद्यमम् ॥ ३ ॥

रक्षादक्षो दिवि दिविपदां कोऽपि सन्ध्यासमाधि,

प्यातुर्धातुश्चतुःकजलतः शौर्यराशिः पुराऽऽसीत् ।

मेहुत्सङ्गमतिमितितया समुत्थीनो बभूव,

मूर्खरम्भव्रसदमुहदो यस्य मुदे य एव

॥ ४ ॥

'बंदो विश्वत्रितयविद्रितः पर्वणां वेदम तम्माधौलुक्क्याल्यः समजनि समुन्मीलदौत्रत्यलीलः ।  
सच्चूलमस्मिन्सितितयश्वेलतानातिरेकादेकच्छग्रामतनुत महीं मूलराजो महीन्दुः ॥ ५ ॥

कृत्वाऽथः कच्छपं सिन्धुराजप्रशोभतोमितः । अमन्दरोचितमुजोऽप्यमवद् यः श्रियः मियः ॥ ६ ॥

कीर्तिस्तोममुधामृतानि वसुधामण्डानि रेजुः सुधा-

कुण्डानीव नवत्रिविष्टपसदां स्वापानि यस्मिन् विभौ ।

रथानागचतुष्क्रिका इव सदा सेवासमायातपट्-

विमद्राजकुलीयदक्षिणमुजव्याजेन येषां वसुः

॥ ७ ॥

तस्मादकरमलमिन्द्रजकीर्तिमृनिमुग्रीहृणां निजमहोददनाशिदीप्तम् ।  
मूर्ति हरस्य धरणीं रिपुराजमुन्देधामुण्डराज इति राजयति स्म राजा

॥ ८ ॥

यत्तत्रवल्ली हरसिद्धिसिद्धप्रपेव रेजे समराटवीषु ।

मृत्युन्मुखैः साहसिर्भयशोम्भः, कीर्तं निजाङ्गक्षतजेन यस्याम् ॥ ९ ॥

मूलमस्तदनु वल्लभराजदेवः, स्थातः क्षितौ समिति यः सितविग्रमाभिः ।

हृष्यामदामभिरपूजि सुराङ्गनाभिः, शृङ्गारदेवतमिवेप्सितकान्तदाता ॥ १० ॥

स्वयं विनम्रेषु परेषु युद्धसिद्धैकचिन्ताचयचान्तनिद्रः ।

यः स्वप्नसङ्क्षयैरपि बाहुदण्डकण्डूतिनिर्भेदमुदं न भेजे ॥ ११ ॥

तस्मादमृद् मूलयस्य सृषा, भीदुर्लभो दुर्लभराजदेवः ।

यस्यासिसिन्धौ वितताभिरेत्य, मग्नं महीमृत्कुलवाहिनीभिः ॥ १२ ॥

सुरक्षीणां नेत्रं सृजति निजरूपादनिमिषं, ध्रुवं तस्मिन् मस्मीकृतारिपुरमृद् भीमनृपतिः ।

यदुत्पाते जाते द्रुतवृत्तभियो श्लोत्रवृत्तेरुरः श्रीरास्यं गीः करमसिलता युक्तममुचत् ॥ १३ ॥

यद्धानोदकजातसिन्धुपटलैः कीर्तिप्रभापाण्डुभिः, शत्रुस्त्रीजनसाङ्गनाशुसलिलक्षोतस्विनीभिः समम् ।

सम्भिद्यैव पदे पदे तनुमतामन्तः समन्तान्मुदं, तन्वद्भिर्जितगाङ्गा-यानुनजलैर्धात्री पवित्रीकृता ॥ १४ ॥

क्रामन्ति स्म यथा यथाऽम्बरपथाद् यात्रासु यात्रायनीजैरे सर्षति दर्पवारसुरगक्षुण्णा रजोराजयः ।

पश्यन्तीवा तथा तथा त्रिपथगातोयेऽपि विच्छाद्यतां, शङ्के कीर्तिरगादघौतघवला दूरेऽतिदूरादपि ॥ १५ ॥

तस्माद् विस्मारितरतिपतिः कामिनामङ्गपाप्मा, नाम्ना कर्णः समजनि भुजाचार्लिनां मौलिरलम् ।

निन्धं बन्दिग्रहमपि निजं बहुमन्यन्त मन्ये, धन्यम्मन्या रिपुयुवतयो यस्य रूपं निरूप्य ॥ १६ ॥

यदङ्गपटनोत्सृष्टैः, परमाणुगणैरिव । विधिर्विधाय कन्दर्पं, सदर्पां धामपि व्यधात् ॥ १७ ॥

सततनुप्रपञ्चेन, यस्तां कीर्तिपटीं व्यधात् । चतुर्दशपि विश्वानि, ज्छादयाच्चकिरे यया ॥ १८ ॥

व्यजयत जयसिंहदेवमृपस्तदनु 'दिशंस्त्रिदशप्रमुप्रभावः ।

यथासि यदेसिषेनुदुग्धमुगैः, श्रितशुद्धिर्दिदि बोहफेनसाम्यम् ॥ १९ ॥

तत् प्रेलोक्यनिमित्रमिकमृहक्रोडस्फुरन्मालवधमाभृत्कीर्तिनिताम्बिनीमुखपरिक्षेपाय पांस्तरम् ।

लीलास्रजगङ्गां खरखुरोत्सातक्षमामण्डलच्छिद्रवैरुरगालयेऽपि तुरगा यस्य क्षणाच्चिक्षिपुः ॥ २० ॥

विधस्योपकृतिव्रतव्यतिकरैस्तैर्यद्यशस्तेजसोः,

सामान्यमतिपतिमप्यसुलभां लब्ध्वेन्दु-तीव्रपुती ।

काङ्क्षन्तौ चिरनन्दितामिव तयोरायुःप्रवृद्धयौषधीं,

द्रष्टुं काञ्चन काञ्चनक्षितिधरोपाप्तेऽपि तौ आग्रयतः ॥ २१ ॥

तत्कालं कलहे निहत्य किमपि प्रत्यायिताः शत्रवः, स्वर्गस्त्रीपरिरम्यणेऽपि न मनःस्वास्थ्यं समासेदिर ।

यं कल्पान्तकृतान्तवक्त्रकुहराकारस्फुरत्कार्मुकं, पश्यन्तः प्रसरन्तमद्भुतभयावेशेन मीलदृशः ॥ २२ ॥

अवघयनाशु कृपाणपातं, विरोधिवीरा नमनक्रियाभिः ।

यस्याङ्घ्रिपट्टे लब्धबासां, लक्ष्मीं च दक्षा रमसादशृङ्ख ॥ २३ ॥

स्वैरेव प्रहृतैर्द्विषद्विरगरीमृतैः सुरीभिः समं,  
गीतं प्रीतिरसैः स्वमेव हृषिते तस्मिन् यशः शृण्वति ।

इमां पाति स्म कुमारपालवृषतिर्षद् कीर्तिकालुष्यदं,  
तद् बाष्पाञ्जनकदमलं न रुदतीविचं सचितोऽग्रहीत् ॥ २४ ॥

जैनं धर्मसुरीचकार सहसाऽर्णोराजमन्त्रासयद्, बाणैः कुङ्कुणमग्रहीदपि गुरुचक्रे स्मरध्वंसिनम् ।  
इत्थं यस्य परित्तक्षितियुतो हंसावलीनिर्मलैः, रामस्येव निरन्तरं नवयशःपूरीर्दिशः पूरिताः ॥ २५ ॥

तादृगदानपरम्पराभिरभितो निष्काश्य कालं कलिं,  
त्रेता-द्वापरयोरहम्प्रथमिकावद्वष्टृहं पश्यतोः ।

श्रेयश्चन्दनतो विशेषकविधिं कृत्वा यशोजाह्नवी-  
पायोभिः कृतिना स्वयं कृतपुणो येनाभिषिक्तः क्षितौ ॥ २६ ॥

अजयदजयपालभूमिपालः, क्षितिमय मन्मथमञ्जुलेन येन ।

त्रिपुररिपुरापि प्रसूनबाणैरिव पिहितः सहसा यशःसमूहैः ॥ २७ ॥

अन्तर्गत्कीर्तिकासारं, कृतस्नानस्य सर्वतः । लम्बफेनलवायन्ते, तारा गगनदन्तिनः ॥ २८ ॥

बालः श्रीमूलराजोऽथ, विक्रीडन् समराङ्गणे । द्विपल्लताप्रतानानि, समूलमुदमूलयत् ॥ २९ ॥

आपये प्रसृतिसम्भ्रमेण यत्तेजसा रिपुयशःसुधारसः ।

तेन निर्गलितविन्दुवृन्दवद्, धोतते वियति तारकाततिः ॥ ३० ॥

श्रीमीमारमघो बमार भुजयोः श्रीमीमदेशो विमुर्दानारम्भविजृम्भमाणविभबप्रागरुम्यगार्जयशः ।

गीतो यत्तुलया विरोचनमुत्तः पातालवैतालकैर्योत्तालमनोभिरन्वहमहङ्कारं चकार स्मितः ॥ ३१ ॥

यदाननसरोजनेन, नित्यस्मेरेण निर्जितः । सज्जलज्ज इवामज्जद्, यच्चशोजलधौ विधुः ॥ ३२ ॥

अर्णोराजाङ्गवातं कलकलहमहासाहसिष्यं चुलुक्क्यं,

शीलावण्यप्रसादं व्यतनुत स निजश्रीसमुद्धारधुर्यम् ।

यस्य प्रत्येकधाराद्वयफलितमुजायुग्मवाली रिपूणां,

कीलालैः पीतवासा इव समिति चतुर्बाहुतामेति सज्जः ॥ ३३ ॥

तादृक्कम्पव्यतिकरमृतां सर्वतः पर्वतानां, व्यातन्वद्भिः क्षयसममरुत्पूरयत्क्षतिरेकम् ।

यत्प्रत्यभिक्षितिषवधधूर्गनिःश्वासवातजातोत्पतिरिव दिवि सदा श्रेमुरर्केन्दु-ताराः ॥ ३४ ॥

भूमारोद्धृतिधुर्यदुर्द्धरभुजस्तस्याङ्गवन्मा स्फुर-

त्कीर्तिः श्रीधवलोज्ज्वलि चौरधवलोज्ज्वलारलङ्घनः ।

यस्मिन् निभति मार्गणे रिपुगणं हृष्यन्ति तस्याङ्गनाः,

कामोऽयं कुरुते मदेकवशगं चित्तेशमित्याशया ॥ ३५ ॥

विक्रीडतो यस्य नवप्रताप-यशःकुमारौ जगदङ्गणान्तः ।

प्रभावमाजौ लसतस्तदङ्गरक्षामु दक्षाविव सूर-राजौ ॥ ३६ ॥

पाताले बलिर्जराज्यविशदे विश्वम्भरामण्डले, यल्लीलायितमञ्जुले सुरपुरे कल्पद्रुमराजुपि ।  
दारिद्रेण मयद्वतेन सहसा यद्वैरिवीराश्रयादश्रान्तप्रसरेण शैलशिखरकोटेषु विकीडितम् ॥ ३७ ॥

यस्यासिरम्भोदसहोदरश्री, शौर्यं द्विपस्येव मदप्रवाहः ।

सर्पन् सदपारिन्रेन्द्रकीर्तिकासारपूरं कलुषीचकार ॥ ३८ ॥

सचिवप्रवरं कञ्चित्, प्रार्थितस्तेन पार्थिवः । श्रीमान् मीमो मुदा वाचमुवाच श्रवणामृतम् ॥ ३९ ॥

बादेवताचरणकाञ्चननूपुरश्रीः, श्रीचण्डपः सचिवचक्रशिरोऽवतंसः ।

प्राग्वाटवंशलिकः किल कर्णपूरलीलायितान्यधित गूर्जरेराजधान्याः ॥ ४० ॥

मतिकल्पलता यस्य, मनःस्थानकरोपिता । फलं गूर्जरभूपानां, सङ्कल्पितमकल्पयत् ॥ ४१ ॥

बाग्देवीप्रसादः (१), सूनुश्चण्डप्रसाद इति तस्य । निजकीर्तिवैजयन्त्या, अनयत गगनाङ्गणे गङ्गाम् ॥ ४२ ॥

पातालमूले पिहिताशुभासः, पृथ्वीविभागेऽपि हराट्टहासः ।

स्वर्गेऽपि दुग्धाब्धिपयोविलासः, कीर्तिर्यदीया त्रिजगत्सुवास ॥ ४३ ॥

कीर्तिकश्मलितपार्वणसोम, सोम इत्यजनि तस्य तनूजः ।

सिद्धराजगुणभूषणभाजः, ससदो विशददर्पणकल्पः ॥ ४४ ॥

उत्कर्षप्रगुणां गुणा-ऽगुणपरिज्ञानौचितौ मन्महे, तस्य प्रीतिरसादनन्यमनसा येनान्वहं सेविताः ।

देवस्तीर्थकृदेव केवलनिधिर्विद्यानिधान गुरु, सुरः श्रीहरिमद्र एव गुणघीः सिद्धेश एवाधिपः ॥ ४५ ॥

सीताकुसिसरोवरैकवरलाकान्तोऽश्वराजाख्यया, तस्याभूत् तनुभूः सदाऽपि जननीभक्तौ च यः पावनः ।

स्पर्जदूर्जटिजूटकोटरपदन्यासोत्थपापच्छिदे, स्वर्नद्याऽपि समाश्रितः सितलसत्कीर्तिच्छविच्छप्रना ॥ ४६ ॥

सप्तलोकचरी सप्ततीर्थयात्रासमुद्रचा । गङ्गा जिगाव यत्कीर्तिर्विध्वनितयविस्तृताम् ॥ ४७ ॥

मैमीव नैपघमहीरमणस्य तस्य, कान्ता सती समजनिष्ट कुमारदेवी ।

यन्मानसे जिनपदाम्बुजभाजि शुद्धपक्षद्वयः पतिरराजत राजहंसः ॥ ४८ ॥

श्रीमल्लदेव इति तत्तनुमूर्धभूव, यत्कीर्तिपूरशशिर्नोर्गगनाङ्गपीठे ।

स्पर्धोद्धुरं प्रस्तुत्योरिव साम्यदण्डं, स्वर्दण्डमेव विषिरन्तरधत् हृष्टः ॥ ४९ ॥

विद्येते हृद्यविद्यौ तदनु तदनुजौ धीनिधी वस्तुपाल-

स्तेजःपालश्च तेजस्तरणितरुणिमस्फूर्तिरोचिष्णुमूर्ती ।

श्रीमन्नेतौ निजश्रीकरणपदकृतव्यापृती प्रीतियोगात्,

तुभ्यं दास्यामि विश्वं जयतु नवनवं धाम तन्मन्त्रमित्रम् ॥ ५० ॥

इत्युक्त्वा प्रीतिपूर्णय, श्रीवीरश्रवणाय तौ । श्रीमीमममुजा दचौ, वित्तमाप्तमिवाऽऽत्मनः ॥ ५१ ॥

अन्ये केचन रोचमानमतयो मन्त्रीधरा गास्करा,

लप्स्यन्ते वत ! वस्तुपालसचिवाधीनेन साम्यं कुतः ? ।

सार्धं यल्लघुबन्धुनाऽपि दिविषद्वन्द्वैकमान्यः स्वयं,

सामान्यप्रतिपत्तिगौरवपदं वाचस्पतिर्वाञ्छति ॥ ५२ ॥

वीरश्रीवरधाम्नि वीरधवले सिंहारवान् मारवान्, जेतुं यातवति प्ररुदपुलकैरङ्गयन् पौरुषम् ।  
यस्तीर्त्वा यदुसिंहसिंहणवलम्बोधि मुजक्रीडया, गर्जन्नर्जितवान् यशस्विजगतीमुक्तालतामण्डनम् ॥५३॥

सम्पूर्णं भुवने धनेन रजसा श्रीतीर्थयात्रापरिस्यन्दिस्पन्दनवृन्दतारतुरगघातक्रमोत्पातिना ।  
यत्कीर्तेः सह पांशुकेलिमुहो नन्दन्ति मन्दाकिनी-दुग्धाम्बोधि-विभावरीविशु-ककुप्कुम्भीन्द्र-रुद्रादयः ५४

येनाऽकारि तमोनिकारिकलशालद्वारि शत्रुञ्जयदमाभृन्मण्डनमिन्द्रमण्डपमहो ! नामेयमर्तुः पुरः ।  
तेनैकां धुधुनीं दधद्विमगिरिः पार्श्वस्थपार्श्वप्रभृ-श्रीमन्नेमिनिकेतकेतनयुगामोगेन निर्मलितः ॥५५॥

यः शत्रुञ्जयरोखरं जिनगृहश्रीतारहारं स्वरुचाराघोरणि तोरणं यदसृजत् तन्मूर्ध्नि लक्ष्मीः स्थिता ।  
शङ्केऽभूद्वितद्विपक्षवदना नन्तुं समागच्छतो, नामेयं प्रणिपत्य च प्रचलतो यस्याऽऽस्यवीक्षाशया ॥५६॥

श्रीशत्रुञ्जयशृङ्गसीमि सरसि प्राप्याभु यत्कारिते, नीचैत्याय सुधाकराय विबुधाः कुर्वन्ति नोपक्रमम् ।  
इत्थं कृतिनोऽबहं विदधते कुन्दावदातसुता, भास्यच्छाश्वतराकया जगति यस्कीर्त्त्या परीतेऽमितः ५७

येन व्यधाय्यत विधुपुतिहारिवारी, श्रीपादलिप्तनगरीमुकुरस्तडागः ।  
यद्यस्त्यगस्तिरिह कोऽपि तदेतु तन्याद्, दौःस्फालनं मुहुर्तितीव महोर्मिभिर्भ्यः ॥ ५८ ॥

अर्केपालितकप्राने, तेन तेनेऽद्भुतं सरः । यस्य नित्यन्दलेखेव, पार्श्वे वहति बाहिनी ॥ ५९ ॥  
येनोजपन्तगिरिमण्डननेमिचैत्ये, नामेय-पार्श्वजिनसद्युगं व्यधायि ।

अन्तः स्वयंघटितनाभिज-नेमिनाथ-श्रीस्तम्भनेश्वरहृन्मण्डपदधारि हारि ॥ ६० ॥  
स्वर्गं मधुरलैत्यतोरणशिर पद्यापदैः प्राप यद्वापी-रूप-तडागमार्गचलनैः पातालमूलं ययौ ।

सा यत्प्राप-भन्दिरोदर-वराऽऽरामप्रपामध्यमूविश्रामअयणेन भूमिमपि यत्कीर्त्तिर्मुहुर्गाहते ॥ ६१ ॥  
यजिमपितदेवमन्दिरशिरःकल्याणकुम्भप्रमामागमैर्विदधे सदा सुदिवसं सर्वत्र धात्रीतले ॥

इदयः शाश्वतिकस्तथा प्रसन्नमरश्यामच्छविच्छन्नाना, यत्तल्लक्षतवैरिवामनयनावक्त्रेषु रात्रिक्षणः ॥ ६२ ॥  
अस्थापयत् स्थिरमतिः प्राकुनीविहारे, संसारतारिलसदम्बदधर्मपुञ्जे ।

श्रीपार्श्व-वीरजिनपुङ्गवयुग्मदम्भाद्, यो यामिकद्वयमिवाभिमधर्मयन्तुः ॥ ६३ ॥  
तमेकदा करारोपमलितस्वर्णशेखरः । श्रीतेजःपालमन्त्रीसो, मुदा ज्येष्ठं व्यजीज्ञपत् ॥ ६४ ॥

सुव्रतक्रमनस्कृतिहेतोर्यातवान् भृगुपुरं मति सोऽहम् ।  
काव्यमुज्ज्वलनयो जयसिंहसूरिरित्यपठद न मध्ये ॥ ६५ ॥

तेजःपाल ! कृपालुपुत्र ! विमलप्राग्वाटवंशध्वज !,  
श्रीमद्वाम्बडकीर्तिरघ वदति त्वत्सम्पुल मन्मुखात् ।

१. °सत्याय गा० ॥ २. पद्यमिदं पुरातनप्रबन्धसंग्रहान्तर्गतवस्तुपालतेजःपालप्रबन्धे-“ एकदा मन्त्री तेजःपालो भृगुपुरमायात । तत्र धीमुनिमुपतचैत्याचार्ये श्रीरासिहसूरिभिरुक्तम्-मन्त्रिन् । सन्देहक मेकं १७७ । [ मन्त्रिणोक्तम्-आदिरयताम् । अथ पाद्यालययामिन्यो वृद्धा मुपत्येका समेल्य प्राह ” इत्युद्देशानन्तरं निष्कृतं वर्तते । पत्रम् १२ । तथा उपदेशतरङ्गिण्यां ७४ तमपत्रे-“येर्वैरैवैव वर्तते । केवलं तत्र ” धीमुनि-मुपतचैत्याचैरारायैरुक्तम् ” इति वर्तते, न तत्र रासिहसूरिरेत्यस्य वा कस्याप्याचार्यस्य नामोद्देशो वर्तते इति ॥

आजन्मावपि वंशयष्टिकलिता आन्ताऽहमेकाकिनी,

वृद्धा सम्प्रति पुण्यपूर्ण ! भवतः सौवर्णयष्टिस्पृहा

॥ ६६ ॥

इत्युक्त्वा मम षड्विंशतिमितास्तेन स्वयं दर्शिता-

स्तस्मिन् सुव्रतधाम्नि देवकुलिकाः कल्याणकुम्भस्पृशः ।

ताः सौन्दर्यमृतोऽपि कान्तिनिधिभिः कल्याणदण्डैर्विना,

सीमनैरिव सुश्रुवो निदधते नान्तः सतां सम्पदम्

॥ ६७ ॥

आदेशं देव ! यद्येवं, दस्ते स्वच्छेन चेतसा । हेमदण्डानिमानत्र, तदहं कारये रयात् ॥ ६८ ॥

इत्यन्तःस्मितवस्तुपालसचिवादेजालसतेजसस्तेजःपालमहामतिर्व्यरचयत् कल्याणदण्डानिमान् ।

प्रत्येकं हरहासहारिमहसो येषां शिखासु स्थिता, नृत्यन्ति प्रतिवासरं परिचलत्केतुच्छलात् कीर्तयः ६९

जुह्वन् पातकपादपैकदहने तीर्थेशधर्मे निजां, कर्माणि न कति क्रतुनकृतं स श्रीवस्तुपालानुजः ॥

दण्डा यूपवदुच्चसुप्रतगृह्णन्मृद्ववायामयी, ततेनाऽम्बुदमण्डलेश्वरयशःसिन्धौ समारोपिताः ॥ ७० ॥

दत्ते चेतसि सम्पदं सुकृतिनां तेनेयमुत्पन्निता, चञ्चलारुमरीविबीचिकलिता कल्याणदण्डावलिः ।

पूर्वोर्वीधरकुजतः प्रसरता प्रातर्वियत्कानने, यत्राऽऽगत्य भियेव गोपतिगवीवृन्देन मन्दायते ॥ ७१ ॥

यावच्चण्डपगोत्रमण्डनमणेः कीर्तिर्विद्यद्वाहिनीहस्ता दिग्गजगजिवाद्यविभवेभ्योर्माङ्गणे नृत्यति ।

दण्डास्तायदमी सुवर्णषट्नावित्राजिनः केतनक्रीडत्किङ्किणिकारव्यतिकरैः कुर्वन्तु गीतक्रमम् ॥ ७२ ॥

तेजःपालयशोविलासविशदश्रीणां दिशां कौतुकक्रीडामण्डपडम्बरं महदहो ! यावद् दधात्यम्बरम् ।

तावन्नुतनजातरूपजनितः सोऽयं समुत्तमनस्तम्भस्तोमसमानतां वितनुतामुदण्डदण्डमजः ॥ ७३ ॥

स्वस्तिश्रीव्योमदेशाद्दुदयनतनुभूकीर्तिरुर्वीतले श्री-

तेजःपालं मसत्ता वदति मतिमता वन्द ! नन्वा मदायुः ।

येन त्वत्कृतहेमध्वजविततभुजा दुःपमावाहद्ना,

लिम्पन्तां ता मुहुर्माहि जिनगृहिकास्त्वयशश्चन्दनेन

॥ ७४ ॥

मोहो द्रोहधियाऽधिरोहति रस श्रीपुङ्गवहृत्पञ्जरे, सितो यः कलिकालकेलिविपुरो दक्ष ! त्वया रक्षितः ।

श्रीसोमान्वयवार्धिवर्धनकलासोम ! स्वयं निर्मलो, धर्मः प्रत्युपकारकर्मठतया स त्वां क्षितौ रक्षतु ॥ ७५ ॥

श्रीवस्तुपाल ! तव चित्तवनप्ररूढः, सत्त्वोपकारमतिसारणिसिच्यमानः ।

सत्यत्र-पुण्यकुसुमः फलद्रोऽस्तु तुभ्यमव्याजविश्वसुहृदे जिनधर्मवृक्षः

॥ ७६ ॥

श्रीसुव्रतपदाम्भोजमधुघातमधुव्रतः । एतां प्रशस्तिमस्ताषां, जयसिंहः कविर्व्याधात्

॥ ७७ ॥

॥ श्रीजयसिंहसुरिविरचिता यस्तुपालतेजःपालप्रशस्तिः ॥



# सप्तमं परिशिष्टम् वस्तुपालस्तुतिकान्यानि ।

वस्ति श्रीवस्तुपालाय, वगौ यद्वद्विमुमुवः । कोडीकृताम्बरं रौप्याञ्जनभाजनवद् यशः ॥ १ ॥

अन्तःक्षारं रिपूणां घनमपि कवलीकृत्य तृष्णातुरेव,  
त्वत्कीर्तिर्नाऽऽप तृप्तिं भुवि सचिव । जवात् क्षीरनीराकरेऽपि ।

तस्मादाकाश-नाकोरगनगरचरस्वर्धुनीपानहेतोः,

सर्वत्रापि त्रिलोकीहितचरित । चिरं सम्प्रमाद् बम्प्रमीति ॥ २ ॥

भवद्भुजभुजङ्गोऽसौ, वस्तुपाल । द्विषां भये । अस्मि दधाति भूत्कारविषोद्वारसहोदराम् ॥ ३ ॥

औषधीशसलः सत्यं, वस्तुपालयशोमरः । येन प्रसर्पता पश्य, विषं मुक्तामयं कृतम् ॥ ४ ॥

शेषद्वेपविधायिनीमपि भवत्कीर्तिं मुधासोदरां, श्रीमन्वीश । मुलस्फुरद्विषभिदे गायन्ति नागाङ्गनाः ।

शम्भुः स्वाङ्गविरोधिनीमपि पुनर्नित्योपरोधादिमां, देवीर्गापयते विषाकुलगलश्यामत्वसंलसये ॥ ५ ॥

कल्पद्रुमसवावतंसमधुपीशङ्कारलब्धोपमाः, कामं कामगवीनवीनपयसां पानेन तारस्वराः ।

साक्षिन्तामणिरश्मिभस्मिततमःस्तोमे सुमेरोर्गुहागर्भे चण्डपगोत्रमण्डन । भवद्भानानि देव्यो जगुः ॥ ६ ॥

देव । त्वत्प्रतिपन्थिपार्थिवपुरीसौघाग्रभागादिव, प्राप्य व्योमविहारदुर्लभमपि प्रौढप्ररूढमभः ।

श्रीमच्छण्डपगोत्रमण्डन । भवत्कीर्त्या जितो यामिनीजीवेशस्तनुते वृणं निजमुखे लक्ष्मच्छविच्छभना ॥ ७ ॥

गुणग्रामे रामे जितसितकरे सत्यपि निजे, स्वयं गृह्णासि त्वं परगुणमतादृशमपि यत् ।

अयं लोभक्षोभश्चतुर । चतुराम्भोचिरसनान्वीशिक्षादक्ष । स्फुरति किमु ते मन्त्रिमुकुट ! ॥ ८ ॥

भोगीन्द्रस्त्वद्भुजेन त्रिपुररिपुरपि त्वत्प्रभुत्वप्रभावैः,  
शीताशुस्त्वन्मुखेन त्रिदशसरिदपि त्वच्चरित्रप्रपञ्चैः ।

शक्रेभस्त्वद्भुतेन प्रसभमभुमतां लम्बिताः सज्जलज्जं,  
निर्मज्जन्ति स्म तस्मिन् सचिव । तव यशस्तोयधी वस्तुपाल ! ॥ ९ ॥

भतां भोगभृतां विभर्ति वसुधामेव प्रभावाद्भुता,  
दिग्दन्तीन्द्रकरस्तु हन्ति च रिपून् धत्ते च धात्रीमिमाम् ।

श्रीमन्वीश । भवद्भुजस्तु कृतिना दत्ते च विचित्रज,  
भिन्ने च द्विपतो दधाति च धरामेषां क साम्यं मिथः ॥ १० ॥

इन्दुर्निन्दति कौमुदीसमुदयं मुक्तामणीनां ततिर्गुक्तालङ्कृतिरस्तचण्डिमहिम् दर्पी न सर्पाधिपः ।

गर्वं शर्वधराधरो न कुस्ते न स्वर्धुनी स्पर्द्धिनी, श्रीमन्वीश्वरवस्तुपालयशसि त्रैलोक्यमाकामति ॥ ११ ॥

बलि-कर्ण-दधीचिकीर्त्यः, कलिपद्धार्षितमत्यजन् मलम् ।

तव दानपयोनिदीकृतस्नपनश्चण्डपगोत्रमण्डन । ॥ १२ ॥

शङ्के पद्मजिनीपतिः कलुषमुखा सार्थे । स्वयं प्रार्थितः, कर्षं कर्षमिलातलादनुदिनं त्वदानतोयच्छटाः ।

श्रीमच्छण्डपवंश्य । सिध्यति शचीचित्तेशलीलवनं, नैवं चेत् कथमन्यथा विटपिनामप्यत्र दानक्रिया ! ॥ १३ ॥

॥ वस्तुपालस्तुतिकान्यानि ॥

# अष्टमं परिशिष्टम्

## वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि ।

[ महामात्यश्रीवस्तुपालविनिर्मितनरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रतिसर्गप्रान्त-  
गतानि अन्यान्यकविविरचितानि वस्तुपालस्तुतिकाव्यानि । ]

सद्भामसिंहपुतरुधिरारुणानि, श्रीवस्तुपालकरवालविजृम्भितानि ।

कीनाशकासरकटाक्षसहोदराणि, को नाम वीक्षितुमपि क्षमते विपक्षः ॥ १ ॥

प्रथमसर्गप्रान्ते ॥

दृश्यः कस्यापि नायं प्रथयति न परमार्थनादैन्यमन्य-

स्तुच्छामिच्छां विषये तनुद्वयतया कोऽपि निष्पुण्यपण्यः ।

इत्थं कल्पवृक्षेऽस्मिन् व्यसनपरवशं लोकमालोक्य सृष्टः,

स्पष्टं श्रीवस्तुपालः कथमपि विधिना नूतनः कल्पवृक्षः ? ॥ २ ॥

द्वितीयसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! कलिकालविलक्षणस्त्वं, संलक्ष्यसे जगति चित्रचरित्रपात्रम् ।

यद् दानसौरभवता भवता बितेने, नानेरूपेन मदमेदुरिता मुसश्रीः ॥ ३ ॥

तृतीयसर्गप्रान्ते ॥

गृह्णासि नाम परतोऽपि नवान् गुणास्त्वं, त्यागो गुणस्तव नवस्तु न वस्तुपाल ! ।

लोकोत्तरस्तदपरस्य नरस्य स स्याद्, यत् तादृशो नहि दृश्योः पथि मादृशानाम् ॥ ४ ॥

चतुर्थसर्गप्रान्ते ॥

कैसरसिरुहं ते वासवेदम् श्रियोऽमृदजनि वदनपद्मं सद्य वाग्देवतायाः ।

इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुयः कं ? , सन्निवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ५ ॥

पञ्चमसर्गप्रान्ते ॥

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यैकादशसर्गप्रान्ते वर्तते, उदयप्रभीषयस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते, जितद्वितीयवस्तुपालचरिते "कपालवालं श्रीवस्तुपालं स्तौति स्म कथनम् ।" इत्युक्तेन निर्दिष्टं चेति वर्तते ॥ २ पद्यमिदमुदयप्रभीषयस्तुपालस्तुतौ २३तमं वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं नरनारायणानन्द-  
महाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥



इतरगुणकथायाः कायिकत्वसृष्ट्यायामिह बहति सहास्यं कस्य नो लास्यमास्यम् ? ।  
तव तु विततकीर्तेः कीर्तनं कर्तुकामः, सुरगुरुरपि शङ्के वस्तुपाल ! त्रपादुः ॥ ६ ॥

षष्ठसर्गप्रान्ते ॥

जनन्यामोहवल्लीयमिन्दिरा मन्दिरे स्थिता । मन्त्रिणा वस्तुपालेन, कल्पवल्ली विनिर्मिता ॥ ७ ॥

सप्तमसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपालसचिवस्य परे कवीन्द्राः, कामं यशांसि कवयन्तु वयं तु नैव ।  
येनेन्द्रमण्डपकृतोऽस्य यशःप्रशस्तिरस्त्येव शकद्दृदि शैलशिलाविशाले ॥ ८ ॥

अष्टमसर्गप्रान्ते ॥

कैरसरसिरुहं ते वासवेरम श्रियोऽमृदजनि वदनपद्मं सद्य वाग्देवतायाः ।  
इह जगति समस्ते वस्तुपाल ! स्तुमः कं ?, सचिवतिलक ! धन्यं तद् वदाऽन्यं वदान्यम् ॥ ९ ॥

नवमसर्गप्रान्ते ॥

यै श्रीः स्वयं जिनपतेः पदपद्मसन्धा, भालस्थले सपदि सङ्गमिते समेता ।  
श्रीवस्तुपाल ! तव भालनिभालनेन, सा सेवकेषु मुखमुन्मुखतामुपैति ॥ १० ॥

दशमसर्गप्रान्ते ॥

त्वत्कीर्तिर्ज्योत्स्नया जाते, तीरे नीरेगिष्ठुः सिते । नेक्ष्यन्ते पश्चिभिर्वस्तुं, वस्तुपाल ! वनालयः ॥ ११ ॥  
मुकुलितकमलोदयः कवीन्दुः, क इव न काव्यसुधानिर्विभूव ? ।

स्फुरदुरुषिभवस्तु वस्तुपालः, कविसविता कविताप्रभाभिरामः ॥ १२ ॥

एकादशसर्गप्रान्ते ॥

ईरो रणेषु चरणप्रणतेषु सोमो, वक्रोऽतिवक्रचरितेषु बुधोऽर्थबोधे ।  
नीतो गुरुः कृतिजने कविरक्रियासु, मन्दोऽपि च ग्रहमयो नहि वस्तुपालः ॥ १३ ॥

द्वादशसर्गप्रान्ते ॥

श्रीवस्तुपाल ! जितबालभृणालगर्भे, शुभ्रं वितन्वति जगत् तव कीर्तिपूरे ।  
मन्यामहे कुबल-कज्जल-कोकिला-ऽलि-काकोल-कोलसहसामभिधा मुधाऽमृत् ॥ १४ ॥

त्रयोदशसर्गप्रान्ते ॥

लक्ष्म्यामार्कृष्टिमुष्माटनमनयवति स्तम्भमुज्जृम्भितम्भे,  
दोषे विद्वेषमभ्यन्तरिपुषु मूर्ति वश्यतां चितवृत्तौ ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यप्रथमसर्गप्रान्ते, उदयप्रगीयवस्तुपालस्तुतौ च २४तमं वर्तते ॥  
२ पद्यमिदं नरनारायणानन्दमहाकाव्यप्रथमसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्य-  
तृतीयसर्गप्रान्तेऽपि वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं उदयप्रगीयवस्तुपालस्तुतौ चतुर्थं वर्तते, प्रपञ्चकोशे "अपरस्तु"  
इत्युदयेनोद्धिखितं वर्तते, उपदेशतरङ्गिण्यां कविरन्दमप्यात् कस्यचिदुक्तयोजितं च वर्तते, त्रिनदर्पा-  
वस्तुपालचरिते पुनः हरिहरौक्तया निर्वाह्यं दृश्यते ॥

कर्तुं यद् वस्तुपाल ! प्रभवसि सकले मण्डले तत् तवैव,  
 श्रीमन्मन्त्रीश ! मन्त्रे स्फुरति निरवधिः काऽपि पट्कर्मसिद्धिः ॥ १५ ॥  
 चतुर्दशसर्गमान्ते ॥

भवति हि विभवो भवः परेषां, तव विभवोऽभिगवस्तु वस्तुपाल ! ।  
 इह महिममहो यशः प्रसूते, यदयममुत्र परत्र पुण्यलक्ष्मीम् ॥ १६ ॥  
 पञ्चदशसर्गमान्ते ॥

अचिन्त्यदातारमजातशत्रुं, श्रीवस्तुपालं कति नाश्रयन्ति ? ।  
 चिन्तामणिः सोऽपि युधिष्ठिरश्च, नान्वर्थसामर्थ्यपदं यदग्रे ॥ १७ ॥

शेहे शारदपर्वगर्वितशशिज्योत्स्नासपत्नं तव,  
 त्रेलोक्ये गुणजालकं विलसति श्रीवस्तुपालाद्भुतम् ।  
 यत् तादृग्दृढपाशवैशसकृतातङ्कामिशङ्काः स्फुटं,  
 नैवान्यस्य भवन्ति कीर्तिवरलाः खेलासु हेलास्पदम् ॥ १८ ॥  
 षोडशसर्गमान्ते ॥

## वस्तुपालस्तुतिकाव्यम् ।

श्रीवस्तुपालमन्त्रिणा सौवर्णमपीमयाक्षरा एका सिद्धान्तप्रतिलेखिता । अपरास्तु श्रीताड-  
 कागदपत्रेषु मपीवर्णाञ्चिताः ६ प्रतयः । एवं सप्तकोटिद्वयव्ययेन सप्त सरस्वतीकोशा लेखिताः ।  
 तवन्तु श्रीउदयप्रभसूरिभिराशीर्वादः प्रदत्तः । तद्यथा—

जम्बूद्वीपो जलधिपरिस्त्रायूपितो यावदास्ते,  
 ज्योतिश्चक्रं मुरगिरितटीं पर्यटत्येव यावत् ।  
 यावत् कूर्मो बहति वसुधां त्वयशःपुञ्जसार्धं,  
 जीयाज्जनं मुखमिव परं पुस्तकं वस्तुपाल ! ॥

उपदेशतरङ्गिणी पत्रम् १४२ ॥

## नवमं परिशिष्टम्

श्रीगिरिनारपर्वतस्थाः प्रशस्तिशिलाछेत्वाः ।

गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपाल-तेजःपालकारितश्रीनेमिनाथप्रासाद-  
मताः पद्मवृहत्प्रशस्तयः ।

( ३८-१ )

नमः सर्वज्ञाय ।

पायान्नेमिजिनः स यस्य कथितः स्वामीकृतागस्थिता-  
वग्रे रूपदिदक्षया स्थितवते प्रीते सुराणां प्रभौ ।

काये भागवते वनेवक्त्र...द्विपोलावने शंसता-

मिदशां(?).....मपि.....वनाजवे..... ॥ १

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुर(\*)वास्तव  
प्राग्वाटान्वयमस्तु ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआश  
राजनंदनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभृतस्य ठ० श्रीलुण्णिम महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं०  
श्रीतेजःपालाग्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो(\*)वरराज  
हंसायमाने महं० श्रीजयतसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तंभतीर्थशुद्राव्यापारान् व्यापृण्वति सा  
सं० ७७ वर्षे श्रीशृंगजयोजयंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादासादित  
संघाधिपत्येन चौलुक्यकुलनमस्तलप्रकाशनैकमार्तंडमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु(\*)तमहा  
राजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन  
तथा अनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमंडले धवलककप्रमुखनगरेषु शुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता  
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशृंगजया-शुद्राचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-सृगुपुर-(\*)स्तंभ-  
नकपुरस्तंभतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-  
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिताः ॥ तथा सचिवेधरवस्तुपालेन इह स्वयंनिर्मापितश्रीशृंगजय-  
महातीर्थवतारश्रीमवादितीर्थकरश्रीरूपमदेव-स्तंभनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपु(\*)रावता-  
रश्रीमहावीरदेवप्रभस्तिवसहित-कडमीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-  
श्वलोकना-गाम्भ-प्रद्युम्नशिसरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-शुरगाचिरूढस्वपितामह  
महं० ठ० श्रीसोम-निजपितृ ठ० श्रीआशाराजमूर्तिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथ (\*)  
देव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तंगश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअने-

१ परिशिष्टेऽभिन्न (\*) गच्छोष्टमं पुत्रिचिह्नं सर्वत्र शिलालेखपर्याक्समाप्तिप्राप्तोत्सवसमयम् ॥

ककीर्तनपरम्पराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयंतमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्व-  
धर्मचारिण्याः प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्रीकान्हडपुत्र्याः ठ० राणुकुक्षिसंगूताया महं० श्रीललिता-  
देव्याः (\*) पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेंद्रगच्छे मट्टारकश्रीमहेंद्रसरिसंताने शिष्यश्रीशांतिस्वरिशिष्य-  
श्रीआणंदस्वरि-श्रीअमरस्वरिपट्टे मट्टारकश्रीहरिमद्रस्वरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनस्वरिमतिष्ठित-  
श्रीअजितनाथदेवादिर्विशतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समंडपः श्रीसम्भेतमहातीर्थावतारप्रा-  
सादः कारितः ॥ (\*)

पीयूषपूरस्य च वस्तुपालमन्त्रीगिबुध्यामियान् विभेदः ।

एकः पुनर्जीवयति प्रमीतं, प्रमीयमाणं तु मुवि द्वितीयः

॥ १ ॥

श्रीद-श्रीदयितेश्वरप्रभृतयः संतु क्वचित् तेऽपि ये,

प्रीणन्ति प्रमविष्णवोऽपि विभवैर्नाकिचनं कंचन ।

सोऽयं सिंचति कांचनैः प्रतिदिनं दारिद्र्यदावानल-

प्रम्लानां पृथिवीं नवीनजलदः श्रीवस्तुपालः (\*) पुनः

॥ २ ॥

प्रातः । पातकिनां किमत्र कथया दुर्मित्रिणामेतया ? ,

येषां चेतसि नास्ति किंचिदपरं लोकोपकारं विना ।

नन्वस्यैव गुणान् गृणीहि गणेशः श्रीवस्तुपालस्य य-

स्तद्विश्वोपकृतिवतं चरति यत् कर्णेन चीर्णं पुरा

॥ ३ ॥

मिस्या भानुं भोजराजे मयाते, श्रीमुंजेऽपि स्वर्गसाम्राज्यभाजि ।

एकः समस्तार्थिनां वस्तुपालस्तिष्ठत्यश्रु (\*) म्यंदनिष्कंदनाय

॥ ४ ॥

चौलुक्यक्षितिपालमौलिसचिव ! त्वत्कीर्तिकोलाहल-

ल्लोलोन्मयेऽपि विलोक्यमानपुलकानंदाशुभिः श्रूयते ।

किं चैषा कलिवृषिताऽपि भवता प्रासाद-वापी-प्रपा-

कूपा-ऽऽराम-सरोवरप्रभृतिभिर्घात्री पवित्रीकृता

॥ ५ ॥

स श्रीतेजःपालः, सचिवश्चिरकालमस्तु तेजस्वी ।

येन वयं निधिताश्चितामणिने(४)व नंदामः

॥ ६ ॥

लवणप्रसादपुत्रश्रीकरणे लवणसिंहजनकोऽसौ ।

मंत्रित्वमत्र कुरुतां, कल्पशतं कल्पतरुकल्पः

॥ ७ ॥

पुरापादेन दैत्यारैर्मुवनोपरिवर्तिता । अधुना वस्तुपालस्य, हस्तेनाथःकृतो बलिः

॥ ८ ॥

दैयिता ललितादेवी, तनयमवीतनयमाप सचिवेद्राव् ।

नाम्ना जयंतसिंहं, जयंतमिन्द्राव् पुलोमपुत्रीव

॥ ९ ॥ (\*)

[ पते ] श्रीगूर्जेश्वरपुरोहित ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखग्रंथ १ भागे ६४ संख्य १-१ संख्यावृत्तावलमत्तशिलालेखयोः क्रमशः ४०तमं प्रपमं च सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखग्रंथ १ भागे ६४ संख्यावृत्तावलमत्त-  
शिलालेखे ४४तमं सोमेश्वरदेवकृतिरूपेणैव वर्तते ॥

स्तंमतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाजहनेन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिसत्, जैत्रसिंहध्रुवः सुधीः ॥ १ ॥  
 वाहडस्य तनुजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णा प्रयत्नतः ॥ २ ॥  
 श्रीनेमेखिजगद्धर्तुरभ्यायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

( गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं. २ । २१-२३ )

( ३९-२ )

.....यः पु.....तयदुकुलक्षीराणवेन्दुर्जिनो,  
 यत्पादाब्जपवित्रमौलिरसमश्रीरुञ्जयन्तोऽप्ययम् ।  
 घचे मूर्ध्नि निजप्रभुप्रसन्नरोहामप्रमामण्डलो,  
 विश्वक्षोणिमृदाधिपत्यपदवीं नीलातपत्रोज्ज्वलाम् ॥ १ ॥

॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिल(\*)पुरवास्तव-  
 प्राग्वाटान्वयमसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादात्मज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्री-  
 आशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंनृतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० ठ० श्रीमालदेवयोद-  
 जस्य महं० ठ० श्रीतेजःपालात्मजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० ठ० श्रीललितादेवी  
 (\*) कुक्षितोवरराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं मुद्राव्यापारं व्यापृण्वति  
 सति स० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासावि-  
 तसंघाधिपत्येन चौलुक्यकुलनभस्तलप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलचण(\*)प्रसादेवमुत्तम-  
 दाराजश्रीवीरधवलदेवमीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वेश्वर्येण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन  
 तथाऽनुजेन स० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता महं०  
 श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-सुर्वाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु (\*) श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-  
 पुरस्तम्भतीर्थ-दर्भयती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि  
 प्रभूतगीर्णोद्धारश्च कारिता । तथा सचिवेधरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजयमहातीर्था-  
 वतारश्रीमन्दादितीर्थकरश्रीकप्रमदेव (\*) स्तम्भनकपुरावतारधीपार्श्वदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-  
 वमगल्लिसहित-कदम्बीरावतारश्रीमरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनद्वया-ऽध्या-ऽवलोकना-शा-  
 म्य-प्रभुमण्डिखरेषु धीनेमिनायदेवालङ्कृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिकृतनिजपितामह ठ० श्रीसोम-  
 निजपितृ ठ० श्रीप्राञ्जाराज (\*) मूर्तिद्विनय-चारुनोरणत्रय-धीनेमिनायदेव-आत्मीयपूर्वजा-प्रजा-  
 धीनेमिनायदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहानीर्थे आत्मनस्तथा स्वगार्वायाः प्राग्वाटश्रातीय ठ०  
 श्रीशान्दहडपुण्याः ठ० (\*) राणुशुभिमृताया मठ० श्रीमोरुकायाः पुण्यामिश्रद्वये श्रीनागेन्द्र-  
 गच्छे महारकधीमदेन्द्रधरिमन्त्रानि निन्यधीप्रान्तिधरिणिष्यधीप्रानन्दधरि-श्रीअमरधरिपदे मध-

१ वर्षभेदे प्राचीनदेवमण्डल २ मन्त्रे ४१-४२-४३ मन्त्रमिरिनारमण्डलप्रतिपत्तिः प्राग्वाटमन्त्रे ४  
 २ वर्षभेदे प्राचीनदेवमण्डल ३ मन्त्रे ४२-४३ मन्त्रमिरिनारमण्डलप्रतिपत्तिः प्राग्वाटमन्त्रे ४  
 ४ वर्षभेदे प्राचीनदेवमण्डल ४ मन्त्रे ४२-४३ मन्त्रमिरिनारमण्डलप्रतिपत्तिः प्राग्वाटमन्त्रे ४

रकश्रीहरिमद्रूपरिपटालंकरणश्रीविजयसेनसुरप्रतिष्ठितश्रीशृङ्गपद्मदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थकरालंकृतो-  
प्यममिनवः समण्ड(\*) पः श्रीसंमेतमहातीर्थवितारप्रधानप्रासादः कारितः ॥

चेतः किं कलिकाल ! सालसमहो ! किं मोह ! नो हस्यते ? ,  
तृप्णे ! कृष्णमुखाऽसि किं ! कथय किं विप्रौष ! मोघो भवान् ! ।

ब्रूमः किं नु सखे ! ? न खेलति किमप्यस्माकमुज्जृम्भितं,  
सैन्यं यत् किल वस्तुपालकृतिना धर्मस्य सवर्मितम् ॥ १ ॥

यं विधुं बन्धवः सिद्धमर्थिनः शत्रु (\*) ..... ।  
.....ण....पश्यन्ति, वर्ण्यतां किमयं मया ? ॥ २ ॥

वैरं विभूति-भारस्यो, प्रमुख-प्रणिपातयोः । तेजस्विता-प्रशमयोः, शमितं येन मन्त्रिणा ॥ ३ ॥

दीपैः स्फूर्जति सज्जकजलमलः स्नेह मुहुः सहर-  
त्रिन्दुर्मण्डलवृत्तखण्डनपरः प्रद्वेष्टि मित्रोदयम् ।

सूरः क्रूरतरः परस्य सहते तेजो न तेजस्विन-  
सत् केन प्रतिम ब्र (\*) वीमि सचिवं श्रीवस्तुपालामिधम् ? ॥ ४ ॥

औयाताः कति नैव यान्ति कति नो यास्यन्ति नो वा कति,  
स्थानस्थाननिवासिनो भवपथे पान्थीमवन्तो जनाः ? ।

अस्मिन् विस्मयनीयबुद्धिजलधिर्विध्यस्य दस्सू करे,  
कुर्वन् पुण्यनिधिं धिनोति वसुधां श्रीवस्तुपालः परम् ॥ ५ ॥

दध्रेऽस्य वीरधवलक्षितिपस्य राज्यभारे धुरंधरधुरा (\*) ..... ।  
श्रीतेजपालसचिवे दधति स्वबन्धुमारोद्धृतावविधुरैकधुरीणभावम् ॥ ६ ॥

इह तेजपालसचिवो, विमलितविमलाचलेन्द्रममृतमृतम् ।  
कृत्वाऽनुपमसरोवरममरगणं प्रीणयाचक्रे ॥ ७ ॥

एते श्रीमलघारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

इह वालिगसुतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुजवाजडतनूजः ।

अलि (\*) मदिमा कायस्थः, स्तम्भपुरीयध्रुवो जयतसिंहः ॥ १ ॥

हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पी-वरसोमदेवगौत्रेण । बकुलस्वामिसुतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीनैमैस्त्रिजगद्गुरुर्मयापाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्थास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

१ पयमिदं नरचन्द्रसुरिकृतवस्तुपालप्रशस्ती तृतीयपद्यतयाऽपि वर्तते ॥ २ पयमिदं नरचन्द्रसुरिकृत-  
वस्तुपालप्रशस्ती २६ पद्यतयाऽपि दृश्यते ॥ ३ पयमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवमसर्गप्रान्तेऽपि दृश्यते ॥  
४ पयमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४० संख्यगिरिनारसत्कप्रशस्त्यावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पयमिदं  
प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ४०-४१ संख्यगिरिनारप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ६ पयमिदं प्राचीनजैन-  
लेखसंग्रह २ भागे ३८-४०-४२-४३ संख्यगिरिनारप्रशस्तिव्यापि प्रान्तभागे वर्तते ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं ६०३ महामात्यश्रीवस्तुपालभार्या महं० श्रीसोस्तुकाया धर्मस्थानमिदम् ॥

( गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २३-२४ )

( ४०-३ )

॥ ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

प्रणमदमरप्रेहन्मौलिस्फुरन्मणिधोरणी-

तरुणकिरणश्रेणीशोणीकृतासिलविग्रहः ।

सुरपतिरकरोन्मुक्तैः स्रात्रोदकैर्धुत्तृणारुण-

धुततनुरिवापायात् पायाजगन्ति शिवाङ्गजः

॥ १ ॥

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमद्गणहिलपुरवास्तव्याम् (\*)-  
 ग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्गज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-  
 राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं०  
 श्रीतेजःपालात्मजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंसा-  
 यमाने (\*) महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भनकतीर्थमुद्राव्यापारं व्यापृण्वति सति  
 सं० ७७ वर्षे श्रीशृङ्गजयोजयन्तप्रमृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रभावाविर्भूतश्रीमदेवाधिदेवप्रसादासादित-  
 संघाधिपत्येन चौलुङ्गकुलनमस्तलमकाशनेकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराज-  
 श्रीनीरघव (\*) लदेवमीतिमतिपत्न्यराज्यसर्वधर्येण श्री-शारदामतिपत्न्यापत्येन महामात्यश्रीवस्तुपालेन  
 तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले घनलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृण्वता महं०  
 श्रीतेजःपालेन च शृङ्गजया-ऽसुंदाचलप्रमृतिमहातीर्थेषु श्रीमद्गणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुरस्तम्भ-  
 तीर्थ-दर्भवती-घव (\*) लककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभू-  
 तजीर्णोद्धारार्थं कारिताः । तथा सचिवेधरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशृङ्गजयमहातीर्थवतार-  
 श्रीमदादितीर्थकरभीक्ष्णभदेय-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्थनाथदेव-श्रीमत्स्यपुरावतारश्रीमहावीरदे-  
 व (\*) प्रशस्तिरहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीमूर्तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगला-ऽम्भा-ऽवलोकना-  
 द्याम्भ-प्रद्युम्नशिल्पेषु श्रीनेमिनाथदेवालङ्कनदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनिजपितामह ठ० श्री-  
 सोम-स्वर्पिण ठ० श्रीआद्याराजमूर्तिद्वितय-कुबराधिरूढमहामात्यश्रीवस्तुपालानुज महं० श्रीतेजः-  
 पालमूर्तिद्वय-चारुनोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आग्नीयपूर्णजा-ऽम्बा-ऽनुज-पुरादिमूर्तिसमन्वितमुमो-  
 द्वाटनकस्तम्भश्रीसंभेतमहातीर्थप्रमृतिअनेकनीर्यपरम्पराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविष्णुपूजितश्रीम-  
 दुजयन्तमहातीर्थे आरमन्मन्त्रा म्मायायाश्च प्रागशटशतीषु ठ० श्रीकान्हडपुण्याः ठ० (\*) राशु-  
 कुक्षिसंभूताया महं० श्रीमोराकुषाया पुण्यामिद्वये श्रीनागेन्द्रगच्छे महारक्ष्मीमहेन्द्रधरित्ताने  
 निम्बश्रीशान्तिधरिनिम्बश्रीप्राणन्दधरि-श्रीअमरधरिपट्टे महारक्ष्मीहरिमद्रधरिपट्टलंकरणममुषी-

विजयसेनसुरप्रतिष्ठितरूपमदेवालंकृतोऽयमभिनवः समष्टपः श्रीअष्टापदमहातीर्थावतारनिरूपम-  
प्रधानप्रासादः कारितः ॥

प्रासादैर्गगनाङ्गणप्रणयिभिः पातालमूलंरूपैः,

कासारैश्च सितैः सितान्तरगुहैर्नीलैश्च लीलवनैः ।

येनेयं नयनिर्जितेन्द्रसचिवेनालंकृताऽलं क्षितिः,

क्षेमैकायतनां चिरायुल्लस्य श्रीवस्तुपालोऽस्तु सः

॥ १ ॥

संदिष्टं तव वस्तुपाल ! नलिना विश्वत्रयीयात्रिका-

न्मत्वा ना(ॐ)रुदतश्चरित्रमिति ते हृद्योऽस्मि नन्याधिरम् ।

नार्थिभ्यः क्वचमर्थितः प्रथयसि स्वल्पं न दत्ते न च,

स्वस्थायां बहु मन्यसे किमपरं ? न श्रीमदान्मुखासि

॥ २ ॥

अरियलदलनश्रीवीरनामाऽयमुन्यां, सुरपतिरवतीर्णसर्कयामस्तदस्य ।

निवसति सुरशाली वस्तुपालाभिपानः, सुरगुरुपि तैजःपालसंज्ञः समीपे

॥ ३ ॥

उदारः शूरो वा(ॐ)रुचिरवचनो वाऽस्ति नहि वा,

मवचुल्यः कोऽपि कविदिति चुलुक्वेन्द्रसचिव ! ।

समुद्धृतभ्रान्तिर्नियतमवगन्तुं तव यत्र-

सतिर्गेहे गेहे पुरि पुरि च याता दिशि दिशि

॥ ४ ॥

सा कुत्रापि युगत्रयी वत ! गता स्रष्टा च सष्टिः सतां,

सीदत्साधुरसंवरत्सुचरितः खलत्खलोऽभूत् कलिः ।

तद्विश्वासिनिवर्तनकमनमा प्रचोऽधुना शं(ॐ)मुना,

प्रस्तावस्तव वस्तुपाल ! भवते यद् रोचते तत् कुरु

॥ ५ ॥

के<sup>१</sup> निघाय वसुधातले घनं, वस्तुपाल ! न यमालयं गताः ? ।

त्वं तु नन्दसि निवेशयमिदं, दिक्षु धावति जने क्षुधावति

॥ ६ ॥

पीत्रेण धारय वराहपते ! भरित्रीं, सूर्य ! प्रकाशय सदा वज्रामिषिच ।

विश्राणितेन परिपालय वस्तुपाल !, मारं भगवत्सु यदिमं निदये विधा(ॐ)त्रा

॥ ७ ॥

आत्मा त्वं जगतः सदागतिरियं कीर्तिर्मुन्यं पुष्करं,

मैत्री मन्त्रिवरः स्त्रिया घनसः श्लोकस्तमोऽन्नः शमः ।

नोक्तः केन कस्मत्तामृतकरः कायश्च मात्मानिति,

सष्टं धूर्नेष्टिर्मूर्तयः कृतपत्राः श्रीवस्तुपाल ! त्वमि

॥ ८ ॥

विद्या यद्यपि वैदिकी न लभते सौभाग्यमेषा कवि-

त्र म्मार्तं कुरुते च कश्चन वचः कर्णद्वये य(ॐ)यपि ।

राजानः कृपयाश्च यद्यपि गृहे यद्यप्ययं च व्यय-

श्चिन्ता क्वाऽपि तथापि तिष्ठति न मे श्रीवस्तुपाले सनि

॥ ९ ॥



- कर्णे खलप्रलपितं न करोपि रोषं, नाविष्करोपि न करोष्यपदे च लोभम् ।  
तेनोपरि त्वमवनेरपि वर्तमानः, श्रीवस्तुपाल ! कलिकालमघः करोपि ॥ १० ॥
- सर्वत्र आन्तिमती, सर्वविदस्त्वदभवत् कथं कीर्तिः ? । (\*)  
श्रीवस्तुपाल ! पैतृक्रमनुहरते सन्ततिः प्रायः ॥ ११ ॥
- सोऽपि बलेरबलेषः, स्वल्पतरोऽभूत् तथैव कल्पतरोः ।  
श्रीवस्तुपालसचिवे, सिञ्चति दानामृतैर्जगतीम् ॥ १२ ॥
- नियोगिनागेषु नरेक्षराणां, भद्रस्वभावः सल्ल वस्तुपालः ! ।  
उद्दामदानप्रसरस्य यस्य, विमाज्यते कापि न मत्तभावः ॥ १३ ॥
- विबुधैः पयोधिमध्यादेको बहु(\*)भिः करीन्दुरुपलब्धः ।  
बहुवस्तु वस्तुपाल !, प्राप्ता विबुध ! त्वयैकेन ॥ १४ ॥
- प्रथमं धनप्रवाहैर्वाहैरथ नाथमात्मनः सचिवः ।  
अधुना तु सुकृतसिन्धुः, सिन्धुरद्वन्द्वैः प्रमोदयति ॥ १५ ॥
- श्रीवस्तुपाल ! भवता, जलधेर्गम्भीरता किलाऽऽकलिता ।  
आनीय ततो गजता, स्वपतिद्वारे यदाकलिता ॥ १६ ॥
- एते श्रीमद्गुर्जरेश्वरपुरोहि(\*)त ठ० श्रीसोमेश्वरदेवस्य ॥  
इह बालिगद्युतसहजिगपुत्राऽऽनकतनुगवाजडतनूजः ।  
अलिलदिमां कायस्यः, सत्सम्पुत्रीपद्मयो जयतसिंहः ॥ १ ॥
- हेरिमण्डप-नन्दीश्वरशिल्पीश्वरसोमदेवपौत्रेण ।  
षकुलसामिद्युतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥
- महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ ६०३ ॥  
श्रीनेमिजगद्गुर्जरभ्यायश्च प्रसादतः ।  
वस्तुपालान्ययसास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥
- महामात्यश्रीवस्तुपालभार्या महं० श्रीसोमुखकाया धर्मस्थानमिदम् ॥  
( गिरिनार इन्स्क्रिप्शन्स् नं० २ । २४-२५ )  
( ४१-४ )  
ॐ नमः श्रीनेमिनाथदेवाय ॥  
तीर्थेशाः प्रणतेन्द्रसंहतिशिरकोटीरकोटिस्फुर-  
चेनोजालजल्पप्रवाहलहरीप्रक्षालितामिद्वयः ।

१ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३९ संख्यागिरिनारसन्तप्रशस्त्यावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३९-४१ संख्यागिरिनारप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनत्रैलोक्यसंग्रह २ भागे ३८-३९-४२-४३ संख्यागिरिनारसन्तप्रशस्त्यावपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

ते वः केवलमूर्तयः कवलितारिणं विशिष्टाममी,

तामष्टापदशैलमौलिमणयो विश्राणयन्तु श्रियम् ।

स्वस्ति श्रीविक्रमार्कसंवत् १२८८ वर्षे फागुण (\*) शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्तव्य-  
प्राग्वाटान्वयप्रसूत ठ० श्रीचण्डपालालज ठ० श्रीचण्डप्रसादाङ्ग ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-  
राजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुञ्जिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य ठ०  
महं० श्रीतेजःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे (\*) महं० श्रीललितादेवीकुञ्जिसरो-  
वराजहंसायमाने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं श्रीस्तम्भतीर्थवेलाकुलमुद्राभ्यापारं व्यापृ-  
ण्वति सति सं० ७७ वर्षे श्रीशुंजयोजयंतप्रभृतिमहातीर्थयात्रोलयप्रभावाविर्मृतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसा-  
दासादितसंध्याधिपत्येन चौलुक्यकुलनमस्तलप्रकाशनैक (\*) मार्तण्डमहाराजधिराजश्रीलवणप्रसाद-  
देवसुनमहाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वेश्वरेण श्री-शारदाप्रतिपन्नापत्येन महामात्यश्रीव-  
स्तुपालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राभ्यापारं व्यापृष्यता  
महं० श्रीतेजःपालेन च श्री (\*) शुंजय-श्रुदाचलमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनक-  
पुर-स्तम्भतीर्थ-दर्मवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशो धर्मस्थानानि  
प्रभूतजीर्णोद्धारश्च कारिताः । तथा सच्चिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितशुंजयमहातीर्थव-  
(\*) तारश्रीमदादितीर्थकरश्रीरूपभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरावतारश्रीमहा-  
वीरदेवप्रशस्तिरहित—कर्मरावतारश्रीसरस्वतीदेवकुलिकाचतुष्टय—जिनयुगल-ऽभ्या—ऽवलोकना-  
शाम्भ-प्रद्युम्नशिल्लरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरुद्धनि (\*) जपितामह ठ०  
श्रीसोम-पितृ ठ० श्रीआशाराजभृतिद्वितय-तोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आरभीयपूर्वजा-अज्ञा-ऽनुज-  
पुत्रादिभूतिसमन्वितमुखोद्घाटनकस्तम्भश्रीसंभवावतारमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरम्पराविराजिते श्री-  
नेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयन्तमहातीर्थे आ (\*) स्मनस्तथा स्वमार्यायाः प्राग्वाटशतीय  
ठ० कान्हडपुण्याः ठ० राणुकुञ्जिसंभूतायाः महं० श्रीसोमकायाः पुण्याभिवृद्धये श्रीनागेन्द्रगण्डे  
महारकश्रीमहेन्द्रधरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिधरिशिष्यआणन्दधरि-श्रीअमरधरिपट्टे महारकश्रीहरि-  
मद्रधरिपट्टालंकरणश्रीविजयसेनधरिप्रतिष्ठि (\*) तश्रीमदादिजिनराजश्रीरूपभदेवप्रमुखचतुर्विंशतितीर्थ-  
करालंकृतोऽभ्यमभिनवः समण्डपः श्रीअष्टापदमहातीर्थवतारप्रधानप्रासादः कारितः ।

स्वस्ति श्रीवलये नमोऽस्तु नितरां कर्णाय दाने ययो-

रस्पटेऽपि दृशां यशः कियदिदं वन्द्यास्तदेतः प्रजाः ।

दृष्टे संप्रति वस्तुपालसचिवत्यागे करिष्यन्ति ताः,

कीर्तं कांचन या पुनः स्फुटमिव विधेऽपि नो गायति

॥ १ ॥

कौटीरैः कटका-ऽहुलीय-तिलकैः केयूर-हारादिभिः,

कौशेयैश्च विभूष्यमाणवपुषो यत्पाणिविश्राणितैः ।

विद्वंसो गृहमागताः प्रणयिनीरप्रत्यभिज्ञाभृत्-

स्तैस्तैः स्वं शपथैः कथं कथमिव प्रत्याययांचकिरे

॥ १ ॥

न्यासं व्यातनुतां विरोचनसुत (\*) त्यागं कवित्वश्रियं,

भास-न्यासपुरःसराः पृथु-रघुभायाश्च चीरभतम् ।

प्रज्ञां नाकिपताकिनीगुरुरपि श्रीवस्तुपाल ! ध्रुवं,

जानीमो न विवेकमेकमकृतोत्सेकं नु कौतस्कुतम् ?

॥ २ ॥

वास्तवं वस्तुपालस्य, वेत्ति कश्चरिताद्भुतम् ? । यस्य दानमविशान्तमर्थिष्वपि रिपुष्वपि

॥ ४ ॥

स्तोतव्यः खलु वस्तुपालसचिवः कैनाम वामैवै-

यस्य (\*) त्यागविधिर्विधूय विविधां दारिद्र्यमुद्रां हठात्

विश्वेऽस्मिन्नखिलेऽप्यसृज्यदसावर्थीति दातेति च,

द्वौ शब्दावभिषेयवस्तुविरहज्याह्न्यमानसिती

॥ ५ ॥

आधेनाप्यपवर्जनेन अनितार्थित्वप्रमाथान् पुनः,

स्तोकं दत्तमिति क्रमान्तरगतानाङ्गाययन्नर्थिनः ।

पूर्वसात् गणसंख्ययाऽपि गुणितं यस्तेष्वनार्वात्तिषु,

द्रव्यं (\*) दातुमुदस्तहस्तकमलस्तस्यै चिरं दुःखितः

॥ ६ ॥

विश्वेऽस्मिन् किल पद्मपङ्कितले प्रस्थानवीथीं विना,

सीदन्नेष पदे पदे न पुरतो गन्तेति संचिन्तयन् ।

धर्मस्थानशतच्छलेन विदग्धे धर्मस्य वर्षीयसः,

संचाराय शिखकलयपदवीं श्रीवस्तुपालः स्फुट्य

॥ ७ ॥

अग्नेषु मरालमण्डलरुचो द्विण्डीरपिण्डत्विषः,

कासारेषु (\*) पयोधिरोपति लुठनिर्णक्तमुक्ताश्रियः ।

ज्योत्स्नाभाः कुमुदाकोष्ठे सदनोद्यानेषु पुष्पोत्खणाः,

स्पर्ति कामिव वस्तुपालहतिनः कुर्वन्ति नो कीर्तयः ?

॥ ८ ॥

देवै स्वर्गाय ! कष्टं ननु क इव भवान् ? नन्दनोद्यानपालः,

खेदस्तत् कोऽय ! केनाप्यहह ! हत इतः काननात् कल्पवृक्षः, ।

हुं मा वादीस्तदेतत् किमपि (\*) करुणया मानवानां मयैव,

ग्रीत्याऽऽदिष्टोऽयमग्न्यास्तिष्ठक्यति तलं वस्तुपालच्छलेन

॥ ९ ॥

श्रीमैत्रीधरवस्तुपालयशसामुच्चावचैर्वीजिभिः,

सर्वस्मिन्नपि लम्बिते घबलतां क्लोलिनीमण्डले ।

गङ्गैवेयमिति प्रतीतिविह्वलाम्बन्ति कामं भुवि,  
आम्यन्तस्तनुमादमन्दितमुदो मन्दाग्निनीयात्रिभ्यः ॥ १० ॥

वस्त्रं (\*) निर्वासनाज्ञानयनपरपगतं यस्य दारिद्र्यदस्यो-  
र्दष्टिः पीयूषवृष्टिः प्रगविषु परितः पेतुषी सप्रसादम् ।  
प्रेमालापस्तु कोऽपि स्फुरदमनपरव्रतसंगदवेदी,  
नेदीयान् वस्तुपालः स सख्यं यदि तदा को न भाग्येकभूमिः ? ॥ ११ ॥

साक्षाद् अत्र परं परागतमिव श्रेयोविवर्तः सनां,  
तेजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा तस्यानु(\*)जन्मा जयी ।  
यो धत्ते न दशां कदाऽपि कलितावयामविधामयीं,  
यं चोपास्य परिस्पृशन्ति कृतिनः सद्यः परां निर्धृतिम् ॥ १२ ॥

आकृष्टे कमलकुन्तस्य सुदग्नारम्भस्य संस्तम्भनं,  
वश्यत्वं जगदाग्नयस्य यज्ञसामाशान्तनिर्वासनम् ।  
मोहः शत्रुपराक्रमस्य सृतिरप्यन्यायदस्योरिति,  
स्मैरं पट्टिधर्मनिर्मितिमया मन्त्रोऽस्य मन्वीशितुः ॥ १३ ॥ (\*)

पूते मलघारिश्चिनेन्द्रधरीणाम् ।  
स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्यवंशे वाज्रहन्न्दनः । प्रशस्तिमेतामलिखज्जत्रसिंहध्रुवः सुधीः ॥ १ ॥

हरिमण्डप-नन्दीश्वरशिखीश्वरसोमदेवपौत्रेण । बकुलसामिमुतेनोत्कीर्णां पुरुषोत्तमेनेयम् ॥ २ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥  
( गिरिनार इन्क्रिष्णम् नं० २ । २६-२७ )

( ४२-५ )

ॐ नमः सर्वज्ञाय ॥

ये उज्जयन्तं.....जयामृप्रजाकल्याणा ।

स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे कागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवा(\*)स्तव्य-  
प्राग्याढान्वयप्रभूत ठ० श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाक्षज ठ० श्रीसोमतनुज ठ०  
श्रीआशाराजनन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवभोरनु-  
जस्य महं० श्रीतेजःपालात्मजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालखात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरो-  
वराजहंसाय(\*)माने महं० श्रीजयन्तसिंहे सं० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भतीर्थे मुद्राव्यापारान् व्यापृ-  
प्यति सति सं० ७७ वर्षे शत्रुंजयोऽजयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सवप्रसादाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसा-  
दासादितसंधाधिपत्येन चौलुक्यकुलजमलालप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसु-

१ पद्यमिदं नरेन्द्रप्रमीयलघुवलुपालप्रशस्तौ १९पद्यरूपेणापि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह  
२ भागे ३८-४१-४३ मुख्यगिरिनारसत्कप्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे दृश्यते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह  
३ भागे ३९-४० संक्षयगिरिनारसत्कप्रशस्त्योरपि प्रान्तभागे वर्तते ॥

तमहाराजश्रीवीरघ(१)वलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैश्वर्येण श्री-आरादाप्रतिपत्तापत्तेन महामात्यश्रीवस्तु-  
पालेन तथाऽनुजेन सं० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलककप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारं व्यापृष्ट्वा  
महं० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुंजया-श्रुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्त(१)-  
म्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्भवती-धवलककप्रमुखनगरेषु तथाऽन्यसमस्तस्थानेष्वपि कोटिशोऽभिनवधर्म-  
स्थानानि प्रभूतजीर्णोद्गाराश्च कारिताः । तथा सचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेनेह स्वयंनिर्मापितश्रीशत्रुंजय-  
महातीर्थावतारश्रीमदादित्यैकश्री ऋषभदेव-स्तम्भनकपुरावतारश्रीपार्श्वनाथ-देव—सत्यपुरावतार-  
श्री(१)महावीरदेवप्रशस्तिसहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीभृतिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगला-ऽम्बा-  
ऽवलोकना-श्याम्ब-प्रद्युम्नशिशुरेषु श्रीनेमिनाथदेवालंकृतदेवकुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढस्वपितानह  
महं० श्रीसोम-निजपितृ ठ० श्रीआशाराजभृतिद्वितय-चारुतोरणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीय(१)-  
पूर्णजा-ऽप्यजा-ऽनुज-पुत्रादिभृतिंसमन्वितमुल्लोद्घाटनकस्तम्भश्रीअष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेकक्रीतनपरम्प-  
राविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुजयन्तमहातीर्थे आत्मनस्तथा स्वधर्मचारिण्या  
प्राग्वाटकातीथ ठ० श्रीकान्हडपुण्याः ठ० राणुकुक्षिसंभूताया महं० श्रीललितादेव्याः पुण्याभि(१)-  
वृद्धये श्रीनागेन्द्रगच्छे भट्टारकश्रीमहेन्द्रहरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिहरिशिष्यश्रीआणन्दहरि-श्री-  
अमरहरिपट्टे भट्टारकश्रीहरिमद्रहरिपट्टालंकरणप्रभुश्रीविजयसेनहरिप्रतिष्ठितश्रीअजितनाथदेवादि-  
विद्यतितीर्थकरालंकृतोऽयमभिनवः समण्डपः श्रीसंमेतमहातीर्थावतारप्रासादः कारितः ।

सं श्रीजिनाधिपतिधर्मधराधुरीणः, स्थाप्यदं कथमिवास्तु न वस्तुपालः! ।

श्री-आरादा-सुहृन्-कीर्ति-नयादिवेण्याः, पुण्यः परित्स्फुरति जह्मसहस्रमो यः ॥ १ ॥

विभूषता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-विचवितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्धिकारैः, कलितोऽपि वभार न विकारम् ॥ २ ॥

यस्य सः किमसावस्तु, वस्तुपालमुतः सदा । नावर्णासावयाप्येतौ, धर्मकर्मकृतौ कृतौ ॥ ३ ॥

कस्यापि कविता नास्ति, विनाऽस्य हृदयामुखम् ।

वास्तवं वस्तुपालस्य, पद्यामस्तद् वयं च यम् ॥ ४ ॥

दुर्गैः स्वर्गगिरिः स कल्पतरुभिर्भेजे न चक्षुष्ये,  
तस्यौ कामगवी जगाम जलधेरन्तः स चिन्तामणिः ।

कालेऽसिन्नबलोस्य यस्य करुणं(णं) तिष्ठेत् कोऽन्यस्ततः,  
पुण्यः सोऽस्तु न वस्तुपालमुह्यती दानैकवीरः कथम्! ॥ ५ ॥

सोऽयं मन्त्री गुरुतितराशुद्धरन् धर्मभारं,  
स्थाप्यार्गुमं नयति न कथं वस्तुपालः सहेलम्! ।

तेजःपालः स्ववलघनलः सर्वकर्मण्युद्धि-  
र्द्वैतीयाङ्कः कल्पतिनरां यस्य धौरेयकल्पम् ॥ ६ ॥

१ पद्यमिदं नरचन्द्रीयकमुगलप्रत्यग्नी पद्यमरदवेनापि दृश्यते ॥ २ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहासत्यप्रथम-  
मने २११मरदवेनाऽपि कर्तते ॥ ३ पद्यमिदं नरचन्द्रीयकमुगलप्रत्यग्नी शत्रुपर्वतगवाऽपि दृश्यते ॥

पेतसिन् वसुवासुधाजलधरे श्रीवस्तुपाले जग-

ब्धिवार्ता सिचयोच्चयैर्नवनैर्नक्तं दिवं वर्पति (\*) ।

आसामन्वजनो धनोज्झितशशिज्योत्स्नाच्छबलाद्गुणो-

द्भूतैरय दिगम्बराद्यपि यशोवासोभिराच्छादितम्

॥ ७ ॥

लक्ष्मीर्मन्धाचलेन्द्रभ्रमणपरिचयादेव पारिप्लवेयं,

भ्रूमङ्गस्यैव भद्राचकितमृगदृशां प्रेमनखेतारस्य ।

आयुर्निश्वासवायुप्रणयपरतयैवेवमस्यैवदुखं,

स्वास्तुर्धर्मोऽयमेकः परमिति हृदये (\*) वस्तुपालेन मेने

॥ ८ ॥

तेजैःपालस विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्मितं जगज्जयीं पातुं, यदीयोदरकन्धरे ॥ ९ ॥

ललितादेवी नाम्ना, सधर्मिणी वस्तुपालस्य ।

असामनिरस्तनयस्तनयोऽयं (\*) जयतर्तिहाय्यः

॥ १० ॥

इहा वपुश्च वी.....च, परस्परविरोधिनी । विवादा.....क्षेत्रसिंहस्तरुष्यवादि (!) कः ॥ ११ ॥ (\*)

श्रुतिरियं मलधारिश्रीनरचन्द्रसूरीणाम् ॥

संमतीयेऽत्र कायस्यवंशे वाजडनन्दनः । प्रशस्तिमेवामलिसर्जत्रसिंहधुवः सुधीः

॥ १ ॥

योहृदस्य तनुजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णां प्रयत्नतः

॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्गुरुर्मयायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयसास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी

॥ ३ ॥

( गिरिनार इन्द्रिक्यान् नं० २ । २७-२९ )

( १३-६ )

ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

संमेतात्रिशिरःकिरीटमणयः स्नेहसराहंकृति-

ध्वंसोत्थासितकीर्तयः शिवपुरप्राकारतारश्रियः ।

आनत्यश्रितसंविदादिविलसद्गलौपरलाकराः,

कस्याणावलिहेतवः प्रतिकलं ते सन्तु वस्तीर्षयाः

॥ १ ॥

सन्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे फागुण शुदि १० बुधे श्रीमदणहिलपुरवास्यप्राग्वाट-  
कुण्डलद्वारेण (\*) श्रीचण्डपालात्मज ठ० श्रीचण्डप्रसादाद्वज ठ० श्रीसोमवतनुज ठ० श्रीआशाराज-  
नन्दनस्य ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसम्भूतस्य ठ० श्रीलुण्णिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजस्य महं० श्री-  
तेजैःपालाप्रजन्मनो महामात्यश्रीवस्तुपालस्यात्मजे महं० श्रीललितादेवीकुक्षिसरोवरराजहंसायमाने

१ पद्यमिदं नरचन्द्रीयवस्तुपालप्रसादौ योऽप्यग्रगण्यमपि वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ६४ संख्यशब्दावलसत्कवितालेखे योऽप्यग्रगण्यमपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे १४-४१-४२ संख्यगिरिनारपथेत्तयाश्चिन्ता प्रान्तभागे वर्तते ॥ ४ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४३ संख्यगिरिनारपथेत्तयाश्चिन्ता प्रान्तभागे वर्तते ॥ ५ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-३९-४०-४३ संख्यगिरिनारपथेत्तयाश्चिन्ता प्रान्तभागे वर्तते ॥

मह० श्रीजयन्तसिंहे स० ७९ वर्षपूर्वं स्तम्भ (\*) तीर्थमुद्राव्यापारान् व्यापृष्वति सति स० ७७ वर्षे श्रीशत्रुंजयो जयन्तप्रभृतिमहातीर्थयात्रोत्सम्प्रभावाविर्भूतश्रीमद्देवाधिदेवप्रसादासादितसद्वाधिपत्येन चौलुक्यकुलमस्तप्रकाशनैकमार्तण्डमहाराजाधिराजश्रीलवणप्रसाददेवसुतमहाराजश्रीवीरधवलदेवप्रीतिप्रतिपन्नराज्यसर्वैर्धर्मेण श्री-शारदाप्रतिपक्षापरत्येन महामा (\*) त्यश्रीवस्तुपालेन तथा अनुजेन स० ७६ वर्षपूर्वं गूर्जरमण्डले धवलकक्रप्रमुखनगरेषु मुद्राव्यापारान् व्यापृष्वता मह० श्रीतेजःपालेन च श्रीशत्रुञ्जया-ऽर्चुदाचलप्रभृतिमहातीर्थेषु श्रीमदणहिलपुर-भृगुपुर-स्तम्भनकपुर-स्तम्भतीर्थ-दर्शनी-धवलकक्रप्रमुखनगरेषु तथा अन्यसमस्तस्थानेष्वपि फोटिशोऽभिनवधर्मस्थानानि प्रभूतजी (\*) णो-द्वाराभ्य कारिता ॥ तथा श्री-शारदाप्रतिपन्नपुरसचिवेश्वरश्रीवस्तुपालेन स्वधर्मचारिण्या प्राग्गट-ज्ञातीम ठ० श्रीरान्हडपुत्र्या ठ० राणुकुक्षिसम्भूताया मह० श्रीललितादेव्यास्तथा आत्मन पुण्या-मिश्रद्वये इह स्वयनिर्मापितश्रीशत्रुञ्जयमहातीर्थवतारश्रीमदादित्यंकरश्रीप्रसन्नदेव-स्तम्भनरूपरा-वतारश्रीपार्श्वनाथदेव-सत्यपुरा (\*) वतारश्रीमहावीरदेवप्रशस्तिरहित-कश्मीरावतारश्रीसरस्वतीम-तिदेवकुलिकाचतुष्टय-जिनयुगल-अम्बा-ऽनलोकना-शाम्ब प्रद्युम्नशिखरेषु श्रीनेमिनाथदेवालकृतदेव-कुलिकाचतुष्टय-तुरगाधिरूढनिजपितामह मह० श्रीसोम-स्वपितृ ठ० श्रीआशाराजवर्तित्वितय चास्तो-रणत्रय-श्रीनेमिनाथदेव-आत्मीयपूर्वजा-ऽप्रजा-ऽनुज-पुत्रादिमूर्तिस (\*) मन्वितमुलोद्घाटनकस्तम्भ-श्रीअ-ष्टापदमहातीर्थप्रभृतिअनेककीर्तनपरपराविराजिते श्रीनेमिनाथदेवाधिदेवविभूषितश्रीमदुज्जयन्तमहातीर्थे श्रीनागेन्द्रगच्छे महारकश्रीमहेंद्रस्मरिसंताने शिष्यश्रीशान्तिस्मरिशिष्यश्रीआणंदस्मरि-श्रीअमरस्मरिपट्टे महारकश्रीहरिमद्रस्मरिपट्टालकरणप्रभृतिविजयसेनस्मरिप्रतिष्ठित (\*) श्रीमदजितनाथदेवप्रश्लविंशतिती-र्थकरालकृतोऽयममिनव समण्डप श्रीसंमेतावतारमहातीर्थप्रासादः कारित ॥ छ ॥

मुष्पाति प्रसन्न वसु द्विजपतेर्गौरीगुरु लङ्घयन्,

नो धत्ते परलोकतो भयमहो ! हसापलापे कृती ।

उच्चैरास्तिकचक्रमालमुकुट ! श्रीवस्तुपाल ! स्फुट,

मेने नास्तिभूतामय तव यत्त पूर कुतस्त्या (\*) मिति ।

॥ १ ॥

कोपेटोपपैरै परैश्चलवमूरजचुररुक्षत-

क्षोणीशोदवत्तादसोपि जलधि श्रीस्तम्भतीर्थे पुरे ।

स्वेदाग्मलटिनीघटाघटनया श्रीनस्तुपालसुर-

चेजस्तिभगभक्षितसत्तनुमिलैरेव सम्पूरित

॥ २ ॥

दिग्मात्रोत्सववीरवीरधवलक्षोणीधवाप्यासित,

प्राज्य राज्यरथस्य आरमभित स्फुट दण्डीलया ।

१ पद्यमिदं धर्माभ्युदयमहाकाव्यनवममार्गप्रातेऽपि दृश्यते ॥ २ पद्यमिदं मुक्ततीर्तिकोशेऽपि ११७ तम-पद्यानाऽपि वर्तते ॥ ३ पद्यमिदं मुक्ततीर्तिकोशेऽपि १२१ पद्यभेगेन उदयप्रसीधवस्तुपालस्तुती च ११ पद्यरैराऽपि दृश्यते ॥

भाति आतरि दक्षिणे समगुणे श्रीवस्तुपालः कथं,

न स्थायः स्वयमश्वराजतनुजः कामं स वामस्थितिः ?

॥ ३ ॥

लावण्यांग इति युतिव्यतिकरैः सत्याभिधानोऽभवद्,

आता यस्य निशानिशातविकसचन्द्रप्रकाशाननः ।

शंके शंकरकोपसंभ्रममरादासीदनंगः स्मरः,

साक्षादंगमयोऽयमित्यपहृतः स्वर्गांगनामिर्लघु

॥ ४ ॥

रक्तः सद्गतिमावभाजि चरणे श्रीमल्लदेवोऽपरो,

यद्भाता परमेष्विवाहनतया प्राप्तः प्रतिष्ठां पराम् ।

खेलन्निर्मलमानसेन समयं कापि श्रयन् पङ्क्तिं,

विधे राजति राजहंस इव यः संशुद्धपक्षद्वयः

॥ ५ ॥

सोऽयं तस्य मुधाहरस्य कवित्तानिष्ठः कनिष्ठः कृती,

बंधुर्बधुरसुद्धिबोधमधुरः श्रीवस्तुपालाभिधः ।

ज्ञानांभोरुहकोटरे भ्रमरतां सारंगसाम्यं यशः-

सोमे सौरितुलां च यस्य महिमक्षीरोदधौ खं दधौ

॥ ६ ॥ (\*)

हर्दुर्बिंदुरपां सुरेश्वरसरिङ्गिदीरपिंडः पति-

मांसां विद्रुमफंदलः किल विभुः श्रीवत्सलक्ष्मा नमः ।

कैलास-त्रिदशेम-शंभु-हिमवत्पायास्तु मुक्ताफल-

स्तोमः कोमलवालुकाऽस्य च यशःक्षीरोदधौ कौमुदी

॥ ७ ॥

हस्ताभ्रन्यस्तसारस्वतरसरसनप्राप्तमाहात्म्यलक्ष्मी-

स्तेजःपालस्ततोऽसौ जयति वसुभैः पूरयन् दक्षिणाशाम् ।

यहृद्धिः कल्पितोरु(५)द्विपगहनपरक्षोणिभृद्द्विसंप-

छोपासुद्राधिपस्य स्फुरति लसदिनस्फारसंचारहेतुः

॥ ८ ॥

पुण्यश्रीर्मुवि मल्लदेवतनवोऽभूत् पुण्यसिंहो यशो-

वर्यः स्फूर्जति जैत्रसिंह इति तु श्रीवस्तुपालात्मजः ।

तेजःपालसुतस्त्वसौ विजयते लावण्यसिंहः स्वयं,

येर्विधेऽभवदेकपादपि कलौ धर्मश्चतुष्पादयम्

॥ ९ ॥

एते श्रीनागेंद्रगच्छे भट्टारकथीउदय(५)प्रभसूरीणाम् ।

स्तम्भतीर्थेऽत्र कायस्यवंशे बाजवृन्दनः । प्रशस्तिमेतामलिखजैत्रसिंहध्रुवः सुधीः

॥ १ ॥

१ पयमिदं मुकुततीर्तिकलोत्थिन्या ११३ पयतयाऽपि वर्तते ॥ २ पयमिदं मुकुततीर्तिकलोत्थिन्या ११५ पय-  
रुपेणापि वर्तते ॥ ३ पयमिदं मुकुततीर्तिकलोत्थिन्या १२८ तस्य पयस्त्रेणापि दृश्यते ॥ ४ पयमिदं मुकुततीर्ति-  
कलोत्थिन्या ११७ पयतयाऽपि वर्तते ॥ ५ पयमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागे ३८-४१-४२ संख्यगिरिनार-  
प्रशस्तिष्वपि प्रान्तभागे वर्तते ॥



वाहडस्य तनूजेन, सूत्रधारेण धीमता । एषा कुमारसिंहेन, समुत्कीर्णा प्रयत्नतः ॥ २ ॥

श्रीनेमैस्त्रिजगद्भर्तुरम्बायाश्च प्रसादतः । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः स्वस्तिशालिनी ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपालप्रभोः प्रशस्तिरियं निष्पन्ना । शुभं भवतु ॥

( ४४-७ )

वैस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते

॥ १ ॥

श्रीविक्रमसंवत् १२८९ वर्षे आश्विनवदि १५ सोमे महामात्यश्रीवस्तुपालेन जात्मश्रेयोऽर्थं पश्चाद्भागे श्रीकपर्दीयसुप्रासादसमलंकृतः श्रीशृङ्गुजयार्वातार]श्रीआदिनाथप्रासादस्तदमतो वाम-पक्षे स्वीयसद्धर्मचारिणी महं० श्रीललितादेविश्रेयोऽर्थं विंशतिजिनारलंकृतः श्रीसन्मैतृशिखरप्रासाद-स्तथा दक्षिणपक्षे द्वि० भार्या महं० श्रीसोसुश्रेयोऽर्थं चतुर्विंशतिजिनोपशोभितः श्रीअष्टापदप्रासादः अपूर्वपाटरचनारुचिरतरमभिनयप्रासादचतुष्टयं निजद्रव्येण कार्याचक्रे ।

( लिष्ट ऑफ आर्कियोलॉजिकल रिमेन्स इन पॉम्बे प्रेसिडेन्सी पृ० ३६१ )

( ४५-८ )

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीललितादेवीश्रुति ।

( ४६-९ )

महामात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीसोसुश्रुति.... ।

( लि० ऑ० आ० रि० ६० पॉ० प्रे० पृ० ३५७-८ )

( ४७-१० )

वस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते

॥ १ ॥

( ४८-११ )

वस्तुपालविहारेण, हारेणेवोज्ज्वलश्रिया ।

उपकण्ठस्थितेनायं, शैलराजो विराजते

॥ १ ॥

( लि० ऑ० आ० रि० ६० पॉ० प्रे० पृ० ३५९ )



१ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यगंध २ आगे ३८-४२ संवत्सरगिरिनारपर्वतस्थितेति प्रमुखभागे वर्तते ॥  
२ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यगंध १ आगे ३८-३९-४०-४२ गंधर्वादिनाथप्रशस्तिरियं प्रान्तभागे वर्तते ॥  
३ पदमिदं प्राचीनत्रैलोक्यगंध १ आगे ४३-४८ गंधर्वादिनाथप्रशस्तिरियं दृश्यते ॥

श्रीअर्बुदाचलोपरिस्थिताः प्रशस्तयः ।

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीतेजःपालकारितश्रीलूण-

वसहिकागतप्रशस्तिछेत्वाः ।

(६४)

॥ ६० ॥

वंदे सरस्वतीं देवी, याति या क[ि]व[ि]मानसम् ।

नी[यमा]जा [निजेने]व, [यानमा]नस[व]।सिन[र] ॥ १ ॥

य. [स]।सिमा[नय्य]र [णः प्रकोपे, चांतोऽपि दीप्त]ः स्मरनिग्रहाय ।

निमीलिताक्षोऽ[पि सम]प्रदर्शी, स व. शिवायास्तु शि\* [वात]नूतः ॥ २ ॥

अणहिलपुरमस्ति स्वस्तिपात्रं प्रजा [नाम]जरनिर [शुतुल्यैः] पा [स्य]मानं तु [लुक्यैः] ।

[विरम]ति रमणीनां य[प्र वक्त्रे]न्दु [मंदी]रुत इव [सि]तपक्षप्रक्षयेऽप्यधुकारः ॥ ३ ॥

तत्र प्राग्वाटान्वयमुकुटं कुटजमसूत (\*) विशदयशाः ।

दानविनिर्जितकरुणदुमपंडशृङ्गपः समभूत ॥ ४ ॥

चंद्रप्र[सा]दस[ज्ञ.]स्वकुल[मासा]दहेमदंडोऽस्य ।

प्रसर[स्त्री]तिपताकः, पुण्यविपाकेन सूनुरमूत ॥ ५ ॥

आलगुणैः किरणैरिव, सोमो रोमोद्गमं सता (\*) कुर्वत ।

उदगादगाधमध्याहुगवोदविवाधवापत्स्मात् ॥ ६ ॥

एतस्मादवजनि जिनाधि[ग]यमकिं, विभ्राणः स्वमनसि शश्वदधरा[जः] ।

तस्याऽऽसीदमिततमा कुमारदेवी, देवीव त्रिपुररिपोः कुमारमाता ॥ ७ ॥

तयो. प्रथमपु (\*) त्रयोऽमृन्मन्त्री लूणिगसज्ञया ।

दैवादवाप बालोऽपि, सालोक्य [व]।सवेन सः ॥ ८ ॥

पूर्वमेव सचिव. स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सु लूणिगः ।

यस्य निस्तुपमतेर्मनीषया, धिक्कृतेव धिषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥

शीमल्लदेवः श्रि (\*) तमल्लिदेवः, तस्यानुजो मंत्रिमतल्लिकाऽमूत ।

बभूव यस्यान्यधनागनासु, लुब्धा न बुद्धिः शमलब्धबुद्धेः ॥ १० ॥

धर्मविधाने भुवनच्छिद्रविधाने विभिन्नसधाने ।

सृष्टिकृता न हि सृष्टः, प्रतिमलो मल्लदेव (\*) स्य ॥ ११ ॥

नीलनीरदकदम्बकमुक्तधेतुकिरणोद्धरणेन ।

मल्लदेवयशसा गलहस्तो, हस्तिमल्लदशनांशुषु दत्तः

॥ १२ ॥

तस्यानुजो विजयते विजितेन्द्रियस्य, सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्षः ।

श्रीवस्तु(०)[पाल] इति भालतलस्थितानि, दौःस्थ्याक्षराणि मुकृती कृतिनां विलुपन् ॥ १३ ॥

विरचयति वस्तुपालश्चलुक्प्रसविषे कविषु च प्रवरः ।

न कदाचिदर्थहरणं, श्रीकरणे काव्यकरणे वा

॥ १४ ॥

तेजःपालः पालितस्वा(०)मितेजःपुञ्जः सोऽयं राजते मंत्रिराजः ।

दुर्वृत्तानां शङ्कनीयः कनीयानस्य आत्मा विश्वविभ्रातकीर्तिः

॥ १५ ॥

तेजःपालस्य विष्णोश्च, कः स्वरूपं निरूपयेत् ? । स्थितं जगन्नीसुत्रं, यदीमोदरकंदरे ॥ १६ ॥

जाल्हु-भाऊ-साऊ-धनदेवी-सोहगा-चयलुकाल्याः ।

परमलदेवी चैपां, कमादिमाः सप्त सोदर्यः

॥ १७ ॥

एतेऽभिराजपुत्रा, दशरथपुत्रास्त एव चत्वारः । प्राप्ताः किल पुनरवनावेकोदरासलोमेन ॥ १८ ॥

अनुजन्मना समेतस्तेजःपा(०)लेन वस्तुपालोऽयम् ।

मदयति कस्य न हृदयं ? , मधुमासो माघवेनेव

॥ १९ ॥

पंथानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिष स्मरंतौ ।

सहोदरौ दुर्द्धर्मोहचौरे, संभूय धर्माध्वनि तौ प्रवृत्तौ

॥ २० ॥

इदं सदा सो(०)दरयोरुदेतु, युगं युगव्यायमदोर्युगत्रि ।

युगे चतुर्थेऽप्यनघेन येन, कृतं कृतस्वागमनं युगस्य

॥ २१ ॥

मुक्कामयं शरीरं, सोदरयोः सुचिरमेतयोरस्तु ।

मुक्कामयं किल महीबलयमिदं भाति यत्कीर्त्या

॥ २२ ॥

ए(०)कोत्पत्तिनिमित्तौ, यद्यपि पाणी तयोस्तथाऽप्येकः ।

वामोऽभूदनयोर्न तु, सोदरयोः कोऽपि दक्षिणयोः

॥ २३ ॥

धर्मस्थानां कितामुर्वी, सर्वतः कुर्वताऽमुना । दत्तः पादो बलाहं प्रुपुगलेन कलेर्गले

॥ २४ ॥

इतश्चौलुकपवीरा(०)णां, धरो शास्त्रविशेषकः ।

अर्णोराज इति ख्यातो, जानस्तेजोमयः पुमान्

॥ २५ ॥

तस्मादंगंतरमंगंतरितप्रतापः, प्राप क्षितिं क्षतरिपुर्लक्षणप्रसादः ।

स्वर्गपद्मजलजलक्षितवर्गसुश्रा, बभ्राम यस्य लवणाब्धिमतीत्य कीर्तिः(०) ॥ २६ ॥

सुनन्तस्मादासीद्दशरथकनुत्तयप्रतिहृतेः,

प्रतिष्ठापातानां क्वलित्तयले वीरघवलः ।

१ पञ्चमिदं प्राचीनदेवतासंग्रह २ भागे ४२ गङ्गागिरिनारयणकविलेखे नवमं मत्तपारिधीनरचनप्रचरि-  
होत्रोप निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पञ्चमिदं त्रिनदयवियन्तुपालचरिते सोमेशदेवनाम्नेव वर्तते ॥

यशःपूरे यस्य प्रसरति रतिक्रान्तमनसा-

॥ मसाध्वीनां ममाऽमिसरणकलायां कुशलता ॥ २७ ॥

चौलुक्यः मुकृती स वीरघवलः क(३) गेजपानां जपं,

॥ यः कर्णेऽपि चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यौ मंत्रिणौ ।

आभ्यामभ्युदयातिरेकरुचिरं राज्यं स्वमर्तुः कृतं,

॥ बाहानां निवहाः घटाः करटिनां वद्धाश्च सौभाग्ये ॥ २८ ॥

तेन मंत्रिद्वयेनायं, जाने जानूपवर्तिना । वि(३)मुर्मुजद्वयेनेव, सुखमाश्लिष्यति श्रियं ॥ २९ ॥

इतश्च—

गौरीवरश्चभुरभूधरसमवोऽयमस्स्यर्धुदः ककुदमद्रिकदंबकस्य ।

मंदाकिनी धनजटे दधुत्तमां[गे], यः श्यालकः शशिभृतोऽभिनयं करोति ॥ ३० ॥

कचिदिह विहरंतीर्वी(३)क्षमाणस्य रामाः, प्रसरति रतिरंतर्मोक्षमाकांक्षतोऽपि ।

कचन मुनिमिरर्या पश्यतस्तीर्थवीथीं, भवति भवविरक्ता धीरधीरात्मनोऽपि ॥ ३१ ॥

श्रेयःश्रेष्ठवशिष्ठहोमहुतमुक्कुंडान्मृतं डात्मज-

प्रघोतापिकदेहदीपितिम(३)रः कोऽप्याविरासीधरः ।

तं मत्वा परमारणैकरसिकं स व्याजहार श्रुते-

राधारः परमार इत्यजनि तन्नामाऽयं तस्यान्वयः ॥ ३२ ॥

श्रीधूमराजः प्रथमं बभूव, भूवासवस्तत्र नर्द्ववंशे ।

भूमिभृतो यः कृतवानभिज्ञान्, पक्षद्वयोच्छे(३)दनवेदनासु ॥ ३३ ॥

घंघुक-ध्रुव-भटादयस्ततस्ते रिपुद्विपघटाजितोऽभवन् ।

यत्कुलेऽजनि पुमान् मनोरमो, रामदेव इति कामदेवजित् ॥ ३४ ॥

रोदःकंदरवर्तिकीर्तिलहरीलिप्तामृतांशुयुते-

रमधुन्नवशो यशोधवल इ(३)त्यासीधनूजस्ततः ।

यशौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्थितामागतं,

मत्वा सत्वरमेव मालवपतिं व(व)ल्लालमालव्यवान् ॥ ३५ ॥

शत्रुश्रेणीमलविदलनोन्निद्रनिस्त्रिंशधारो,

घारावर्षः समजनि सुतस्तस्य विश्वप्रकाश्यः ।

क्रोधाक्रान्तप्र(३)धनवसुधानिश्चले यत्र जाता-

भ्योतन्नेत्रोत्पलजलकणाः कौकणाधीशपत्न्यः ॥ ३६ ॥

सोऽयं पुनर्दाशरथिः पृथिव्यामव्याहृतौजाः स्फुटमुज्जगाम ।

मारीचवैरादिव योऽधुनाऽपि, [शृ]गव्यमव्यग्रमतिः करोति ॥ ३७ ॥

सामं(\*)तसिंहसमिति क्षितिर्विष्वतोजाः, श्रीगूर्जरक्षितिपरक्षणदक्षिणासिः ।

प्रह्लादनस्तदनुजो दनुजोत्तमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥

देवी सरोजासनसंभवा किं?, कामप्रदा किं सुरसौरमेयी ? ।

प्रह्लादनाकारधरा(\*)धरायामायातवत्येष न निश्चयो मे ॥ ३९ ॥

धारावर्षसुतोऽयं, जयति श्रीसोमसिंहदेवो यः ।

पितृतः शौर्यं विद्यां, पितृव्यकाहानमुभयतो जगृहे ॥ ४० ॥

मुक्त्वा विप्रकरानरात्तिनिकरान्निर्जित्य तर्त्तिकवन,

प्रापत् संपति सोम(\*)सिंहवृत्तिः सोमप्रकाशं यशः ।

येनोर्वीतलमुज्ज्वलं रचयताऽप्युत्तान्यताभीर्षया,

सर्वेषामिह विद्विषां नहि मुस्तान्मालिन्यमुन्मुलितं ॥ ४१ ॥

वसुदेवस्येव सुतः, श्रीकृष्णः कृष्णराजदेवोऽस्य ।

माप्राधिकप्रतापो, यशोद(\*)यासंश्रितो जयति ॥ ४२ ॥

इतश्च—

अन्वयेन विनयेन विद्यया, विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ।

कापि कोऽपि न पुमानुपैति मे, वस्तुपालसदृशो दृशोः पथि ॥ ४३ ॥

देयिता ललितादेवी, तनयमवीतनबभाप सविर्वेद्वात् ।

नाम्ना जयंत(\*)सिंहं, जयंतमिद्रात् पुलोमपुत्रीव ॥ ४४ ॥

यः शैशवे विनयवैरिणि बोधबंधे,

घटे नयं च विनयं च गुणोदयं च ।

सोऽयं मनोभवपरामवजारूक-

रूपो न कं मनसि चुंयति जैत्रसिंहः ? ॥ ४५ ॥

श्रीवस्तुपालपुत्रः, कल्यायुरयं जयं(\*)तसिंहोऽस्तु ।

कामादधिकं रूपं, निरूप्यते यस्य दानं च ॥ ४६ ॥

सै श्रीतेजःपालः, सच्चिदधिरकालमस्तु तेजस्वी । येन जना निश्चिताश्चितामणिनेव मंदन्ति ॥ ४७ ॥

यद्याणवयाऽमरगुरु-मरुद्वाधि-शुक्रादिकानां,

प्रागुत्पादं व्यधित सुवने (\*) मंत्रिणां बुद्धिपाम्नां ।

चक्रेऽभ्यासः स सल्ल विधिना नूनमेनं विधातुं,

तेजःपालः कथमितरथाऽऽधिक्यमापैष तेषु ? ॥ ४८ ॥

१ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागवत ३८ संक्षयगिरिनारसक्तधिल्लेखे नवमं श्लोमेधरदेवकृतिरपे-  
नेव निर्दिष्टं वर्तते ॥ २ पद्यमिदं प्राचीनजैनलेखसंग्रह २ भागवत ३८ संक्षयगिरिनारसक्त १०१ संक्षयार्जुनचलो-  
प्रशस्तयोः क्रमस्यः पठ्यं प्रथमं च श्लोमेधरदेवकृतिनाम निर्दिष्टं वर्तते ॥

अस्ति स्वस्तिनिकेतनं तनुभृतां श्रीवस्तुपालानुज-  
स्तेजःपाल इति स्थितिं बलिहृतामुर्वीतले पालयन् ।

आत्मीयं व(०)हुगन्यते न हि गुणग्रामं च कामंदकि-

श्राणवयोऽपि नमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पदं प्रेक्ष्य यम्

॥ ४९ ॥

इतश्च महं० श्रीतेजःपालस्य पत्न्याः श्रीअनुपमदेव्याः पितृवंशवर्णनम् ॥

प्राग्वाटाऽन्वयमंडनैकमुकुरः श्रीसांद्रचंद्रावती-

चास्तव्यः स्त(०)वनीयकीर्तिहृदिप्रक्षालितश्चातलः ।

श्रीगागाभिषया सुधीरज्जनि यद्वृत्तानुरागादभूत्,

को नासप्रमदो न दोलितशिरा नोद्धतरोमा पुमान् ?

॥ ५० ॥

अनुसृतसज्जनसरणिर्धरणिगणनामा बभूव तत्तनयः ।

स्वप्रमुहदये (०) गुणिना, हारेणेव स्थितं येन

॥ ५१ ॥

त्रिभुवनदेवी तस्य, त्रिभुवनविस्मयातशीलसंपन्ना ।

दयिताऽभूदनयोः पुनरंगं द्वेधा ममस्त्वेकम्

॥ ५२ ॥

अनुपमदेवी देवी, साक्षाद्वासायणीव शीलेन ।

तद्बुद्धिता सहिता श्रीतेजःपालेन (०) पत्याऽभूत्

॥ ५३ ॥

इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसूनव्रततिरज्जनि तेजःपालमंत्रीक्षपत्नी ।

नय-विनय-विवेकौचित्य-दाक्षिण्य-दानप्रमुखगुणगणैर्दुद्योतिताशेषगोत्रा

॥ ५४ ॥

लावण्यसिंहस्तनयस्तयोरयं, रयं जयसि (०) [ द्वि ] यदुष्टवाजिनाम् ।

लब्ध्वापि मीनभ्रजमंगलं वयः, प्रयाति धर्मैकविषायिनाऽध्वना

॥ ५५ ॥

श्रीतेजपालतनयस्य गुणानमुप्य, श्रीलूणसिंहकृतिनः कति न स्तुवंति ? ।

श्रीबंधनोद्धरतरैरपि यैः समंतादुहामता त्रिजगति किं (०) यते स्म कीर्तेः

॥ ५६ ॥

गुण-धननिधानकलशः, प्रकटोऽयमवेष्टितश्च खलसर्पैः ।

उपचयमयते सततं, मुजैरुपजीव्यमानोऽपि

॥ ५७ ॥

मह्यदेवसचिवस्य नंदनः, पूर्णसिंह इति लीलुकासुतः ।

तस्य नंदति सुतोऽयमहृणा (०) देविभूः सुकृतवेष्टम पेयदः

॥ ५८ ॥

अभूदनुपमा पत्नी, तेजःपालस्य मंत्रिणः । लावण्यसिंहनामाऽयमायुष्मानेतयोः सुतः

तेजःपालेन पुण्यार्थं, तयोः पुत्र-कलत्रयोः । हर्म्य श्रीनेमिनाथस्य, तेने तेनेदमर्षुदे

॥ ५९ ॥

तेजःपाल इति क्षितीदुसचिवः शंखोज्ज्वलाभिः शिला-

श्रेणीभिः स्फुरदिदुकुंदरुचिरं नेमिममोर्मादिरम् ।

उधैर्महपमप्रतो जिन्वा वरा वासद्विपंचाशतं,

तत्पार्श्वेषु बलानकं च पुरतो निष्पादयामासिवान्

॥ ६१ ॥

श्रीमच्छंड[प]संभवः [सम]भवच्छंडप्रसादस्ततः,  
सोमस्तत्प्रभवोऽश्वराज इति तत्पुत्राः पवित्राशयाः ।

श्रीमल्लूणिग-मल्लदेवसचिवश्रीवस्तुपालाहया-  
स्तेजःपालसमन्विता जिनमत्तारामोन्नमजीरदाः ॥ ६२ ॥

श्रीमंजीश्वरवस्तुपालतनयः श्रीजै(\*)वसिंहाहय-  
स्तेजःपालसुतश्च विश्रुतमतिलविष्यसिंहागिधः ।

पूतेपां दश भूर्तयः करिवधूस्कंधामिरूढाश्चिरं,  
राजंते जिनदर्शनार्थमयतां दिग्मायकानामिव ॥ ६३ ॥

मूर्तीनामिह पृष्ठतः करिवधूपृष्ठपतिष्ठाजुपां,  
तन्मूर्तिर्विम(\*)लशमखचकगताः कांतासमेता दश ।

चौलुक्पक्षितिलाभीरभघलस्याद्वैतबंधुः सुधी-  
स्तेजःपाल इति व्यघापयदयं श्रीवस्तुपालानुजः ॥ ६४ ॥

तेजःपालः सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ।  
सविधे विभाति सफलः, (\*) सरोवरस्येव सद्कारः ॥ ६५ ॥

तेन प्रातृयुगेन या प्रतिपुर-ग्रामा-ऽध्व-शैलसगलं,  
बापी-कूप-निषान-कानन-सरः-प्रासाद-सत्रादिका ।

धर्मस्थानपरंपरा नवतरा चक्रेऽथ जीर्णोद्भूता,  
तत्संख्याऽपि न बुध्यते यदि परं तद्वेदि (४) नी मेदिनी ॥ ६६ ॥

शंभोः श्वासगतागतानि गणयेद् भः सन्मतिर्योऽधवा,  
नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलयेन्मार्कंडेनाम्नो मुनेः ।

संख्यातुं सचिवद्वयीविरचितामेतामपेतापर-  
व्यापारः सुकृतानुकीर्तनतर्ति सोऽप्युज्जिहीते यदि (\*) ॥ ६७ ॥

सर्वत्र वर्ततां कीर्तिरश्वराजस्य श्लाघ्यता । सुकर्तुमुपकर्तुं च, जानीते यस्य संततिः ॥ ६८ ॥

आसीच्छंडपमंडितान्वयगुरुद्व्यगिंद्रगच्छश्रिय-  
भूहारलमयलसिद्धमहिमा सूरिर्महेंद्रामिधः ।

तस्माद्विस्मयनीयचारुचरितं श्रीश्रुति(\*)[सूरिस्त] तो-  
प्यानंदा-ऽमरसूरियुग्ममुदयचन्द्रार्कदीप्रयुति ॥ ६९ ॥

श्रीजैनशासनवनीनवनीरवाहः, श्रीमास्ततोऽम्भधरो हरिमद्रसूरिः ।  
विषामदोन्मदगदेष्वनवधवैद्यः, स्यात्तस्ततो विजयसेनप्रनीधरोऽयम् ॥ ७० ॥

गुरो[स्त](\*)स्या[सि]पां पात्रं, सूरिस्तस्युदयप्रभः ।  
मौक्तिकानीच सूक्तानि, माति यत्प्रतिभांनुधेः ॥ ७१ ॥

॥ एतद्धर्मस्थानं, धर्मस्थानस्य चास्य यः कर्ता ।  
 तावद् द्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्बुदो यावत् ॥ ७२ ॥  
 श्रीसोमेश्वरदेवश्चलुक्यनरदेवसेवितांहि (\*) युगः ।  
 रचयांचकार रुचिरां, धर्मस्थानप्रशस्तिमिमाम् ॥ ७३ ॥

श्रीनेमरम्बिकायाश्च, प्रसादादर्बुदाचले । वस्तुपालान्वयस्यास्तु, प्रशस्तिः सन्तिशालिनी ॥ ७४ ॥

सूत्र० केल्हणमुतधांघलपुत्रेण चंडेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा । (\*) श्रीविक्रम [ संवत् १२८७  
 वर्षे ] फाल्गुण वदि ३ रवौ श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः प्रतिष्ठा कृता ॥

( ६५ )

॥ ६ ॥ ॐ नमः [ सर्वज्ञाय ॥ सय ] त् १२८७ वर्षे लौकिकफाल्गुनवदि ३ रवौ अयेह श्री-  
 मदनहिलपाठके चौलुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृतमटाराजाधिराजश्रीम [ १ मदेव ] .  
 (\*) विजयराज्ये त... श्रीवसिष्ठ (छ) कुंडयजनानलोद्भूतश्रीमद्भूमराजदेव-  
 कुलोत्पन्नमहामंडलेधरराजकुलश्रीसोमसिंहदेवविजयराज्ये तस्यैव महाराजाधिराजश्रीमीमदेवस्य  
 प्रसा [ दात् गूर्ज ] (\*) रत्नामंडले श्रीचौलुक्यकुलोत्पन्नमहामंडलेधरराणकश्रीलवणप्रसाददेवसुत-  
 महामंडलेधरराणकश्रीवीरधवलदेवसत्कसमस्तमुद्राव्यापारिणा श्रीमदनहिलपुरवास्तव्यश्रीप्राग्वाट-  
 शातीय ठ० श्रीचंड [ पसुत ठ० श्री ] (\*) चंडप्रसादात्मज महं० श्रीसोमवतनुज ठ० श्रीआसराज-  
 भार्या ठ० श्रीकुमारदेव्योः पुत्र महं० श्रीमल्लदेव सधपति महं० श्रीवस्तुपालयोरनुजसहोदरात्  
 महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेव्यास्तत्कुक्षि [ समूतप ] (१) वित्रपुत्र महं०  
 श्रीलूणसिंहस्य च पुण्ययशोऽभिवृद्धये श्रीमदर्बुदाचलोपरि देउलवाढाप्राप्ते समस्तदेवकुलिकालकृतं  
 विशालहस्तिशालोपशोभितं श्रीलूणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमिनाथदेवचैत्यमिदं कारित ॥ छ ॥  
 (\*) प्रतिष्ठितं श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमहेंद्रसूरिसताने श्रीशांतिसूरिसिन्धुश्रीआणंदसूरि-श्रीअमरचंद्र-  
 सूरिपद्मलंकरणप्रभुश्रीहरिमद्रसूरिसिन्धुः श्रीविजयसेनसूरिभिः ॥ छ ॥ अत्र च धर्मस्थाने कृत-  
 भावकगोष्टि ( छि ) कानां नामा (\*) नि यथा ॥ महं० श्रीमल्लदेव महं० श्रीरस्तुपाल महं० श्री-  
 तेजःपालप्रभृतिभ्रातृव्रजसतानपरंपरया तथा महं० श्रीलूणसिंहसत्कमातृकुलपक्षे श्रीचंद्रारतीवास्त-  
 व्यप्राग्वाटशातीय ठ० श्रीमावदेवसुत ठ० श्रीशालिमतनुज ठ० (\*) श्रीमागरतनय ठ० श्री-  
 गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगमातृ महं० श्रीराणिग महं० श्रीलीला तथा ठ० श्रीधरणिगभार्या ठ०  
 श्रीतिष्ठुणदेविकुक्षिसंभूत महं० श्रीअनुपमदेवीसहोदरमातृ ठ० श्रीसीम्बसीह ठ० श्रीआम्बसीह  
 ठ० श्रीऊदल (\*) तथा महं० श्रीलीलासुत महं० श्रीलूणसीह तथा मातृ ठ० जगसीह ठ०  
 रत्नसिंहानां समस्तकुटुंबेन एतदीयसंतानपरंपरया च एतस्मिन् धर्मस्थाने सकल्मसि स्नपनपूजा-  
 सारादिकं सदैव करणीयं निर्वाहणीयं च ॥ तथा ॥ (\*) श्रीचंद्रारत्याः सत्कममस्तमहाजनसत्कल-



जिनचैत्यगोष्टि(ष्टि)कप्रभृतिशिववत्समुदायः ॥ तथा उवर्णी-कीमरेउलीग्रामीयग्राम्वाट ज्ञा० श्रे०  
 रासल उ० आसधर तथा ज्ञा० भाणिभद्र उ० श्रे० आल्हण तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ०  
 खीम्बसी(\*)ह घर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिम उ० आसचंद्र तथा  
 ज्ञा० श्रे० वहुदेव उ० सोम ग्राम्वाटज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीदा  
 उ० पाल्हण धर्कटज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा ग्राम्वाटज्ञातीय पूना उ० सा(\*)ल्हा तथा  
 श्रीमालज्ञा० पूना उ० साल्हाप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीमिः श्रीनेमिनाथदेवमतिष्टा(ष्टा)वर्म-  
 धियात्राष्टाहिकार्या देवकीय चैत्ररदि ३ तृतीयादिने स्नपनपूजाद्युत्सवः कार्यः ॥ तथा कोंटिदमा-  
 नीय ऊरुसवालज्ञा(\*)तीय श्रे० सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सरलखण उ० बालण  
 ग्राम्वाटज्ञा० श्रे० सांतुय उ० देल्हुय तथा ज्ञा० श्रे० गोसल उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे०  
 कोला उ० अम्बा तथा ज्ञा० श्रे० पासचंद्र उ० पूनचंद्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर उ०  
 ज(+)गा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० साल्हा श्रीमालज्ञा० फणपुरा उ० कुरुधरप्रभृतिगोष्टि-  
 (ष्टि)काः । अमीमिस्तथा ४ चतुर्थदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य द्वितीयाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥  
 तथा ब्रह्माणवास्तव्यग्राम्वाटज्ञातीय महाजनिः (\*) आंमिग उ० पूनह ऊरुसवालज्ञा० महा०  
 धांधा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० साटा उ० वरदेव ग्राम्वाटज्ञा० महा० पाल्हण उ०  
 उदयपाल ओइसवालज्ञा० महा० आबोधन उ० जगसीह श्रीमालज्ञा० महा० वीसल उ०  
 पासदेव प्रा(\*)म्वाटज्ञा० महा० वीरदेव उ० अरसीह तथा ज्ञा० श्रे० धणचंद्र उ० रामचंद्र-  
 प्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीमिस्तथा ५ पंचमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य तृतीयाष्टाहिकामहोत्सवः  
 कार्यः ॥ तथा धउलीग्रामीय ग्राम्वाटज्ञातीय श्रे० सा(\*)जण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे०  
 बोहडि उ० पूना तथा ज्ञा० श्रे० जसडुय उ० जेमण तथा ज्ञातीय श्रे० साजन उ० मोला  
 तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय उ० सावदेव तथा ज्ञा० हूमसरण उ०  
 साहणीप ओइसवाल(\*)ज्ञा० श्रे० सरलखण उ० महं जोया तथा ज्ञा० श्रे[०] देवकुंभार  
 उ० आसदेवप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीमिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य चतुर्थाष्टाहि-  
 कामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा मुंडस्वल्हमहावीर्यवास्तव्य ग्राम्वाटज्ञातीय (\*) श्रे० सं० धीरण उ०  
 गुणचंद्र पाल्हा तथा श्रे० सोहिय उ० आभेसर तथा श्रे० जेजा उ० खांखण तथा फीलिपी-  
 ग्रामवास्तव्य श्रीमालज्ञा० बापल-ग्राजणप्रभृतिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीमिस्तथा ७ सप्तमीदिने श्री-  
 नेमिनाथदेवस्य पंचमाष्टाहिकाम(\*)होत्सवः कार्यः ॥ तथा हंडाउद्रग्राम-डवाणीग्रामवास्तव्य  
 श्रीमालज्ञातीय श्रे० आम्युय उ० जमरा तथा ज्ञा० श्रे[०] लखमण उ० आघू तथा ज्ञा०  
 श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० सुमिग उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ०  
 जाला(\*) ग्राम्वाटज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमाल ज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल तथा  
 ज्ञा० श्रे० आमधर उ० आमल तथा ज्ञा० श्रे० धिरदेव उ० वीरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचंद्र  
 उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा ग्राम्वाटज्ञा० श्रे० लखमण(\*) उ० कहुयामभृ-  
 तिगोष्टि(ष्टि)काः । अमीमिस्तथा ८ अष्टमीदिने श्रीनेमिनाथदेवपञ्चाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥

तथा [म]हाहडवास्तव्यप्राग्वाटजातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसरणु तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे०  
 धणिया तथा ज्ञा[०] श्रे० (\*) देल्हण उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसिद्ध  
 तथा ज्ञा० श्रे० आंघुय उ० बोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा[०] श्रे०  
 वीरुप उ० स्नाजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेवप्रमृतिगोष्टि(छि)काः । अमीमिस्तथा ९  
 नवमोदिने (\*) श्रीनेमिनाथदेवस्य 'सप्तमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥ तथा साहिलवाडावास्तव्य  
 ओइसवालजातीय श्रे० देल्हा उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आम्बदेव श्रे० काल्हण उ०  
 आसल श्रे० बोहिय उ० लाखण श्रे० जमदेव उ० वाहड श्रे० (\*) सीलण उ० देल्हण  
 श्रे० बहुदा श्रे० महधरा उ० धणपाल श्रे० मूनिग उ० वाघा श्रे० गोसल उ० बहडामृति-  
 गोष्टि(छि)काः । अमीमिस्तथा १० दशमीदिने श्रीनेमिनाथदेवस्य अष्टमाष्टाहिकामहोत्सवः कार्यः ॥  
 तथा श्रीअर्बुदोपरि देउल(\*)वाडावास्तव्यसप्तमस्तथावर्कः श्रीनेमिनाथदेवस्य पंचापि कल्याणि-  
 कानि यथादिनं प्रतिवर्षं कर्तव्यानि । एवमियं व्यवस्था श्रीचंद्रावतीपतिराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन  
 तथा सत्पुत्र राज० श्रीकान्हडदेवप्रमुखकुमरैः समस्तराजलोकैस्त(\*)था श्रीचंद्रावतीयस्थानपति-  
 मट्टारकप्रमृतिकविलास तथा गूगलीब्राह्मणसमस्तमहाजनगोष्टि(छि)कैश्च तथा अर्बुदाचलोपरि श्री-  
 अचलेश्वर श्रीवसिष्ठ तथा संनिहितग्रामदेउलवाडाग्राम-श्रीश्रीमातामहबुग्राम-आबुग्राम-  
 ओरामाग्राम-उत्तरछग्राम-सिहरग्राम-सालग्राम-हेठउंजोग्राम-आखीग्राम-धीघांघलेश्वरदे-  
 वीपकोटडीप्रमृतिद्वादशग्रामेषु सतिष्ट(छ)मानस्थानपतितपोधन-गूगलीब्राह्मण-राठियप्रमृतिसमस्तलोकै-  
 स्तथा भालि-भाडाप्रमृतिग्रामेषु सतिष्ट(छ)मानश्रीप्रतीहा(१)रवंशीयसर्वराजपुत्रैश्च आत्मीयात्मीय-  
 स्तेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मंडपे ससुपविद्रयोपविश्य महं श्रीतेजःपालपार्श्वात् स्वीयस्वीयप्रमो-  
 दपूर्वकं श्रीछूणसीहवसहिकामिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोऽपि रक्षाभारः स्वीकृतः । तदेतदा(\*)-  
 स्मीयवचनं प्रमाणीकुर्बमि(द्रि)रैतैः सर्वैरपि तथा एतदीयसंतानपरंपरया च धर्मस्थानमिदमाचंद्रार्कं  
 यावत् परिरक्षणीयम् ॥ यतः—

किमिह कपाल-कर्मंडलु-वल्कल-सितरक्तपट-जटापटलैः ।

म्रतमिदमुज्ज्वलमुन्नतमनसां प्रतिपन्ननिर्घहणं ॥ १ ॥ छ ॥ (१-)

तथा महाराजकुलश्रीसोमसिंहदेवेन अन्यां श्रीछूणसिंहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवाय पूजां-  
 गमोगार्थं बाहिरह्वां डवाणीग्रामः शासनेन प्रदत्तः ॥ स च श्रीमोमसिंहदेवान्यर्थनया प्रभारा-  
 न्वयिमिराचंद्रार्कं यावत् प्रतिपाल्यः ॥ २ ॥ (\*)

सिद्धक्षेत्रमिति प्रसिद्धमहिमा श्रीपुंडरीको गिरिः,

श्रीमान् रंजतकोऽपि विश्वविदितः क्षेत्रं विमुक्तेरिति ।

नूनं क्षेत्रमिदं द्वयोरपि तयोः श्रीअर्बुदस्तव्यम्,

भेजाते कथमन्यथा सममिमं श्रीआदि-नेमी स्वयम् ?

॥ २ ॥

संसारसर्वस्वमिहैव युक्तिसर्वस्वमप्यत्र जिनेशदृष्टं ।

विलोभ्यमाने भवने तवास्मिन्, पूर्वं परं च त्वयि दृष्टिमांये

॥ ३ ॥

श्रीकृष्णर्पायश्रीनयचंद्रसुरेरिमे ॥

सं० सरवणपुत्र सं० सिंहराज साधू साजण सं० सहसा-साहदेपुत्री 'सुनयव' प्रणमति  
॥ शुभम् ॥

( ६६ )

- ( १ ) ॥ ॐ ॥ स्वस्ति ॥ सं० १२९६ वर्षे वैशाख शुदि ३ श्रीशत्रुंजयम-
- ( २ ) हातीये महाभायश्रीतेजपालेन कारितनंदीसरवर-
- ( ३ ) पश्चिममण्डपे श्रीआदिनाथविंशं देवकुलिका दंड-क-
- ( ४ ) लसादिसहिता । तथा इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालका-
- ( ५ ) रितश्रीसत्यपुरीयश्रीमहावीरविंशं खचकं च । इहि(है)व
- ( ६ ) तीर्थे शैलमयविंशं द्वितीयदेवकुलिकामध्ये खचक-
- ( ७ ) द्वय श्रीश्रवभादिचतुर्विंशतिका च । तथा गूढमण्डपपूर्वद्वा-
- ( ८ ) रमध्ये खचकं मूर्तिपुगं तदुपरे श्रीआदिनाथविंशं श्री-
- ( ९ ) उज(झ)यंते श्रीनेमिनाथपादुकामंडपे श्रीनेमिनाथविं-
- ( १० ) शं खचकं च । इहैव तीर्थे महं [०] श्रीवस्तुपालकारितश्री-
- ( ११ ) आदिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे श्रीनेमिनाथविंशं खचकं च ।
- ( १२ ) श्रीअर्जुनचले श्रीनेमिनाथचैत्यजगत्यां देवकुलि-
- ( १३ ) काद्वयं पदविंशसहितानि ॥ श्रीजावालिपुरे श्रीपा-
- ( १४ ) र्शनाथचैत्यजगत्यां श्रीआदिनाथविंशं देवकुलिका
- ( १५ ) च । श्रीतारणगढे श्रीअजितनाथगूढमंडपे श्रीआ-
- ( १६ ) दिनाथविंशं खचकं च ॥ श्रीअणहिलपुरे हथीयावापी-
- ( १७ ) मस्यासन्न श्रीसुविधिनाथविंशं तच्चैत्यजीर्णोद्गारे च ॥
- ( १८ ) धीजापुरे देवकुलिकाद्वयं श्रीनेमिनाथविंशं श्रीपा-
- ( १९ ) र्शनाथविंशं च । श्रीमूलभासादे कवलीखचकद्वये
- ( २० ) श्रीआदिनाथ श्रीमुनिसुव्रतस्वामिविंशं च ॥ लाटाप-
- ( २१ ) र्यां श्रीकुमरविहारजीर्णोद्गारे श्रीपार्श्वनाथस्याग्र-
- ( २२ ) त(तो) मंडपे श्रीपार्श्वनाथविंशं खचकं च । श्रीग्रहादनपु-
- ( २३ ) रे पाल्हविहारे श्रीचंद्रप्रभस्वामिमंडपे खचक-
- ( २४ ) द्वयं च । इहैव जगत्यां श्रीनेमिनाथस्याग्रत(तो) मंडपे
- ( २५ ) श्रीमहावीरविंशं च । एतत् सर्वं कारितमस्ति ॥ श्रीनाग-
- ( २६ ) पुरीयवरदुडीया साहू नेमडसुत सा० राहड ।
- ( २७ ) सा० जयदेव भा० सा० सहदेव सत्पुत्र सं० सा०
- ( २८ ) खेटा भा० गोसल सा० जयदेव सुत सा० वीरदे-

- ( २९ ) व देवकुमार हात्स्य सा० राहट सुत सा० जिणचंद्र  
 ( ३० ) धणेश्वर अमयकुमार लघुआवृ सा० लाइडेन  
 ( ३१ ) निजकुटुंबसमुदायेन इदं कारितं । प्रतिष्ठितं  
 ( ३२ ) श्रीनागेंद्रगच्छे श्रीमदाचार्यविजयसेनसूरिभिः ॥  
 ( ३३ ) श्रीजाबालिपुरे श्रीसौवर्णगिरौ श्रीपार्श्वनाथजगत्यां  
 ( ३४ ) अष्टापदमध्ये लक्षकद्वयं च ॥ लाटापल्यां श्रीकुमारवि-  
 ( ३५ ) हारजगत्यां श्रीअजितस्वामिर्बिंबं देवकुलि-  
 ( ३६ ) का दंड-कलससहिता । इहैव चैत्ये जि-  
 ( ३७ ) नयुगलं श्रीद्यांतिनाथ श्रीअजितस्वामि ।  
 ( ३८ ) एतत् सर्वं कारावि( पि )तं ।  
 ( ३९ ) श्रीअणहिल्लपुरप्रत्यासन्न चारोपे  
 ( ४० ) श्रीआदिनाथविंशं मासादं गूढमंड-  
 ( ४१ ) पं छ वज्रकिया सहितं सा० राहट-  
 ( ४२ ) सुत सा० जिणचंद्र भार्या सा० चाहि-  
 ( ४३ ) णिकुक्षिसंभूतेन संघ सा० दे-  
 ( ४४ ) वचंद्रेण पिता माता आत्मश्रेयो-  
 ( ४५ ) र्थं कारापितं ॥ छ ॥

( ६७ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीमत्पत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-  
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरासुतश्रीमालदेव महं० (\*) श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-  
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्यायाः मह० श्रीसोस्तुकायाः पुण्यार्थं श्रीसुपार्श्वजिनालंकृता देव-  
 कुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

( ६८ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंड-  
 प्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआमरासुतश्री(\*)मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्री-  
 तेजपालेन महं० श्रीवस्तुपालभार्याललतादेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

( ६९ )

दं० ॥ संवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरागज महं०  
 श्रीवस्तुपालसुत महं० श्रीजयतसीहश्रेयोऽर्थं (\*) महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

दं० [ ॥ ] श्रीसुवधिनाथस्य कल्या०

फाल्गुन वदि ९ च्यवन

( ७० )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरांगज महं०] श्रीतेजपालेन श्रीजयवत्सीहमार्याजयवत्तदेवि [ \* ] श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

( ७१ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं०] श्रीआसरांगज महं० श्रीतेजपालेन श्रीजयवत्सीहमार्यामृद्वदेवि [ \* ] श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥

( ७२ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वयसमुद्भव महं० श्रीतेजपालेन महं० श्रीजयवत्सी [ \* ] हमार्या महं० श्रीरूपादेवि-  
श्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ७३ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताश्रीमहज्जलभेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन दे [ \* ] वकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ७४ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुताबाईश्रीसदमलभेयो [ \* ] श्रेयो महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ७५ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुंनमीदीपमा [ \* ] र्या महं० श्रीआवहण-  
देविश्रेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ७६ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-  
न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्ग महं० श्रीपातुर्थेयोऽर्थं महं० श्रीतेजपालेन देवकुलि [ \* ] का कारिता ॥

( ७७ )

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटजातीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमा-  
न्वये महं० श्रीआमरासुत महं० श्रीमालदेवीपमार्ग महं० श्रीलीलश्रेयोऽर्थं महं० श्री [ \* ]  
तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ७८ )

६०॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप, श्रीचंडप्रसाद महं०, श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुत महं०, श्रीपेयडथेयोऽर्थ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

( ७९ )

६०॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीमालदेवसुत महं० श्रीपुनसीहथेयोऽर्थ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ छ ॥

( ८० )

६०॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवथेयोऽर्थ तत्सोदरलघुभ्रातृ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ८१ )

६०॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२८८ वर्षे प्राग्वाटवंशीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोम महं० श्रीआसरा महं० श्रीमालदेवान्वये महं० श्रीपुनसीहसुताबाईश्रीवलालदेविथेयोऽर्थ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ८२ )

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० लूणसीहभार्ययणादेविथेयोऽर्थ महं० श्रीतेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥

( ८८ )

६०॥ संवत् १२९० वर्षे महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीतेजपालसुत महं० श्रीलूणसीहभार्या महं० श्रीलपमादेविथेयोऽर्थ महं० तेजपालेन देवकुलिका कारिता ॥

( ८९ )

६०॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे श्रीपत्तनवास्तव्य प्राग्वाटवंशीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्रीआसरासुत महं० श्रीमालदेवभ्रातृ महं० श्री(५)-वस्तपालपोखुज महं० श्रीतेजपालेन स्वकीयभार्या महं० श्रीअनुपमदेविथेयोऽर्थ देवश्रीमृनि-सुव्रतदेवस्य देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ९० )

श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटजातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम महं० श्रीआसराव्यसमुद्रव महं० श्रीतेजपालेन स्वसुतावलदेविथेयोऽर्थ देवकुलिका कारिता ॥

( ९१ )

संवत् १२९० वर्षे प्राग्वाटज्ञातीय महं० श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद श्रीसोम श्रीआसरा-  
न्वपसमुद्भूत महं० श्रीतेजपालेन स्वमुत्थ्रीलूणसीहवृतागउरदेविश्रेयोऽर्थं देवकुलिका कारिता ॥ छ ॥

( ९४ )

॥ दे० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-  
तीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकारुयश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ०  
चंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं०  
श्रीमालदेवसंपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिन्या बार्दज्ञालहणदेव्याः  
श्रेयोऽर्थं विहरमानतीर्थंकरसीमंघरस्वामिप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता प्रतिष्ठिता श्रीनागेंद्र-  
गच्छे श्रीविजयसेनसूरिमिः ॥ छ ॥

( ९५ )

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-  
कारितश्रीलूणसीहवसहिकारुयश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०  
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमालदेव-  
संपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वमगिन्याबार्दज्ञालहणदेव्योऽर्थं विहरमानतीर्थंकरश्री-  
युगंधरस्वामिजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

( ९६ )

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-  
स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकारुयश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप  
ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्री-  
मालदेवसंपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या[ ] साउदेव्या[वी] श्रेयोऽर्थं  
विहरमानतीर्थंकरश्रीबाहुजिनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ छ ॥

( ९७ )

स्वस्ति श्रीविक्रमनृपात् सं० १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचलतीर्थे स्वयं-  
कारितश्रीलूणसीहवसहिकारुयश्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय ठ० चंडप ठ०  
श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज-भार्याश्रीकुमारदेव्योः सुत महं० श्रीमाल-  
देवसंपतिश्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजपालेन स्वमगिन्या बार्दघणदेवीधेयसे विहरमानतीर्थ-  
करश्री[सु]बाहुमिनालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

( ९८ )

॥ दे० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अघेह श्रीअर्बुदाचल-  
महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकारुयश्रीनेमिनाथदेव(॥)चैत्यजगत्यां श्रीप्राग्वाटज्ञातीय

ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमारदेव्याः सुत महं० श्रीमालदेव । सषप(५)ति महं० । श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वार्दिसोहगायाः श्रेयोऽर्थं शाश्वतजिनरूपभदेवालंकृता देवकुलिका कारिता ॥

(८९९)

॥ दं० ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमस(स)वत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ८ शुके अवेह श्रीअर्घुदाचल-महातीर्थे स्वयंकारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां (\*) ॥ श्रीप्राग्वाट-ज्ञावी(ती)य ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराज ठ० श्रीकुमार-देव्योः सुत महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० (\*) श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्या वार्दिसयलुकायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवर्धमानामिषशाश्वतजिनप्रतिमालंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥ शुभं भवतु ॥ मंगलं महाम्रीः ॥

(१०२)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ वर्षे चैत्र वदि ७ अवेह श्रीअर्घुदाचलमहातीर्थे स्वय-कारितश्रीलूणसीहवसहिकायां श्रीनेमिनाथदेवचैत्ये जगत्यां महं० श्रीतेजःपालेन (\*) मातुलसुत मामा राजपालभणितेन स्वमातुलस्य महं० श्रीपूजपालस्य तथा भार्या महं० श्रीपूजदेव्याश्च श्रेयोऽर्थं अस्या देवकुलिकायां श्रीचंद्राननदेवप्रतिमा कारिता ॥

(१०३)

दं० ॥ श्रीनृपविक्रमसंवत् १२९३ चैत्र वदि ७ श्रीअर्घुदाचलमहातीर्थे प्राग्वाटज्ञातीय ठ० श्रीचंडप ठ० श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये ठ० श्रीआसराजसुत(\*) महं० श्रीमालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज महं० श्रीतेजःपालेन स्वभगिन्याः पद्मलायाः श्रेयोऽर्थं श्रीवारिसेणदेवा-लंकृता देवकुलिकेयं कारिता ॥

(११०)

संवत् १२९७ वर्षे वैशाख वदि १४ शुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्री.....ता सुतायाः ठकुरासीसंतोपाकुक्षिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृडादेव्याः श्रेयोऽर्थं एतत् त्रिमदेवकुलिकासत्तक श्रीशक्तिनाथविंश च कारितं ॥ छ ॥

(१११)

संवत् १२९७ वैशाख सुदि १४ शुरौ प्राग्वाटज्ञातीय चंडप चंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये



महं० श्रीआसराजसुत महं० श्रीतेजःपालेन श्रीमत्पत्तनवास्तव्यमोदज्ञातीय ठ० झाल्हाण सुत  
ठ० आसासुताया ठकुराजीसंतोषाकुशिसंभूताया महं० श्रीतेजःपालद्वितीयभार्या महं० श्रीसुहृदा-  
देव्याः श्रेयो.....

( १३१ )

- ( प्रथमहस्ती ) [ महं० श्रीचंडप । ]  
 ( द्वितीयहस्ती ) [ महं० श्रीचंडप्रसाद । ]  
 ( तृतीयहस्ती ) महं० श्रीसोम ।  
 ( चतुर्थहस्ती ) महं० श्रीआसराज ।  
 ( पंचमहस्ती ) [ महं० श्रीलुण्णिग । ]  
 ( षष्ठहस्ती ) [ महं० श्रीमल्लदेव । ]  
 ( सप्तमहस्ती ) [ महं० श्रीवस्तुपाल । ]  
 ( अष्टमहस्ती ) [ महं० श्रीतेजःपाल । ]  
 ( नवमहस्ती ) [ महं० श्रीजैत्रसिंह । ]  
 ( दशमहस्ती ) [ महं० श्रीलावण्यसिंह । ]

- ( १ हस्तिष्टम्भमागे ) { १ आचार्यश्रीउदयसेन । २ आचार्यश्रीविजयसेन ।  
 ३ महं० श्रीचंडप । ४ महं० श्रीचापलदेवी ।  
 ( २ " " ) १ महं० श्रीचंडप्रसाद । २ महं० श्रीबामलदेवी ।  
 ( ३ " " ) १ महं० श्रीसोम । २ महं० श्रीसीतादेवी ।  
 ( ४ " " ) १ महं० श्रीआसराज । २ महं० श्रीकुमारदेवी ।  
 ( ५ " " ) १ महं० श्रीलुण्णिगदेव । २ महं० श्रीलुणादेवी ।  
 ( ६ " " ) १ महं० श्रीमालदेव { २ महं० श्रीलीलादेवी ।  
 ३ महं० श्रीप्रतापदेवी ।  
 ( ७ " " ) १ महं० श्रीवस्तुपाल { २ महं० श्रीललितादेवी ।  
 ३ महं० श्रीचेजलदेवी ।  
 ( ८ " " ) १ महं० श्रीतेजःपाल । महं० श्रीअनुपमदेवी ।  
 ( ९ " " ) १ महं० श्रीजयवर्तसिंह । महं० श्रीजयवर्तलदेवी ।

( १० " " )

॥ { १ महं० श्रीलावण्यसिंह । २ महं० श्रीरूपादेवी ।  
 { १ महं० श्रीसुहृदसीह । २ महं० श्रीसुहृदादेवी ।  
 { ३ महं० श्री सलखणदेवी । . . ! ( )

( २४२ )

सं० १२७८ वर्षे फाल्गुण वदि ११ गुरौ श्रीमत्पचनवास्तव्य प्राग्वाटजातीय ठ० श्री-  
 चंडेशानुज ठ० मुमाकीयानुज(ः) ठ० श्रीआसराजतनुज महं० श्रीमालदेवश्रेयसे सहोदर  
 महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीमछिनाथदेवखचकं कारितमिदमिति । मंगलं महाश्रीः ॥ शुभं भवतु ॥



( ३ )

श्रीतारणदुर्गस्थः शिलालेखः ।

( ५४३ )

द० ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमसंवत् १२८५ वर्षे फाल्गुण शुदि २ रवौ । श्रीमदणहिलपुरवास्तव्य  
 प्राग्वाटान्वयमस्तु ठ० श्रीचंडपात्मज ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआशा-  
 राजनन्दनेन ठ० कु(०)भारदेवीकुशितभूतेन ठ० श्रीलूणिग महं० श्रीमालदेवयोरनुजेन महं०  
 श्रीतेजःपालाभजन्मना महामात्यश्रीवस्तुपालेन आत्मनः पुण्याभिवृद्धये इह श्रीतारंगकपर्वते  
 श्रीअजितस्यामिदेवचैत्ये श्रीआदिनाथदेवजिनविनालंकृतं खचकमिदं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री-  
 नागेन्द्रगच्छे महारकश्रीचितयसेनसुरभिः ॥



( ४ )

श्रीशत्रुंजयपद्या(पाज)शिलालेखः ।



- ( १ ) [ श्रीमदणहिलपचन ] वास्तव्य प्राग्वाटान्वय-  
 ( २ ) [ मस्तु ठ० श्रीचंडतनुज ] ठ० श्रीचंडप्रसादां-  
 ( ३ ) [ गज ठ० श्रीमोमपुत्र ] ठ० श्रीआशाराजनं-

- (४) [ दनेन ठ० श्रीदण्डिग ठ० ] श्रीमालदेव संपप-  
 (५) [ ति महं० श्रीवस्तुपालानु ] न महं० श्रीतेजःपाले-  
 (६) [ न श्रीशृङ्खलजयतीर्थे ] संचारपात्रा कालिता ॥

(५)

अणाहिलपत्तनान्तर्गताः शिलालेखाः ।

(१)

॥ सं० १२८४ वर्षे ॥

विश्वानंदकरः सदा गुरुचिर्जीमूतलीलां दधौ,

सोमश्चारुपवित्रचित्रविकसद्देवशयमोजतिः ।

चक्रे मार्गणपाणिशुक्तिबुद्धे यः स्वातिवृष्टिचरै-

मुक्तैर्मौक्तिकनिर्मलं शुचि यशो दिक्कामिनिमंडनम्

॥ १ ॥

शुक्तं.....सोमसचिवः कुंदेदुशुभ्रैर्गुणै-

रिदः सिद्धनृपं विमुच्य मुकृती चक्रे न कंचिद्विमुग्धम् ।

रंगदुर्मुगमदमदच्छदमदः स्त्रीसम पद्मं किमु,

सोह्यासाय विहाय भास्करमहस्तेजोन्तरं बांछति

॥ २ ॥

पर्येषीदसौ सीतामविधामित्रसंगतः ।

असूत्रितमहाधर्मलापवो रायवोऽपरः

॥ ३ ॥

(२)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पत्तनयास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीचंडप्रसाद सुत ठ० श्रीसोमः ॥

(३)

सं० १२८४ वर्षे श्रीमत्पचनवास्तव्य प्राग्वाट ठ० श्रीपूजसीह सुत ठ० आल्हणदेवी  
 मुनिभूः ठ० पेयडः ॥

(४)

सं० १३५२ वर्षे कार्तिक शु० ११ गुरु सं० पेयट सुत सं० महादेन परपरसमेत  
 मुनि जगति ॥

( ६ )

## अर्बुदाचलगतौ अवशिष्टौ शिलालेखौ

( १-२५६ )

दं० ॥ सं० १२८७ वर्षे चैत्र वदि ३ शुके महं० श्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाः ॥  
च [ : ] पूर्वजपुण्याय अस्मिन्नर्बुदगिरौ श्री

( २-२६० )

नृपविक्रमसंवत् १२८७ वर्षे फाल्गुण सु(व)दि ३ सोमे(रवौ) अघेह श्रीअर्बुदाचले श्री-  
मदणहिलपुरवास्त० प्राग्वाटशतीय श्रीचंडप श्रीचंडप्रसाद महं० श्रीसोमान्वये महं० श्री-  
आसरासुत महं० मालदेव महं० श्रीवस्तुपालयोरनुज आदृ महं० श्रीतेजःपालेन स्वकीयभायां  
महं० श्रीअनुपमदेवीकुक्षिसमूत सुत महं० श्रीलूणसीहपुण्याय अस्यां श्रीलूणवमहिकायां श्रीनेमि-  
नाथमहातीर्थे कारितं ॥ छ ॥ छ ॥

( श्रीजयंतविजयजीसंगृहीत श्रीअर्बुद-प्राचीन-जैन-लेखसंदोह )

( ७ )

## स्तम्भतीर्थीय-श्रीआदीश्वरमन्दिरगतः शिलालेखः

( १ ) ॐ नमः श्रीसर्वज्ञाय ॥

धीराः सत्यमुद्यन्ति यन्निमुबने.....नेति श्रुते,

साहित्योपनिष[त्रि](२)पणमनसो यत्प्रातिभं मन्वते ।

सार्वजं च यदामनन्ति मुनयस्तत्किंचिदत्यद्भुतं,

ज्योतिर्द्योतितवि(३)ष्टपं वितनुतां भुक्तिं च मुक्तिं च वः

॥ १ ॥

श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्तिनगरप्राप्तप्रतिष्ठोऽजनि,

प्राग्वाटाह्वय(४)म्यवंतविलसन्मुक्तामणिचंद्रपः ।

यः संपाप्य समुद्रतां किल दधौ राजप्रसादोल्लस-

दिक्कलंकप(५)क्षीर्तिशुभ्रलहरिः श्रीमंतमंतर्जिनं

॥ २ ॥

अजनि रजनिजानिज्योतिरुयोतिर्नीतिभिजगति तनुज(६)न्मा तस्य चंद्रप्रसादः ।

नममणिसमशः[ह्रैः सुंद]रः पाणिपथः, फमकृत न कृताथै यस्य कल्पद्रुकल्पः(७) ॥ ३ ॥

पत्नी तस्याजायतात्यायतासी, मूर्तेन श्रीः [पुण्य]पात्रं जयश्रीः [।]

अजे ताम्याममिमः धरसंज्ञः, पुत्रः श्री(८)मान् सोमनागा द्वितीयः

॥ ४ ॥

निर्माप्याऽऽदिजिनेन्द्रविबभसम शेषत्रयोविंशति  
 श्रीजैनप्रतिमानिसाजि(९)तमसावभ्यञ्चितु वेदमनि [१]  
 पूज्यश्रीहरिभद्रसुरिसुगुरो [पाश्चात् ५]तिष्ठाप्य च,  
 स्वस्याऽऽसीयकुलस्य चा [क्ष](१०) यमय श्रेयोनिधान व्यघात् ॥ ५ ॥  
 असायाशाराजं तनुमपर सोमसचिव,  
 प्रियाया सीताया शुचिच(११)रितवत्यामजनयत्  
 [यशोभि] भिर्जगति विज्ञादे क्षीरजलपौ,  
 निवासैकमीतिपुदममज्जदि(१२)दु प्रतिपद ॥ ६ ॥  
 श्रीरैवते निर्मितससयात्र, [केनोपमानस्तिवह] सोऽश्वराजः ।  
 कलकशकासुपमान(१३)मेन, पुण्यात्यहो यस्य यत्र शशाके ॥ ७ ॥  
 अनुजोऽप्यापि सुमनुजस्त्रिभुवनपालस्तथा स्वसा केली ।  
 (१४)ब्राह्माराचम्याजनि, जाया च कुमारदेवीति ॥ ८ ॥  
 तस्याभूत्तनयास्तया(य) प्रथमक श्रीमल्लदेवोऽपर  
 श्व(१५)चच्चडमरीचिमडलमहा श्रीरस्तुपालस्तत ।  
 तैजःपाल इति प्रसिद्धमहिमा विश्वेऽत्र तुर्य स्फुर-  
 चा(१६)तुर्य समजायतायतमति पुत्रोऽश्वराजादसौ ॥ ९ ॥  
 श्रीमल्लदेवपौत्रो, लीलसुतपुण्यसिंहतनुज(१७)न्मा ।  
 आलङ्घणदम्या जात, पृथ्वीसिंहास्ययाऽस्ति विख्यात ॥ १० ॥  
 श्रीवस्तुपालसचिरस्य गेहिनी देहिनीव गृ(१८)हलक्ष्मी ।  
 विशादतरचिचवृत्ति, श्रीललितादेविसजाऽस्ति ॥ ११ ॥  
 शीताशुप्रतिवीरपीवरयसा विश्वेऽत्र (१९)पुत्रस्तयो  
 विख्यात प्रसरद्रुणो विन[यते श्रीजैत्रसिं]हः कृती ।  
 लक्ष्मीर्यत्करपक्वप्रणयिनी हीनाश्रयोत्थेन सा,  
 (२०)प्रायश्चित्तमिवाचरत्यहरह स्नानेन दानामसा ॥ १२ ॥  
 अनुपमदेव्या पत्न्या, श्रीतैज.पालसचिवतिलकस्य [१]  
 (२१)लावण्यसिंहनामा, धाम्नो धाम्नाऽयमात्मजो जज्ञे ॥ १३ ॥  
 नाभूवन् कति नाम सति कति ते नो वा भविष्यन्ति के [१]  
 वे(२२)तु चापि न फोऽपि सचपुरुष श्रीरस्तुपालोपम ।  
 पुण्याद्य प्रहरशहनिशमहो सर्वाभिषारोदरो,  
 येनाय वि(२३)जित कलिर्विदधता तीर्थेऽयानोत्सव ॥ १४ ॥

लक्ष्मीं धर्मायोगेन, स्थेयसीं तेन तन्वता [१]

पौषघालयमा.....(२४)निर्ममेन विनिर्ममे

॥ १५ ॥

श्रीनागदेवमुनीन्द्रगच्छतरणिर्जने महेंद्रप्रभोः, पठे पूर्वमपूर्ववाच्यनि(२५)विः श्रीशांतिमूर्तिगुरुः [१]

आनन्दामरचंद्रसूरियुगलं तस्मादमृतत्पदे, पूज्यश्रीहरिमद्रसूरिगुरवोऽमृवन् मु(२६)नो मृषणं ॥१६॥

तत्पदे विजयसेनसूरयस्ते जयंति मुवनैकमृषणं [१]

ये तपोज्वलनभूविमृतिमिस्तेजयं(२७) ति निजकीर्तिदर्पणं

॥ १७ ॥

स्वकुलगुरु....., पौषघशालामिमाममात्येन्द्रः । पित्रोः पवित्रहृदयः, पुण्यार्थं(२८) कल्पयामास ॥१८॥

वाग्देवतावदनवारिजमित्रसामर्थ्यराज्यदानकलितोरुयशःपताकां [१]

चक्रे गुरोर्विज(२९)यसेनमुनीश्वरस्य, शिष्यः मद्यस्तिमृदयप्रममूरिरेतां ॥ १९ ॥

सं० १२८१ वर्षे महं० श्रीवस्तुपालेन कारितपौषघ(३०)शालारूपधर्मस्थानेऽस्मिन् श्रेष्ठि

राजदेवमुत श्रे० मयघर । भां० सोमा उ भां० घारा । व्यव० वेला उ वीकल । श्रे० पूना

(३१)मुत बीजा वेडी० उदयपाल उ आसपाल सां० आल्हण उ गुणपाल एतैर्गोष्ठिकन्तर्मगोक्तं ।

एमिर्गोष्ठिकैरस्य धर्मस्थानस्य(३२).....स्तंभतीर्थेऽत्र कायस्थवंशे वाज.....छिन्वि.

मिह च ठ० सू०.....[जैत्र] मिह शुब.....कुमरसिंहनोत्कीर्णा ॥

( एनाल्स ऑफ धी भाण्डारकर ओरिण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना  
वॉ० ९ एड १७७ लेख १ )

( ८ )

गणेशरघामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ स्वस्ति ॥ संवत् १२९१ वर्षे वैशाख शुदि १४ गुरौ श्रीमदणहिलपुराकाम्य  
प्राग्याट व० (ठ०) श्रीचंडपालमज [चं](२)डप्रमादांगज ठ० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीश्यामागज-  
तनुजम्मा ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसमुद्रूत ठ० श्रीलूणि[ग](३) महं० श्रीमालदेव [हृमा]मुद्रूत  
महं० श्रीतेजःपालामज महागात्यश्रीवस्तुपालालमज महं० श्रीजयतमिहें [स्वतंभ] [४]तीर्थपुष्टाका  
सं० ७९ वर्षपूर्णे व्यापृष्वति महागात्यश्रीवस्तुपाल महं० श्रीतेजःपालाम्यां मयममदशर्हिदे ।  
(५)नया अ[न्य]समस्तस्थानेष्वपि कोटिघोऽभिनवधर्मस्थानानि जीर्णोद्धाराय काम्नाः ॥ २५  
सचिनेश्वरश्रीवस्तु(६)पालेन आत्मनः पुण्यार्थमिह गाणउलिग्रामे प्रया श्रीगाणेश्वरदेवदेवः पुष्ट-  
मोरणं तः प्रतोली द्वारा.....(७)त प्राकारश्च कारितः ॥ ० ॥  
गांभीर्ये जलपिर्बलिर्वितरणे पूया प्रतापे स्मरः, सौंदर्ये पुरुषप्रते रघुपतिर्गोचर्यनिर्वाहः ॥ २६  
नेकेऽस्मिन्नुपमानतामुपगताः मर्षेषु नः संप्रति, प्राप्ता नेत्सुपमेयनां तदधिकश्रीवस्तुशर्हि ॥ २७ ॥

.....(९)विदग्धमतयस्तुल्यौ कौटिल्य-वस्तुपालौ ।

.....कुर्वते न, कस्मात् कूपारयोः समतां ॥ २ ॥

वदनं वस्तुपालस्य, (१०) कमलं को न मन्यते । यत्सूर्यालोकेन स्मे[रं], भवति प्रतिवासरं ॥ ३ ॥

श्रीवस्तुपाल संप्रति, परमं हतिकर्मक (१) [१]

.....या(११) भवता निर्गुतिरपिजनेन संप्रतिता ॥ ४ ॥

तस्मै स्वस्ति चिरं शुलुङ्गपतिलकामात्याय.....

.....(१२).....कर्मनिर्मलमतिः सौवस्तिकः शंसति ।

राधेयेन विना विना च शिविना य.....(१३).....स्मयं

.....स्व.....गच्छन्ति स्ततः सदा ॥ ५ ॥

महामात्यश्रीवस्तुपालस्य प्रशस्तिरि[य].....

( एनास्त ऑफ धी भांडारकर औरिपण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ प्रष्ठ १८० लेख २ )

( ९ )

नगरग्रामगतः शिलालेखः

(१) ॥ ९० ॥ संवत् १२९२ वर्षे आपाद शुदि ७ रवौ श्रीनारदमुनिविनिवेशिते श्रीनगरवरमहा-  
स्थाने सं० ९०३ वर्षे अ(२)तिवर्षाकालवशादतिपुराणतया च आकस्मिकश्रीजयादित्यदेवीयमहा-  
प्रासादपतनविनष्टायां श्रीरत्नादेवीमूर्ती(३) पश्चात् श्रीमत्पत्तनवास्तव्यप्राग्वाट ठ० श्रीचंडपात्मज  
ठ० श्रीचंडप्रसादांगज ठ० श्रीसोमननुज ठ० श्रीआश्वाराजनंद(४)नेन ठ० श्रीकुमारदेवीकुक्षिसंभूतेन  
महामात्यश्रीवस्तुपालेन स्वभार्यायाः ठ० कान्हडपुण्याः ठ० राणुकुक्षिमवा(५)या महं० श्रीललिता-  
देव्याः पुण्यार्थमिदं श्रीजयादित्यदेवपत्न्याः श्रीरत्नादेवीमूर्तिरियं कारिता ॥ शुभमस्तु ॥ छ ॥

( एनास्त ऑफ धी भाण्डारकर औरिपण्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना

वॉ० ९ प्रष्ठ १८२ लेख ३ )

( ६ )

## वस्तुपालतीर्थयात्रालेखः

सं० १२४९ वर्षे संपति स्वपितृ ठ० श्रीआद्याराजेन समं महं० श्रीवस्तुपालेन श्रीविम-  
लाद्रौ रैवते च यात्रा कृता । सं० ५० वर्षे तेनैव समं स्थानद्वये यात्रा कृता । सं० ७७ वर्षे स्वयं  
संपतिना भूत्वा स(स्व)परिवारयुतं ९० वर्षे सं० ९१ वर्षे सं० ९२ वर्षे सं० ९३ वर्षे महाविस्तरेण  
स्थानद्वये यात्रा कृता । श्रीशत्रुंजये अर्मन्येव पंच वर्षाणि तेन सहितेन सं० ८३ वर्षे सं० ८४ सं०  
८५ सं० ८६ सं० ८७ सं० ८८ सप्त यात्राः सपरिवारेण तेन स्वसे ... ..श्रीनेमिनाभाम्बिका-  
प्रसादाया.....भूता भविष्यति ॥

( वॉट्सन 'म्युशियम-राजकोट )





## दशमं परिशिष्टम्

आचार्य श्रीउदयप्रभविरचिताया उपदेशमालाकर्णिकाख्यः  
विशेषवृत्तेः आद्यन्तगते ।

### मङ्गल-प्रशस्ती ।

आदिः—

अहंस्तनोतु सुवनाद्भुतकरुणश्च, श्रेयःफलं निविडबोधसुमप्रसूतम् ।

यस्याङ्गिभूलममितः पतितप्रसूनमायाः सुरा-ऽसुर-नराधिपसम्पदोऽपि

देवः स यः शतमस्रप्रमुखामरौघकृत्प्रथः प्रथमतीर्थपतिः पुनातु ।

मुक्तिक्रमो न.....

चिन्तातीतफलप्रदः स दिशतु श्रेयो युगादिप्रभुर्भोजुर्जन्मनि यस्य करुणतरवः सर्वेऽप्युपादानताम् ।  
नेत्यं चेत् कथमन्यथा वसुमतीमस्मिन्नलङ्घयति, त्रेलोक्यैकगुरौ न गोचरममी जगज्जगत्सुखात् ॥३॥

तुङ्गेमभीमसितीव्रतरेण कर्मव्रातं धृतेन विनिपात्य भवाटवीपु ।

मुक्तावलिश्रियमशिश्रियदात्म.....

लीलासञ्चरणं च नृपूरणत्काराश्रयं च स्वयं, बोद्धं साधु निषेव्यते खगकुलोपसेन हंसेन या ।

किञ्जल्कप्रसनप्रसक्तमनसस्तस्यैव हेतोः करे, कुर्वाणा कमलं सतां भवतु सा ब्राह्मी परब्रह्मणे ॥५॥

ज्यैवाद् विजयसेनस्य, प्रभोः प्रातिमदर्पणः । प्रतिविम्बितमात्मानं, यत्र पश्यति भारती ॥ ६ ॥

संपस्याद्भुतपुण्यपण्यविपणौ सा मा.....

.....पदेशपद्धतिरसौ सा प्रालरासायते ॥ ७ ॥

गाथास्ताः खलु धर्मेदासगणिनः सज्जातरूपश्रियः, किञ्चैव स्फुरदर्थरत्ननिकरः सिद्धयिगैवार्पितः ।

तेनैतामतिधुवसंस्कृतभयीमातन्वतः कर्णिकार्का, वृत्ति मेऽत्र सुवर्णकारपदवीसीमाश्रमश्चिन्त्यताम् ॥ ८ ॥

यतः—

.....

.....यथाविधिस्वकघटनादुज्ज्वलते यथासि तु शिर्यिनः ॥ ९ ॥

अन्तगता प्रशस्तिः—

कमठघनशृताम्भोराशिसंवासिसर्पाधिपतिकलितमूर्तिर्नीलनालीककान्तिः ।

सितरुचिरविराजल्लोचनः केवलश्रीपरिचयचतुरात्मा श्रीजिनो वः श्रियेऽस्तु ॥ १ ॥

१ पदमिदं सुकृतश्रीसिद्धलोलिनां प्रथमवदरूपेणापि वर्तते ॥ २ पदमिदं सुकृतश्रीनिकलोलिनां सप्तमपद-  
तयाऽपि वर्तते ॥ ३ पदमिदं धर्मान्युदयमहाकाव्ये प्रथमसर्गे चतुर्दशपद्यत्वेनापि वर्तते ॥

श्रीवर्धमानः शमिनां मनांसि, जिनो, विनोतु त्रिपदी यदीया ।

व्यामोति विश्वं बलिघात(ति)कर्मजयोदिता विश्वमनधरश्रीः ॥ २ ॥

श्रीवीरशालसनमहामहिमागरिष्ठः, श्रीमद्रुचादुविहिताचरणप्रतिष्ठः ।

काले कलावपि विलुप्तघनाघसङ्गः, श्रीमानयं विजयते यतिमूलसङ्गः ॥ ३ ॥

श्रीनागेन्द्रकुले मुनीन्द्रसवितुः श्रीमन्महेन्द्रप्रभोः, पट्टे पारगतागमोपनिषदां पारङ्गममामणीः ।

देवः संयमदैवतं निरवधिस्रैविधवागीश्वरः, सज्जज्ञे कलिकल्मषैरकल्लुपः श्रीशान्तिसूरिर्गुरुः ॥ ४ ॥

शक्तिः काऽपि न कापिलस्य न नये नैयायिको नायकश्चार्वाकः परिपाकमुज्जितमतिर्वैद्वश्च नौद्वत्यमाक् ।

स्याद्वैरोपिकशेमुषी च विमुखी वादाय वेदान्तिके, दान्तिः केवलमस्य वक्तुरयते सीमां न मीमांसकः ॥ ५ ॥

तत्पट्टे प्रथमः शमिप्रभुरमृद्धानन्दसूरिः परः, सज्जज्ञेऽमरचन्द्रसूरिरतिलनूचानचूडामणिः ।

शश्वद् यस्य सरस्वतीप्रसरणे सिद्धेशितुः संसदि, प्राज्ञैश्चेतसि वेतसीवरुरसाचार्यकं कार्यते ॥ ६ ॥

सिद्धान्तोपनिषन्निषण्णहृदयो धीजन्मभूतस्यदे,

पूज्यः श्रीहरिमद्रसूरिर्मवचारित्रिणाग्रमणीः ।

आन्त्या शून्यमनाश्रयैरतिचिराद् यस्मिन्नवस्थानतः,

सन्तुष्टैः कलिकालगौतम इति ख्यातिर्वितेने गुणैः ॥ ७ ॥

गुरुः श्रीहरिमद्रोऽयं, लेभेऽधिकवयःस्थितिम् । मोहद्रोहाय चारित्रनुपनासीरवीरताम् ॥ ८ ॥

तत्पदे विजयसेनसूरयः, पूरयन्ति कृतिनां मनोरथान् ।

तद्रवीं वृषमसूत नूतना, कामधेनुरिव सर्वकामदम् ॥ ९ ॥

गर्वात् पूर्वमनादैरैरयहितैः पश्चात् ततो विस्मितैः, प्रस्विन्नैरनुविस्मृतात्मभिरथो वादेऽनुवादे क्षणात् ।

मायैर्मानिमीनिपीणां परिणता मुंस्त्वेन वागेप इत्याक्षिप्तैरथ सेव्यतेऽथ सहसा यः सादरं वादिभिः ॥ १० ॥

यत्सोपदेशममृतोपमितं निपीय, श्रीवस्तुषालसचिवेश्वर-तेजपालौ ।

सङ्घाधिपत्यमसमं जिनतीर्थतेजःसंवर्धनाञ्जितशतक्रतु चक्रतुस्तौ ॥ ११ ॥

श्रीमद्विजयसेनस्य, सौमनस्यं नमस्यत । यद्वासिता धृताः कैर्न, गुणाः शिष्याश्च मूर्धसु ? ॥ १२ ॥

शिष्यस्तस्य च लक्षणक्षणचणः साहित्यसौहित्यवा-

नुद्यत्कर्तवितर्ककर्मशमनाः सिद्धान्तगुद्धातुरः ।

श्रीधर्माभ्युदये कविः प्रविलसदुर्वादिगोत्रे पवि-

स्तामेतामृदयप्रमाख्यगणमृद् शृषि व्यपात् कर्णिकाम् ॥ १३ ॥

तस्याऽऽज्ञया विजयसेनमुनीश्वरस्य, शिष्येण सेयमृदयप्रभदेवनाम्ना ।

योग्या विशेषविदुषामुपदेशमालाशृचिः कयाप्रथमतोऽभिनवा वितेने ॥ १४ ॥

प्रथमादर्शे प्रथमानमानसो देवबोधविवुध इमाम् ।

स्थपतिरिव स्थापयिता, गुरुषु नतोऽननुत साहाय्यम् ॥ १५ ॥

चान्दे कुले कलशतः किल सूरिदेवानन्दाग्रशिष्यकनकप्रमसरिनामः ।

प्रद्युम्नसरिरुदितः कवितासमुद्रमुष्टिन्धयोऽम्बुवदसोधयदेप वृत्तिम् ॥ १६ ॥

उत्तेकितोत्सन्निरूपणायैर्याऽऽशातना स्यात् तनुकाऽपि काचित् ।

मिथ्याऽस्तु मे दुष्कृतमत्र साक्षी, श्रीसङ्गमद्वारक एव तीर्थम् ॥ १७ ॥

एकैकेन विमोहशक्यवरणाच्छित्त्वा कथायानिमान्,

दीप्ते भानु-कृशानुषामनि मनश्चैकेन हुत्वाऽऽत्मनः ।

मन्त्रस्याष्टशतैरितीह जपितैस्तैः पञ्चभिः सिद्धये,

गाथाभिर्गुरुगुम्फिता विजयते जप्योपदेशावलिः

॥ १८ ॥

कल्याणिकरणादितो विवरणाद् विज्ञाय विज्ञातनामान्नायादुपदेशपद्धतिमिमामासेवमानो मुदा ।

लोकाग्रोपरिवर्तिनीमभिमुखीं कुर्वीत धीतान्यधीवृत्तिर्निर्वृतिदेवतां शिवपुरीसाम्राज्यकामः कृती ॥ १९ ॥

तत्त्वोदित्वरसप्तभूमिकमहाप्रासादराजाङ्गणं, यावद् माति जगद्गुरोर्मगवतः तीर्थेशितुः शासनम् ।

तावच्छावक-साधुधर्मविजयस्तम्भद्वयालम्बिनी, वृत्तिर्वन्दनमालिका विजयतां तत्रोपदेशसजः ॥ २० ॥

सेयं पुरे धवलके नृपवीरवीरमन्त्रीशुपुण्यवसतौ वसतौ वसद्भिः ।

वपे मह-मह-रवौ कृतमार्कसंज्ञैः, श्लोकैर्विशेषविवृतिर्विहिताऽऽहृतश्रीः

॥ २१ ॥

इत्याचार्यश्रीउदयप्रमदेवसङ्घटितायामुपदेशमालायाः कर्णिकायां विशेषवृत्तौ तृतीयः परिवेशः

सम्पूर्णः ॥ अं० ३७१४ । एतावता च सम्पूर्णा उपदेशमालायाः कर्णिकारूपा विशेषवृत्तिरिति ।

अं० १२२७४ । छ । छ ॥

## एकादशं परिशिष्टम्

**गूर्जरेश्वरपुरोहितश्रीसामेश्वरदेवविरचितस्य सुरधोत्सवमहाकाव्यस्य  
महामात्यश्रीवस्तुपालवंशवर्णनादिप्रतिबद्धः  
प्रशस्तिरूपः पञ्चदशः सर्गः ।**

- अस्ति प्रशस्ताचरणप्रधानं, स्थानं द्विजानां नेगराभिधानम् ।  
कर्तुं न शक्नोति कदाऽपि यस्य, त्रेतापवित्रस्य कलिः कलङ्कम् ॥ १ ॥  
सत्तीर्थस्य सुराश्रितेन जगता यस्योपमा स्यात् कथं,  
स्वाध्यायैकनिघेर्गतश्चैतद्वृत्तेनोर्वीतलेनापि वा ? ।  
यत्सौधेषु विशुद्धिबर्जितवपुर्बालोऽपि नाऽऽलोक्यते,  
वन्दे श्रीनगरं तदेतदखिलस्थानातिरिक्तोदयम् ॥ २ ॥  
हृतनयनसुसैर्मलाभिधूमैः, श्रुतिकटुमिर्बहुवृन्दवेदपाठैः ।  
कलिरकलितसम्भदः प्रदत्ते, न सल्ल पदं विदुषां गृहेषु यत्र ॥ ३ ॥  
चञ्चस्पच्चमलाभिभ्रम्रतमसि स्थाने त्रिनेत्रानल-  
ज्वालाप्रज्वलितप्रसूनधनुषा देवेन वृत्तोदये ।  
श्रीमक्षां च पवित्रतां च परमामालोक्यन्तः सुराः,  
स्वर्वासेऽप्यरसा रसामरजनन्याजेन मेजुः स्थितिम् ॥ ४ ॥  
तस्मै संयमिनामिनौय मुनये नित्यं नमस्कुर्महे,  
यन्माहात्म्यमसद्यमाह स गुरुर्गुह्यन्मनाः कौशिकः ।  
आविर्भूतमभूतपूर्वचरितश्रेष्ठाद् वशिष्ठात् ततः,  
सत्कर्मोद्भूतमैध्वरस्थितिविदा स्थानेऽत्र गोत्रं महत् ॥ ५ ॥  
येषामशेषाधिपतिः प्रसन्नः, सन्नद्धपाणिः प्र(फ)णिकङ्कणेन ।  
त एव सम्पूतिगिहान्भवन्ति, [कुले] गुलेचा(वा)गिभया प्रसिद्धे ॥ ६ ॥  
श्रीसौलशर्मा विमले कुलेऽत्र, जन्म द्विजन्मप्रवरः प्रपदे ।  
यः स्वर्गिणः सोमरसेन यागे, पितृश्च पिण्डैरपूणत् प्रयागे ॥ ७ ॥

१ आनन्दपुरम् ॥ २ देवा, मदिरा च ॥ ३ सर्पा, वेदप्रशस्त ॥ ४ भूदेवा ॥ ५ स्वामिने,  
न्यायि च ॥ ६ कलङ्कः, विशाभित्रय ॥ ७ बहुविद्यानिदम् ॥ ८ ईश्वरः ॥ ९ 'पुनव' ख ॥ १० 'गुलेचा'  
इति स्थानाकारेण गोप्रस्थावठङ्गनाम प्रतीयते, पर च डॉक्टर-रामकृष्ण-गोपाल-माण्डारकरमार्ग  
१८८१-८४ वर्षीय 'रिपोर्ट' पुस्तके 'गुलेचा' इत्येव पाठ आभिन्न ॥

सोलः सलीलमवनीमवतामसौ वः, सौवस्तिकोऽस्त्विति वरं स्मरता स्मारारेः ।  
श्रीमूर्जरक्षितिमुजा किल मूलराज-देवेन दूरमुपरुष्य पुरो दधे यः ॥ ८ ॥

यथा प्रतिष्ठां महतीं वसिष्ठस्तिग्मांशुवंशे भगवानवाप ।  
निजेन सौवस्तिकतागुणेन, चौलुक्यमूपालकुले तथाऽसौ ॥ ९ ॥

विधिवद् वाजपेयं यः, कलिकालेऽप्यकरुष्यत् । कियतीं वा जपेयं तच्चरिताद्भुतसंहिताम् ॥ १० ॥

ऋग्वेदवेदी च श(कृ)तकतुश्च, दत्ताज्ञदानश्च जितेन्द्रियश्च ।  
तिरोहिते तत्र पुरोहितेन्द्र, तदङ्गजन्माऽजनि लल्लशर्मा ॥ ११ ॥

यः करोति स्म चामुण्डराजाख्यं नृपमाधिपं । हेतिर्प्रतापसम्पन्नं, हविषा च हविर्भुजम् ॥ १२ ॥

श्रीमुञ्जनामा सनुजस्तदीयः, स्वयं स्वयम्भूरिव भूतलेऽभूत् ।  
वाक्पयलाभाय तथाहि सद्भिरमाजि मौञ्जी रक्षनेव वृत्तिः ॥ १३ ॥

सद्वंशजातेन गुणान्वितेन, शरासनेनेव पुरोहितेन ।  
एतेन मेने भुवने न किञ्चिद् दुर्लभं दुर्लभराजदेवः ॥ १४ ॥

सन्तापशान्तिं जगतोऽपि सोमस्तन्नन्दनश्चन्दनवच्चकार ।  
पीयूषहारी हरिणाङ्कितश्च, सत्यां वभाजे द्विजराजतां यः ॥ १५ ॥

यस्याशीःप्रतिपादितोदययुजा श्रीमीमम्भीमुजा,  
क्षीरक्षालितशालितन्दु(ण्ड)लसितं साक्षात्कृतं तद्यशः ।  
येनाशक्रमणसमेण त इमे मूर्तिप्रभेदाः प्रभो- ॥ १६ ॥

र्मसोद्भूतमन्तरेण धवलाः सर्वेऽपि निर्वर्तिताः  
मित्रा भानुं तत्र ताते प्रयाते, पुत्रः श्रीमार्नामशर्मा बभूव ।  
कृत्वा सम्यक् संत संस्थाः कतूनां, क्रीता कम्पा येन संग्राहभित्त्या ॥ १७ ॥

सदा यदाशीःपरिपूर्णकर्णं, श्रीकूर्णनामा नृपतिः प्रकाण्डम् ।  
बभुन्धरामण्डलमर्णवान्तं, वान्तारिनारीनयनाम्बु चक्रे ॥ १८ ॥

१ अस्य मूलराजपुरोहितस्य सोलस्य सत्तामयौ मूलराजराज्यसमय एव ॥ २ पुरोहितः ॥ ३ अयं  
मूलराजमहाराज वि० सं० १९३-१०५३ वर्षेषु राज्यमकार्षत्, इति Indian Antiquary Vol.  
XI P. 219 ॥ ४ अस्य चामुण्डराजपुरोहितस्य लल्लशर्मणः सत्तामयश्चामुण्डराजराज्यसमय एव ॥  
५ चामुण्डराजराज्यम्-वि० सं० १०५३-१०६६ ॥ ६ आयुषम्, दीप्तिम् ॥ ७ पीयूषम्, सन्तापश्च ॥  
८ अस्य दुर्लभराजपुरोहितस्य श्रीमुञ्जनाम्बु सत्तामयौ दुर्लभराजराज्यसमय एव ॥ ९ मौञ्जी हस्तिरिति  
सुश्रवदर्शमानायाः ब्राह्मण्यं भवतीत्यर्थः । एतेन मुञ्जस्य सदाचारत्वमुक्तं भवतीत्यर्थः । अथ च मौञ्जी मेखला  
शरामयो रचना ब्राह्मण्यलाभाय सद्भिरप्यने ॥ १० दुर्लभराजराज्यम्-वि० सं० १०६६-१०७८ ॥ ११  
अस्य भीमराजपुरोहितस्य सोमस्य जीवनमयौ भीमराजराज्यसमय एव ॥ १२ विष्णुना, गृहेण च ॥  
१३ वमजे स ॥ १४ ब्राह्मण्यं, चन्दनं च ॥ १५ भीमराजराज्यम्-वि० सं० १०७८-११२० ॥  
१६ शोधेय्यादयोऽष्टौ ॥ १७ मित्रस्य ॥ १८ अस्य श्रीकूर्णराजपुरोहितस्याऽऽमशर्मणः स्थितिसमयः श्रीकूर्ण  
राजराज्यसमय एव ॥ १९ अग्निप्रयोगात् ॥ २० वाजपेययाजीनि ॥ २१ श्रीकूर्णराजराज्यम्-वि० सं०  
११२०-११५० ॥

दानानि तानि सदनानि च तानि शम्भोरम्भोजराजिरुचिराणि सरांसि तानि ।

येनामुना मुनिजनानुकृता कृतानि, वितैश्रुलुक्कयकुलसम्भवमूपदतैः ॥ १९ ॥

धाराधीशपुरोधसा निजनृपक्षोर्णा विलोक्याम्बिलां,

चौलुक्याकुलितां तदत्ययकृते कृत्या किलोत्पादिता ।

मन्त्रैर्यस्य तपस्यतः प्रतिहता तत्रैव तं मान्त्रिकं,

सा संहृत्य तडिलता तरुमिव क्षिप्रं प्रयाता क्वचित्

॥ २० ॥

तस्मात् कुमारः सुकुमारमूर्तिर्मूर्तस्तपोराशिभिवोज्जगाम ।

स्वराजराज्योदयदायिनी वागुवास शैक्तेरिव यस्य चक्रे

॥ २१ ॥

यद्वाः सिन्धुवसुन्धरापतिरत्तिषौढप्रतापोऽपि य-

क्षीतः स्फीतयत्नेऽपि मालवपतिः कारां च दारान्वितः ।

दृष्टः सोऽपि संपादलक्षनृपतिः पादानतिं लिखितः,

श्रीसिद्धक्षितिपेन सैष विभवः सर्वोऽपि यस्याऽऽशिषाम्

॥ २२ ॥

कुंजोपशोभितैर्मागैस्तडागैश्च परःशतैः । दृष्टं पूर्वं च यश्चक्रे, चक्रवर्तिपुरोहितः

॥ २३ ॥

ऋजुरोहितभृत्पुरोहितत्वस्पृहयेव त्रिदिवं गतस्य तस्य ।

तनुमूर्धनमूपतिप्रणीतस्थितिसर्वस्वमवाप सर्वदेवः

॥ २४ ॥

मैध्वदेर्व्यपित साधु सपर्यागध्वरेषु जयति स्म सुरेधाम् ।

मानवानविदितापरयाच्छो, मानवानकृत चैष कृतार्थान्

॥ २५ ॥

धैर्यिषामयनमीयुषि तत्र, सत्रसचमनमस्करणीये ।

अध्यगामि विधिरामिगनाम्ना, वैदिकस्तदनु तचनुजेन

॥ २६ ॥

सत्कर्मनिर्माणरतेरमुष्य, व्रीडानिदागं द्वयमेतदासीत् ।

स्ववर्णनाकर्णनमुचमेभ्यः, संसारकारान्तरवस्थितिश्च

॥ २७ ॥

ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः समस्तविदुषां श्रीसर्वदेवाह्वयः,

मेयःसम्पदपास्तदुस्तरतमाः श्रीमान् कुमारोऽनुजः ।

मुञ्जोऽथ द्विजकुञ्जरस्तदनुजो न्यायाजडेनाहट-

श्चत्वारस्तनयास्ततः समभवन् वेदा इव ब्रह्मणः

॥ २८ ॥

१ मालवाधिराजपुत्रोऽयमर्थः पुत्रोऽस्मिन् सदेवमूर्तिं गृज्जराजश्रीसिद्धराजाराजनामधेयजयसिद्धदेवेन स्थापयित्वा श्रीस्य सद्गुरुमभिवारेण हस्तोत्पादितः । ना च वामदार्मणः पुत्रेभ्यः क्षान्तिमन्त्रैः प्रतिपिदा यमी तमेव मालवाधीशपुरोहितं संहृत्य निरोहितेति श्रूयते ॥ २ शक्तिमिश्रयुक्तः ॥ ३ बोद्धव्यतया ॥ ४ यदो-  
धर्मनामा ॥ ५ आनन्ददेवः ॥ ६ श्रीसिद्धराजराज्यम् वि० सं० ११५०-११९९ ॥ ७ जलं, दर्भय ॥  
८ इरस्पतिः ॥ ९ विष्णोः ॥ १० अर्थिमागं गतवन् ॥ ११ अमिहोत्रादिः ॥ १२ अथ सिद्धराजपुरोहितस्य  
सर्वदेवस्य श्रीरत्नमन्त्रः सिद्धराजराज्यसमय एव ॥

कुमारपालस्य चुलुक्यमर्तुरज्ञानि गङ्गासलिले निधाय ।

श्रीसर्पदेवेन गयाप्रयागविषाः प्रदानेन कृताः कृतार्थाः ॥ २९ ॥

स्थाने स्थाने तडागानि, शिवपूजा दिने दिने । विप्रे विप्रे च सत्कारः, स्नाया यस्य गृहे गृहे ॥ ३० ॥

राहौ गृहीतोष्णकरे कुमारः, कुमारपालस्य सुतेन राज्ञा ।

कृतोपरोधोऽपि परं पुरोधाः, प्रत्यमहीत् तस्य न रत्नराशिम् ॥ ३१ ॥

यः शौचसंयमपटुः कटुकेश्वराख्यमाराध्य भूधरसुताघटितार्धदेहम् ।

तां दारुणामपि रणाङ्गणजातघातघातव्यथामैजयपालनृपादपास्थत् ॥ ३२ ॥

विलोक्य दुष्कालवशेन लोकं, कङ्कालशेषं सविशेषशूकः ।

श्रीमूलराजं दलितारिराजमचीकष्ट(र)त् तर्त्करमोचनं यः ॥ ३३ ॥

दुष्टारिकोटिकदनोत्कटराष्ट्रकूटकुल्येन शल्यितरणाङ्गणकौङ्कणेन ।

सर्वप्रधानपुरुषाधिपतिः प्रसापमल्लेन भूपतिममल्लिकया कृतो यः ॥ ३४ ॥

सेनानीर्विदधे कुमार इति यः शङ्के चुलुक्येन्दुना,

जित्वा सोऽथ जवादवार्यतरतः प्रत्यर्थिपृथ्वीपतीन् ।

इष्टां तद्विषयार्द्धिमाशिपमिव प्रादात् पुरोधाः स्वयं,

तस्मै याज्यमहीमुजे निजचमूवीरमजैरक्षैः ॥ ३५ ॥

घाराधीशे विन्ध्ययर्मण्यवन्यक्रोधाध्मातेऽप्याजिसुस्त्यज्य याते ।

गोगस्थानं पतनं तस्य भङ्क्त्वा, सौधस्थाने स्नानितो येन कूपः ॥ ३६ ॥

गृहीतं कुप्यता कुप्यं, भालवेश्वरदेशतः । दत्तं पुनर्गयाश्वादे, येनाकुप्यमकुप्यता

जित्वा ग्लेच्छपतेर्वलं तद्वल्लं रात्री सरःसन्निधौ, ॥ ३७ ॥

स्वःसिन्धोः सलिलैर्विधाय विधिवत् प्रीतिं पितृणामपि ।

दानी मोक्षमनुक्षतक्षितितले कृत्वाऽब्दमब्दम्रजे,

राजार्थं रचयाद्यकार चतुरः स्वार्थं प्रजार्थं च यः ॥ ३८ ॥

यः कर्माणि च पट्टणांश्च तनुते तद्गुणैः स्वस्वयं,

कीर्तिर्यस्य च यश्च निर्मलरुचिर्नो जातुचिन्मुद्यति ।

१ कुमारपालराज्यम् वि० सं० ११९९-१२३० ॥ २ अथ कुमारपालपुरोहितस्य कुमारस्य सत्ता-

यमयः कुमारपालराज्ये ॥ ३ अजयपालेन ॥ ४ सामन्तसिंहपुरे हि श्रीअजयपालदेवः प्रहारपीडया

मृत्युकोटिमायातः कुमारान्ना पुरोहितेन श्रीकटुकेश्वरमाप्य पुनः ॥ जीवितः ॥ ५ अजयपालराज्यम्

वि० सं० १२३०-१२३१ ॥ ६ शूरः शत्रुपतीक्ष्णायः शत्रुः ॥ ७ मूलराजराज्यम् वि० सं० १२३१-

१२३५ ॥ ८ कुमारः श्रीअजयपालपुत्रधीमूलराजसक्त्याद् दुष्कालपीडितानां प्रजानां तदानीं कर्मोचनं

कारितवान् ॥ ९ निहतकौङ्कणाधिपतिमल्लिकार्जुनेन ॥ १० वैरिदेशसमुदिम् ॥ ११ अमणादेः, तन्पुत्रै-

रगृहीतैः ॥ १२ अयं विन्ध्ययर्मणो यशोयर्मणा वीरः ॥

शस्त्राविष्कृतिरध्वरे च युधि च श्लाघ्योज्ज्विहीते यतः,

सूत्रं यस्य हृदि स्फुरत्यविरतं ब्राह्मं च राज्यस्य च ॥ ३९ ॥

अरुन्धतीव कान्ताऽस्य, पत्न्युराज्ञामरुन्धती । अमूढमिषया लक्ष्मीः, साक्षात्क्ष्मीरिव क्षितौ ॥ ४० ॥

आदिमः प्रशममन्दिरं महादेव इत्यभिषया तदङ्गम् ।

येन पाणिनिहितेन पङ्कजेनेव तुष्यति परं सरस्वती ॥ ४१ ॥

सोमेश्वरदेव इति, क्षितिदेवस्यास्य बन्धुरनुजन्मा ।

अजनि कनिष्ठस्तस्य, आता स्यातान्वयो विजयः ॥ ४२ ॥

तैत्तिरिभिः प्रथममध्यमोत्तमैः, स्वे पदे च पुरुषैर्व्यवस्थितैः ।

शब्दशास्त्रमिव गोत्रमुच्चकैः, सत्क्रियं समजनिष्ट विष्टपे ॥ ४३ ॥

सोमेश्वरदेवकवेरेवेत्य लोकम्पृष्ठं गुणग्रामम् । हरिहर-सुभटप्रभृतिभिरभिहितमेवं कविमन्त्रैः ॥ ४४ ॥

श्रीसोमेश्वरदेवस्य, कवितुः सवितुश्च कौ । सतृणाम्यवहारस्य, निरासेऽपि रसमदा ॥ ४५ ॥

कादेवतावसन्तस्य, कवेः श्रीसोमशर्मणः । धुनोति विबुधान् सूक्तिः, साहित्याभ्योनिधेः सदा ॥ ४६ ॥

तव वक्त्रं शतपत्रं, सद्गुणं सर्वशास्त्रसम्पूर्णम् । अवतु निजं पुस्तकमिव, सोमेश्वरदेववाग्देवी ॥ ४७ ॥

वसिष्ठानिष्ठायाः पदमिति जगत्स्यस्ति पटहः,

प्रकृष्टास्त्वेवामप्यजनिपत मुञ्जप्रभृतयः ।

कुले जातोऽप्येषां शतश्रुतिदुहित्रा पुनरयं,

स्वयं पुत्रीचक्रे नयकविगुणप्रीणितहृदा ॥ ४८ ॥

कान्येन नव्यपदपाकरसास्पदेन, यामार्धमात्रपटितेन च नाटकेन ।

श्रीमीमभूमिपतिसंसदि सम्यलोकमस्तोकसम्मदवसंवदमादधे यः ॥ ४९ ॥

कवीन्द्रपदवीस्पृहामदह । तेऽपि तन्वन्ति य-

द्वचः क्रकचकर्कशं प्रथयति व्यथां कर्णयोः ।

कविः स विरलः पुनर्भुवि भवादृशो दृश्यते,

सुधाभिरभिषेचनं रचयतीव यः सूक्तिभिः ॥ ५० ॥

मन्दभ्यन्दसि कोऽपि कोऽपि विकलः सालकृतिव्याकृता-

वर्थे कोऽपि वृथाश्रमो रसनिपाबन्धः स कोऽप्यध्वनि ।

यत्रान्तर्विहरद्विरक्षितनयामजीरमञ्जुस्वर-

स्पर्द्धान्वुभिरिक एव कवते कान्यैः कुमारालम्बः ॥ ५१ ॥

१ अयं श्रीहर्षवंशो हरिद्वरो धीरध्वजलक्षणमीषे नैपद्युत्तरकं प्रथमं यस्तुपालेऽप्यधो वल्लभपद-  
रिति हरिद्वरपञ्चमे प्रथम्यकोशे स्फुरमुत्पद्यते ॥ २ श्रीमदेयशास्त्रम् वि० सं० १२१५-१२१८; एक-  
दशविभुवनपालरण्यम् वि० सं० १२१८-१२०० ॥ ३ अयं कुमारस्य पुत्रः सोमेश्वरदेवकवि-  
देवमामरमयी ॥



वैदुष्यं विगताश्रयं श्रितवति श्रीहेमचन्द्रे दिवं,

श्रीप्रह्लादनमन्तरेण विरतं विद्योपकारमतम् ।

इदं तद् द्रवमत्र मन्त्रिमुकुटे श्रीवस्तुपाले कवि-

स्तकीर्तिस्तुविकैतवादिति मुदामुद्गारभारव्धवान्

॥ ५२ ॥

प्राग्वाटान्वयवारिषो विधुरिव श्रीचण्डपः प्रागयत्,

सम्भूतोऽद्भुतसत्य-शौचसदनं चण्डप्रमादस्ततः ।

सीमस्तण्वो नवोज्ज्वलमस्तिस्त्राऽश्वराजः सुतः,

पूतात्माऽयं तदङ्गम्ः सुकृतम्ः श्रीवस्तुपालोऽभवत्

॥ ५३ ॥

उत्फुल्लमङ्गीप्रतिमल्लकीर्तिः, श्रीमल्लदेवोऽभवदग्रजन्मा ।

बभूव तस्यावरजश्च तेजःपालामिधानः सचिवप्रधानम्

॥ ५४ ॥

श्रीवस्तुपालस्य चिरायुरस्तु, दिशां प्रकाशं दिशते सदा यः ।

कर्पूरकिर्मिरितकेरल्लरीरदावदातपुतिभिर्यशोभिः

॥ ५५ ॥

क्षीणे चक्षुषि नेपजं भगवती कालीधरी देहिनां,

देहे चित्रविचित्रमाजि क्षरणं श्रीवैद्यनाथः प्रभुः ।

संसारज्वरजर्जरे हृदि सदा विष्णुर्भविष्णुर्मुदे,

दौर्गत्ये च जिपासिते गतिरसौ श्रीवस्तुपालः पुनः

॥ ५६ ॥

न वदति परुषा रुषाऽपि वाचः, स्पृशति परस्य न मर्म नर्मणाऽपि ।

विरमति मतिमान्मातृचन्द्रः, कचन च नार्थिकदर्थितोऽपि दानात्

॥ ५७ ॥

धनमनवरतक्षितीन्द्रसेवाश्रमसमवाप्तमयज्ञतोऽपि दत्ते ।

अपरमपि परोपकारकं यद्, विमृशति वस्तु तदेव वस्तुपालः

॥ ५८ ॥

सत्यं ब्रुये भवतु मा क्षतिरत्र काचिद्, मूत्वा स्वरप्रकृतिनाऽपि मयाऽतिमात्रम् ।

मन्त्री समे च विपमे च परीक्षितोऽसौ, इष्टं तद् दुष्टमिह किञ्चन सञ्चरिषे ॥ ५९ ॥

अपमनुदिनद्रागेत्कर्षितप्राणवर्षत्परिचरितचरित्रः स्वस्तिमानस्तु मन्त्री ।

बुद्धिहरसमार्थैर्यस्य कीर्तिप्रवर्तनैरजनिषत रज्ज्वः प्राप्तराकाविपाकाः

॥ ६० ॥

धमन्ते लोकतः पापा, शपान्त्ये नियोगिनः । अधिकारमधिकारममात्यः शास्यसौ पुनः ॥ ६१ ॥

त एव स्तूयन्ते नृपतिपशुमिर्धीवरतया,

प्रजानामानायः सपदि मत्त येभ्यः प्रपतति ।

तदित्यं सुस्यानां चकितचकितं बापि वसतां,

मनां सम्प्रत्येकः सचिवशिबतातिर्भुवि भवान्

॥ ६२ ॥

अर्थदानदलितार्थिदुःस्थितिं, त्वां विना विनयनम् । सम्पति ।

मृज्यते जगति केनचित् सतां, वस्तुपाल ! न कपालदुर्लिपिः

॥ ६३ ॥

गोमयरसानुलिप्ते, कीर्तिसुधाधवलिते च सुवनगृहे ।

श्रीवस्तुपाल ! भवतश्चकास्ति चित्रं चरित्रमिह

॥ ६४ ॥

पीयूषैः प्रणता हिमैः प्रणिहिता तारामिराराधिता,

गङ्गावीचिभिरर्चिता परिचिता दिग्दन्तिदन्तांशुभिः ।

कर्पूरैः परिशीलिता मलयजैरावर्जिता मण्डिता,

डिण्डीरस्तवकैर्भैरवनुसृता मन्त्रीश ! कीर्तिस्तव

॥ ६५ ॥

प्रवर्तमानेऽत्र कवित्वसन्ने, सत्कृत्य सत्पात्रममात्यमेवम् ।

कृतार्थमात्मानमसावमंस्त, सौवन्तिको गुर्जरनिर्जराणाम्

॥ ६६ ॥

कुमारपुत्रेण कुमारमातुः, काव्य तदेतज्जगदेकदेव्याः ।

धृतिस्मृतिन्याकृति-यज्ञविद्याविशारदेन क्रियते स तेन

॥ ६७ ॥

॥ इति श्रीगुर्जेश्वरपुरोहितश्रीसोमेश्वरदेवविरचिते सुरथोत्सवनाम्नि

महाकाव्ये कविप्रशस्तिवर्णनो नाम पञ्चदशः सर्गः ॥



## द्वादशं परिशिष्टम्

'गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकविवरचितस्य नरनारायणानन्द-  
महाकाव्यस्य प्रशस्त्यात्मकः षोडशः सर्गः ।

- शोभामिभूतपुरुहत्तपुरं पुरन्ध्रीलवण्यलोमितजगज्जगरं गरीयः ।  
धाम श्रियोऽण्डहिलपाटकनाम कामलीलामयं जयति गूर्जरभूमिभूषा ॥ १ ॥
- वाग्देवतां यदि जना जननीमिवैनामानन्दिनः प्रतिदिनं हृदि नन्दयन्ति ।  
मस्मिन्निमान् मदनतुल्यरुचस्तथापि, निर्मत्सरा त्यजति नो सुतवत्सला श्रीः ॥ २ ॥
- प्राग्वाटगोत्रतिलकः किल कश्चिदत्र, श्रीचण्डपः स्फुटमलण्डपदप्रतिष्ठः ।  
विस्फूर्जितान्यमित गूर्जरराजराज्यराजीवजीवनरविः सचिवावतंसः ॥ ३ ॥
- कृष्णीकृतारिवद्रना सुमनोमनांसि, रागास्पदं विदधती यदलक्ष्यरूपा ।  
आनन्दमार्दितविचारमदैर्यदीयकीर्तिमुपा जितसुधा बुबुधे बुधेन्द्रैः ॥ ४ ॥
- चण्डप्रसाद इति सादितविश्वदौत्यस्तन्नन्दनः स्वकुलनन्दनकल्पशाली ।  
शुक्लामयप्रसवसञ्चमचारुचक्षुकीर्तिप्रभासुरभिताम्बरभूर्भव ॥ ५ ॥
- शास्त्रार्थवारिमरहरिद्विदालवालसरोपिता मतिरुता वितता नितान्तम् ।  
यस्य प्रकाशितरविमहतापवद्भिः स्थायार्थिभिर्नृपकुलैः कलदा सिधेये ॥ ६ ॥
- पुण्यस्य पापपटलीजयिनो जयश्रीरासीत् तदीयदयिता नयभूर्जयधीः ।  
यस्या मनो दयितमक्तिमुरस्रवन्तीस्नानोज्ज्वलां जनयति स्म जिनेन्द्रसेवाय् ॥ ७ ॥
- नैवोष्ठसम्पुटविपाटनया कदाचिदेपा स्मितं जितसुधाविभवं व्यपद्य ।  
श्वेतपुतिः कल्पतरुं तदयं हृदन्तः, केनापरेण परिमृततनुस्तनोति ! ॥ ८ ॥
- श्रीरङ्गमूर्धममृदनयोर्नयाढाश्रीरङ्गमूर्जगति शूर इति प्रतीतः ।  
अस्वमतां सुरगुरुः सह शिष्यवर्गार्थये स्म यन्मतिजितधिरचिन्तयेव ॥ ९ ॥
- भूदामणीकृतजिनाङ्गिनमप्रपद्यः, कर्णधुरदुरुस्तुष्यर्णविभूषणश्रीः ।  
सद्वर्त्मनि प्रबलदुर्मदमोहचोरः, दुःसधरेऽपि विलयास य एव शूरः ॥ १० ॥
- दत्त्वाऽपि कान्तिरुत्थयेव यदीयकीर्तेर्दिव्यं ध्वजमित्र जगत्पवपादभीतः ।  
इन्दुः सुधावपुषि प्रमुरीषधीनामप्येष सर्वनिमलक्ष्मपृत्तौ न शुद्धः ॥ ११ ॥
- सोमाभिषेकदनुजः सुजनानगञ्जमूर्पोऽभवद् विबुषसिन्धुविशुद्धनुदिः ।  
यन्मानसेऽद्भुतरसे विलयास वार्धिशिष्यैर्वनापविपुरेव सरस्वतीयम् ॥ १२ ॥
- श्रीशक्रभासु सदमि सुसदां मदेव, मौलिं विकम्प्य क्लिप्तं सोऽपि गुरुः सुराणाम् ।  
यद्दृष्ट्वैवमवरास्य विचारितस्य, नीराजनान्यद्भुतं यद्यलपूररलेः ॥ १३ ॥

देवः परं जिनवरो हरिभद्रसुरिः, सत्यं गुरुः परिवृढः खलु सिद्धराजः ।  
 धीमाननेन नियतं नियमत्रयेण, कीर्तिं व्यधात् त्रिपथगामिव यः पवित्राम् ॥ १४ ॥  
 पुस्कूर्जं गूर्जरधराधवसिद्धराजराजत्समाजनसमाजनभाजनस्य ।  
 दुर्मन्त्रिमन्त्रितदवानलविह्वलायां, श्रीसण्डमण्डननिभा मुवि यस्य कीर्तिः ॥ १५ ॥  
 कुर्वन् परार्थ्यगणिते सति यद्रूपानामेकैकविन्दुरचनामुडुकैतवेन ।  
 चन्द्रच्छलेन कति नो सटिनीर्धुभिचौ, धाता व्यधादथ विधास्यति कीर्तिशेषाः ॥ १६ ॥  
 नो चेद् यशसि वलि-कर्ण-दधीचिमुख्या, दानोत्सवैरविरलानि मुवि व्यधास्यन् ।  
 भक्तैरदास्यत् विलासमरालवालुक्ष्मीर्यदीयघनदानयशोनेदीपु ॥ १७ ॥  
 श्रीवाससद्यकरपद्मगदीपकल्पं, व्यापारिणः कति न विप्रति हेममुद्राम् ? ।  
 प्रज्वालयन्ति जगदप्यनयैव केऽपि, येन व्यमोचि तु समस्तमिदं तमस्तः ॥ १८ ॥  
 कान्ता जगन्नितयविस्मयनीयनीतेः, सीतेति रामचरितस्य बभूव तस्य ।  
 यज्ञोचनं स्थिरतरं दयिताननेन्दौ, दूरेण काञ्चनमृगश्रियमन्वगच्छत् ॥ १९ ॥  
 हर्पादसौ हस्तु शीतकरोऽपि भासा, मृङ्गीरुत्तेरपि च हुङ्कुरतां सरोजम् ।  
 दूरावलम्बितशिरोम्बरहम्बरेण, यस्या मुखं जगति न प्रकटं यदासीत् ॥ २० ॥  
 तत्सम्भवसिमुवनाभरणं बभार, शुभ्रं यशोभरमनश्चरमश्चराजः ।  
 मुक्त्वा कलङ्ककलितं ललितं हिमांशुं, हर्पादलाभि सकलाभिरय कलाभिः ॥ २१ ॥  
 यं मातृभक्तिशुचिमेव यशश्छलेन, ससेव्य जातमुकृतो रजनीमुजङ्गः ।  
 आसीजगन्नितयविस्तृतवैभवश्च, साक्षात् कलङ्करहितश्च सदोदितश्च ॥ २२ ॥  
 हृत्वा सदध्वरचितेषु तमासि तीर्थयात्रोत्सवेषु खलु सप्तसु पावकेषु ।  
 यः सप्तपूर्वपुरुषैकमुदे यशोऽम्भ-मूर्तानि सप्त भुवनानि कृती प्रतेने ॥ २३ ॥  
 संस्तूयमानचरितः परितः प्रनुद्धैः, सत्यवते सुकृतसूनुरिवान्हं यः ।  
 लज्जामसज्जयत् चापगुरुद्विजेन्द्रोणक्षयक्षणतदुकिविचारणेन ॥ २४ ॥  
 तस्य प्रिया प्रणयपात्रममात्रशीललीलायितं वत ! बभार कुमारदेवी ।  
 आलीयत प्रतिपदं जिनपादपद्मे, चित्तेशवक्त्रकमले च यदीयदृष्टिः ॥ २५ ॥  
 यस्या मुखे जिनगुणमहणप्ररोहप्रीत्या शिरः प्रतिकलं परिकम्पयन्त्याः ।  
 हिलाऽम्बुजं च रजनीरमणं च लोला, दोलाकुतूहलसं समसेवत श्रीः ॥ २६ ॥  
 सनुस्योरजनि नीरजनिर्मलास्याः, धीलास्यभूः स्मरकलः किल लूणिगाल्यः ।  
 वास्त्येऽपि यस्य चरितं विरराज बृद्धसवादकं कमनिराश्रुतपल्लवस्य ॥ २७ ॥  
 यस्याऽऽननं द्विजवियुक्तमपि द्विजेन्द्रसान्द्रप्रभाभरमभात्रवशैशवस्य ।  
 अत्रं च केशलवमुक्तमपि व्यराजद्, यस्य प्रवालरुचिरापरपाणिपादम् ॥ २८ ॥  
 सत्याभिपस्तदनुजो मनुजावतंसरत्नं बभूव विदितो मुवि मल्लदेवः ।  
 यस्याव्रतः प्रतिकलं गतिविभ्रमेण, विभ्राजने स्म न महानपि हस्तिमल्ल- ॥ २९ ॥

औषाग्निनाऽपतत यः सततं पयोधौ, पातालसीमि फणिफुल्लुतिदावदाहः ।  
 चण्डेव चण्डकरधर्मघटेति मत्वा, यस्योज्ज्वलानि वचनानि सुधा सिषेवे ॥ ३० ॥  
 तस्यानुजः पितृपदाम्बुजचञ्चरीकः, श्रीभातृमकिसरसीरसकेलिहंसः ।  
 साक्षाजिनाधिपतिधर्मनृपाङ्गरक्षो, जागर्ति नर्तितमना हृदि वस्तुपालः ॥ ३१ ॥  
 नागेन्द्रगच्छमुकुटाऽमरचन्द्रसुरिषादाब्जमृद्गरिभद्रमुनीन्द्रशिष्यात् ।  
 व्याख्यावचो विजयसेनगुरोः सुधाममास्वाद्य धर्मपथि सत्पथिकोऽभवद् यः ॥ ३२ ॥  
 कुर्वन् मुहुर्धिमल-रैवतकादितीर्थयात्रां स्वकीयपितृपुण्यकृते मुदा यः ।  
 सहस्रसिद्धपदरेणुभरेण चित्रं, सदृशं जगति निर्मलयाम्बमूव ॥ ३३ ॥  
 धर्मोचितं रुचितकामगर्वी निषेव्य, दुःखप्रपालिजगतोऽपि वितत्य कीर्तिः ।  
 यो मातृदुग्धरसपानमहोत्सवानामानृत्यमात्यनि कथञ्चन नैव मेने ॥ ३४ ॥  
 भास्वत्प्रभाबमधुराय निरन्तरायधर्मोत्सवव्यतिकराय निरन्तराय ।  
 यो गूर्जरावनिशिरोमणिभीमभूपमन्त्रीन्द्रतापरवशत्वमपि प्रपेदे ॥ ३५ ॥  
 यः कामवृत्तिरनुजेन मिजेन तेजःपालेन पूर्णनृपकार्यपरम्परेण ।  
 सद्धर्मकर्मरस एव मनो मनोज्ञविद्वद्विनोदपयसि स्नपयाम्बभूव ॥ ३६ ॥  
 यः स्वीयमातृ-पितृ-बन्धु-फलत्र-पुत्र-मित्रादिपुण्यजनये जनयाश्चकार ।  
 सदृशं व्रजविकासकृते च धर्मस्थानावलीवलयिनीमबनीमशेषाम् ॥ ३७ ॥  
 कीर्त्या सौरभसारसान्द्रसुमनःसन्दोहसन्दोहक-

रकान्त्या पाति वसन्तमन्वहमसावित्पतिर्तार्थक्रमम् ।

ख्यातिं प्राप वसन्तपाल इति यो नामाद्वितीयं मुदा,  
 विद्वद्भिः परिकल्पितं हरिहर-श्रीसोमशर्मादिभिः ॥ ३८ ॥

श्रीशृङ्गायशैलशेखरगणेः श्रीनामिद्वनुप्रभोः,

पीत्वा यत्रसुधांशुदीधितिसुधायाकण्ठमुत्कण्ठया ।

व्यातन्बन् कवितां नितान्तमुदितः सद्यस्तदुद्गारवत्,  
 तस्यैवाऽऽदिजिनेश्वरस्य जनयामास स्तवं यो नवम् ॥ ३९ ॥

नरनारायणानन्दो, नाम कन्दो मुदामिदम् । तेने तेन महाकाव्ये, वाग्देवीधर्मसुनुना ॥ ४० ॥

उद्गास्वद्विधविधालयमयमनसः । कीविदेन्द्राः । वितन्द्राः ।,

मन्त्री भद्राञ्जलिर्वो विनयनतशिरा याचते वस्तुपालः ।

अल्पप्रज्ञप्रबोधदपि सपदि मया कल्पितेऽस्मिन् प्रबन्धे,

भूयो भूयोऽपि यूयं जनयत नयनशेषतो दोषमोपम् ॥ ४१ ॥

॥ इति श्रीगूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवसन्तपालविरचिते नरनारायणानन्द-  
 नाम्नि महाकाव्ये प्रशस्तिप्रपञ्चो नाम षोडशः सर्गः ॥

## त्रयोदशं परिशिष्टम्

गूर्जेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितस्तोत्रादि ।

मनोरथमयं विमलाचलतीर्थमण्डनश्रीजादिनाथस्तोत्रम् ।

- लब्ध्वा मानुषजन्म जातिसुकुलभ्रष्टां प्रतिष्ठापिमां,  
धृत्वा परमेश्वरीणतामधिगतः सद्भाषितस्थश्रियम् ।  
तीर्थेद्यामिम ! वस्तुपालसचिवो विद्याग्रजाप्रत्यदा-  
ऽऽरोहाय प्रगुणां मनोरथमयीं निःश्रेणिमाशिश्रियत् ॥ १ ॥
- श्रीनामेय ! मनोरथाः शतपथा मित्यामिमानाम्बुधेः,  
कल्लोला इव विस्फुरन्ति विषयग्राहग्रहव्यग्रिताः ।  
हित्वा तानिति वस्तुपालसचिवः सहोषदुग्धोदधे-  
र्मेजे वीचिसमानिमान् शमदमप्रव्यक्तमुक्ताफलान् ॥ २ ॥
- मत्पार्श्वं प्रसरत्कषायविषयज्वालाकरालादितो,  
दूरीभूय मयङ्कराद् भवदबाद् व्यामोहधूमन्धितः ।  
श्रीशत्रुञ्जयशैलपावन ! जिन ! त्वद्वक्त्रचन्द्रातपो-  
पास्तिष्वस्ततमाः शमामृतहृदे दाहं कदाऽहं क्षिपे ? ॥ ३ ॥
- एतस्मिन् भववारिधौ निरवधिक्रोधौर्ववहेभ्युत-  
खस्तो लोभतिमिङ्गिलस्य गिलनात् क्लेशाभ्रसो निर्गतः ।  
सस्तस्तात ! कदा कदाग्रहमहामाहाच्च शत्रुञ्जय-  
द्वीपं प्राप्य मजेय जेयविजयप्रीतः परां निर्द्वैतिम् ॥ ४ ॥
- संसारव्यवहारतो रतिमऽतिव्यावर्त्य कर्तव्यता-  
वार्तामप्यपहाय चिन्मयतया त्रैलोक्यमालोकयन् ।  
श्रीशत्रुञ्जयशैलगङ्गागुहामध्ये निवदस्थितिः,  
श्रीनामेय ! कदा लमेय गलितज्ञेयामिमानं मनः ? ॥ ५ ॥
- स्वामिन् ! मृत्युहरेरहं हरिणवन्नष्टोऽतिकष्टायुष-  
व्याधिन्व्यापन्नतैर्वृतः श्रितमवारण्योऽधरण्यो भ्रमन् ।  
नामेय ! त्वमनाकुलः कुलपतिर्यत्रासि तस्मिन्नुद्ये,  
श्रीशत्रुञ्जयशैलनामनि कदा पुण्याश्रमे विद्यमम् ? ॥ ६ ॥

श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यानिज्ज्वालया,  
 जिह्वालेषु शृगीडशामनुशयाद्भूमायितेषु द्विषाम् ।  
 वक्त्रेषु ग्लपितामिमां त्रिजगतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदये,  
 देव श्रीविमलाद्रिकेतन ! कदा दास्ये त्वदास्ये दशम् ? ॥ ७ ॥  
 क्रोधेन ज्वलितो हतोऽऽपिपुमिः पद्मेषुणा पद्मभिः,  
 बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयग्रामं प्रकामं श्रितः ।  
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! सुवनस्वामिन् ! सनाथे त्वया,  
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थातास्मि सुस्थः कदा ? ॥ ८ ॥  
 आस्यं कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न के वा स्तुताः ?,  
 तृष्णापूरपराहतेन विहिता केषां च नाम्भर्यना ? ।  
 तत् श्रातर ! विमलाद्रिनन्दनवनीकस्यैककल्पद्रुम !,  
 त्वामासाद्य कदा कदर्थेनमिदं शृणोऽपि नाहं सदे ? ॥ ९ ॥  
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैरुत्सर्जितैः सङ्गतै-  
 र्वेत्ता देव ! त्वदन्यदेव तदियं बाष्ठा ममोत्सेकिनी ।  
 श्रेयोवैभव ! नामिसम्भव ! भवाकूपारपारङ्गम् !,  
 श्रीशत्रुक्षयमण्डनेन भवता भावी कदा सङ्गमः ? ॥ १० ॥  
 एताः क्षमाधृतरसेन हृदालवाले, संवर्षिताः पृथुमनोरथवल्लयो मे ।  
 विश्वैकमित्र ! भगवन् ! भवतः प्रसादाहोकोचैरैः फलभरैः सफलमवन्तु ॥ ११ ॥  
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो-  
 ध्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुपालः कविः ।  
 मातः प्रातरवीयमानमनया यच्चित्तवृत्ति सता-  
 माधत्ते विमुता च ताण्डवयति श्रेयःश्रियं पुष्यति ॥ १२ ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहाप्रसादश्रीवस्तुपालविरचितं मनोरथमयं विमलप्रचल-  
 तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनस्तोत्रम् ॥

## रैवतकाद्रिमण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ।



जयत्यसमसंयमः शमितमन्मथप्रामवो, भवेदधिमातरिर्दुस्तिदावपाधोधरः ।  
तपस्तपनपूर्वदिकल्पकर्मवल्लीगजः, समुद्रविजयाङ्गजस्त्रिभुवनैकचूडामाणिः ॥ १ ॥  
अहङ्कृतिलतायुधं प्रमदमान्यसिद्धौषधं, मदेन्धनघनजलयः स्मरकरीन्द्रकण्ठीरवः ।  
स्पृहारजनिवासरः प्रथितपङ्कतीव्रातपः, समुद्रविजयात्मजः स्फुरत् मानसे मेऽनिशम् ॥ २ ॥  
मैरुमै रुचिमातनोति न मुधा मानी हिमानीगिरिः, कैलासस्तु न वस्तुतः स्तुतिपदं वन्ध्यः स विन्ध्याचलः ।  
श्लाघ्यो रैवत एव केवलमयं शृङ्गाणि शृङ्गारय-स्तुधैर्यस्य जगन्नयस्तुतिपदः श्रीनेमिकल्पद्रुमः ॥ ३ ॥  
संसारार्तितपोपतापशमनश्रद्धालवः ! किं मुधा, रागद्वेषदोस्तुर्कैर्यत ! बुधाः ! सेव्यान्तरैः सेवितैः ? ।  
आजन्मोपशमाभूतैकसरसः श्रीरिष्टनेमिमनो-निर्वृत्यौषयिकं पदाम्बुजयुगं धत्त प्रसक्तं हृदि ॥ ४ ॥  
यस्यानीकवधूमिरेव विनिताः स्व-भू-सुव स्वामिनो, मौलौ शासनमुद्वहन्ति भुवने देवोऽयमेकः स्मरः ।  
सोऽप्याब्रम्भजितः करोति न करे जैत्रं धनुर्यं प्रति, प्रीति रैवतदेवतं वितनुतां देवाधिदेवः स वः ॥ ५ ॥  
येषां मूर्तिरसौ तवेश ! परमानन्देकनित्यन्दिनी, ध्यानावेशवशंवदा स्थितिपथे शश्वत् पुनीततमाम् ।  
तेषां सम्मदवारिपूरितदृशां शैवेय ! नैवेयम-प्याधत्ते मनसश्चमत्कृतिमुष्मं सा सिद्धिसीमन्तिनी ॥ ६ ॥  
साम्राज्यं चतुरर्णवीनिवसनक्षोणीशमौलिस्तल-स्पादाब्जं न सुरा-ऽसुरेन्द्रमुकुटस्पृष्टां हि पिठं च न ।  
सिद्धिं शाश्वतसौख्यसङ्गसुभगां नाम्यर्थये किन्तु मे, श्रीसुवेय ! तवेयमस्तु चरणाम्भोजेषु मक्तिर्मृशम् ॥ ७ ॥  
नेपथ्यैरतिथीभवत्पृथुतरापथ्यैरतथ्यप्रथे-रुघद्वैद्युतडम्बरैः किमपरैरेकैव भूयान्मम ।  
आश्लेषस्पृह्यालुमुक्तिपुवतिप्रीतिप्रियम्भावुका, श्रीमन्नेमिजिनेशितुः स्तुतिरियं मेवेयकं शाश्वतम् ॥ ८ ॥

इत्थं श्रीवस्तुपालः सुकृतसुरतरोरालबालखिलोफी-  
स्वामिन् नेमे ! त्वदीयक्रमकमलरज-पुञ्जपुण्यैकबालः ।

संघाधीशश्चुलुक्यक्षितिपतिमचिवः शारदाधर्मखनु-

र्विजति ते विपते प्रथय मम सदा दर्शनेन प्रसादम् ॥ ९ ॥

श्रीसङ्गमर्तुसचिवेधरवस्तुपालकल्लेन नेमिनमनेन किलाष्टकेन ।

यः स्तौति तस्य कमलामविलम्बमम्बादेवी तनोत्यतनु सन्तनुते च तेजः ॥ १० ॥

॥ इति गूर्जरेश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालकृतो रैवतकाद्रि-  
मण्डनश्रीनेमिजिनस्तवः ॥



श्रीगर्वोष्मभिरौष्मलेषु धनिनामीप्यान्लज्जालः  
 जिह्वालेषु भृगीदशामनुश्रयाद्भुमायितेषु  
 यक्त्रेषु म्लपितामिमां त्रिवर्गतीनिस्तन्द्रचन्द्रोदरे  
 देव श्रीविमलाद्रिकेतन ! कदा दास्ते  
 क्रोधेन ज्वलितो हतोऽहमिषुभिः पञ्चेषुणा पञ्चि-  
 बद्धो मोहमहाद्विषा च विषयमार्गं प्रका-  
 तद् ध्वस्तान्तरवैरिवार ! सुवनस्वामिन् ! सनार्य-  
 दुर्गे श्रीविमलाद्रिनामनि सुखं स्थाताति  
 आत्म्यं कस्य न वीक्षितं ? क न कृता सेवा ? न  
 तृष्णापूरपरहतेन विहिता केषां च ना-  
 तत् प्रातः ! विमलाद्रिनन्दनवनीकरूपैककल्पद्रु-  
 त्वामासाद्य कदा कदर्थनमिदं भूयोऽपि  
 संसारे सुखहेतुवस्तुविषयैस्तुल्यैः सन्नतै-  
 र्दद्या देव ! त्वदन्यदेव तदियं वाञ्छा  
 श्रेयोवैभव ! नान्निसुम्भव ! मयाकूपारपारज्ञम !,  
 श्रीशत्रुञ्जयमण्डनेन भवता भावी कदा  
 एताः शमासृतरसेन हृदालवाले, संवर्षिताः पृ-  
 विषैकमित्र ! भगवन् ! भवतः प्रसादालोकोत्तरेः  
 धर्मध्यानमना मनोरथमयं स्तोत्रं युगादिप्रभो  
 श्वके गूर्जरचक्रवर्तिसचिवः श्रीवस्तुप-  
 मातः मातरधीयमानमनपां यच्चित्तवृत्तिं सता-  
 माधत्ते विभुता च ताण्डवयति श्रेयश्चि

॥ इति गूर्जरीश्वरमहामात्यश्रीवस्तुपालविरचितं  
 तीर्थमण्डनश्रीआदिनाथजिनः

( ४ )

## महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।

न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥  
 अर्हन्तस्त्रिजगद्वन्द्यान्, सिद्धान् विध्वस्तबन्धनान् । साधूंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥  
 कृतं पद्मविघजीवानां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥  
 परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदमिलापोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥  
 मूर्च्छया विहितः कश्चिदामहो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥

चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।

माया लोमश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥

यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतीर्थिकाः ॥ ७ ॥  
 कुवेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्दामि तदशेषतः ॥ ८ ॥  
 ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येयोरनुमादये (!) ॥ ९ ॥  
 त्वजामि पापमाहारं, नाद्ये मध्यमखण्डतः । श्रयेऽहं सुकृतं पारमविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥

# चतुर्दशं परिशिष्टम्

श्रीमदरिसिंहविरचितं

सुकृतसंकीर्तनमहाकाव्यम् ।

वनराजः

- श्रीवेङ्कटविष्णुमयप्रबलप्रतापश्चापोत्कटावन्यवनैकहरिर्नरेन्द्रः ।  
आसीदसीमचरितः परितप्तशत्रु-भालार्पिताङ्गिनलिनो वनराजदेवः ॥ १ ॥
- यत्सङ्गसङ्घटविरोधिशिरोऽधिरक्त-स्रोतस्विनीभिरुदधिर्विदधे सरागः ।  
येनाऽधुनाऽप्यरुणतां भजतस्तदङ्ग-सम्पर्कतोऽर्क-शशिनावुदयक्षणेपु ॥ २ ॥
- निर्गत्य कोशकुहरादसिन्दुशूकः, इयामो यथागतमगात् त्वरितं यदीयः ।  
एतेषु मास्म विशदेप परैरितीव, रुद्धेषु वक्त्रविवरेषु कराङ्गुलीभिः ॥ ३ ॥
- सद्वाङ्मसङ्गतकरस्तरवारिलम्-कृचारिमुण्डमिपतः समराङ्गणे यः ।  
भालाधिरोपितहुताशनचण्डचक्षु-राभादिभासुरविरोधिविभासुरश्रीः ॥ ४ ॥
- तेने कृतान्तसमतां रसनासनाभि-धारोदुरो यदसिरञ्जनमञ्जुलश्रीः ।  
अहाय यस्य युधि दर्शनसंज्ञयैव, भिन्दन्नरीनयित किङ्करतां कृतान्तः ॥ ५ ॥
- स्तब्धमकम्पितविलीनयिवर्णगात्रैः, खिन्नैर्विभङ्गुरवस्फुरदश्रुलेजम् ।  
उन्मुच्य पौरुषमवाप्य च भीरुभावं, यः सेव्यते रिपुभिरुत्पुलकैः प्रसन्नः ॥ ६ ॥
- आकर्ण्य तूर्णमुपकर्णयितुं च यस्य, कीर्तिं मुहुर्भुजगभीरुगणेन गीताम् ।  
चक्षुःश्रवा रसवशेन दृशां निमेषोन्मेषक्रियामनिमिषोऽपि चकार शेषः ॥ ७ ॥
- यक्रीकृते धनुषि गौक्तिकताडपत्रज्योत्स्नाम्बुभारभृति पल्लवतां दधाने ।  
यस्याऽऽननं विकचवारिजकल्पमन्त-र्भेजे विहाय परराजकरान् जयश्रीः ॥ ८ ॥
- श्रीमत् पुरं भुवि पुरन्दरपचनानं, तेनाऽऽदधेऽणहिलपाटकनामधेयम् ।  
स्त्रीणां मुखे स्मरतपस्विवनेऽजनीन्दु-पद्मश्रियोरसुहृदोरपि यत्र योगः ॥ ९ ॥
- अन्तर्वसद्गनजनाद्भुतभारतो मूर्त्तां अदयतादिति भृशं वनराजदेवः ।  
पञ्चासराह्नवपार्श्वजिनेश्वेशम-न्याजादिह क्षितिपरं नवमाततान ॥ १० ॥

( ४ )

## महामात्यश्रीवस्तुपालकृता आराधना ।

- न कृतं सुकृतं किञ्चित्, सतां संस्मरणोचितम् । मनोरथैकसाराणामेकमेव गतं वयः ॥ १ ॥
- अर्हतखिजगद्वन्द्यान्, सिद्धान् विष्वस्तबन्धनान् । साधूंश्च जैनधर्मं च, प्रपद्ये शरणं त्रिधा ॥ २ ॥
- कृतं पङ्क्तिधर्माणां, पीडनं क्रीडयाऽपि यत् । हास्यादिना विमूढेन, यन्मृषा भाषितं मया ॥ ३ ॥
- परद्रव्येष्वदत्तेषु, यन्मनोऽपि नियोजितम् । कथञ्चिदभिलाषोऽपि, यदब्रह्मणि निर्मितः ॥ ४ ॥
- मूर्च्छया विहितः कश्चिदाब्रह्मो यत् परिग्रहे । स्वप्नेऽप्याऽऽविष्कृता या च, रजनीभोजने स्पृहा ॥ ५ ॥
- चक्रे कोपश्च यत्किञ्चिद्, या च काचिदहङ्कृतिः ।
- माया लोभश्च यस्तत्र, मिथ्या दुष्कृतमस्तु मे ॥ ६ ॥
- यद् वात्सल्यं कृतं नैव, यद् गुणा नानुमोदिताः । गुरवो यदवज्ञाताः, संस्तुता यत् कुतूहिकाः ॥ ७ ॥
- कुदेशना च या चक्रे, यत् सिद्धान्तेऽप्यवासना । यत् सत्कर्मप्रमादश्च, निन्वामि तदशेषतः ॥ ८ ॥
- ज्ञान-दर्शन-चारित्र्यं, गोचरे विहितं च यत् । मार्गानुसारतः सर्वास्ताम्येयोरनुभावये (!) ॥ ९ ॥
- त्यजामि पापमाहारं, बाह्ये मध्यमखण्डतः । अयेऽहं सुकृतं पारमविकं दुष्कृतं त्यजन् ॥ १० ॥

॥ इति मन्त्रीश्वरश्रीवस्तुपालकृता आराधना ॥



# चतुर्दशं परिशिष्टम्

प्राचीनहस्तलिखितप्रतिमान्तगता वस्तुपालादि-  
प्रतिवद्धाः पुष्पिकाः ।

(१)

धर्माभ्युदयमहाकाव्य अपरनाम संधपतिचरित

सं० १२९० वर्षे चैत्र शुदि ११ रवौ स्तम्भसीर्षवेत्यकुलमनुपालयता महं० श्रीवस्तुपालेन  
धर्माभ्युदयमहाकाव्यपुस्तकमिदमलेखि ॥ छ ॥ छ ॥ शुभमस्तु श्रोतव्याख्यातृणां ॥  
(संमत श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(२)

आचारांगवृत्ति-सूत्र-निर्युक्ति

सर्वसाधारणसूत्रा ३६७ ॥ आचारनिर्युक्तिः समाप्ता ॥ आचारांगवृत्तिः १२३०० । आचारसूत्र  
२५०० । निर्युक्तिः ४७७ ॥ सवत् १३०३ वर्षे मार्गशुदि १२ श्रुतौ अचेह श्रीमदणहिलपाटके  
महाराजाधिराजश्रीवीरसलदेवराज्ये महामात्यतैजःपालप्रतिपक्षौ श्रीश्रीआचारांगपुस्तकं लिखित-  
मिति ॥ कल्याणमस्तु श्रीजिनसासनमवचनाय ॥ मंगलं महाश्री. ॥

(संमत श्रीशान्तिनाथ-ताडपत्रीय-भंडार)

(३)

देशीनाममाला

संवत् १२९८ वर्षे आश्विन शुदि १० रवौ अचेह श्रीमुमुकच्छे महाराजकधीवीरसलदेव....  
महं० श्रीतैजपालसुत महं० श्रीलूणसीहमश्रुतिपञ्चकुलप्रतिपक्षौ आचार्यश्रीजिणदेवधूरिहते देसी-  
नाममाला लिखिता । लिखितं च कायस्थसादीय महं० अयंतसिंह.....सु.....

(पाटण संघवीपाटक-ताडपत्रीय-भंडार)

(४)

जीतकल्यचूर्णिः तद्वृत्तिश्च

शुभाशुभं वस्तुपालसचिवस्त्वागोऽस्य चन्द्रातप-  
स्तोनोन्मीलितमर्षिचैतवकुले यत् तु त्रिमहाण्डवद् ।

तस्याः पादतलपपातरमसोर्जुनैरिवोद्गायै-

स्तेनातस्तरिरे वरजितयशःकिञ्जल्कजालैर्दिशः

॥ ३७ ॥

विश्वेऽस्मिन् कस्य चेतो हरति नहि समुल्लास्य विश्वासमुच्चैः,

प्रौढश्वेतांशुरोचिःप्रचयसहचरी वस्तुपालस्य कीर्तिः ।

मन्ये तेनेयमारोहति गिरिषु मिया लीयते गह्वरेषु,

स्वर्गोत्सङ्गानुपास्ते मज्जति जलनिधिं याति पातालमूलम्

॥ ३८ ॥

एतेभ्यः प्रमुणा सगौरवमहं तावत् प्रदद्या परं,

देष्टुं देष्टुममी भ्रमन्ति तदहं गच्छाम्यमीभिः समम् ।

नो चेत् काऽप्यपरा मिलिष्यति वधूस्तत्रेति मीत्या ध्रुवं,

कीर्तिर्यस्य गुणाननु भ्रमति स श्रीवस्तुपालः कृती

॥ ३९ ॥

सोऽयं धार्त्री धवल्यति को वस्तुपालोऽचलेन्द्र-

मृत्सादाविर्भवति समरे काऽपि दोःस्फूर्तिगङ्गा ।

यस्यां ममाः प्रतिबसुमतीवल्लभानां समन्तात्,

सम्पद्यन्ते भवतु पुनरनावृत्तये कीर्तयस्ताः

॥ ४० ॥ छ ॥

(पाठण संघवीपाठक-तादपत्रीय-भंडार)

( ५ )

महामात्य श्रीवस्तुपालसुतजैत्रसिंहलेखित पुस्तिका प्रशस्तिः ।

प्राग्वाटान्वयमण्डनं समजनि श्रीचण्डयो मण्डपः,

श्रीविग्रामकृते तदीयतनयश्चण्डप्रसादाभिधः ।

सौमन्तलमवोऽभवत् कुबलयानन्दाय तस्याऽऽत्मन्-

राशाराज इति श्रुतः श्रुतरहस्तत्त्वावगोपे बुधः

॥ १ ॥

तज्जन्मा वस्तुपालः सचिवपतिरसौ सन्तनं धर्मकर्मा-

लंक्रमीणैकबुद्धिर्विबुधजनचमः । त्कारिचारिषयात्रम् ।

प्रातः सङ्गाधिपत्वं दुरितविजयिनीं सूत्रयन् सङ्गायात्रां

धर्मस्यौज्वल्यमायात् कलिसमयमयं कालिमानं विरुप्य

॥ २ ॥

यस्याग्रजो भल्लदेव उत्तम्य इव वाक्पतेः ।

उपेन्द्र इव चेन्द्रस्य तेजःपालोऽनुजः पुनः

॥ ३ ॥

चौलुक्यचन्द्रलणप्रमादतनुजस्य वीरधरलम्बः ।

यो दधे राज्यधुरांमेकधुरीणं विषाय निजमनुजम्

॥ ४ ॥

विमुता-विक्रम-विद्या-विदग्धता-वित्त-वितरण-विवेकैः ।

यः सप्तभिर्विकारैः कलितोऽपि नभार न विकारम् ॥ ५ ॥

अपि चाप्यायिता वापी-मपा-कूप-सरोवरैः । पोषिता पोषधागारैर्जीर्णोद्धारैः समुद्धृताः ॥ ६ ॥

थ्रिया प्रीतया निर्व्याजं पूजिता सङ्गपूजनैः । प्रशस्तिविस्तरस्तोमैः सरस्वत्यापि संस्तुता ॥ ७ ॥

शौर्येणोर्जस्वितां नीता स्फीता नव्योक्तिमूक्तिभिः । प्रीताऽर्थिसार्थसत्कारैरुपकारैः पुरस्कृता ॥ ८ ॥

वासिता साधुवादेन तोरणैस्तुङ्गतां गता । हैमसगदामकुम्भेन्द्रमण्डपाद्यैश्च मण्डिता ॥ ९ ॥

नित्यं शत्रुञ्जयाद्गौ नवजिनमवनोत्तुङ्गशृङ्गाग्रजाम्—

द्वातव्याधृतधौतध्वजपटकपटाद् यस्य नर्नर्त्ति कीर्तिः ।

तत्स्येयं गोहृदक्ष्मीर्विमवति ललितादेविनाम्नी तदीयः

पुत्रोऽयं जैत्रसिंहः स्फुरति जनमनःकन्दरामन्दिरेषु ॥ १० ॥

दृष्ट्वा वपुश्च दृष्टं च परस्परविरोधिनी ! । विवदाते समं यस्मिन् मिथस्तारुण्य-बार्द्धके ॥ ११ ॥

सोऽयं ब्रह्मवदेवी कुक्षिमवस्य प्रतापसिंहस्य । तनयस्य श्रेयोऽर्थं व्यधापयत् पुस्तिकामेताम् ॥ १२ ॥

पुष्पदन्ताविमौ यावद् दीप्तौ ब्रह्माण्डमण्डपे । एषा सुपुस्तिका तावद् धर्मजागरणकारणम् ॥ १३ ॥

[ एतत्प्रशस्तिपुष्पा पुस्तिका पठननगरे बाढीपार्श्वनाथमण्डागारे विद्यते । ]



# **पञ्चदशं परिशिष्टम्**

श्रीविजयसेनसूरिविरचित

रेवंतगिरिरासु ।

परमेसर तित्थेसरह, पयपंकय पणमेवि । मणिसु रासु रेवंतगिरे, अंचिकदेवि सुमरेवि ॥ १ ॥

गामागर पुर वण वहेण, सरि सरवरि सुपणसु । देवमूमि त्रिसि पच्छिमह, मणहरु सोरठदेसु ॥ २ ॥

जिणु तहिं मंडेल मंडणउ, मरगयमउडमहंसु । निम्मल सामल सिहरमरे, रेहई गिरि रेवंतु ॥ ३ ॥

तसु सिरि सामिउ सामलउ, सोहगसुंदर सारु । जाइवनिम्मलकुलतिलउ, निवसइ नेमिकुमारु ॥ ४ ॥

तसु सुह दंसणु दसदिसि वि, देसदेसंतहु संघ । आवह भावरसालमणउ, हलि [हलि] रंगतरंग ॥ ५ ॥

पोरुयाडकुलमंडणउ, नंदणु आसाराय । वस्तुपाल वर मंति तहिं, तेजपालु दुइ भाय ॥ ६ ॥

गुरजरधरपुरि घवलकि, वीरघवलदेवराजि । विहु वंपवि अवयारियउ, सु[स]मू वूसग माक्षि ॥ ७ ॥

नायलगच्छह मंडणउ, विजयसेणसूरिराउ ।

उवपसिहि विहु नरपवरे, धम्मि घरिउ विहु भाउ ॥ ८ ॥

तेजपालि गिरनारतले, तेजलपुरु नियनामि । कारिउ गढ-मढ-पवैपवर, मणहरु घरि आरामि ॥ ९ ॥

तहिं पुरि सोहिउ पासजिणु, आसारायविहारु ।

निम्मिउ नामिहि निजजणणि, कुमरसरोवरु फारु ॥ १० ॥

वहि नयरह पुरवदिसिहि, उग्गसेण गढदुग्गु । आदिजिणोसरपमुहजिणमंदिरि भरिउ समग्गु ॥ ११ ॥

वाहिरि गढ दाहिणदिसिहि, चउरियवेहिविसाळ ।

लाडुकलहदियओरडीय, तडि पसु ठाइ कराल ॥ १२ ॥

वहि नयरह उत्तरदिसिहि, साल-धंमसंभार । मंडण महिमंडल....., मंडप दसह उयार ॥ १३ ॥

जोइउ जोइउ भवियण, पैमि गिरिहि दुयारि । दामोदरु हरि पंचमउ, सुवञ्चरेहनइ पारि ॥ १४ ॥

अणुण अंजण अंबिलीय, अंबाढय अंकुलु । उंबरु अंबरु आमलीय, अगरु असोय अहलु ॥ १५ ॥

वरवर करपट करणतर, करवंदी करवीरा । कुडा कडाह कयंय कउ, करव कदलि कंपीर ॥ १६ ॥

वेमउ वंजउ बउल वडो, वेढस वरण विडंग । वासंती वीरिणि विरह, वेसियालि वण चंग ॥ १७ ॥

सौममि सिवलि सिरसमि, सिधुवारि सिरखंडा । सरल सार साहार सय, सग्गु सिग्गु तिणदंड ॥ १८ ॥

१ वडग=वरगं ॥ २ मंडल=देस ॥ ३ राजने=तोषे छे ॥ ४ पिरि=मस्तक=सिगर ॥ ५ प्रया=प्राणीनी पर ॥ ६ स्कार=प्रधान ॥



पद्म-कुल-फलसिम, रेहइ तहि वणराइ । तहि उज्जिततलि घग्गियह, उल्लट्ट अंगि न माइ ॥ १९ ॥  
बोलावी संपह तणीय, कालमेघेत्तर पंथि । मेरुहविय तहिं दिइ वणीय, वस्तुपाल वरमंति ॥ २० ॥

### ॥ प्रथमं कडवं ॥

दुविहि गुज्जरदेसे रिउरायविहंडणु, कुमरपाल मूपाल जिणसासनमंडणु ।  
तेण संदाविओ मुरट्टदंडाहिवो, अंबओ सिरिसिरिमालकुलसंभवो ।  
पाज सुविसाल तिणि नैठिय, अंतरे चवल पुणु पैरव भराविय ॥ १ ॥  
धनु सु धवलह बाउ जिणि पाग पयासिय, बारविसोत्तरवरसे अमु जस दिसि वासिय ।  
जिम जिम चडइ तडि कडणि गिरनारह, तिम तिम ऊडइ जण भवण संसारह ।  
जिम जिम सेटं जल अंगि पलोद्वए, तिम तिम कलिमलु सयल ओहद्वए ॥ २ ॥  
जिम जिम वायइ बाउ तहि निज्जरसीयल, तिम तिम भवदुहदाहो तक्खणि सुद्ध निषल ।  
कोइलकडयलो मोरकेकारवो, मुग्गए महुयर महुर गुंजारवो ।  
पाज चडंतह सावयालोयणी, लापारामु दिसि वीसए दाहिणी ॥ ३ ॥  
जलदजालववाले नीक्षरणि रमाउल, रेहइ उज्जितसिहर अलि-कज्जलसामल ।  
बहलुवुहु धातुरसमेउणी, जत्य उलदलइ सोवन्नमइ मेउणी ।  
जत्य दिप्पंति दिवोसही सुंदरा, गुहिर वर गरुड गंभीर गिरिकंदरा ॥ ४ ॥  
जाइ कुंडु विहंसतो जं कुमुमिहि संकल, दीसइ दस दिसि दिवसो किरि तारामंडल ।  
मिलियनवलवल्लिदकुमुमसलहालिया, ललियमुरमहिबलयचलणतलतालिया ।  
गलिययलकमलमयरंदजलकोमला, विउल सिलवट्ट सोहंति तहिं संमला ॥ ५ ॥  
मणहरपणवणगहणे रसिर हसिय किनरा, गेउ मुहुर गायंतो सिरिनेमिजिणेसरा ।  
जत्य सिरिनेमिजिणु अच्छए अच्छरा, अमुरसुरउरगकिनरयविज्जाहरा ।  
मडडमणिकिरणपिजरिय गिरियसेहरा, हेरसि आवंति बहुमविभरनिम्भरा ॥ ६ ॥  
सामियनेमिकुमारपमपंकयलंडिउ, घेर पूल वि जिण धन मन पूरइ बंडिउ ।  
ओ मयकोहाकोट्टि....., अमु सोवच्चु पणु दाणु जउ दिज्जए ।  
सेवउ जडकम्मपणगंठि जउ विज्जए, तउ उज्जितसिहर पाविज्जए । ॥ ७ ॥  
जम्मणु ओव[णु] जीविय तमु तहिं कयत्थू, जे नर उज्जितसिहर पेक्कमइ वरत्तिथू ।  
आसि गुरज्जरपरय जेण अमरेसरु, सिरिजयसिंघदेउ पवरु पुहवीसर ।  
हणवि मोरट्टु तिणि राउ पंगारउ, ठविउ साज्जणु दंडाहिवं सारउ ॥ ८ ॥

१ ऊलट्ट=कुम भाषना ॥ २ पय=पहाड उतर बरवा मट्ट पगवीसी बधिलो रत्नो ॥ ३ मिट्टि=जीवर  
पगवी ॥ ४ प्रा=पानीनी वरव ॥ ५ रेवदल=रसेको ॥ ६ मुग्गए=ध्वने=अंभदाय के ॥ ७ शरमल  
पाटी ॥ ८ हंथ=हरो ॥ ९ श्वी अने पूठ पण ॥

अहिणवु नेमिजिण्ड तिणि भवणु कराविउ, निम्मलु चंदरु, विवे नियनाउं । लिहाविउ ।

योरेविकसंभवायंभरमाउलं, ललियपुउलियकलसकुलसंकुलं ।

मंडपु दंड पणुतुंगतरतोरणं, धवलिय वज्झि रुणझणिरिकिकिणिषणं ।

इच्चारसयसहीउ पंचासीय, वच्छरि, नेमिधुयणु उद्धरिउ साजणि नरसेहरि

मालवमंडलगुहमुहमंडणु, भावडसाहु दालिधुसंडणु ।

आमलसार सोववु तिणि कारिउ, किरि गयणंगण सुरु अवयारिउ ।

अवरसिहर वरकलस झलहलड मणोहर, नेमिधुयणि तिणि दिट्ठइ दुह गलइ निरंतर ॥ १० ॥

## ॥ द्वितीयं कडवं ॥

दिसि उत्तर कसमीरदेसु नेमिहि उम्माहिय । अजिउ रतन दुइ बंधं गरुय संधाहिव आविय ॥ १ ॥

हरसवसिण घणकलस भरिचि ति न्हवणु करंतह । गलिउ लेव सु नेमिविच जलधार पडंतह ॥ २ ॥

संधाहिवु संधेण सहिउ नियमणि संतविउ । हा हा ! धिगु धिगु ! मह विमलकुलगंजणु आविउ ॥ ३ ॥

सामियसौमलधीरचरण मह सरणि भवंतरि । इम परिहरि आहार नियमु ल्हउ संघधुरंधरि ॥ ४ ॥

एकवीसि उपवासि तालु अंचिकदेवि आविय । पमणइ सैपसन्न देवि जय जय सहाविय ॥ ५ ॥

चट्टेविणु सिरिनेमिबिंडु तुलिउ तुरंतउ । पच्छलु मर्म जो एसि वच्छ । तुं भवणि वलंतउ ॥ ६ ॥

णइवि, अंवि, ..... कंचणं, ..... धंलाणइ । ..... विवु मणिमउ तहिं आणइ ॥ ७ ॥

पडमभवणि देहलिहि छुडि पुडि आरोविउ । संधाहिवि हरिसेण ताम दिसि पच्छलु जोइउ ॥ ८ ॥

टिउ निच्छलु देहलिहि देवु सिरिनेमिकुमारो । कुसुमवुडि मिच्छेदेवि देवि किउ जइजइकारो ॥ ९ ॥

वइसाहीपुत्तिमह पुत्तवंतिण जिणु धप्पिउ । पच्छिमदिसि निम्मविउ भवणु भवदुहतकप्पिउ ॥ १० ॥

न्हवण-विलेवणतणीय वंड भविमणजण पूरिय । संधाहिव सिरिअजित-रतनु नियदेसि पैराइय ॥ ११ ॥

सयल विचि कलिकालि कालकलसे जाणवि छाहिउ ।

झलहलंति मणिमिवकंति अंचिकुरुं आइय ॥ १२ ॥

समुहविजय-सिवदेविपुत्तु जायवकुलमंडणु । जरासिधदलमलणु मयणभइमामविहंडणु ॥ १३ ॥

राइमईमणहरणु रमणु सिवरमणि मणोहरु । पुत्तवंत पणमंति नेमिजिणु सोहगुडुंदरु ॥ १४ ॥

वस्तपालि वर मंति सुयणु कारिउ रिमहेसरु । अट्टावय-सम्मेयसिहरवरमंडणु मणहरु ॥ १५ ॥

कउडिजक्खु मरुदेवि दुह वि तुंगु पासाइउ । पम्मिय सिरु पुणंति देव बल्लिव पलोइउ ॥ १६ ॥

तेजपालि निम्मविउ तत्थ तिहुयणजणरंजणु । कैल्याणउत्तउतुंगु सुयणु लंघिउ गयणंगणु ॥ १७ ॥

। १ मित्र नाम । २ दारिद्र्यदण्डन = दारिद्र्ये दण्ड करणार । ३ नेमिनाभना मंदिराने आगल्लधारो । ४ वन्धु = भाई ।

५ सामियगामल = नेमिनाभ भगवान् । ६ मुपसष्टा । ७ नियधार्थक अन्यथ । ८ बलानध = मंदिराने एक भाग ।

९ परागता ध्याना आख्या । १० कस्याणकययुगं भवन् = नेमिनाभ भगवान्नाम दीक्षा केवलज्ञान अने निर्वान ए प्रण कस्याणकने लगनुं विशाल मंदिर ।

दीप्तद दिसि दिसि कुंडि कुंडि नीलरगजं मालो । इन्द्रमंडपु देपालि मंवि उद्धरित विसालो ॥ १८ ॥  
 अइरावणगयरायपायमुदासम टंकिउ । दिट्ट गयंदमुकुंड विमल निज्जरसमलंकिउ ॥ १९ ॥  
 गयणगंग जं समयलत्तियअवयारु भणिज्जइ । पक्खालिबि तहि अंगु दुक्ख जलजंजलि दिज्जइ ॥ २० ॥  
 सिंदुवार-मंदार-क्रूरवक्-कुंदिहि सुंदरु । जाइ-जूइ-सयवचि-विचिफलेहि निरंतरु ॥ २१ ॥  
 दिट्ठय छत्रसिलकडणि अंबवणु सहसाराधु । नेमिजिणेसरदिक्ख-आण-निबान्ह ठामु ॥ २२ ॥

### ॥ तृतीयं कडवं ॥

गिरिगरुया सिंहचि चडेवि, अंबे-जंबाहि बंबालिउं ए ।  
 सँमिणी ए अंबिकदेविदेउलु दीडु रँमाउलं ए ॥ १ ॥  
 वज्जइ ए ताल कंसाल, वज्जइ महल गुहिरसर ।  
 रंगिहि ए नच्चइ बाल, पेल्लिवि अंबिकमुहकमल ॥ २ ॥  
 सुमकर ए ठविउ उच्छंगि, विमकरो नंदणु पासिक ए ।  
 सोहइ ए ऊर्जिलसिंगि, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ३ ॥  
 दावइ ए दुक्खहं गंगु, पूरइ वंछिउ भवियजण ।  
 रक्खइ ए चउविहु सधु, सामिणी सीहँसिंघासणी ए ॥ ४ ॥  
 दस दिसि ए नेमिकुमारि, आरोही अवलोइवं ए ।  
 दीजइ ए तहि गिरनारि, गयणगणु अवलोणसिहरो ॥ ५ ॥  
 पहिलइ ए सांयकुमारु, नीजइ सिंहचि पज्जुष पुण ।  
 पणमइ ए पामइ पारु, भवियण मीसण भवममण ॥ ६ ॥  
 ठामि ठामि ए रक्खसोवज्ज, विव जिणेसर तहि ठविय ।  
 पणमइ ए ते नर भक्ख, जे ॥ कलिकालि मेलमयल्लिया ए ॥ ७ ॥  
 जं फल ए सिंहसंमेय, अट्टायम नंदीसरिहि ।  
 तं फल ए भवि पमेइ, पेत्तेविणु रेवंतसिहरो ॥ ८ ॥  
 गहगण ए माहि जिम माणु, पडयमाहि जिम मेरुगिरि ए ।  
 त्रिहु भुयणे ए तेम पहाणु, तिल्लिमाहि रेवंतमिरि ॥ ९ ॥  
 घक्कल घय ए चमर भिंगार, आरचि मंगलपईव ।  
 तिल्लिय मडह ए कुंडल हार, मेघादंबर जावियं ए ॥ १० ॥

१ दरो दिशामी ॥ २ शरणनी माला ॥ ३ अंबा अने आबूनां आरोही ॥ ४ सामिनी ॥ ५ रमणीय ॥ ६ वज्जयंजलि ॥ ७-८ अम्बिकादेवी ॥ ९ मलमलिनिता=मलमेल ॥

दियहिं ए नर जो पवर, चंद्रोयं नेमिजिणेसरवरभ्रुपणि ।

इहमवि ए मुंजवि भोय, सो तित्येसरसिरि ल्हइ ए

॥ ११ ॥

चउविहु ए संघु करेइ, जो आवइ उज्जितगिरि ।

दिवितैवह ए रागु करेइ, सो मुंचइ चउगहगमणि

॥ १२ ॥

अट्टविह ए ज्ञय(ज्ञय) करंति, भाउई जो तहिं करइ ए ।

अट्टविह ए करम हणंति, सो अट्टमवि सिज्जइ ए

॥ १३ ॥

अंविह ए जो उपवास, एगासण नीवी करइ ए ।

तसु मणि ए अउइं आस, इहभव परमव विविह परे

॥ १४ ॥

पेमिहि ए मुणिजण अन्नह, दाणु धम्मियवच्छल करइं ए ।

तसु कही ए नही उपमाणु, परभाति सरण तिणउ

॥ १५ ॥

आवइ ए जे न उज्जिति, धरधरइ धंधोलिया ए ।

आविही ए हियइ न संति, निष्फल जीविउ तासु तणउं

॥ १६ ॥

जीविउ ए सो जि परि धनु, तासु समच्छर निच्छणु ए ।

सो परि ए मासु परि धनु, वलि हीजइ नहि वासर ए

॥ १७ ॥

जहिं जिणु ए उज्जिलठामि, सोहगमुंदरु सामल ए ।

दीसइ ए तिहणसामि, नवणसल्लणउं नेमिजिणु

॥ १८ ॥

नीजर ए चमर ढलंति, मेघाडंबर सिरि धरीइं ।

तित्थइ ए सउ रेवंदि, सिंहासणि जयइ नेमिजिणु

॥ १९ ॥

रंमिहि ए रमइ जो रासु, सिरिविजयसेणि सुरि निम्भविउ ए ।

नेमिजिणु ए तूसइ तासु, अंबिक पूरइ मणि रलीए

॥ २० ॥

॥ चतुर्थं कवयं ॥

॥ समस्तु रेवंतगिरिरासु ॥



१ आपे ॥ २ चद्रो ॥ ३ देवागना ॥ ४ परभाति ॥ ५ धंधोलिया=धधामो रच्यायच्या रहंनार,  
अथवा धंधलीया=रात दिवस धमाल करनार ॥ ६ निर्जर=देव ॥ ७ रेवंतगिरि ॥

# पोडशं परिशिष्टम्

पाल्हाण पुत्र कृत

आवृत्तास

- ६० ॥ पैणमेविणु सामिणि वाएसरि, अमिनवु कवितु रयं परमेसरि ।  
 मंदीवरधनु जासु निवासो, पमणउ नेमिजिणंदह रासो ॥ १ ॥
- गूजरदेसह मज्झि पहाणं, चंद्रवती नयरि वक्खाणं ।  
 वावि सरोवर सुरहि सुणीजइ, बहुबारामिहि ऊषम दीजइ ॥ २ ॥
- त्रिग चौचरि चंडहट विचारा, प( म )उ मंदिर पवलहर पगारा ।  
 छमिस राजकुली निवसेइ, धनु धनु पम्मिउ लोकु वसेइ ॥ ३ ॥
- राजु करइ नह( हिं ) सोमनरिंदो, निम्मल सोलकला जिम चंदो ।  
 दिव वसउ गिरि पुहवि मसिद्धं, बहुयहं जेपहं तणउ जु तीयो ॥ ४ ॥
- वण वणरायहं सजल सुडाउं, तहिं गिरिबर पुणु आयू नौउं ।  
 तसु सिरि बारह माम निवासो (सी), शठी गूगलियार नहिं तपसी ॥ ५ ॥
- तसु सिरि पहिलउ देउ सुणीजइ, अचलेसरु तसु ऊपसु दीजइ ।  
 नहिं छइ देवत बालकुमारी, सिरि मा सामिणि कहउ विचारी ॥ ६ ॥
- विमल्लिहिं टवियउ पावनिकंदो, तहिं छइ सामिउ रिसहजिणिंदो ।  
 सानिधु सपह करइ संखेवी, तहिं छइ सामिणि अंपाएवी ॥ ७ ॥
- पुरुष पच्छिम धम्मिय सहिं आयहिं, उच्चर दक्खिण संपु जिणवरु न्हावहिं ।  
 पैसहिं मंदिरु रिसह न्वा ( रवणा ! ), नाचहिं धम्मिय बहु गुणवत्ता(का) ॥ ८ ॥
- धनु धनु विमल्लि जिणि क्ताविउ, ससिमंडलि जिणि नाउ लिहाविउ ।  
 बिहुं सइ वरिसइ अंतरु सुणीजइ, बीजउ नेमिहि भुवणु सुणीजइ ॥ ९ ॥

उवणि-

- नमिबि विराजउ धु( पु ) णि नमिबि, बीजा मंदिरनिपेसु ।  
 त पुहविहि माहि जो सरहत्तण, ऊत्तिम गूजर देसु ॥
- त सोलंकिण्डुलसंमिउं, सूरउ जणि जसवाउ ।  
 ॥ गूजरातनुरासमुधरणु, राणउं सूरणपसाउ ॥ १० ॥
- परिचउ दास वो आइवण, जिणि रेलिउ सुस्ताणु ।  
 राजु करइ अजय ठणओ, जासु जगंजिउ माणु ॥

१. प्रणय ॥ २. रचवर्ग ॥ ३. कपूर ॥ ४. पीडा ॥ ५. नाम ॥ ६. आम्हो ॥ ७. संततिरूपमसिद्धि  
 सम्यग् ॥ ८. गूजरातनी धुजे बहेवार ॥

लुण्ठापुत्रु लु विरधवले, राणउ अरदकमल्ल ।

॥ चोर-चराडिहि आगलओ, रिपुग्राह उरि साळं

॥ ११ ॥

भास-

वस्तुपालु तसु तणइ महंतउ, सहयरु तेजपाल उदयंतउ ।

अभिणवु मंदिर जेण कराविय, ठांवि ठांवि जिणविं बराविय

॥ १२ ॥

महिमंडलि किय जेणि उद्धारा, नीरनिवाणिहि सत्तूकारा ।

सेत्तुजसिहरि तलावु सणाविउ, अणपमसरु तसु नासु दियाविउ

॥ १३ ॥

निवु निवु सुरसंघ पूजा कीजइ, छहि दरिसणि घरि दाणु वि दीजइ ।

संघ पुरिस पुहविहि सलहीजइ, रीसु वधेला बहु मानिजइ

॥ १४ ॥

अन्न दियसि निय मणि चितीजइ, महत्तइ तेजपालि पमणीजइ ।

आबू भणिजइ तीथहं ठांउं, जइ जिणमंदिरु तह नीपावउं

॥ १५ ॥

ठाकुरु ऊदल ताव हकारिउ, कहिय यात कौन्दइ बइसारिउ ।

आबू रिखमह मंदिरु आछइ, महत्तउ तेजपालु इम पूछइ

॥ १६ ॥

बीजउ नेमिहिं भुवणु करेसहं, जइ जिणमंदिर यांहर लहिसहं ।

पहिलउ सोमनरिंदु पूछीजइ, कटक माहि जाइवि विनवीजइ

॥ १७ ॥

ठवणि-

महतिहिं जायवि भेटियओ धावलदेविमल्लारु ।

त कड(१) जोडेविणु वीनतओ, सोमनरिंद प्रमारु ॥

विनति अन्हहं तणीय, सामिय तुहु अवधारि ।

त मागउ थाहर मंदिरह, आधूयगिरिहि मझारि

॥ १८ ॥

त तूठउ धावलदिवितणउ, आगइ कहियउ एहु ।

त विमलह मंदिर आससउं, विजउं करावहु देव ॥

अग्नि घुरि गोठिय आनुयह, आगे अठइ निवाणु ।

त करिज मंदिरु तिजपाल ! तुहुं, हियइ म घरिजहु काणि

॥ १९ ॥

भासा-

दिस(य ! )इ आय(ए)सु तह सोमनरिंदो, वस्तुपालु तेजपाल आणंदो ।

जिण समिय मंदिरु वेणि निप्पज्जए, अइसु निरोपु दिव उट्ठु दीजए

॥ २० ॥

अइसि ऊदल्लु चंद्रावती आवए, सयलु महाजनु घरि तेडावए ।

चालहु हिय आनुइ जाएसहं, जिणमंदिर थाहर भूमि जोएसहं

॥ २१ ॥

चलिउ ऊदल्लु महाजनि सहितउं, आबुय देवलवाढइ पहुतओ ।  
 ठामि ठामि मंदिरभूमि जोर्यंतओ, मिलिउ मेलावओ आबुय लोमहं ॥ २२ ॥  
 मंदिर बाहर नवि आपेसहं, प्राणिहिं सुवणु करण नवि देसहं ।  
 आगए विमलमंदिर निप्पनओ, सिर मा भूमिहिं दीनउ दानु ॥ २३ ॥

ठवणि-

ऊदल्लु तिल्लु [त]पसीय बहु परि मंनावइ ।  
 राठी मर भूगुलिया वस्तइं पहिरावइ ॥ २४ ॥

भास-

अग्निह पुरि गोदिय दिव निमिनाथ, जिणभूमि आपहु ते इसु भाहा ।  
 विमल मंदिर ऊनर दिसि जाम, लइय भूमि तिल( ज )पालु बघाविउ ॥ २५ ॥  
 महतइ तेजपाल पभणीवइ, सोमनदेउ सुतहार तेदीवइ ।  
 जाइज आबुइ तुहं (सहुतु) कमठाए, वेगिहिं जिणमंदिर निप्पाए ॥ २६ ॥  
 चालिउ पइठ करिउ सुतहारो, भूमि सुवण इक्कार अहारो ।  
 सोमनदेउ विगि आबुइ भावइ, कमठा मुहुतु आरंसु करावइ ॥ २७ ॥

भास-

मूलग पायाधर, पूविउ कुरुम प्रवेसु ।  
 भरिउ गढामउ तहिं ज पुरे, सरसिल हुयउ निवेसु ॥  
 आसनी तहिं ऊषडिय, पायरकेरिय स्ताणि ।  
 निपनु गढारउ भूमिगओ, देउल्लु चडिउ प्रमाण ॥ २८ ॥  
 रूपा सरिसठ समतुल प, दसहिं दिसावरि जाइ ।  
 पाहणु तहिं आरासणउं, आणित तहिं कमठाइ ॥  
 सरवरु पाटु जौ नीपजण, मंदिरु बहु विस्तारि ।  
 त आतिसद दीसइ रूवडउं, नेमिजिणिउ पयार ॥ २९ ॥

ठवणि-

सोमनदेउ सुतहारो कमठाउ करावइ ।  
 सइ तउ मंत्रि तिजपालो जिणविनु मरावइ ॥ ३० ॥

भास-

खंभापति वर नयनि भिनु निप्पजण, रयणमउ नेमिजिणु ऊपम दीजण ।  
 दिगनि कंनि रयणकंनि सामल धीरा, बहु पंकति बहु मफति जाइ सरीरा ॥ ३१ ॥

निवसए विंदु जो साल्ह संठिओ, विजयसिणघरि गुरि पढम पतीठिओ ।  
 निपनु परिपूरनु सामलदेउ, धणु तिजपाल जिणि आबुय नेओ ॥ ३२ ॥  
 घवलसुत सुरहि पुत ठविय तहि रहवरे, खडइ सुहडा सुमुहुआ आबुय गिरवरे ।  
 नयरवर गामह माहिहि आवए, सइत भवियहो जिण पहरावए ॥ ३३ ॥  
 आबुय तलवटे रत्यु पहतओ, तेणीय ऊवरणीय पाज चढंतओ ।  
 भडऊयडइ रहु पाज बिसमी सरी, वेगि संपच अंविक्क वर अच्छरी ॥ ३४ ॥  
 सानिधि अंचाइय रत्यु चढंतओ देवलवाडए दिणि छठइ पढतओ ॥ ३५ ॥

## ठवणि-

आबुय सिहरि संपपु देउ पडु नेमिजिणेसरु ।  
 वणसइ सवि विहसणहं लगग आइउ तित्येसरु ॥ ३६ ॥  
 उच्छंगिहि जुगादिजिणु जिणु पहिलउ ठविजइ ।  
 तुहुं गरुयउ निमिनाथ विंदु तिजपालिहिं कीजइ ॥ ३७ ॥  
 हक्कारहु वर जोइसिय पढठइ दिणु जोयहु ।  
 तेढावहु चउविहहं संघु पुर-पाटण-नामहं ॥ ३८ ॥  
 बार संवच्छरि छियासियए ( १२८६ ) परमेसरु संठिउ ।  
 चैत्रह तीजह किसिण पसि निमि शुवणिहि संठिउ ॥ ३९ ॥  
 बहं आयरिहिं पयइ किय बहु भाउ धरंता ।  
 रागु न(त) बढइ भवियजणाहं निमित्तिरत्यु नमंतह ॥ ४० ॥  
 आवे हंडावडा तणे जिणु पहिलउ न्हवियउ ।  
 पाछइ न्हवियउ सयल सवि सुम्हि पणमहु भवियहु ॥ ४१ ॥  
 [ ..... ] तासु कल्याणिकु कीजइ ।  
 दसमि तित्यु नेमि जात रेसि संघ पासि मंगीजइ ॥ ४२ ॥  
 संघु रहिउ जिणि जात करिवि नेमिशुवण विसाल ।  
 पूरि मणोरह वस्तुपाल मंति तेजपाल ॥ ४३ ॥  
 भूरति भूपु असराज तणी कुमरादि विभाया ।  
 काराविय नेमिशुवणुमाहि विहु निम्मलकाया ॥ ४४ ॥  
 काराविउ निमिशुवण फलु लयउ संसारे ।  
 निमुणहु चरितु नदन्ते ( चे ? ) तिणि घंघुय प्रमारे ॥ ४५ ॥  
 रिपममंदिक्क सासणि जाणुं घुंघुय दिजउ डकढवाणिउं गाउं ।  
 तिणि सुमसीहि उज्जलिउ नाउं नेमिहि दिन्नु डवाणिउ गाउं ॥ ४६ ॥



## [ भास ]

[ ..... ]

अनेक सपपति आबुइ आवहिं, कनक कपड निमिजिणु पहिरावहिं ॥ ४७ ॥

पूजहि माणिक मोतिय हूले, किंवि पूजहि सोगविहिं झूले ।

केवि हु हियदय भावण भावहिं, केवि हु मनीणइ आराहहिं ॥ ४८ ॥

केवि चढावलि नेमि नमीजइ, रासु वयणु पाव्हण पुत्र कीजइ ।

बार सवच्छरि नवमासोए( १२८९ ), वसंत मासु रंमाजल दीहे ॥ ४९ ॥

एह राहु( सु ! ) विस्तारिहि ज्यए, रापद समरु संघ जंवाई ।

राखइ जासु जु आछइ खेदइ, राखइ ब्रह्मसंति भूढेइ ॥ ५० ॥

॥ आबूरासः समाप्तः ॥



परिशिष्टानि ।

मुकुटकीर्तिकलोलिनी-आदि वस्तुपालप्रशस्तिसंग्रह ।

पद्यानुक्रमणिका ।

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०
अद्रावणमयराय	१९	अन्वयेन विनयेन	४३
अदसि अङ्गुष्ठ	२१	अन्नं दिवसि	१५
अकारयन्नाकारं	४०	अपास्य शौण्डीर्यमदं	१५
अगाग्यपुण्योदय	३०	अपि चाप्यायिता	६
अगुण अञ्जन	१५	अप्राप्ततादृशगुणां	८४
अग्रे हृस्मीरवीरश	६०	अभूदनुपमा पत्नी	५९
अचिन्त्यदातार	१७	अन्यर्घ्यं देवान्	३१
अच्छिद्रो यदि तत्कृतः	९९	अम्बिकामवने येन	८८
अजनि रजनिजानि	३	अंघ्रिं ए जो	१४
अजयदजयपाल	२७	अम्भोजेषु मराल	८
अट्टविह पञ्जय	१३	अम्भोदभ्रममाजि	१२६
अणहिलपुरमस्ति	३	अम्हि धुरि	२५
अप्यदमुता सचिवपुङ्गव !	३०	अयं हि राकासु	८
अप्यदमुतैः कृत्यशतैः	१०२	अयमनुदिनदानो	६०
अत्रैव क्षुब्धय	८२	अरिबलद्वलनश्री	३
अत्रैव शैले रचयाञ्चकार	७८	अरुन्धतीव कान्ता	४०
अनन्तप्रागन्म्यः	२२	अर्कपालितकप्रामे	५९
अनुगन्मना समेतस्	१९	अर्चिषामयन	२६
अनुमोक्षयापि	८	अणोराज्ञाज्ञातं	३३
अनुपमदेवी देवी	५३	अर्थदानदलिता	६३
अनुपमदेव्यां पल्यां	१३	अर्थव्यर्थितदुस्थ	४२
अनुपमदेव्यारतेन	८४	अहंस्तनोषु भुवना	१
अनुसृतसज्जन	५१	अहंतस्त्रिजगद्	२
अन्तःकज्जलमञ्जुलश्चि	२०	अवधयन्नाद्यु	२३
अन्तःक्षारं रिपूणां	२	असावाशाराजं	६
अन्तर्यर्क्षीर्चिकासारं	२८	असौ कीर्त्तीः स्वका	१४१
अन्तर्व्योम श्रवन्ती	८३	असौ भुवनपाल्य	६१
अन्ये केचन	५२	अस्ति प्रदास्ता	१

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
अस्ति स्वस्तिनिकेतन	४९	६३	आस्य कस्य न	९	९२
अस्थापयत् स्थिरमति	६३	३८	आहडस्तद्वनि	२०	२
अस्मद्रोत्रैकमित्र	१३२	१२	इदुर्विदुरपा	७	५७
अस्मिनाभिमुख	१६६	१५	इतरगुणकथाया	६	४२
अस्मिन्नुजतवेस्म	१३	२	इतद्यौलक्यवीराणा	२५	६०
अस्य त्रिक्रमविक्रमस्य	५३	५	इत्थं श्रीवस्तुपाल	९	९३
अहकृतिरुतायुध	२	९३	इत्यन्त स्मित	६९	३९
अहिण्वु नेमि	९	१०१	इत्युक्त्वा प्रीति	५१	३७
आकृष्टे कमलाकुलस्य	१३	५३	इत्युक्त्वा मम	६७	३९
आगो यदमुवारि	१७	३१	इद सदा सोदरयो	२१	६०
आजन्मत्रासहेतु	६८	६	इन्दु पत्रावलम्ब	१५८	१४
आत्मगुणै किरणैरिव	६	५९	इन्दु पत्रावलम्ब	१७	१९
आत्मा त्व जगत	८	४९	इन्दुनिन्दति	११	४०
आदिम प्रशम	४१	८५	इन्दुर्विदुरपा	१२८	११
आदेश देव । यथेव	६८	३९	इमा समयवैषम्याद्	१५	२२
आयेनाऽन्यपवर्जनेन	६	५२	इमामवृत सदगुरोर्	१७८	१६
आनन्दचन्द्राऽमरचन्द्र	१५३	१३	इयमनुपमदेवी	५४	६३
आन वाऽमरसूरी	१००	२९	इह तेजपाल	७	४७
आन दाय सुदर्शना	३	३४	इह बालिगमुत	१	४७
आपपे प्रसृति	३०	३६	इह बालिगमुत	१	५०
आवुष तल्वटे	३४	१०७	इहैवाष्टाफदोद्धार	६५	२७
आवुष सिंह	३६	१०७	ईदृग्गुणरूपदेश	१६२	१४
आयाता कति	५	४७	उच्छगिहि	३७	१०७
आयुर्वायुहोर्निवद्	१६१	१४	उद्वेगिणु सिरिनेमि	६	१०१
आवह ए जे	१६	१०३	उत्कर्षप्रगुणा	४५	३७
आशान्यो नवपुष्प	२६	१९	उत्पुल्लमल्ली	५४	८६
आशाराज इति	१०७	९	उत्सेकितोत्सूत्र	१७	८०
आशाराज शस्यपी	२१	२५	उदग्रतेज मुखतैरु	१०	२४
आशाराजस्य पितु	९७	२८	उदार शूरो वा	४	४९
आधर्यै यमुरटिभि	१८	३१	उदधाराजो यस्य	५२	२७
आसीदीशो दोमदा	१६	२	उदृत्य पद्मासर	३२	२६
आसीधडपर्मडिता	६९	६४	उदृत्य वैद्यनाथस्य	५८	२७
आरते तरय मुपारहस्य	११६	१०	उद्गास्यदिशविषा	४१	९०

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
उद्भूतप्रतिभा	१३०	११	कल्पद्रुमप्रसवावतंस	६	४०
उद्भूतप्रतिभा	१३	१८	कल्पाविकरणादितो	१९	८०
उपार्जि विभुता	९७	८	कवीन्द्रपदवीस्पृहा	५०	८५
उद्बल्लु तिलु	२४	१०६	कस्याऽपि कविता	४	५४
ऋग्वेदी च	११	८२	कान्तं यं वीक्ष्य	३९	४
ऋजुरोहित	२४	८३	कान्तस्वान्तसरो	१११	९
एकवीसि उपवासि	५	१०१	कान्ता जगन्त्रितय	१९	८९
एकाऽपि प्रमदां	१२	२	कान्ते कृणोऽभिमूते	४०	४
एकैकेन विमोह	१८	८०	काराविउ निमु	४५	१०७
एकोपत्तिनिमित्तौ	२३	६०	काले यत्त्वङ्गदण्डे	२१	२२
एतद्धर्मस्थानं	७२	६५	कान्येन नन्यपद	४९	८५
एतस्मादजनि	७	५९	किं च कारयता	५७	२७
एतस्मिन् मघ	४	९१	किं चित्रं यदि	१६८	१५
एतस्मिन् वसुधा	१६	२२	किं वण्णो लवण	७८	७
एतस्मिन् वसुधा	७	५५	किञ्चितेन गुणैः	१४९	१३
एतस्य विकसद्गर्भा	१०६	९	किमिह कपाठ	१	६७
एताः शमाभूतरसेन	११	९२	कीर्तिकम्पलित	४४	३७
एतेभ्यः प्रमुणा	३९	९७	कीर्तिस्तोमसुधा	७	३४
एतेऽध्वराजपुत्रा	१८	६०	कीर्त्या सौरभसार	३८	९०
एह राहु	५०	१०८	कुण्डलप्रतिमित	९२	८
और्वाग्भिनाऽपतत	३०	९०	कुदेशना च या	८	९५
औपधीशसखः सत्यं	४	४०	कुन्दं मन्दप्रतापं	६	३०
कठडिजकतु	१६	१०१	कुमारपालस्य	२९	८४
कथ्यन्ते न महीभूतः	६१	५	कुमारपुत्रेण	६७	८७
कभठधनभृताम्भो	१	७८	कुर्वन् परार्थगणिते	१६	८९
करवर करपट	१६	९९	कुर्वन् मुहुर्विभल	३३	९०
करसरसिरुहं ते	५	४१	कुशोपरोमितैर्	२३	८३
करसरसिरुहं ते	९	४२	कुम्भाण्डि ! मण्डन	३	९४
कराम्भोजं भेजे	३४	३	कुतं पडिवधजीवानां	३	९५
कराम्भोजं भेजे	१०	१८	कृत्वाऽधः कच्छपं	६	३४
कर्णयास्तु नमो	२८	३३	कृष्णीकृतारिवदना	४	८८
कर्णे खलप्रलपितं	१०	५०	के निधाय वसुधातले	६	४९
कर्मसाक्षिमवताप	१५१	१३	केचि चडावलि	४९	१०८

कोटीरैः कटका	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
कोटीरैः कटका	१५	३१	गुरो[स्त्व]स्या[शि]पां	७१	६४
कोदण्डं स्वकरो	२	५१	गूजरदेसह मन्त्रि	२	१०४
कोपाग्नि-वलिता	६४	६	गृहीतं कुप्यता	३७	८४
कोपाटोपपरैः परैश्	७७	७	गृह्णासि नाम परतोऽपि	४	४१
कोपाटोपपरैः परैश्	१३७	१२	गोप्रहप्रोञ्जिता	३५	२६
क्रान्तशक्रबलो	२	५६	गोमयरसानुलिखे	६४	८७
क्रामन्ति स्म यथा	५४	५	गौरीवरखशुर	३०	६१
क्रीडाकयासु सदसि	१५	३५	ग्रामेऽर्कपालितक	६८	२७
कुक्षे युधेपु यस्मिन्	१३	८८	ग्रामे शासनदत्ते च	१७२	१५
क्रोधेन ज्वलितो	८७	७	घण वणरायहं	५	१०४
क्वचिद्विह बिहरतीर्	८	९२	घोरारण्यविलङ्घनै	७६	७
क्षीगत्वं दाक्षिणात्या	३१	६१	चंडप्र[सा]दसं[ज्ञः]	५	५९
क्षीणे चक्षुषि	६३	६	चक्रे कोपध	६	९५
क्षीराभिर्लुठति	५६	८६	चक्रे च यो धवलके	१७०	१५
संभायति वर	१३५	१२	चक्षत्पञ्चम	४	८१
खेलस्वङ्गपडंद्दि	३१	१०६	चण्डप्रसाद इति	१००	८
ख्यातः सहमामसिंहो	३१	३	चण्डप्रसाद इति	५	८८
गयणराग जं	१३९	१२	चण्डप्रसादपुण्य	९०	२८
गर्जन्तिर्जरकुञ्जरे	२०	१०२	चण्डांशोरपि चण्डता	२२	२३
गर्जन्तिर्जरकुञ्जरे	१२९	११	चत्वारस्तनया	११२	९
गर्वात् पूर्वे	१२	१८	चलियउ ऊदल्लु	२२	१०६
गहगण ए माहि	१०	७९	चहुविहू ए सधु	१२	१०३
गामर्त्ये जलधिर्	९	१०२	चान्दे कुळे	१६	८०
गाथास्ताः खड्ग	१	७६-३	चालिउ पडि	२७	१०६
गामागर पुर	८	७८	चित्रं चित्रं समुद्रात्	३२	३३
गिरिगह्या सिंहरि	२	९९	चित्र विवग्नाभि	१७	२५
गुणप्रामे रामे	१	१०२	चिन्तातीतफलप्रदः	१	१
गुणपननिषान	८	४०	चिन्तातीतफलप्रदः	३	७८
गुणौपहंसाणि	५७	६३	चीकरैः शकटप्रजस्य	३७	३३
गुग्गरुधरपुत्रि	१९	२५	बूडामणीरुत	१०	८८
गुरुः कुष्ठेऽप्य	७	९९	चेन कि कडिकाल !	३	२१
गुरुः श्रीहरिमन्त्रेऽप्य	९९	२९	चेतः कि कडिकाल !	१	४७
	८	७९	चेतः केनद्वयार्थ	२	१७

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
चौलुक्यः सुकृती	२८	६१	त एव स्तूयन्ते	६२	८६
चौलुक्य क्षितिपाल	५	४५	तज्जगत्यां च	६२	२७
चौलुक्यचन्द्र	४	९५	तज्जन्मा वस्तुपालः	२	९७
छर्मोत्सेकितनो	५	१	त तूठु	१९	१०५
न फल ए	८	१०२	ततोऽभवत् कौर्ति	९	२४
नगद्वयमन्यः	६५	६	तत्कामश्रीरजनि	३८	४
नने हर्षपुरीय	१०४	२९	तत्कालं कलहे	२२	३५
ननय्यामोह	७	४२	तत् त्रैलोक्यनिभ	२०	३५
नन्वूरीपो जलधि		४३	तत्त्वोदिवर	२०	८०
नम्भयु जौव[ण]	८	१००	तत्पदे प्रथमः	६	७९
नयति विजयसेन	१५७	१४	तत्पदे विजयसेन	१०१	२९
नययसमसंयमः	१	९३	तत्पदे विजयसेन	१७	७६-३
नष्टनालव्याले	४	१००	तत्पदे विजयसेन	९	७९
नहिं जिय ए	१८	१०३	तत्र प्राग्वाटान्वय	४	५९
नाइ कुंडु विहसंतो	५	१००	तत्र रैवतकाधीराः	७९	२८
जातः करिन्द्रोद्धुर	१७	२	तत्र लोलाकृति	५४	२७
जाना कृष्णपदात्	१३३	१२	तत्राऽऽत्मस्वामिनो	८१	२८
जाहू माऊ-साऊ	१७	६०	तत्रैक राणक	६६	२७
जिय तहिं मंडल	३	९९	तत्रैव वीरधवल	१७६	१६
जिचा न्छेष्टपतेर	३८	८४	तत्रैवाकारयद्	७६	२७
जिम जिम धायइ	३	१००	तसंभवविमुवा	२१	८९
जिमाद विजयसेनस्य	६	७८	तसत्यं कृतिमिर्	१०	३१
जीयामुः कवयो	८	१	तदन्तिके च नि.शेष	८६	२८
जीविउ ए सो	१७	१०३	तदन्दयाम्भोधि	३	२४
जुह्वन् पातरु	७०	३९	तदामज संयनि	६	२४
जैन धर्मपुरीचकार	२५	३६	तदिमं मौलियु मौलि	११८	१०
जेट्ट जोइउ	१४	९९	तदीये शिस्तर नेमि	८९	२८
जान-दर्शन-चारित्रं	९	९५	तन्नन्दनः कुमुद	१६	२५
ज्येष्ठः श्रेष्ठतमः	२८	८३	तम-सर्वान्निने	१९	२२
ज्युरु ऊडु	१६	१०५	तमहतमहं बद्धा	६९	६
जमि टमि ए	७	१०२	तमेरुदा करारोप	६४	३८
जिउ निधउ	९	१०१	तयोः प्रथमपुत्रो	८	५९
ज्दये मरि	७	१०१	तव वारं शनपत्रं	४७	८५

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
तमु मुह दंसयु	५	९९	तेज पाल पालित	१५	६०
तमु सिरि पहिलउ	६	१०४	तेज पाल सफुल	६५	६४
तमु सिरि सामिउ	४	९९	तेज पाल सचिगलिलो	२७	२५
तस्मात् कुमार.	२१	८३	तेज पाल ! वृपालवुर्य !	६६	३९
तस्मादक्रमल	८	३४	तेज पालयशो	७३	३९
तस्मादनतर	२६	६०	तेज पालस्य विष्णोश्च	९	५५
तस्मादभूदजयपाल	११	२४	तेज पालस्य विष्णोश्च	१६	६०
तस्मादभूद	१२	३५	तेज पालेन पुण्यार्थ	६०	६३
तस्मान्नैत्रमुधाञ्जन	३३	३	तेज स्फूर्जितदीप	२५	३
तस्माद् भस्मीकृत	३५	३	तेजपालि निम्बविउ	१७	१०१
तस्माद् बिस्मारित	१६	३५	तेजपालि गिरनार	९	९९
तस्मिन् फाञ्चनकोटिमि	२४	२३	तेजोवह्निहुताष्टदिग्	५१	५
तस्मै संयमिनामिनाय	५	८१	तेन भ्रातृयुगेन	६६	६४
तस्मै स्वस्ति चिर	५	७६-४	तेन मंत्रिद्वयेनाय	२९	६१
तस्य गर्भगृहोत्सङ्गे	४३	२६	तेषां युगेश्चर	७	९४
तस्य जगत्यां	५६	२७	तैस्तैर्येन जनाय	१६	३१
तस्य प्रिया प्रणय	२५	८९	तैस्त्रिभिः प्रथम	४३	८५
तस्य प्रिया मुद	११०	९	स्वप्नामि पापमाहार	१०	९५
तस्याऽऽजया	१४	७९	त्यागाराधिनि शपथे	१०३	२९
तस्यानुज	३१	९०	त्रिग चाचरि	३	१०४
तस्यानुजन्मा	५	२४	त्रिजगति यशस्तत्ते	३१	२०
तस्यानुजो विजयते	१३	६०	त्रिमुवनदेवी तस्य	५२	६३
तस्याऽभवनिर्मल	२२	२५	त्वत्कीर्तिग्योत्तमा	११	४२
तस्याऽभूतनया	९	७६-२	दत्ताल्लेकेऽर्थिलेके	१०९	९
तस्यैताऽऽपदिमो	७४	२७	देते चेतसि सम्मद	७१	३९
तहि नयरह उत्तर	१३	९९	दधेऽस्य वीरधरुल	६	४७
तहि पुरि सोहिउ	१०	९९	दन्ती धर्ममतङ्गजस्य	१५४	१४
तहि नयरह पूरय	११	९९	दयिता ललितादेवी	९	४५
तादृशम्पत्यतिकर	३४	३६	दयिता ललितादेवी	४४	६२
तादृशदानपरम्पराभि	२६	३६	दर्श दर्शमसद्य	६२	६
तीर्थेगा प्रणतन्द्र	१	५०	दस दिसि प	५	१०२
मुग्धेभमीम	४	७८	दानं दुर्गनवर्गसर्ग	२६	२५
तेज पाल इनि	६१	६३	दानानि तानि	१९	८३



श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
दायादा कुमुदावलिर्	७	२१ देशोऽरण्यप्रदेशो	८०	७
दारिद्र्यदुर्दम	४	९४ दोषोन्मुद्रणमुद्रितेऽपि	१६०	१४
दावद् ए दुक्खहं	४	१०२ द्वारे यत् किल	९८	२९
दास्यवर्त्तिन इवाऽऽस्य	५९	५ घञुक-ध्रुव-मटा	३४	६१
दिग्यात्रोत्सववीर	१२१	१० घनमनवरत	५८	८६
दिग्यात्रोत्सववीर	११	१८ घनु घनु विमलडि	९	१०४
दिग्यात्रोत्सववीर	३	५६ घनु मु धवलह	२	१००
दिद्वय छत्रसिल	२२	१०२ घन्यः स वीरधवल	२८	२५
दियाहि ए नर	११	१०३ धर्मव्यानमना	१२	९२
दिस(य ई) आय(प)मु	२०	१०५ धर्मविधाने सुवन	११	५९
दिसि उत्तर कसमीर	१	१०१ धर्मस्थानमिदं	८३	२८
दीपः स्फूर्जति	२६	२३ धर्मस्थानांकितामुर्वी	२४	६०
दीपः स्फूर्जति	४	४७ धर्माचिती रुक्ति	३४	९०
दीप्तं दिसि दिसि	१८	१०२ धवल धय ए	१०	१०२
दुर्गः स्वर्गगिरिः	४	२१ धवलसुत सुरहि	३३	१०७
दुर्गः स्वर्गगिरिः	५	५४ धात्रीधुरीण भुव	१५	२
दुविहि गुजरदेसे	१	१०० धान्नां धाम	७४	६
दुष्टारिकोटि	३४	८४ धाम्नि स्वर्धामगैलं	१२४	११
दुर् दुर्ललितेन	८२	७ धाराधीशपुरोधसा	२०	८३
द्वयः कस्यापि	२३	१९ धाराधीशे विन्ध्यवर्म	३६	८४
द्वयः कस्यापि	२	४१ धारावर्षमुतोऽयं	४०	६२
द्वयते मगिमौक्तिक	१४	३१ धीराः सत्त्वमुगन्ति	१	७६-१
दृष्ट्या वपुश्च	११	९८ न किं स हरिन्त्यता	८१	७
दृष्ट्या वपुश्च	११	५५ न कृतं सुदुर्ल	१	९५
देवः पङ्कजमूर्	३१	३३ नगराख्ये महास्थाने	४४	२६
देवः परं जिनवरो	१४	८९ नताक्षेमेदेपि	७९	७
देवः स वः	२	७८ नमस्त्ये निर्दृष्टाः	२५	२३
देव ! क्षप्रतिपन्थि	७	४० नमिवि चिरागउ	१०	१०४
देव स्वनांय ! कष्टं	२७	३२ नत्रारिन्दुमुत्सी	२१	२
देव स्वनांय ! कष्टं	९	५२ न यस्य लक्ष्मीपति	११	३१
देवि ! त्वद्भक्ति	८	९४ नरनारायणानन्दो	४०	९०
देवि ! प्रकाशयति	५	९४ न वदति परुषा	५७	८६
देवी सरोत्रासन	३९	६२ नागेन्द्रगच्छ	३२	९०

	खे०	ष्ट०		खे०	ष्ट०
नाम्न कति	१४	७६-२	परमपदपुराण	४	१
नामेयं नेमिनाथं च	३९	२६	परमेसर लिपेसरह	१	९९
नाथल्लग्नह	८	९९	परिवल्ल दल्ल	११	१०४
नितु नितु मुरसंघ	१४	१०५	पर्यणीवीदिसौ	३	७६
निबं शत्रुजयाद्रौ	१०	९८	पल्लव-कुल्ल	१९	१००
नियोगिनागेधु	१३	५०	पहिल्ल सांब	६	१०२
निर्गन्धप्रमे बोधाल्ल	४६	२६	पाण्डयः पासण्डिवेव	२६	३
निर्माण्याऽऽदिजिनेन्द्र	५	७६-२	पातालमूले पिहितं	४३	३७
निवसरं विवु	३२	१०७	पत्ताले बल्लिज	३७	३७
नीजर ए चमर	१९	१०३	पापं पङ्कजयन्	२	१
नीना यदा विपम	१२३	१०	पीनग्रीर्मुजयन्मगो	२२	२
नीलनीरदकदम्बर	१२	६०	पीयूषस्त्य च	१	४६
शुक्लनवा प्योमरहे	१७७	१६	पीयूषादपि पेशला	१	१७
नृणां यपद्रवयोरु	१५६	१४	पीयूषैः प्रणता	६५	८७
नेत्राणामधुताञ्जनं	२७	२०	पुण्वं प्रतार्पसिहस्य	५९	२७
नेवप्यैरतिधानवन्	८	९३	पुण्यश्रीभुवि	९	५७
नैवोत्तसंभुट	८	८८	पुण्यस्य पापपटली	७	८८
नो चेद् यथांति	१७	८९	पुण्यायाञ्जनायांसिहस्य	६४	२७
न्यस्यावस्यं नितिसि	४४	४	पुण्यासामः सकल	३३	३३
न्यास ध्यातनुनां	३	५२	पुण्ये गिरीशसिहसि	१	९४
नृपग-रिजेवण	११	१०१	पुण्यैरहेतू	६	१
पधानमेको न	२०	६०	पुस्त कालमेक्य	९४	२८
पद्य पौषशालाध	६३	२७	पुरा पादेन दैत्योद्	८	४५
पद्म मयमि	८	१०१	पुरुष पण्डित	८	१०४
पगमेवि सामिणि	१	१०४	पुरोत्तमे स्तम्भनका	३८	२६
पनीं तराणाकला	४	७६-१	पुण्यदन्ताविधौ	१३	९८
पपुर्नर्दनामिव	२०	२५	पुण्डरीक गूर्जर	१५	८९
पदं विवयसाम्पदा	६६	६	पुनर्हि मागिक	४८	१०८
पद्मा पद्मपाप्य	४३	४	पुन्यमेव सचिवः स	९	५९
पद्माभिरामदृष्टेन	१४२	१२	पुण्ये कायनदिकं	१६९	१५
पद्माभिरामदृष्टेन	१८	१९	पुनर्हि ए मुनिवज	१५	१०३
पद्मा पद्मादर्शना	१५२	१३	पुगेन धामय	७	४९
परमप्रेषदभेनु	४	९५	पुष्टपाउत्त	६	९९

श्लो०	पृ०	श्लो०	पृ०
पौषशालाद्वितयं	३७	वाहिरी गढ	१२ ९९
प्रणमदमरप्रेङ्खन्	१	विद्वौजसि गते	४७ ४
प्रतापतपनो यस्य	१०	विभ्राणं परितो	३४ २६
प्रतापस्याद्वैतं	८	वीजउ नेमिहिं	१७ १०५
प्रतिदिनमपि रौद्रेर्	८५	बोलावी संघ	२० १००
प्रतिष्ठाय च मन्त्रांशस्	१७१	मग्नः शङ्ख इति	१४० १२
प्रतप्ता नीतीना	१३६	मर्त्ता भोगमृतां	१० ४०
प्रत्याकारच्छलगुरुदरी	९०	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	१३४ १२
प्रयादा प्रसरत्	३	मर्त्तुर्वपमयं विधाय	९ १७
प्रथमं धनप्रवाहैर्	१५	भवति हि विभवो	१६ ४३
प्रथमादर्शे	१५	भवदमुजमुजङ्गोऽसौ	३ ४०
प्रद्युम्नगिह्वरे सोम	९१	माग्यम् किमसावस्तु	१८ २२
प्रमूतमूतराजस्य	६०	मात्स्यप्रभावमधुराय	३५ ९०
प्रवर्त्तमानेऽत्र	६६	मित्रा भानुं	४ ४५
प्रसादाद्वादिनाथस्य	१७९	मित्रा भानुं	१७ ८२
प्राग्वाटगोत्रतिलकः	३	म्वन्लमस्तदनु	१० ३५
प्राग्वाटवंशव्यञ्ज	१८	मूमारोद्धृतिधुर्य	३५ ३६
प्राग्वाटान्वयमर्दनं	१	मूमीमारमथो बभार	३१ ३६
प्राग्वाटान्वयमर्डनै	५०	भूयांस एव	१४ २५
प्राग्वाटान्वयवारिधौ	५३	भूपा भूवोऽग्नहिल	११ २
प्रासादैर्गङ्गा	१	भृगुनगरमौलि	४२ २६
प्रीतो बलापथमुखि	९५	भेजे तेजोगगन	२७ ३
प्रेर्यास्थैर्यं प्रभुप्रीति	२९	भैमीव नैषध	४८ ३७
प्रेयस्यपि न्यायविदा	९	भोगन्निस्त्वदमुत्रेन	९ ४०
बदः सिन्धुवसुन्धरा	२२	भ्रमन्ती मृदामन्याय	१३ २२
बन्धुः कनीयान्	१२	घातः । पातकिनां किमत्र	३ ४५
बभूव गोत्रैकगुरु	१५०	भ्राना वातायन इव	१०४ ९
बलि-कर्ग-दुर्माचि	१२	भ्रमद्भिप्रतिविम्ब	९६ ८
बहुं धायरिहिं	४०	भैरि आहर	२३ १०६
बाढे प्रौढयनि	९	मज्जन्तीमवनी	१६३ १५
बाणे मीवांगमोष्टी	३२	मज्जन्तीमवनी	२१ १९
बार संवच्छरि	३९	मगद्भयगवग	६ १००
बाहः धीमूतराजोऽय	२९	मत्रिकृष्णय्या यस्य	४१ ३७

मन्थोर्व्यधिन	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
मन्दच्छदसि	२५	८३	यः [क्ष]ांतिमा	२	५९
मन्येऽस्मिन्नमृता	५१	८५	यः प्रत्यर्थिक्षितिपति	१३८	१२
मन्त्रदेव इति	७०	२७	यः शत्रुञ्जयशेखरं	५६	३८
मन्त्रदेवसचिवस्य	११४	१०	यः शम्भुदिम्बरे	९२	२८
ममृणधुसृणपद्मे	५८	६३	यः शैलाने	४५	६२
महतद् तेजपाल	५	१७	यः शौचसयमपटुः	३२	८४
महतिर्हि जायति	२६	१०६	यः सुफल्मेदुरामोदे	५५	२७
महिर्मण्डलि किय	१८	१०५	यः स्वीयमातृ	३७	९०
माधुर्यधुर्यमधुलोम	१३	१०५	यच्चाणक्याऽमरगुरु	४८	६२
मा भूमदसुबनेऽपि	१०२	९	यत्कीर्तिप्रसरेः	१२२	१०
मा भूमदसुबनेऽपि	१४५	१३	यत्कीर्तिः स्वैर	१३१	११
मालवमंडल	१९	१९	यत्कीर्तिः स्वैर	१४	१८
मालिन्यं सुमुचे	१०	१००	यत्खट्वाक्षत	८८	८
सुसुलितकमलोदय	१४४	१३	यत्खट्वाक्षत	७५	७
सुखामयं शरीरं	१२	४२	यत्खट्वाक्षत	९	३५
सुक्खा विप्रकरा	२२	६०	यत्पदाम्बुजयुगं	९३	८
सुखानि प्रसभं	४१	६२	यत्पदाम्बुजयुगं	३६	४
सूरति यपु	१	५६	यत्पदाम्बुजयुगं	९	८२
सूर्यया विहितः	४४	१०७	यत्पदाम्बुजयुगं	१७	३५
सूर्यानामिह वृष्टः	५	९५	यत्पदाम्बुजयुगं	३२	३६
सूत्रं कर्तव्यतातः	६४	६४	यत्पदाम्बुजयुगं	९४	८
सूत्रग पायारपर	७०	६	यत्पदाम्बुजयुगं	१४	३५
सूत्रयुद्धगिरि	२८	१०६	यत्पदाम्बुजयुगं	१४६	१३
मेरुर्मे रचिमाननोनि	१२७	११	यत्पदाम्बुजयुगं	३०	३३
मेरुर्मे रचिमाननोनि	३	९३	यत्पदाम्बुजयुगं	८९	८
मेरुर्मे रचिमाननोनि	३०	३	यत्पदाम्बुजयुगं	२०	२२
मेरुर्मे रचिमाननोनि	७५	३९	यत्पदाम्बुजयुगं	२	९४
मेरुर्मे रचिमाननोनि	४१	४	यत्पदाम्बुजयुगं	७	९५
मेरुर्मे रचिमाननोनि	२२	८९	यत्पदाम्बुजयुगं	६२	३८
मेरुर्मे रचिमाननोनि	२	४७	यत्पदाम्बुजयुगं	४१	२६
मेरुर्मे रचिमाननोनि	१२	८२	यत्पदाम्बुजयुगं	१०८	९
मेरुर्मे रचिमाननोनि	३९	८४	यत्पदाम्बुजयुगं	१५९	१४
मेरुर्मे रचिमाननोनि	३६	९०	यत्पदाम्बुजयुगं	९५	८

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
यस्मिन् घर्म	२३	२३	येषां मूर्तिरसौ	६	९३
यस्मिन्नुत्तर	५०	५	येषामशेषाविपत्तिः	६	८१
यस्मिन् पश्यति	६७	६	यैर्नद्धाप्रतिचला	१५	१८
यस्मिन् विश्वजनीन	१३	३१	रंगिहि ए रमइ	२०	१०३
यस्मै रश्मिमरो	२	३४	रक्षादक्षो दिवि	४	३४
यस्य न्यक्षितचाप	८६	७	रक्ष्यां रक्षितुमक्षमे	४८	४
यस्य भूः किमसा	३	५४	रणे वितरणे चात्र	१४	२२
यस्य सधनि सदा	५८	५	रक्तः सद्रतिमावमात्रि	११५	१०
यस्याग्रजो	३	९७	रक्तः सद्रतिमावमात्रि	५०	५७
य(त)स्याममूः समभवद्	४	२४	रादमई मणहरण	१४	१०१
यस्याऽऽजनं	२८	८९	राका ताण्डवितेन्दु	८	३०
यस्यानीरुवधूमि	५	९३	राजा चामुण्डराज	१९	२
यस्या मुने	२६	८९	राजा श्रीवनराज	९	२
यस्यादीर्घनिपादितो	१६	८२	राजु करइ तह	४	१०४
यस्यासिरम्भोद्	३८	३७	राहौ गृहीतोगकरे	३१	८४
यस्योपदेश	११	७९	रिपुर्वनिग्राम्भो	७२	६
यस्योर्वीतिलकस्य	७	३०	रिपुर्ममदिरु	४६	१०७
यापवग्गुपगोन	७२	३९	रूपा सरिसड	२९	१०६
यात्रापर्वणि रैवत	१४८	१३	रोद कन्दररवि	३५	६१
या प्रार्थना याचरु	२९	२०	रोदःक्षीमेदनीरैः	२९	३
या श्रीः स्वयं	१०	४२	लक्ष्मी धर्माङ्गयोगेन	१५	७६-३
युक्तः.....	२	७६	लक्ष्मीन्याचक्षेत्र	८	५५
युद्धं वारिधिरप	२३	३२	लक्ष्मामादृष्टि	१५	४२
युद्धपर्वणि कदाऽपि	९१	८	लक्ष्मा मानुषतन्म	१	९१
युद्धपर्वणि कदाऽपि	६	१७	लभन्ते लोकनः	६१	८६
युद्धोद्गमरमण्डलाम	२८	३	लज्जितादेवोनाम्ना	१०	५५
येन व्यधान्यत	५८	३८	लज्जितादेव्याः पन्थाः	७२	२७
येन स्तम्भनकापि	१७४	१६	लवणप्रसादसुत्र	७	४५
येनाकारि तनोनिकारि	५५	३८	लान्न्यन्वबहू	१२५	११
येनऽऽमनः स्वपन्थाद्य	८७	२८	लान्न्यसिद्धमनय	५५	६३
येनाऽत्रैर नियधुम्बि	६९	२७	लान्न्याद्ग इति	११३	९
येनाग्निर्गन्निर्गन्मः	११	२२	लान्न्याद्ग इति	४	५७
येनोद्भवन्तिगिरि	६०	३८	लान्न्याद्गन्तं च	५	७८

	श्लो०	श्ल०		श्लो०	श्ल०
छात्रासंस्तरण च	७	१	विद्या यथापि वैद्विही	९	४९
दृष्टिगः प्रथमस्तेषु	२२	१६	विधेते ह्यधिविधौ	५०	३७
वेदे सरस्वती	१	५९	विधिदद् वाचनेयं	१०	८२
वेदग्रीमौलिमिच्छं	२४	२५	विधुधै पयोधि	१४	५०
वेदोऽयं प्रथिनोऽस्ति	९८	८	विमुक्त-विक्रम	२	५४
वेदो विचित्रितयविदितः	५	३४	विमुक्त-विक्रम	५	९८
वदसाहो पुत्रिमह	१०	१०१	विमलिहं ठमियड	७	१०४
वक्त्रं निर्वासनाज्ञा	११	५३	विरचयानि वस्तुपाल	१४	६०
वक्त्रं ए सतत	२	१०२	विद्वत्ताया वाद्यं	४९	५
वदनं वस्तुपालस्य	३	७६-४	विद्योन्म दुष्कलमयेन	३३	८४
वरदे ! कल्पयन्ति ।	९	९४	विदोपके रैवतकस्य	८५	२८
वर्षायाद् परितुष्ट	३३	२०	विद्यस्मिन्नपि वस्तुपाल ।	१७	२२
वर्षायां पुष्पटम्बधी	७१	२७	विद्यस्मिन्नपि वस्तुपाल	२१	३५
वसिष्ठानिच्छाया	४८	८५	विद्यान्न्दर सदा	१०५	९
वसुदेवस्यैव सुत	४२	६२	विद्यान्न्दर सदा	१	७६
वस्तुपालि वर	१५	१०१	विधेऽस्मिन् कस्य	७	५२
वस्तुपालु वसु	१२	१०५	विधेऽस्मिन् क्रिड	३८	९७
वस्तुपालप्रतिहारण	१	५८	वीर दक्षिणत	७५	२७
वस्त्रापये जगतां	९३	२८	वीरवीरिपान्नि	५३	३८
वादेवतां यदि	२	८८	वेद्युत बन्धु	१७	९९
वादेवताचरण	४०	३७	वैद्युत्यं विगताश्रयं	५२	८६
वादेवतावदन	१९	७६-३	वैर विभूति-भाग्यो	३	४७
वादेवतावमन्तर्य	४६	८५	व्यवयन अवसिह	१९	३५
वादेवतासद	४२	३७	व्याघ्रोन्म(पन्थ)	४५	२६
वात्राभानिवात्रि	४५	४	व्याघ्रान् पीपपरालम्बा	१७३	१५
वाप्यं तस्य	३६	२६	व्यातत्तवमस्तु	१६७	१५
वसिष्ठ साधुपदेन	९	९८	व्योमो सङ्गरुध	२९	३३
वाहनं वागुपदेन	४	५२	वायो वागमनवागानि	६७	६४
वाहनं वागुपदेन	४	३०	वाणि कात्रि न	५	७९
वादेवता वन्द्येन	२	४६	वादे वन्द्येवन्द्ये	१३	४०
वादेवता वन्द्येन	२	५५	वादे वागदेव	२५	३९
वादेवता वन्द्येन	२	५८	वादे वागदेव	१८	४३
विगीतोऽयं वस्य	३६	३६	वदं वागदेव	५२	५

श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
शङ्खं शार्ङ्गधरस्य	७	श्रीनेमिखिजगद्भर्तु	३	४७
शमुन्नयनगोस्तक्षे	७३	श्रीनेमिखिजगद्भर्तु	३	५५
शमुन्नये भवपयोधि	१६५	श्रीनेमिखिजगद्भर्तु	३	५८
शमुश्रेणीमाल	३६	श्रीप्राग्वाटकुलञ्ज	२	२१
शास्त्रार्थवारिसर	६	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	६३	६४
शिन्यस्तस्य च	१३	श्रीमद्गुर्जरचक्रवर्ति	२	७६-१
शीनांशुप्रतिवीर	१२	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	२५	३२
शुभांशुसुवि	३७	श्रीमन्त्रीधरवस्तुपाल	१०	५२
शय्येषु त्रिपतां पुरेषु	५	श्रीमन्लदेव इति	४९	३७
शरो रणेषु	१३	श्रीमल्लदेवः श्रित	१०	५९
शैवेयविधायिनीमपि	५	श्रीमन्लदेवपौत्री	१०	७६-२
शोमामिमूत	१	श्रीमद्विजयसेनस्य	१२	७९
शोपः सैप जवाद्	४६	श्रीमांस्ततोऽन्ननि	१५५	१४
शौगडीरोऽपि	२	श्रीमालवेन्द्रमुमटेन	१७५	१६
शौर्यगोर्भरिचतां	८	श्रीमुञ्जनामा	१३	८२
श्रावे हंडावडा	४१	श्रीयुगादिप्रभोर्	३३	२६
श्रियं चौखुयानां	१३	श्रीरङ्गमूर्धश	९	८८
श्रिया प्रीतया	७	श्रीरैवते निर्मित	७	७६-२
श्रीकुमारविहारेऽन	६७	श्रीवर्धमानः शमिनां	२	७९
श्रीक्षेमराज इति	१८	श्रीवस्तुपाल ! कञ्जिकाल	२२	१९
श्रीगर्वाप्पमि	७	श्रीवस्तुपाल ! कलिकाल	३	४१
श्रीमधंङ[प]संभवः	६२	श्रीवस्तुपाल ! क्षितिपालमुद्रा	२८	२०
श्रीनेनशासनयनी	७०	श्रीवस्तुपाल ! जितपाल	१४	४२
श्रीनिजपालजनयस्य	५६	श्रीवस्तुपाल ! तप	७६	३९
श्रीद-श्रीदयितेश्वर	२	श्रीवस्तुपालानुवः	४६	६२
श्रीसुराजः प्रथमं	३३	श्रीवस्तुपाल ! मवना	१६	५०
श्रीनागेश्चमुनीन्द्र	१६	श्रीवस्तुपालन्मन्त्रीदोर्	३	१७
श्रीनागेश्चकुले	४	श्रीवस्तुपालव्यशसा	३५	३३
श्रीनामंय ! मनोरथाः	२	श्रीवस्तुपाल उ संप्रति	४	७६-४
श्रीनेमिर्गर्भनाथ	३	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	२४	१९
श्रीनेमिरसिकायाश्च	७४	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	३	३०
श्रीनेमिरसिकायाश्च	३	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	८	४२
श्रीनेमिखिजगद्भर्तु	१	श्रीवस्तुपालसचिवस्य	११	७६-२

श्रीवस्तुपालस्य	श्लो०	पृ०	श्रीवस्तुपालस्य	श्लो०	पृ०
श्रीवाससद्मकर	८०	२८	स एष नि शेष	३६	३३
श्रीवासान्बुजमानन	५५	८६	सद्ग्राम क्रतुभूमि	२०	३२
श्रीवासधवलमूर्तिर	१८	८९	सद्ग्रामसिंहप्रतना	१	४१
श्रीवासशासन	१६	१८	सहस्यादमुत	४	७८
श्रीवैष्णवाथगर्भ	४९	२६	सहोऽधिरोहनिह	१४७	१३
श्रीवैष्णवाथगर्भ	३	७९	सचिवप्रवर कश्चित्	३९	३७
श्रीवैष्णवाथगर्भ	५०	२६	सत्कर्मनिर्माणरते	२७	८३
श्रीगजुजयशृङ्ग	४८	२६	सत्तीर्थस्य मुराश्रितेन	२	८१
श्रीगजुजयशृङ्ग	५७	३८	सय जुवे	५९	८६
श्रीसहस्रार्धसचिवे	३९	९०	सयाभिधस्तदनुजो	२९	८९
श्रीसुमतपदाम्भोज	१०	९३	सदा यदाशी	१८	८२
श्रीसोमेश्वरदेवश्	७७	३९	सद्वशाजतेन	१४	८२
श्रीसोमेश्वरदेवस्य	७३	६५	सन्तापशान्ति	१५	८२
श्रीसोलशर्मा विमले	३५	८५	सततन्तुप्रपञ्चेन	१८	३५
श्रीचैति मुदितहृदय	७	८१	ससलोकचरी	४७	३७
श्रेय श्रीमुनिसुमत	११९	१०	स मङ्गल वो	१	२४
श्रेय श्रेष्ठवशिष्ठ	१	३४	समजनि जिनसेवा	१०१	८
श्रेय स वीरधवल	३२	६१	समुद्विजय सिवदेवि	१३	१०१
श्रेय सिन्धुरमुनया	२१	३२	समृद्ध मूलयितु	२	२४
संपादितु संघेण	३२	३	सम्पूर्ण भुवने	५४	३८
संघु रहित	३	१०१	सयल विति	१२	१०१
संज्ञे वृषतिशतै	४३	१०७	सरस्वतीकिलिङ्ग	२५	२५
सताप यप्रतापस्य	५६	५	सर्वत्र भ्रान्तिमती	११	५०
सन्दिग्ध तव वस्तुपाल !	७१	६	सर्वत्र धर्तता कीर्ति	६८	६४
समेतादिशिर	२	४९	स व श्रेय शत्रुजय	१	२१
संयोजितन मणिमण्डित	१	५५	स वैशुष्ट कुण्ड	१३	२२
सर्ल नानामनुनटवन	१४३	१३	स श्रीजिनाधिपति	५	२१
संसारध्वजहारतो	७३	६	स श्रीजिनाधिपति	१	५४
संसारसर्वस्वमिदं	५	९१	स श्रीमानुदयाचलो	१०३	९
संसारार्तिनपो	३	६७	स श्रीतेज पाल	६	४५
संसार सुम्भु	४	९३	II श्रीतेज पाल	४७	६२
संग्रहमाचरित	१०	९२	सा कुत्रापि युगत्रयी	५	४९
	२४	८९	साशाद ब्रह्म परं	१९	३१



	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
साक्षाद् ब्रह्म पुरं	१२	५३	सोऽयं प्रख्यातकीर्तिः	१२०	१०
सानिधि अंवाद्य	३५	१०७	सोऽयं मन्त्री	६	५४
सामन्तसिंहसमिति	३८	६२	सोऽयं सहवदेवी	१२	९८
सामियनेमिकुमार	७	१००	सोलः सलील	८	८२
सामियसामल	४	१०१	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	४६
साम्राज्य चतुर्णवी	७	९३	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५३
सिंदुवार-मंदार	२१	१०२	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५५
सिद्धक्षेत्रमिति	२	६७	स्तम्भतीर्थेऽत्र	१	५७
सिद्धान्तोपनिष	७	७९	स्तम्भतीर्थे नगोत्तुङ्गे	५३	२७
सौसमि सिबलि	१८	९९	स्तम्भनपुर-रैवतगिरि	१६४	१५
सीताकुलिसरो	४६	३७	स्तोत्रयः खल	५	५२
सुतस्तस्मादासीद्	२७	६०	स्तोत्रं नामिनेन्द्र	७७	२८
सुमकर ए ठविड	३	१०२	स्तोत्रं श्रोत्रसायनं	१०	९४
सुरबीणां नेत्रं	१३	३५	स्थाने स्थाने	३०	८४
सुनतक्रमनमस्कृति	६५	३८	स्थापयन् सिंहलप्राग	४७	२६
सूनुस्तदीयोऽजनि	७	२४	स्फूर्जद्गूर्जरवेत्स	१४	२
सूनुस्तयोरजनि	२७	८९	स्वगुल्गुरु-----	१८	७६-३
सूरो रणेपु	४	१७	स्वक्रान्तसिन्धुपति	२४	३
सूर्याचन्द्रमसी	१०	२	स्वच्छन्दं हरिशङ्करः	६	२१
सेषं सेषं स खल	३४	३३	स्वस्ति श्रीबलये	१२	३१
सेनानीर्विदधे	३५	८४	स्वस्ति श्रीनलये	१	५१
सेयं पुरे धवलके	२१	८०	स्वस्ति श्रीवल्लिसालाय	१	३०
सेगलन्ति पयः समुद्रति	३७	४	स्वस्ति श्रीवस्तुपालाय	१	४०
सेयालन्ति पयः समुद्रति	८	१७	स्वस्ति श्रीव्योमदेशाय	७४	३९
सैन्यप्ररुम्पिनधरा	५७	५	स्वयं विनम्रेषु परेषु	११	३५
सोऽपि बळे	१२	५०	स्वर्गं यद्गुरुनैय	६१	३८
सोमनदेउ सुतहारो	३०	१०६	स्ववंश्यमूर्तिभिः	९६	२८
सोमामियस्तदनुजः	१२	८८	स्वविरोधिनीं शुचिर्	५१	२७
सोमेश्वरदेव इति	४२	८५	स्वद्वीयः श्रयति स्म	२३	२
सोमेश्वरदेवकवे	४४	८५	स्वामिन् ! मृषुहरे	६	९१
सोऽयं तस्य	६	५७	स्वैर भ्राम्यतु नाम	२४	३२
सोऽयं धानी	४०	९७	स्वैरेव प्रहर्तैर्	२४	३६
सोऽयं पुनर्दाशरथिः	३७	६१			

	श्लो०	पृ०		श्लो०	पृ०
हंहो रोहण ! रोहति	२६	३२	हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	५३
हकारहु वर	३८	१०७	हर्षादसौ हसतु	२०	८९
हत्वाऽपि कान्तिलव	११	८८	हस्ताग्रन्यस्त	११७	१०
हन्तुं जनस्य दुरितं	६	९४	हस्ताग्रन्यस्त	८	५७
हरसयतिग	२	१०१	हुत्वा सदध्वरचितेषु	२३	८९
हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	५	हतनयनमुखैर्	३	८१
हरिमण्डप-नन्दीश्वर	२	४७	दृष्टोऽमृतमुसलध्वज	५५	५

## विशेषनामानुक्रमणिका ।

	पृष्ठ		पृष्ठ
अंबय (मंजो)	१००	अम्बिका मयन (देवतामन्दिर)	२८
अङ्ग (रूपविशेष)	५	अरसीह (ग्रामाट ना० महा० वीरदेवपुन)	६६
अचलेश्वर (शिवमन्दिर)	६७	अर्कपालित (ग्राम)	१५
अचलेश्वर (अचलेश्वर, शिवमन्दिर)	१०४	अर्कपालितक	२७, ३८
अजयपाल (चौलुक्यवृत्ति)	६, २४, ३६, ८४	अर्जुनमहो (स्थलविशेष)	६
अजयसिंह	२७	अर्णोराज (छायालक्षणविनि)	५, ३६
अजित (अध्यापित)	१०१	अर्णोराज (चौलुक्यवृत्ति)	६७, २५, ३६, ६०
अजित (अजित, संपादित)	१०१	अर्जुन (पर्वत)	६१, ६२, ६७
अज्ञाय (अज्ञायपर्वत)	१०१, १०२	अर्जुनगिरि	७६-१
अनुपमसर (अनुपमा सरोवर)	१०५	अर्जुनचल	२६, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६५, ६७, ६८, ७२, ७३, ७६-१
अणहिलपत्तन (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	७५	अचलोकनाशिर (रत्नगिरि शिखरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
अणहिलपाटक (अणहिलपुर, गूर्जर राजधानी)	२, ६५, ८८, ९६	अचलोरणसिहर (अचलोकनाशिर)	१०२
अणहिलपुर (गूर्जर राजधानी)	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६५, ७५, ७६-१, ७६-३	अश्वराज (आशाराज, मनी)	१०१८, २१, ३७, ५७, ५९, ६०, ६४, ७६-२, ८६, ८९
अणहिलपुर (अणहिलपुर)	६८, ६९	अश्वयत्तारतीय	१५
अनुपमदेवी (तेजमालपत्नी)	२८, ६३, ६५, ७१, ७४, ७६-१, ७६-२	अष्टापद्मासाह (स्थापत्यविशेष)	५८
अनुपम सरोवर	४७	अष्टापद् महातीय (स्थलविशेष)	४४, ४६, ४९, ५१, ५४, ५६
अनुपमा (अनुपमदेवी, तेजमालपत्नी)	६३	अष्टापदचौल (पर्वत)	५१
अनुपमासर (सरोवर)	२८	अष्टापदोद्धार (विनमन्दिर)	२७
अन्ध (रूपविशेष)	५	अनगराज (अश्वराज)	१०७
अमरकुमार (साहु राहल्लुग)	६९	अह्मणादेवि (पूर्वविहारी)	६३
अमरसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४	आमिग (ग्रामाटना० महाजन)	६६
अमरचन्द्रसूरि	१३, ६५, ७६-३, ७९, ९०	आंनुय (ग्रामाट ना० भे०)	६७
अमरेश्वर मण्डप (इन्द्रमण्डप, स्थापत्यविशेष)	१५	आखण्डलमण्डप (इन्द्रमण्डप)	२८
अम्बड (राणक)	२७	आखीग्राम	६८
„ (महामन्त्री)	३८	आमिग (विद्वान्)	८३
„ (मण्डलेश्वर)	३९	आणंदसूरि (नागेन्द्रगच्छीय आनन्दसूरि)	४५, ४८, ५१, ५४, ५६, ६५
अम्बाशिर (रत्नगिरि शिखरविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	आनंदसूरि (आणंदसूरि)	२०, ४६, ६४, ७६-३, ७९
		आनन्दचन्द्रसूरि	१३



	४४		४४
कान्दडदेव ( राजकुमार )	६७	राम्यसीह ( प्रा० ज्ञा० थे०, देहणपुत्र )	६६
कामंदकि ( नीतिशास्त्रकार )	६३	खेडा ( साहु, बरहुडिया )	६८
कायस्थ ( वंश ) ४६, ४७, ५०, ५३ ५५ ५७, ७६-३, ९६		गउरदेवि ( दणसीदमुता )	७२
कालमेघ ( क्षेत्रपाल )	२८	गङ्गा ( नदी )	८४
कालमेघतर ( स्थानविशेष )	१००	गयंद ( कुट )	१०२
कालिदास ( कवि )	२०	गया ( तीर्थ )	८४
काल्हण ( ओइमवाल्ला० थे० )	६७	गाभा ( ग्रामाटसीय )	६३
कासहद ( ग्राम )	२७, ६६	„ ( प्रा० ज्ञा० ठुर )	६५
काँर ( उपविशेष )	३, ६	गाजण ( श्रीमाल शा० )	६६
कासरडली ( ग्राम )	६६	गाणडलि ( ग्राम )	७६-३
कुङ्कण ( देश )	३६	गाणेभरदेव ( जिनमंदिर )	७६-३
कुमारविधि ( कुमारदेवी आचारारम्भणी )	१०७	गिरनार पर्वत )	९९, १००, १०२
कुमारपाल ( कुमारपाल, राजा )	१००	गुज्जर ( देश )	१००
कुमारविहार ( जिनमंदिर )	६८	गुणचंद्र ( प्रा० ज्ञा० थे०, घीरणपुत्र )	६६
कुमारसरोवर	९९	„ ( श्रीमाल ज्ञा० थे० )	६६
कुमारसिंह ( घनधार )	७६-३	गुणपाल ( भाण्डगारिक )	७६-३
कुमार ( कुमारसर्मा, विद्वान् )	८३, ८४, ८५, ८७	गुरजर ( देश )	९९, १००
कुमार देवी { ( आगाराज पत्नी ) २५, ३७		गुर्जर ( देश )	७६-१ ८२ ८७
{ ( ठडुराणी, आगाराज पत्नी ) ४४,		गुर्जेभर पुरोहित ( सोमेश्वरदेव )	४५, ५०
४६, ४८ ५१, ५३, ५५, ५९,		गुलेचा गोत्रविशेष )	८१
६५, ७२, ७३, ७४, ७५,		गुगलिया { ( ज्ञातिविशेष )	१०४, १०६
७६-२, ७६-३, ७६-४, ८९		गुगुलिया }	
कुमारपालदेव ( चौउपमन्युपति )	५, ६, २४, ३६,	गुर्जर ( देश )	१०४
	६१, ८४	गुजरात ( देश )	१०४
कुमारविहार ( जिनमंदिर )	२७, ६९	गुर्जर ( देश )	२२, ३७, ६२, ८८, ८९, ९०, ९२, ९४
कुमारसिंह ( घनधार )	४६, ५५, ५८	गुर्जरकर्णिका ( गुर्जर राजधानी )	१५
कुव ( उपविशेष )	५६	[ गुर्जे ] रत्ना ( मङ्गल )	६५
कुलधर ( श्रीमाल ज्ञा०, बयडरापुत्र )	६६	गुर्जरमङ्गल	४४, ४६ ५१, ५४ ५६
कुलराज ( परमार नृपति )	६२	गुर्जरराजधानी ( अणहित पाटक )	२, ३७
कुली ( आगाराज भगिनी )	७६-२	गोगस्थान ( ग्राम )	८४
कुल्लण ( घनधार )	६५	गोसल ( प्रा० ज्ञा० थे० )	६६
कोङ्कण ( देश )	६१	„ ( ओइस० ज्ञा० थे० )	६७
कोला ( ग्रामाट ज्ञा० थे० )	६६	„ ( साहु बरहुडिया )	६८
कौङ्कण ( कुङ्कणपति रुप )	८४	गौड ( उपविशेष )	५
कौङ्कणपति ( उपविशेष )	६	चंडप ( भत्री )	८, २१, २५, २८, ३७, ३९, ४०
कौङ्कणी ( स्त्रीविशेष )	६	चंडप ( भत्री, ठुर )	४४, ५२, ६४, ६५, ६९, ७०,
कौटिल्य ( चाणक्य )	७६-४	७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१,	
क्षेमराज ( चाणक्य रुप )	२	७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	
खैमायति ( नगरी )	१०६	चंडपाल ( चण्ड )	४६, ४८, ५१, ५३ ५५
खांरण ( प्रा० ज्ञा० थे०, जेगणुन )	६६	चंडप्रसाद ( भत्री, चण्डपुन )	८, २१, २५, २८, ३७
चीम्यसिंह ( प्रा० ज्ञा० ठुर )	६५		

	पृष्ठ		पृष्ठ
चंद्रप्रसाद (मन्त्री, ठगुर)	५४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६, ५९, ६४, ६५, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	जयसिंहदेव (चौककरूपति)	४, २४, ३५
चंडेश (चरण)	७५	जयसिंहसूरि (वनि, जैनाचार्य)	३८, ३९
चण्डेश्वर (सुनवार)	६५	जयदिव्य (रूपविशेष)	७६-४
चंद्रावती (पुर, पुरी, नगरी)	७, ६३, ६५, ६७, १०४, १०५	जसकर (श्रा० शा० थे०)	६७
चंडावलि (चन्द्रावती नगरी)	१०८	जसहय (श्रा० शा० थे०)	६६
चाणन्य (कौटिल्य)	६२, ६३	जसदेव (खोइसवाल शा० थे०)	६७
चान्द्र कुल (गच्छ)	८०	जसरा (भीमाल शा० थे०, आम्बुयपुत्र)	६६
चापलदेवी (मह, चणपपत्नी)	७४	जसवीर (शम्भाट शा० थे०)	६६
चापोत्कट (राजवश)	२	जाह्नल (देव)	५, ६
चामुण्डराज (चापोत्कट रूप)	२	जाह्नली (बोविशेष)	६
चामुण्डराज (चौलस्यनृपति)	३, २४, ३४, ८२	जाला (भीमाल शा० थे०, जिणदेवपुत्र)	६६
चारोप (ग्राम)	६९	जालू (वस्तुपाल तेजपालभगिनी)	६०
चाहिणि (साहु जिणचक्रभार्या)	६९	जावडि (प्रागाटवसीय)	१५
चौलुक्य (चौलुक्य, राजवश)	२४, ३६, ५९, ६०, ६५, ७६-४, ८३, ८४, ९३	जावालिपुर	६८, ६९
चीड (रूपविशेष)	५	जिणचंद्र (साहु राहवपुत्र)	६९
चौलुक्य (राजवश)	२, ६, १५, ३४, ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६, ६०, ६१, ६४, ६५, ८२, ८३, ९७	जिणदेव (भीमाल शा० थे०)	६६
चौलुक्यपुर (भणहिलपुर)	२६	" (श्रा० शा० थे०, पाहुपुत्र)	६७
जगदेव (भीमाल शा० थे०, आसलपुत्र)	६३	जिणदेवसूरि (आचार्य)	९६
जगसीह (शम्भाट, ठगुर)	६५	जीदा (शम्भाट भेरी)	६६
" (ओइस० शा० महा०, आषोपनपुत्र)	६६	जेगण (श्रा० शा० थे०, जगहपुत्र)	६३
जग, (प्रागाट, शा० थे०, जगवीरपुत्र)	६६	जेजा (श्रा० शा० थे०)	६६
जहल (रूपविशेष)	६	जेनदेवी (वीरचवलपत्नी)	१६
जयतसिंह (वस्तुपालपुत्र)	४५, ४६, ४७, ५१, ५३, ५६, ६२	जैत्रसिंह (जयतसिंह, वस्तुपालपुत्र)	५५, ५७, ६२, ६४, ७६-२, ९८
" (कायस्थ)	९६	" (धुव, कायस्थ)	४६, ५३, ५५, ५७, ७६-३
जयतलदेवी (वीरचवलपत्नी)	२६	जोगा (मह, ओइसवाल शा० थे०, सलराजपुत्र)	६६
" (जयतसिंहभार्या)	७२, ७४	जालहणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालभगिनी)	७२
जयतसिंह (मह, वस्तुपालपुत्र)	४४, ५५, ७४, ७६-३	जगल्लक्ष्य (छगुर, मोलसारीय)	७४
" (रामपुरीय, धुव)	४७, ५०	जकउवाणि (ग्राम)	१०७
जयतसीह (मह, वस्तुपालपुत्र)	६९, ७०	जवाणि (ग्राम)	१०७
जयदेव (साहु, वरदुधिया)	६८	जवाणी (ग्राम)	६६, ६७
जयथी (चंद्रप्रगारपत्नी)	८, ७६-१, ८८	जतरंगक (पर्यंत)	७५
जयसिध (चौलुक्यनृपति)	१००	जतरंगद	६८
		तिजपाल (तेजपाल)	१०५, १०६, १०७
		तिहुणदेवि (ठगुराणी, घरमिणभार्या)	६५
		नुरष्क (रूपविशेष)	३
		नुरुष्क (रूपविशेष)	६
		तेजपाल (मन्त्री, आशाराजपुत्र)	१०, १३, १४, २१, २५, २८, ३१, ३२, ३७, ३८, ३९

शृष्ट		शृष्ट
तेजःपाल (महं) ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ६०, ६२, ६३, ६४, ६५, ६७, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ८६, ९०, ९६, ९७		
तेजपाल (महामात्य, मह) ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ९६, ९९, १०१, १०५, १०७		
हेजलपुर (ग्राम)	९९	
त्रिपुरप्रस्ताद (शिवमंदिर)	२	
त्रिभुवनदेवी (ग्रामाट, धरणिगल्ली)	६३	
त्रिभुवनपाल (अधिराजभ्राता)	७६-२	
धिरदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	
दक्षिण (रूपविशेष)	६	
धर्मवती (नगरी) १६, २६, ४४, ४६, ४८, ५४, ५१, ५६		
वाक्षिणारथा (स्त्रीविशेष)	६	
वामोदरहृद (स्थानविशेष)	९९	
दुर्लभ (चौलुन्यरूपति)	३, २४, ३५, ८२	
दुर्गसरण (ग्रा० ज्ञा०)	६६	
देउलवाडा (ग्राम)	६५, ६७	
देहा (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०)	६६	
देपाल (मनी)	१०२	
देवहण (ग्रा० ज्ञा० श्रे०)	६६, ६७	
” (ओइस० ज्ञा० श्रे०, सीलपुत्र)	६७	
देवहा (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	६७	
देवहुय (ग्रा० ज्ञा० श्रे०, सातुयपुत्र)	६६	
देवईयार (ओइस० ज्ञा० श्रे०)	६६	
देवकुमार (साहु जयदेवपुत्र)	६९	
देवचंद्र (साहु जिणचंद्रपुत्र)	६९	
देवधर (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, गुणचंद्रपुत्र)	६६	
देवप्रमस्त्रि (हर्षपुरगन्धीय आचार्य)	२९	
देवयोध (विद्वान्)	७९	
देवलवाट (ग्राम)	१०६, १०७	
देवानन्दसुरि (आचार्य, हर्षपुरगन्धीय)	२९, ८०	
देसल (ग्रा० ज्ञा० श्रे०)	६७	
देसीनाममाला (ग्रन्थ)	९६	
धंधुक (परमारवशीय रूपति)	६१	
धंधुय ”	१०७	
धंधुय ”	१०७	
धडलिंग (धर्षट ज्ञा०)	६६	
धडली (ग्राम)	६६	
धणचंद्र (ग्रामाट ज्ञा० श्रे०)	६६	
धणदेव (श्रीमाल ज्ञा० श्रे०, सुमिगुन)		६६
धणदेवी (वस्तुपाल-तेजपालमहिनी)		७२
धनदेवी ”		६०
धणपाल (ओइस० ज्ञा० श्रे०, महारापुत्र)		६७
धणिया (ग्रा० ज्ञा० श्रे०, जमकापुत्र)		६७
धणेश्वर (साहु राहड्युव)		६२
धरणिग (ग्रामाट, गामागुत)		६३
” (ग्रा० ज्ञा०, ठडुर)		६५
धर्षट (ज्ञाति)		६६
धर्मदासगणी (आचार्य)		७८
धर्माभ्युदय (महाकाव्य)		७२, ९६
धवल (चौलुन्यवशीय)		६, ७
” (मनी)		१००
धवलक (नगर)		१५, ८०, ९९
धवलक ”		२६
धवलकक ”		४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
धांधल (सुशधार)		६५
धांधा (जगस० ज्ञा० महा०)		६६
धांधलदिवि (धावलदेवी, सोमनरेन्द्रमाला)		१०५
धावलदेवि ”		”
धारा (भाण्डागारिक)		७६-३
” (नगरी)		८३, ८४
धारावर्य (परमार रूपति)		६१, ६३
धीरण (ग्रा० ज्ञा० श्रे०)		६६
धुवभट (परमारवशीय रूपति)		६१
धूमराज (परमारवशीय रूपति)		६१, ६५
नदीश्वर { (स्थापत्यविशेष)		२८, ४७
नंदीसर { ”		६८
नगर (रुदनगर, स्थानविशेष)		८१
नगरवर (महास्थान)		७६-४
नगरारय ”		९६
नयचन्द्रसुरि (कृष्णार्पितगन्धीय)		६७
नरचन्द्रसुरि (हर्षपुरगन्धीय)		२९
” (मलपारी)		४७, ५५
नरनारायणानन्द (काव्य)		९०
नरेन्द्रसुरि { मलपारी)		५३
नरेन्द्रप्रभसुरि { ”		२४
नागदेव (ओइस० ज्ञा० श्रे०)		६७
नागपुर		६८

नागेन्द्रगच्छ १३, २९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ५७, ६४, ६५, ६९, ७२, ७५, ७६, ७९, ८०	पृष्ठ	पाङ्गुय (ग्रा० शा० श्रे०)	पृष्ठ
नायलगच्छ (नागेन्द्रगच्छ)	९९	प्राग्वाट, वल, वल) ८, १५, २१, २५, ३७, ३८, ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६३, ६५, ६६, ६७, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७५, ७६, ७६-१, ७६-३, ७६-४, ८६, ८८, ९७	६७
निरिन्द्रग्राम	२६	पुंडरीक (पर्वत, शत्रुजय)	६७
नृपविक्रम संवत् ६९, ७०, ७१, ७३, ७६-१	६८	पुनसिंह	७०
नेमह (साहु, वरहुडिया)	६८	पुण्यसिंह	५७, ७६-२
नेहा (घकट श्रेणी)	६६	पुनसीह (मलदेवसुत)	७१, ७६
पञ्ज (प्रमुग्मशिखर)	१०२	पूर्णसिंह	६३
पञ्चासर (जिनमंदिर)	२, १५, २६	पुरपोत्तम (सुनधार)	४७, ५०, ५३
पत्तन (अगहिलपुर)	६९, ७४, ७५, ७६, ७६-४	पूनचंद्र (प्राग्वाट शा० श्रे०, पासचंद्रपुर)	६६
पद्मला (वरतुपाल-तेजपालमगिनी)	७३	पूनड (प्राग्वाट शा० महाजनी, आभिगपुन)	६६
पद्मसिंह (ग्रा० शा० ध०, बालापुन)	६७	पूनदेव (ग्रा० शा० ध०, बोधसिद्धिपुर)	६७
परमलदेवी (वरतुपाल तेलपालमगिनी)	६०	पूनदेवी (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुलभार्या)	७३
परमार (राजवश)	६१	पूनपाल (मह, वस्तुपाल तेजपालमातुल)	७३
प्रतापदेवी (मालदेवपत्नी)	७४	पुना (प्राग्वाट शा०)	६६
प्रतापमल (राजपुरुष)	८४	” (धीमाल शा०)	६६
प्रतापसिंह (जयतसिद्धिपुर, वस्तुपालपौन) २७, २८, २९	७७	” (ग्रा० शा० श्रे० बोधसिद्धिपुर)	६६
प्रतीहार (राजवश)	७७	” (श्रेणी)	७६-३
प्रमुग्मशिखर (रत्नमिदि शिखरविशेष) २८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	८०	पुनिग (ओइस० शा० श्रे०)	६७
प्रमुग्मसूरी (आचार्य)	६७, १०५	पुनुय (ग्रा० शा०, पाविलपुर)	६६
प्रमार (राजवश)	८१, ८४	पुथ्यीसिंह (पूर्णसिद्धिपुर)	७३-२
प्रयाग (तीर्थस्थान)	६२	पेथड	६३, ७१, ७६
प्रह्लादन (परमार नृपति)	८६	पोरुयाड (वश)	९९
” (पण्डित, कुमारधर्मशुद्ध)	६८	फोलीणी (ग्राम)	६६
प्रह्लादनपुर (पालपुर)	३	बकुलस्वामी (सुनधार)	४७, ५०, ५३
पाण्ड्य (नृपविशेष)	७०	बदरकूप (ग्राम)	२७
पाट (मालदेवभार्या)	३८	बंर (देव)	५
पादलितनमरी	६६	मलदेवि (तेजपालपुत्री)	७१
पावहण (ग्रा शा० श्रे०, जीदापुर)	१०८	” बघेलाल (मालदेवपत्नी)	६१
” (कए० शा० श्रे०, सोहिपुर)	६८	ग्रहदेव (प्राग्वाट शा०)	६६
” (ग्रा० शा० महा०)	६६	ग्रहसंति (मद्रमान्ति वश)	१०८
” (कवि)	६६	ग्रहसरणु (ग्रा० शा० श्रे०, देवलपुर)	६७
पावहविहार (जिनमंदिर)	६६	ग्रहाण (ग्राम)	६६
पावहा (ग्रा० शा० श्रे०, धीरगुण्य)	६६	घाण (कवि)	२०
पासचंद्र (प्राग्वाट शा० ध०)	६६	बोदहि (ग्रा० शा० श्रे०, आनुपुर)	६७
पासदेव (धीमाल शा० महा०, बीसलपुर)	६६	भद्रवाट (आचार्य)	७९
पासधर (ग्रा० शा० श्रे०, साजगुण्य)	६६	भाटा (ग्राम)	६७
पाविल (ग्रा० शा०)	६६	भामा (तेजपालमातुल्य)	७३
पासु (परंट श्रेणी)	६६		



	पृष्ठ		पृष्ठ
मालि (ग्राम)	६७	मालवपति (रूपविशेष)	२४
मावड (साधु)	१०१	मालवभूप (रूपविशेष)	३
मास (कवि)	५२	मालवी (स्त्रीविशेष)	६
मीम (चौलुक्यरूपति, प्रथम)	३, २४, ३५, ८२	मालवेन्द्र (रूपविशेष)	३
" ( " , द्वितीय )	६२४ ३६, ३७, ६५, ८५, ९०	" (गुप्त रूप)	१६
मीम (पद्मीपति)	६	मुंज (रूपति, धाराधीन)	४१
मीमसिंह (मुराधूपतिरूपति)	१३	" (विद्वान्)	८२, ८३, ८५
मीमेश्वर (शिवमन्दिर)	२७	मुंडरूपल (ग्राम, महातीर्थ)	६३
मुयनपाल (रूपविशेष)	२७	मुनीन्द्रप्रभु (मुनिचन्द्रसूरि, हर्षपुरगच्छाद्य)	२९
मूतेशवेदम (शिवमन्दिर)	२७	मुमाकीय (छुर ?)	७१
भूमट (चापोत्कटरूप)	२	मुरल (रूपविशेष)	५
भृगुकच्छ (भृगुनगर, भृगुपुर)	२७, ९६	मूढेर (ग्राम)	१०८
भृगुनगर (भृगुकच्छ, भृगुपुर)	२६	मूलराज (चौलुक्यरूपति, प्रथम)	२, २४, ३४, ८२
भृगुपुर (भृगुकच्छ, भृगुनगर)	३८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	" (चौलुक्यरूपति, द्वितीय)	३, २४, ३६, ८४
भोज (रूपति, धाराधीन)	३५, ४५	मेदपाट (रूपविशेष)	५
भोला (ग्राम, ज्ञान, धर्म, साजनपुत्र)	६६	" (देव)	५
[म]डाहड (ग्राम)	५७	मोट (ज्ञाति)	७
मयधर (धेन्नी)	७६-३	यशोधवल (परमारवंशीय रूपति)	८८
मह (रूपविशेष)	५	यशोराज (रूपविशेष)	६१
मलधारि (गच्छ)	४७, ५३, ५५	योगराज (चापोत्कटरूप)	८३
मल्लदेव (आधाराजपुत्र) १०, १६, २१, २५, २६, २७, २८, ३७, ५७, ५९, ६०, ६३, ६४		रतन (संचापति)	३
" (मह, आधाराजपुत्र) ६५, ७६-२, ८६, ८९, ९७		रत्नसिंह (ग्रामाट, छुर)	१०१
महधरा (ओहस-ज्ञान-धर्म)	६७	रत्नादित्य (चापोत्कटरूप)	६५
महाक (सं-पेयदमुत)	७६	रत्नादेवी (जवादिखदेवपत्नी)	६
महादेव (विद्वान्, सोमेश्वरपुरोहित आता)	८५	रत्नादेवि (खणसीहभार्या)	७३, ७४
महेन्द्रप्रभसूरि (नागेन्द्रगच्छीय)	२९	राजदेव (धेन्नी)	७१
महेन्द्रप्रभु " ७६-३, ७९		राजपाल (तेजपालमातुलमुत)	७३-३
महेन्द्रसूरि " १३ ६४, ६५		राज्य (ग्राम-ज्ञान-धर्म)	७३
" (भट्टारक) ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६		राठी (ज्ञातिविशेष)	६६
माड } (वस्तुपाल-तेजपालमणिनी)	७२, ६०	राजमहाराज	१०४, १०५
माज	२०	राणिम (ग्राम-ज्ञान, मह)	६६
माघ (कवि)	६६	राणु (छुराणी, खलिदावेसी मात)	६५
माणिमद्र (ग्रामाट धेन्नी)	३८	रामचंद्र (ग्रामाट ज्ञान-धर्म, वपयपुर)	५१, ५४, ५६, ७३, ७४
मारव (रूपविशेष)	३८	रामदेव (परमारवंशीय रूपति)	६३
मालदेव (मह) ४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५, ६९, ७०,		राहदा (ग्रामाट ज्ञान, महदेवपुर)	६३
" (छुर) ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६-१, ७६-३		राष्ट्रकूट (राजपुत्र)	६८
मालव (देव) ६१, ८३ ८४, १०१		रासल (ग्रामाट धेन्नी)	८८
मालवन्त (रूपतिनिष्ठा)	३५	राहड (साहु, नेमपुर)	६६
		" (साहु)	६८, ६९

	पृष्ठ	पृष्ठ
रूपादेयि ( लघुसिंहमार्ग )	७०	लूणवसहिका ( जिनमंदिर ) ७६-१
" ( लावण्यासिंहमार्ग )	७५	लूणसिंह ( लावण्यासिंह, तेजपालपुर ) ६३, ६५
रेवत ( रेवत पर्वत )	९९, १०२	लूणसीह ( " ) ७१, ७२, ७६, १०६
रेवद ( " )	१०३	लूणसिंहवसहिका ( जिनमंदिर ) ६५
रेवत ( पर्वत )	१५, ७६-२, ७७	लूणसीहवसहिका ( " ) ६७, ७२, ७३
रेवतक ( " )	२८, ६७, ९०	लूणसीह ( मंड, लोलासुत ) ६५
रेवताद्रि ( " )	१३	लूणादेवी ( खनिगलनी ) ७४
रोहडी ( ग्राम )	२७	लूणिग ( लावण्याग, आश्वाराजपुर ) २१, २५, ५९
लक्ष्मी ( कुमारवर्ध-पत्नी )	८५	६४, ७५, ७६, ७६-३, ८९
लक्ष्मीघर	२७	लूणिगदेव ( " ) ७४
लक्ष्मण ( श्रीपाल जा० धे० )	६६	लूणिला राजवत्ता ) १०५
" ( शा० शा० धे० )	६६	लूण ( लूणविशेष ) ५
ललितसर ( सरोवर )	२७	लूणसावित्रीसदन ( देशतान्दिर ) २७
ललितदेवी ( वस्तुपालनी )	२७	लूनराज ( नापाकट ) २, २६
" ( मंड, वस्तुपालनी ) ४४, ४५, ४६, ४८ ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५८, ६२, ६९, ७४, ७६, २, ७६, ४, ९८		लूनलुका ( वस्तुपाल-तेजपालमणिनी ) १०, ७३
ललुचामी ( विद्वान् )	८२	लूरदेव ( लूणवाल जा० महा०, सादापुर ) ६६
लवणप्रसाद ( चौलुक्यवर्धनी )	६७, २५, ६०	लूरहुडिया ( गोरविशेष ) ६८
" ( महाराजधिराज ) ४४, ४५, ४६, ४८, ५१, ५३, ५६		लूरभी ( नगरी ) २७
" ( महामण्डलेवर, राणक )	६५	लूरालदेवि ( लूसीहमुता ) ७१
लवणसिंह ( लावण्यासिंह, लूणसिंह, तेजपालपुर ) ४५		लूरभराज ( चौलुक्यवर्धनी ) ३, २४, ३५
लवणमार्ग ( लूणसीहमार्ग )	७१	लूसिष्ट ( क्षपि ) ८१
लाक्षण ( ओदवकाज जा० धे०, बोहिवपुर ) २७		लूसिष्टकुंड ( अर्जुनसिंह कुंड ) ११
लाट ( लूणविशेष ) ५		लूसिष्ट ( स्थानविशेष ) ६७
लाटापली ( ग्राम ) ६८, ६९		" ( क्षपि ) ८२
लावण्यासिंह ( लवणप्रसाद, चौलुक्यवर्धनी ) ३६		लूसिष्टकुंड ( अर्जुनसिंह कुंड ) ६५
लावण्यासिंह ( लूणसिंह, तेजपालपुर ) ५७, ६३, ६४, ७५, ७६, २		लूसन्तपाल ( वस्तुपाल ) ९०
लावण्याग ( लूणिग, आश्वाराजपुर ) ७ ५७		लूसन्तपाल ( वस्तुपाल ) १०१, १०५
लापाराम ( स्थानविशेष ) १००		लूसुपाल ( मंत्री, आश्वाराजपुर ) १०, १२, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २५, २६, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ६०, ६२, ६३, ६४
लाहड ( साहु राहडमुन ) ६९		" ( महामाय ) ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ६०, ६२, ६३, ६४
लीला ( प्रासदशालीय मंड ) ६५		" ( मंड ) ६५, ६८, ६९, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६-१, ७६-२, ७६-३, ७६-४, ७७, ७९, ८६, ८७, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९६, ९७, ९९, १००, १०५, १०७
लीलादेवी ( मालदेवमार्ग ) ७४		लूसुपालसर ( सरोवर ) २७
लीलुका " ६३		
लीलू " ७०, ७६-२		
लूणिग ( लूर, लावण्याग ) ४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५५		
लूणसा ( लवणप्रसाद चौलुक्य ) १०५		
लूणपसा ( लवणप्रसाद, चौलुक्य ) १०४		
लूणप्रसाद ( लवणप्रसाद, चौलुक्य ) ९७		

	पृष्ठ		पृष्ठ
बलापय (स्यानविशेष)	१३, २८	बीजापुर	६८
महडा (ओइसवाल ज्ञा० धे० गोसलपुत्र)	६७	वीर (वीरधवलराजा)	८०
बहुदा (ओइसवाल ज्ञा. धे०, सीलपुत्र)	६७	वीरदेव (ग्रामाट ज्ञा० महा०)	६६
बहुदेव (धर्कट थेछो)	६६	वीरदेव (साहु, जयदेवपुत्र)	६८
बाग्भट (महामंत्री)	१५	वीरय (श्रीमाल ज्ञा० धे० धिरदेवपुत्र)	६६
बाघा (ओइसवाल ज्ञा० धे०, पुनिगपुत्र)	६७	वीरय (ग्रा० ज्ञा० धे०)	६७
बाजड (कायस्थ)	४६, ४७, ५३, ५५, ५७	वीसल (श्रीमाल ज्ञा० महा०)	६६
बापल (श्रीमाल ज्ञा०)	६६	" (श्रीमाल ज्ञा० धे० देरापुत्र)	६६
धामलदेवी (महा, चंडप्रसादपत्नी)	७४	वीसलदेव (रूपति)	९६
घालण (जएयवाल ज्ञा० धे०, सलपणपुत्र)	६६	वेजलदेवी (वस्तुपालपत्नी)	७४
घाला (ग्रा० ज्ञा० धे०)	६७	वेला (व्यवहारी)	७६-३
घालिग (कायस्थ)	४७, ५०	धैरनाथ (शिवमदिर)	१६, २६, २७
घालीनाथ (यक्षविशेष)	२६	वैरिसिंह (चापोकटरूप)	२
घाहड (सूत्रधार)	४६, ५५, ५८	वैरिसिंह	२७
" (ओइसवाल ज्ञा० धे०, जसदेवपुत्र)	६७	बोडार्य (घालीनाथपक्ष)	२६
विक्रम संवत्	४३, ४६, ४८, ५३, ५५, ५८, ६५, ७५	बोसरि (ग्रा० ज्ञा० धे०)	६७
विक्रमचूप संवत्	७२	बोहडि (ग्रा० ज्ञा० धे०)	६६
विक्रमार्क संवत्	५१	बोहिय (ओइसवाल ज्ञा० धे०)	६७
विजय (सोमेश्वरपुरोहित भ्राता)	८५	व्यास (कवि)	२०, ५२
विजयसिणसुरि (विजयसेनसुरि)	१०७	व्यामरोलि (ग्राम)	२६
विजयसेन (विजयसेनसुरि)	९९, १०३	शकुनीविहार (जिनमन्दिर)	३८
विजयसेनसुरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१४, १६, २९, ४५, ४७, ४९, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ६९, ७२, ७४, ७५, ७६-३, ७८, ७९, ९०	शङ्ख (संप्रामसिंह रूपति)	१२
विन्ध्यवर्मा (वाराधीन रूप)	८४	शङ्खजय (पर्वत)	१५, २१, २७, ३८, ७७, ९९
विमल (मन्त्री)	१०४, १०५	" (पर्वत, महातीर्थ)	४४, ४७, ४८, ५१, ५३, ५४, ५६, ६८
विमल (शत्रुजय पर्वत)	९०	" (पर्वत, तीर्थ)	७६
विमलउ (मन्त्री)	१०४	" (धवलकक्षिपत जिनमदिर)	२६
विमलमंदिर (जिनमंदिर)	१०६	शत्रुजयशैल	९०, ९१
विमलान्नल (शत्रुजयपर्वत)	४६	शत्रुजयमहातीर्थवतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
विमलाद्रि (शत्रुजयपर्वत)	१५, ७७, ९९	शत्रुजयाद्रि	९८
विरघवल (वीरधवल)	१०५	शत्रुजयावतार (स्थापत्यविशेष)	५८
वीरघवल (नीलकुम्भपत्नी, रूपति)	७, ८, १०, १३, १६, १८, २५, २६, २८, ३२, ३६, ३७, ३८, ६०, ६१, ६४, ९९, ९९	शान्तिसुरि (नागेन्द्रगच्छीय)	१३, २९, ४५, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६, ६४, ६५, ७६-३, ७९
" (महाराज)	४४, ४६, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६	शाम्भुशिवर (देवतमिरिशिवरविशेष)	२८, ४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६
" (राणक, महामण्डलेधर)	६५	शालिग (ग्रामाटज्ञातीय, ठुहुर)	६५
श्रीकल (व्यवहारी)	७६-३	शालिगजिनालय	२७
श्रीजा (थेछी)	७६-३	शर (सर, चंडप्रसाद ज्येष्ठपुत्र)	८८

शैलद्विप (रुप)	१५	साजण (साधु)	६८
श्रीधांधलेधरदेवीयकोटडी (स्थानविशेष)	६७	, (दहाधिय)	१००, १०१
श्रीपाल (प्रान्ताद्रेष्ठी, सावलपुत्र)	६६	साजन (प्रा० ज्ञा० धे०)	६६
श्रीमाल (ज्ञाति)	६६	साटा (ऊएसवाल ज्ञा० महा०)	६६
श्रीमातामहपुत्राम	६७	सादा (धर्कटधेष्ठी, पासपुत्र)	६६
प(पं)गार (सोटपति)	१००	, (प्रा० ज्ञा० धे० आसलपुत्र)	६६
संग्रामसिंह (राख, सिन्धुराज)	१२, ४१	सामंतसिंह (रुप)	६२
संतोपा (ठकुराजी, मोड ज्ञा० ठकुर आशा-पानी)	७३, ७४	सालग्राम	६७
संमेतमहातीर्थ (महानीर्थ)	४८	साव्हा (धर्कटधेष्ठी, नेहापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थावतारप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	४५, ५४	, (प्रा० ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतमहातीर्थावतारप्रधानप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	४७	, (श्रीमाल ज्ञा०, पूनापुत्र)	६६
संमेतशिखरप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५८	सावड (प्रान्ताद्रेष्ठी)	६६
संमेतावतार (स्थापत्यविशेष)	५१	सावदेव (प्रान्ताद्रेष्ठी, ठकुर)	६५
संमेतावतारमहातीर्थप्रासाद (स्थापत्यविशेष)	५६	सावदेव (प्रा० ज्ञा० धे०, राहुपुत्र)	६६
संमेघ (समेतशिखर पर्वत)	१०१, १०२	साहणीय (प्रा० ज्ञा०, दूरासरणपुत्र)	६६
सत्यपुर (नगर)	१५, २७, ६८	साहिलवाडा (ग्राम)	६७
सत्यपुरावतार (स्थापत्यविशेष)	४४, ४६, ४८, ५१, ५४, ५६	सिंहण (यदुवसोयवण)	३८
सदमल (मालदेवसुता)	७०	सिंहाराज (सचपति, सरवणपुत्र)	६८
सपावल (देश)	८३	सिंहलग्राम	२६
सरवण (सचपति)	६८	सिद्ध (सिद्धराज)	७६
सर्वदेव (विद्वान्)	८३, ८४	सिद्धचुप (, ) }	८३
सलराण (ऊएस० ज्ञा० धे०)	६६	सिद्धराज (चौलक्यरुपति)	९, ३७, ८९
, (ओइस० ज्ञा० धे०)	६६	सिन्धि (आचार्य)	७८
सलखणदेवी (सुहृदवीहपानी)	७५	सिद्धाधिप (सिद्धराज)	४
सहजल (मालदेवसुता)	७०	सिद्धेश (सिद्धराज)	३७
सहजिग (कायस्थ)	४७, ५०	सिद्धेशिता (सिद्धराज)	७९
सहदेव (राहु, बरहुकिया)	६८	सिन्धु (देश)	८३
सहसा (धचपति)	६८	सिन्धुराज (राख, सम्राप्तसिंह)	१२
सहसाराग (स्थानविशेष)	१०२	, (कच्छपति)	३४
संतुप (प्रान्ताद्रेष्ठी, ज्ञा० धे०)	६६	सिरिमाल (श्रीमालहल)	१००
सांयकुमार (ग्रामस्थितार)	१०२	सिहरग्राम	६७
साइदे (सं सहसापानी)	६८	सीता (सोमपत्नी)	९, ७६, ७६-२, ८९
साउदेवी (वरपुत्राल वेत्रवाल ममिनी)	७२	सीतादेवी (मह, सोमपत्नी)	७४
साऊ (, ) }	६०	सीलण (ओदसवाल ज्ञा० धे०)	६७
सागर (प्रान्ताद्रेष्ठी, ठकुर)	६५	सुद्धतकीर्तिकलोलिनी (कृतिविशेष)	१६
सागर (ऊएसवाल ज्ञा० महा० धोपपुत्र)	६६	सुनथय (सं सहसापुत्री)	६८
सामण (प्रान्ताद्रेष्ठी, ज्ञा० धे०)	६६	सुमट (कति)	८५
		सुमटवर्मा (रुप)	२६
		सुमसीद (सोमसिंह)	१०७
		सुरठ (देश)	१००
		सुराप्पूतपति (श्रीमसिंहपति)	१३

	पृष्ठ		पृष्ठ
सुरिताण ( सुल्तान )	१०४	सोलंकि ( राजवश )	१०४
सुचम्भरेह ( नदी )	९९	सोल ( सोलशर्मा )	८२
सुदडतीह	७५	सोलशर्मा ( विद्वान् )	८१
सुहडादेवी ( मह तेजपाल द्वितीयभार्या )	७३, ७४	सोदगा ( वस्तुपाल-तेजपाल-भूमिनी )	६०, ७३
„ ( सुहवर्सीह पत्नी )	७५	सोहि ( ऊएसवाल झा० थे० )	६६
सुमिग ( श्रीमाल झा० थे० )	६६	सोहिय ( प्रा० झा० थे० )	६६
सुर ( मन्त्री, चण्डप्रसाद ज्येष्ठपुत्र )	९७६ १	सौवर्णगिरि ( पर्वत )	६९
सुहवदेवि ( जयतमिहभार्या )	७७, ९८	स्तम्भतीर्थ ( पुर नगर, स्थान )	१२, २७ २८, ४४, ४६, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ७६ ३, ९६
सेचुज ( शत्रुजय )	१०५	स्तम्भनक ( ग्राम )	१६, २६
सोखु ( मह वस्तुपाल द्वितीयभार्या )	५८	स्तम्भनकतीर्थ ( स्तम्भतीर्थ )	४८
सोखुका ( „ „ )	४६, ४८, ५०, ५१, ५८ ६९	स्तम्भनकपुर ( ग्राम )	४४, ४६, ४८, ५१, ५४ ५६
सोभनदिउ ( सोभनदेव, सुनधार )	१०६	स्तम्भनपुर ( स्थापविशेष )	१५
सोभनदेउ ( „ „ )	१०६	स्तम्भपुरीय ध्रुव ( जयतविह )	४७, ५०
सोमा ( माण्डगारिक )	७६-३	स्त्राजण ( प्रा० झा० थे०, वीरपुत्र )	४७
सोम ( मन्त्री चण्डप्रसाद-द्वितीयपुत्र )	९, २१, २५ २८, ३७	ढंडाउद्र ( ग्राम )	६६
„ ( मन्त्री, ठकुर )	४४, ४६, ४८, ५१, ५३, ५४, ५५, ५६, ५९, ६४	ढंडावडा ( ग्राम )	१०७
„ ( मह )	६५, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७६ १, ७६ २, ७६-३, ७६ ४, ८६, ८८	इधीयावापी	६८
सोम ( धकटभेण्ठी बहुदेवपुत्र )	६६	इम्मीर ( ग्रामविशेष )	५, ६
सोम ( नरेंद्र )	१०४ १०५	इरिमद्रसुरि ( कागेंद्रगण्डीय )	१४, २९, ३७, ६४, ६५, ७६-२, ७६-३, ७९, ८९, ९०
सोमदेव ( सुनधार )	४७, ५०, ५३	„ ( मठारक )	४५, ४७, ४८, ५१, ५४, ५६
सोमशर्मा ( विद्वान् )	८२	इरिमण्डप ( स्थापत्यविशेष )	४७
सोमशर्मा ( सोमेश्वरदेव, पुरोहित )	८५ ९०	इरिया ( श्रीमाल झा० थे० )	६६
सोमसिंह ( गृपति, भरावर्षसुत )	६२	इरिहर ( कवि )	८५ ९०
सोमसिंहदेव ( महामण्डलेश्वर )	६५, ६७	इर्यपुरीयगच्छ	२९
सोमेश्वरदेव ( ठकुर, गूजरेबर पुरोहित )	४५, ५०, ६५, ८५	इान्दुय ( साहु जयदेवपुत्र )	६९
सोरठ ( देव )	९९, १००	हुणी ( श्रीविशेष )	६
		हेडउंजीग्राम	६७
		हेमचन्द्र ( आचार्य )	८६
		हेमा ( श्रीमाल झा० थे०, हरियापुत्र )	६६